सस्ती साहित्य-पुस्तकमाला—छठवाँ पुष्प

चण्डीचरण-ग्रन्थावली

द्वितीय खण्ड

अर्थात् 'दीवान गंगागोविन्दसिंह'

का

अविकल अनुवाद

अनुवादक—

डॉक्टर वीरेन्द्रनाथ दास

प्रकाशक—

सस्ती साहित्य-पुस्तकमाला कार्य्यालय,

बनारस सिटी

प्रथमावृत्ति]   फाल्गुन, सं० १९८३ वि०   [मूल्य ॥)

सोल एजेण्ट—
मुकुन्ददास गुप्त एण्ड कम्पनी,
पुस्तक-भवन,
बनारस सिटी।

प्रकाशित होनेवाले कुछ ग्रंथ

बंकिम-ग्रन्थावली चतुर्थ खंड
केशव-ग्रन्थावली सूर-ग्रन्थावली
रमेश-ग्रन्थावली अरविन्द-ग्रन्थावली
चंडीचरण-ग्रन्थावली तृतीयखंड
वाल्मीकीय रामायण अयोध्याकांड

प्रकाशक—
पन्नालाल गुप्त, व्यवस्थापक
सस्ती साहित्य-पुस्तकमाला कार्यालय
बनारस सिटी।

मुद्रक—
जयकृष्णदास गुप्त,
विद्याविलास प्रेस, गोपालमंदिरलेन,
बनारस सिटी।

पृष्ठ-सं० २६०

प्रिय पाठको,

चण्डीचरण-ग्रन्थावलीका यह दूसरा खंड, दीवान गंगा-गोविन्दसिंह, आपके सम्मुख है। इसमें ईस्ट इन्डिया कम्पनी द्वारा, वारेन हेस्टिंग्ज़के जमानेमें, भारतपर किये गये अत्याचारोंका दिग्दर्शन मात्र है। घटनाएँ सभी ऐतिहासिक हैं। प्रमाणके लिए ईस्ट इन्डिया कम्पनीके पत्र-व्यवहारोंकी नकल परिशिष्ट-रूपमें अंतमें दी गयी है। आशा है इससे पाठकों-का, मनोरंजनके साथ ही साथ, देश-सम्बन्धी ऐतिहासिक ज्ञान भी बढ़ेगा।

विनीत

प्र का श क

स्थायी ग्राहकोंकी आवश्यकता

इसलिए कि दूकानदार, छोटे-बड़े, प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध प्रायः भी हमसे अधिकसे अधिक कमीशन चाहते हैं। साधारण मीशनपर बेचनेको तैयार नहीं है। इसलिए आपसे निवेदन कि आप इस मालाके स्थायी ग्राहक अवश्य बनें। पर्याप्त ाहक होनेपर हम पुस्तकोंका मूल्य और भी कम रख सकेंगे।

अभी भी हमारी मालाकी प्रत्येक पुस्तकका मूल्य एक रुपयेमें ५१२ पृष्ठके हिसाबसे होता है। स्थायी ग्राहकोंको तो वह लगभग ७०० पृष्ठके पड़ जाता है। कागज, आकार आदि इसी पुस्तकके अनुसार होता है।

सस्ती साहित्य-पुस्तक-मालाके नियम

१—एक रुपया प्रवेश-शुल्क देकर प्रत्येक सज्जन स्थायी ग्राहक बन सकता है। यह शुल्क लौटाया नहीं जायगा।

२—स्थायी ग्राहकोंको मालाकी प्रत्येक पुस्तककी एक-एक प्रति पौने मूल्यमें मिलेगी।

३—मालाकी प्रत्येक पुस्तक लेने न लेनेका अधिकार ग्राहकोंको होगा। इसमें हमारा किसी तरहका बन्धन नहीं है।

४—पुस्तकके प्रकाशित होनेपर उसके मूल्य आदिकी सूचना ग्राहकोंको दे दी जायगी और उसके १५ दिन बाद पुस्तक वी० पी०से भेज दी जायगी।

५—जिन लोगोंको जो पुस्तक न लेनी हो, वह सूचना पाते ही उत्तर दें। जिसमें वी० पी० न भेजी जाय। वी० पी० लौटानेसे उनका नाम ग्राहक-श्रेणीसे पृथक कर दिया जायगा। यदि वे पुनः नाम लिखाना चाहेंगे, तो वी० पी० खर्च देकर लिखा सकेंगे।

६—स्थायी ग्राहकोंको साहित्य-सेवा-सदन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें दो आने रुपये कमीशनपर तथा पुस्तक-भवन सीरीजकी पौनी कीमतपर मिलेंगी।

॥ श्रीः ॥

दीवान गंगागोविन्दसिंह

पहला परिच्छेद

अवतरणिका

सन् १७७२ ई०के पंजसाला बन्दोबस्तकी मियाद प्रायः शेष हो चुकी है। देशके सभी ज़मीदारों, ताल्लुकेदारों और भूम्याधिकारियोंके प्राण कण्ठागत हो रहे हैं। वे लोग इस चिन्तामें पड़े हैं कि न मालूम इस बार फिर कौनसा नियम जारी हो। स्यात् ईस्ट इन्डिया कम्पनी इस बार पुराने ज़मीदारोंको निकालकर नये लोगोंके साथ प्रबंध करे।

देशके हर्ता-कर्त्ता विधाता तो वारेन हेस्टिंगज़् हैं। इसको वे कभी स्वीकार नहीं करते कि भूमिपर भूम्याधिकारियोंका कोई स्थायी स्वत्व है। उनका अनुग्रह प्राप्त किये बिना किसीकी शक्ति न थी कि अपनी ज़मीदारीका उपभोग कर सके।

वारेन हेस्टिंगज़् अत्यन्त स्वेच्छाचारी पुरुष थे। वे देश-के आचार-विचार तथा नियमके अनुसार नहीं चलते थे और न कोर्ट औव् डाइरेक्टर्सकी आज्ञाको ही विशेष मानते थे। वे अपनी इच्छाके अनुसार काम किया करते थे। दस या बीस सहस्र रुपए भेंट देनेपर कदाचित् उनके अनुग्रहकी प्राप्तिकी प्रत्याशा की जा सकती थी।

इसके पहले काउन्सिलके अधिकांश मेम्बर उनके विपक्ष-में थे। इसलिए विशेषतः उनको मेम्बरोंके मतानुसार काम करना पड़ता था। पर विपक्षियोंमेंसे कर्नल मॉन्सनकी मृत्यु होनेपर, केवल फ़िलिप फ्रान्सिस और जेनरल क्लेवरिंग उनके विपक्षमें बच गये हैं। इधर रिचर्ड बारवेल छाया-की तरह उनका पदानुसरण करते आरहे हैं। वे सर्वदा उनके मतका समर्थन किया करते हैं। अब काउन्सिलमें उनके विरुद्ध कोई बात होनेसे रही, क्योंकि दोनों पक्षोंकी गिनती बराबरकी हो गयी। इससे सभापति, गवर्नर-जेन-रल वारेन हेस्टिंगज़् जिस ओर झुकते उसीके अनुसार कार्य हुआ करता। अतएव काउन्सिलमें हेस्टिंगज़्के अप्रतिहत प्राधान्यकी स्थापना हो चुकी थी।

उस समय लॉर्ड नॉर्थ इङ्गलैंडके राजमंत्री थे। हेस्टिंगज़्-के असदाचरण, कुक्रिया और नृशंस व्यवहारकी सूचना उनके कानोंतक पहुँच चुकी थी। इसके अनंतर निराश्रया रोहिला रमणियोंकी क्रन्दन-ध्वनि और आर्तनाद इङ्गलैन्ड तक पहुँची। लॉर्ड नॉर्थने कुपित होकर कहा—ईस्ट इन्डिया कम्पनीके कर्मचारियोंने सुसभ्य अंगरेज़ोंके नाम कलङ्कित किये है। ईस्ट इन्डिया कम्पनीके सैनिकों-ने निरपराधिनी रोहिला रमणियोंके नाक-कान काटकर उनके स्वर्णाभरणोंका अपहरण किया है। अन्तमें उनके पहननेके वस्त्र तक छीनकर विवस्त्रावस्थामें बलपूर्वक उन गरीव अबलाओंकों शुजाउद्दौलाके तम्बूमें पकड़कर ले गये। अर्थ-लोलुप ईस्ट इन्डिया कम्पनीके हाथोंसे देश-शासनका अधिकार छीननेके लिए बड़े दिन (Christmas) के पूर्व ही पार्लमेन्टकी सभा करना निश्चित किया।

हेस्टिंगज़के इङ्गलैन्डमें रहनेवाले एजेन्ट (आममुख्तार) मेकलीन साहबने देखा कि अब महाविपद् उपस्थित है। हेस्टिंगज़ने पहलेसे ही अपने एजेन्ट मेकलीनसे कह रक्खा था कि "अधिक गड़बड़ देखनेपर तुम हमारी ओरसे त्याग-पत्र दे देना"।

मेकलीन साहबने हेस्टिंगज़की ओरसे कोर्ट औव् डाइरेक्टर्सको पद-त्यागका पत्र दे दिया। कोर्ट औव डाइरेक्टर्स भी बहुत डर गये थे। उन लोगोंने सोचा कि हेस्टिंगज़के असदाचरणके कारण ईस्ट इन्डिया कम्पनीके राज्य-शासनकी क्षमताके विलुप्त हो जानेकी पूरी सम्भावना है। इसलिए उन लोगोंने हेस्टिंगज़का त्याग-पत्र उसी समय स्वीकार कर लिया और आपसमें व्हिलर साहबको भारतवर्षका गवर्नर-जेनरल मनोनीत किया। व्हिलर साहबके पहुँचने तक जेनरल क्लेवरिंगको भारतवर्षके गवर्नर जेनरलका कार्य-भार ग्रहण करनेके लिए लिखा। कोर्ट औव डाइरेक्टर्सका पत्र भारतवर्षमें पहुँचते ही हेस्टिंगज़ अनन्योपाय हो पड़े। अभी नये प्रबन्धका समय है और इस समय प्रचुर अर्थ-सञ्चयकी अत्यधिक सम्भावना है। विशेषतः कर्नल मॉन्सनकी मृत्युके अनंतर वे अपने मनमानी कर सकते थे। भला ऐसे समय कभी पदत्याग किया जा सक्ता है? बहुत सोच-विचारकर हेस्टिंगज़ने कहा कि "मैंने अपने एजेन्ट मेकलीनको त्याग-पत्र दाखिल करनेका अधिकार नहीं दिया था। मैं गवर्नर जेनरलका पद-त्याग नहीं करूँगा।

जेनरल क्लेवरिङ्गने हेस्टिंगज़की बातोंपर ध्यान नहीं दिया और उनसे तुरन्त कोष (मालखाने) और दुर्गकी

चाभी माँग भेजी। हेस्टिंग्ज़ने चाभी नहीं दी। दोनों-के बीच घोर विवाद आरंभ हुआ। जेनरल क्लेवरिङ्गने अपनेको कानूनन गवर्नर जेनरल समझकर फ़िलिप फ्रांसिस-को साथ लेकर काउन्सिल-भवनकी एक कोठरीमें बैठकर काउन्सिलका काम आरंभ कर दिया। उधर हेस्टिंग्ज़ बारवेलको साथ लेकर दूसरे प्रकोष्ठमें बैठकर काउन्सिलका काम करने लगे और सबसे जेनरल क्लेवरिङ्गके आज्ञाकी अवमानना करनेके लिए अनुरोध किया।

ईस्ट इन्डिया कम्पनीके दूसरे कर्मचारियोंने हेस्टिंग्ज़-का पक्ष लिया। वे सब जानते थे कि जेनरल क्लेवरिङ्गके गवर्नर जेनरल होनेपर घूस लेनेकी सुबिधा न हो सकेगी; देशी लोगोंपर अत्याचार भी न हो सकेगा। इसीलिए ईस्ट इन्डिया कम्पनीके सभी स्वार्थी कर्मचारी और बहुतसे देशी कुलाङ्गार जेनरल क्लेवरिङ्गके विरुद्ध आचरण करने लगे। अन्तमें हेस्टिंग्ज़के प्रस्तावके अनुसार जेनरल क्लेवरिङ्ग और हेस्टिंग्ज़ दोनोंने आपसके झगड़ेके निर्णयका अधिकार सुप्रीम कोर्टके जजोंको अर्पण किया। सुप्रीम कोर्टके प्रधान जज एलिया इम्पे थे। वे हेस्टिंग्ज़के प्रिय-पात्र थे। उनके विचारसे हेस्टिंग्ज़की जीत हुई। उन्होंने कहा "कोर्ट औव डाइरेक्टर्सने हेस्टिंग्ज़के एजेन्टके दिये हुए त्यागपत्रको लेकर अन्याय किया है। इससे हेस्टिंग्ज़ कानूनन पदच्युत नहीं हुए।"

इस प्रकार हेस्टिंग्ज़ उस पदपर बहाल रहे, एवं उनकी क्षमता और उनका प्रभुत्व दिन-ब-दिन बढ़ने लगा।

इस घटनाके थोड़े ही दिनोंके बाद जेनरल क्लेवरिङ्ग पर-लोक सिधारे। हेस्टिंग्ज़की और भी बन पड़ी। इधर

भूमि-सम्बन्धी नये बन्दोबस्तका समय भी आ उपस्थित हुआ।

देशके सभी बड़े-बड़े ज़मींदार, ताल्लुकेदार अपने-अपने गुमास्तों और आममुख्तारोंको दर्बारके लिए कलकत्ते भेजने लगे। कलकत्ता-राजस्वसमितिके कर्मचारियोंका घर प्रतिदिन आदमियोंसे भरने लगा। खालसा डिपार्टमेन्ट-के राय रायाँके मकानपर रातदिन आदमियोंका समागम होने लगा।

किन्तु ज़मींदारोंके भेजे हुए आदमियोंने थोड़े ही समयमें समझ लिया कि कुल बन्दोबस्तका भार स्वयं हेस्टिंग्ज़ने अपने हाथमें रक्खा है। हेस्टिंग्ज़के प्रियपात्रको वशमें किये बिना कोई काम ही नहीं हो सकेगा। अब हेस्टिंग्ज़का विशेष प्रियपात्र कौन है?

दूसरा परिच्छेद

हेस्टिंग्ज़का प्रियपात्र कौन?

ईसवी सन् १७७८ के जुलाई महीनेमें किसी दिन प्रातः कालके समय एक उच्चपदस्थ राजपुरुष अपने कलकत्तेके मकानपर बैठकर तरह-तरहके कामोंकी देख-रेख कर रहे थे। नज़रानेका रुपया लेकर सैकड़ों जमींदार, ताल्लुकेदार सामने खड़े हुए थे। बहुतेरे ज़मींदारोंके गुमास्ते अपने-अपने मालिकों-के पत्र और नज़रानोंके साथ आकर उपस्थित थे। इस उच्च-पस्दथ राजपुरुषके सामने कोई बैठने तकका भी साहस नहीं करता था। इन सब आदमियोंमेंसे महाराज कृष्णचन्द्रका भेजा हुआ एक ब्राह्मण पत्र हाथमें लिये हुए खड़ा था। "महाराजकी जय हो" यह कहकर उसने वह पत्र इस

उच्चपदस्थ राजपुरुषके हाथमें दे दिया। पत्रके शीर्षकके स्थानपर लिखा था:—

"दर्बार असाध्य पुत्र अबाध्य
केवल भरोसा गंगा गोविन्द"

इस उच्चपदस्थ राजपुरुषका नाम दीवान गंगागोविन्द-सिंह है। प्रिय पाठकोंको जानकारीके लिए इस समय संक्षेपमें इनका कुछ परिचय दिया जाता है।

सन् १७६९ ई०के पूर्व गंगागोविन्दसिंह कभी-कभी अपने बड़े भाई राधागोविन्दसिंहकी जगहपर बंगालके नायब सूबादार मुहम्मद रेज़ाख़ाँके अधीन कानूनगोका काम करते थे। मोहम्मद रेज़ाख़ाँकी पदच्युतिके बाद राजस्व वसूल करनेका भार ईस्ट इन्डिया कम्पनीके स्वयं अपनें हाथोंमें लेनेपर, गंगागोविन्दसिंह नौकरीकी आशासे कलकत्तेमें आकर रहने लगे। हेस्टिंग्ज़ साहब उस समय बंगालके गवर्नर थे। उनके समयमें गंगागोविन्दके ऐसे सुचतुर और कार्यकुशल मनुष्यके सहज ही उच्चपद प्राप्त करनेकी पूर्ण सम्भावना रहती थी; क्योंकि देशके लोगोंपर अत्याचार, प्रतारण, प्रवञ्चना और कुत्सित व्यवहार करनेमें गंगागोविन्द हेस्टिंग्ज़के छोटे भाई थे। हेस्टिंग्ज़ने तुरंत गंगागोविन्दको, खालसा डिपार्टमेन्टके रायरायाँ राजा राजवल्लभके अधीन, नायब दीवानके पदपर नियुक्त कर दिया। गंगागोविन्दके जिम्मे धीरे-धीरे राजस्व-विभागका समस्त कार-बार कर दिया गया। वे इसके अतिरिक्त हेस्टिंग्ज़-के घरके दीवान अथवा घरके गुमास्तेका काम भी किया करते थे। गंगागोविन्दकी कार्यप्रणालीको देखकर हेस्टिंग्ज़ उनपर अत्यन्त सन्तुष्ट हुए, और उनको सन् १७७७ ई०में

कलकत्तेके राजस्व काउन्सिलके दीवानके पदपर नियुक्त किया। किन्तु विपद् और दुर्घटनासे परिपूर्ण इस संसारमें समय-समयपर सभीको कष्ट और यंत्रणा भोगनी ही पड़ती है। हेस्टिंग्ज़के विरुद्ध-दलवालोंने सन् १७७५ ई०के मई महीनेमें गंगागोविन्दको घूस लेनेके अपराधमें पदच्युत किया। हेस्टिंग्ज़ और बारवेल साहब सैकड़ों कोशिश करनेपर भी गंगागोविन्दको दीवानके पदपर बहाल नहीं कर सके।

परन्तु सन् १७७६ ई०में कर्नल मॉन्सनकी मृत्यु होनेपर हेस्टिंग्ज़के विपत्तियोंका प्रभुत्व एकदम जाता रहा। उसी समय हेस्टिंग्ज़ और बारवेलने फिरसे गंगागोविन्दसिंहका दीवानके पदपर नियुक्त किया। सन् १७७६ ई०के ८ नवम्बरको गंगागोविन्दसिंह दूसरी बार दीवानके पदपर नियुक्त किये गये, और राजस्व वसूल करनेके विभागमें फिरसे अप्रतिहत क्षमताके साथ काम करने लगे। देशके जमींदार, ताल्लुकेदार लोग सर्वदा उनके सामने हाथ जोड़कर खड़े रहा करते थे। आज सैकड़ों जमींदार, ताल्लुकेदार, उनके गुमास्ता और आममुख्तार नज़र लिये सामने खड़े हैं।

अब जमींदारोंके चले जानेपर प्रायः २०-२५ पारिषदोंसे घिरे हुए मूल्यवान सुन्दर कपड़ोंसे सुसज्जित एक कृष्ण वर्ण दीर्घकाय पुरुषके घरके अन्दर प्रवेश करते ही, दीवान गंगागोविन्दसिंहने ससम्भ्रम खड़े होकर सादर सम्भाषण करनेके बाद उनको अपने पास बिठाया और तरह-तरहकी बात-चीत करने लगे। इन लोगोंके आपसकी बातचीत शुरू होनेपर और-और लोग धीरे-धीरे खिसकने लगे।

थोड़ी देरतक बातचीत करनेके बाद इस नवागत कृष्ण-काय पुरुषने कहा "महाशय आपके द्वारा हमारा कोई अनिष्ट

होगा ऐसा हमने कभी नहीं सोंचा था। आपतो मेरे एक मात्र बल और भरोसा हैं"।

"हमारे द्वारा आपका अनिष्ट हुआ है! यह कैसा?"

"पदच्युत हुए, क्या यह अनिष्ट नहीं है?"

"(हँस कर) पदच्युतिके बाद फिर भी तो बहाल हुए।"

"फिर मुकर्रर हुए सही, परन्तु दागी तो हो गये। नामपर कलङ्कका टीका तो लग गया।"

"महाशय! दागीका होना ही अच्छा है। आवश्यकता होनेपर उसी दागसे आदमी पहचाना जा सकता है। दागके होनेसे ही आप मुर्शिदाबादके राजस्व-समितिके दीवान भी तो हुए।"

"आप कहते हैं दागका रहना अच्छा है, किन्तु पहले एक बार बर्खास्त हुए थे, इसीलिए तो राजस्व-समिति हमको फ़िरसे बर्खास्त करना चाहती है।"

"प्रदेशीय राजस्व कमेटी (Provincial council) जल्द ही तोड़ दी जायगी, आपको इस विषयमें चिन्ताकी कोई आवश्यकता नहीं"।

"कमेटीके एबोलिश होनेसे हमारा क्या उपकार होगा?"

"जो नया बन्दोबस्त होगा उसमें आपके लिए एक-न-एक सुबिधा अवश्य होगी।"

"हमारे लिए सुबिधा होगी, यह आपको किस प्रकार मालूम हुआ?"

"आप चिन्हित पुरुष हैं। वारेन हेस्टिंग्ज़ने अच्छी तरह समझ लिया है कि आप अत्यन्त कार्य्यकुशल और उपयुक्त कर्मचारी हैं। आपको वे कभी नहीं छोड़ेंगे।"

"आपकी इन बातोंका अर्थ कुछ भी मेरी समझमें नहीं

आया। गवर्नर जेनरल यदि हमको कार्यकुशल समझते होते, तो सन् १७७२ ई०की जाँचके समय हमको पदच्युत क्यों करते? हमने प्राणपणसे सरकारी कामोंका साधन किया था। सन् १७७० ई०के घोर अकालके समय भी राजस्व वसूल करनेमें मैंने कोई त्रुटि नहीं की थी।"

"गवर्नर जेनरल अच्छी तरह इसे समझते हैं कि राजस्व वसूल करनेके सम्बन्धमें आपके समान कार्य-कुशल मनुष्य दूसरा नहीं मिल सकता।"

"अगर यही समझते होते तो फिर बर्खास्त क्यों करते?"

"उन्होंने क्या आपको इच्छापूर्वक बर्खास्त किया था। विलायती सभ्यताके अनुरोधसे, खिष्टीय धर्मके अनुरोधसे उस समय आपको पदच्युत किये बिना चल नहीं सकता था। यही कारण था कि आप बर्खास्त किये गये।"

"आपकी बात मेरी समझमें नहीं आती, विलायती सभ्यताका अनुरोध क्या है—मुझे समझाइये तो सही।"

"पुनियाके लोगोंने आपके विरुद्ध एक जबर्दस्त अभियोग उपस्थित् किया था। राज-कर वसूल करनेके लिए आपने कितने ज़मीदारों, ताल्लुकेदारोंकी स्त्रियों तकको कचहरीमें बुलवाकर विवस्त्र करवाया। स्त्रियोंको विवस्त्र करने अथवा उनपर प्रहार करनेको विलायतके लोग बड़ा अन्याय समझते हैं। ये सब बातें प्रकट होनेपर यदि हेस्टिंग्ज़ साहब आपको पदच्युत न करते तो स्वयं उनपर इल्जाम आता; इससे लाचार होकर उन्होंने आपको उस समय बर्खास्त कर दिया। किन्तु आप यह निश्चय जानियेगा कि आप उनके विशेष प्रियपात्र हैं। आपका नाम उन्होंने अपने हृदयमें लिख रक्खा है।"

"उस साल ज़मींदार और ताल्लुकेदारोंकी स्त्रियोंको इस प्रकार पकड़वा न लाते तो एक पैसा भी वसूल न होता। उस समय तो राजस्वकी वसूलीका भार आप लोगोंपर नहीं था। महम्मद रेज़ाखां नायब सूबेदार थे। वे बराबर हमारे पास हुक्म भेजते थे 'जिस प्रकार हो सके पुर्नियाँका तमाम राजस्व वसूल करना ही होगा'। इधर घोर दुर्भिक्ष उपस्थित था, ज़मींदार और ताल्लुकेदारोंने प्रजासे एक पैसा कर बसूल नहीं कर पाया था। उनको अपने पूर्वसंचित् रुपयोंमेंसे राजस्व देना पड़ा। घरका रुपया क्या कोई सहजमें निकालता है? इसीलिये इतना तरद्दद करना पड़ा।"

"किन्तु पुर्नियाँ उसी सालसे जन-शून्य हो रही है। पुनियाँका राजस्व भी पहलेसे कम हो गया है।"

"पुर्नियाँके जन-शून्य होनेसे, हम क्या करेंगे। हमने तो सभीका प्राण-विनाश नहीं किया था। कुछ ज़मींदारों और ताल्लुकेदारोंकी स्त्रियोंको माल-कचहरीमें बुलवाया था, इसीलिए वे सब जाति-भ्रष्ट हो गये थे। इससे वे सब देश छोड़कर भाग गये। प्रहारसे कितने मरे होंगे! हमारी समझमें शायद एक या दो सौसे अधिक न होंगे। इसमें भी हमारा कोई दोष नहीं है। ये ही सब लोग सैकड़ो कोड़े खानेपर भी रुपया देनेसे इन्कार करते थे। इससे मैने बेलकी काटेंदार डौंगीसें इनको प्रहार करने-के लिए हुक्म दिया। इसीमें बहुतेरोंकी मृत्यु हुई। किन्तु ऐसा न करनेसे क्या राजस्वका अदा होना सम्भव था?"

"अब उन बीती बातोंको लेकर उधेड़नेसे क्या लाभ। आप न घबरायँ। हेस्टिंग्ज़ साहब आपके ऐसे कार्य-दक्ष आद-

मीको नहीं छोड़ेंगे। प्रौविंशल काउन्सिलके मेम्बरलोग लाख तदबीर करनेपर भी आपका कोई अनिष्ट नहीं कर सकते। प्रौविंशल काउन्सिलको एबोलिश करनेके लिए गवर्नर जेनरलने कोर्ट औव डाइरेक्टर्सके पास पत्र लिखा है। लेकिन कोर्ट औव डाइरेक्टर्सने १७७६ की चौथी जुलाईके पत्रमें हेस्टिंग्ज़ साहबपर अप्रसन्नता प्रकट की है। वे लोग किसी प्रकारका कोई नया फेरफार आवश्यक नहीं समझते।"

"कोर्ट औव डाइरेक्टर्स, गवर्नर जेनरलपर विरक्त क्यों हुआ है ?"

"वह बहुत सी बातोंसे सहमत नहीं है।"

"किन-किन विषयोंमें सहमत नहीं है ?"

"हम बर्खास्त होकर फिर मुकर्रर हुए हैं, शायद इस बातको कोर्ट औव डाइरेक्टर्स नहीं जानता। हमें राजस्व विभागका काम दिया गया है, इसीलिए उनलोगों-ने अत्यन्त असंतोष प्रकट किया है—(vide note (1) in the appendix)। इसके अतिरिक्त मनोहर मुकर्जीके मुकदमेंका कागज-पत्र और थैकरे साहबके कामोंको देखकर हेस्टिंग्ज़ और बारवेल साहबपर वे अत्यन्त असन्तुष्ट हुए है ?"

"मनोहर मुकर्जीका कैसा मुकदमा है ?"

"मनोहर मुकर्जी बेटमैन (Bateman) साहबके बेनियन थे। बेटमैन साहब मुङ्गेरके कलक्टर थे। मुंगेर और कारिकपुर इन: दोनों महालोंका बेटमैन साहबने धाँधू बहादुर और कृपाराम इन दोनोंके नामसे ठेका लिया था। धाँधू बहादुर नामका कोई आदमी नहीं था, कृपाराम मनोहरके दबावका आदमी था। बेटमैनके आज्ञानुसार मनोहर, धाँधू बहादुर और कृपारामका, ज़मानतदार हुआ।

बेटमैनने इन महालोंके ज़मींदारोंको निकालकर स्वयं उन महालोंका ठेका ले लिया। किन्तु महालका जो कुछ राजस्व वसूल हुआ था, सब उन्होंने स्वयं हड़प कर लिया। कम्पनीका राजस्व १३०००) रुपया पावना बाकी पड़गया। रायरायाँ के १३०००) रुपया बाकी पड़नेकी रिपोर्ट होनेपर जाँच शुरू हुई। तब मनोहरको रुपयोंके लिए पकड़नेपर उसने दर्खास्त दी कि धाँधू बहादुरके नामका कोई भी आदमी नहीं था। धाँधू बहादुर और कृपारामके नामका मोहर बेटमैन साहबने तैयार कराकर अपने पास रख छोड़ा था। बेटमैन स्वयं इन दोनों महालोंके ठेकेदार थे। और मैंने उनके कहनेके अनुसार ज़मानत किया था।" (vide note (2) in the appendix)।

"इसमें विशेषता ही क्या ? ऐसा तो सभी जगह हुआ करता है। श्रीहट्टमें क्या हुआ था ?"

"श्रीहट्टके मामलेमें स्वयं बारवेल साहब भी शामिल थे, इसी लिए कोर्ट औव डाइरेक्टर्सको सन्देह हुआ। राजस्व-जाँच-कमेटी (Committee of circuit) ने श्रीहट्टके राजस्वके बदले ६१ हाथी लेनेका बन्दोबस्त किया। लेकिन जिस व्यक्तिके नाम ठेकेदारीका पट्टा कबूलियत लिखा गया था, उस नामका कोई आदमी श्रीहट्टमें नहीं था। श्रीहट्टके रेज़ीडेंट थैकरे साहबने स्वयं इन तमाम महालोंका ठेका एक कल्पित नामसे लिया था—उन्होंने हाथीके मूल्यकी बाबत जाँच-कमेटीसे और भी ३३०००) रुपया अग्रिम लिया था। और थोड़ेसे हाथी जो उन्होंने भेजे, वे भी रास्तेमें समाप्त हो गये। केवल सोलह हाथी पटने पहुँच सके। श्रीहट्ट-के इस गोल-मालमें कोर्ट औव डाइरेक्टर्सने हेस्टिंग्ज़

और बारवेल दोनोंको खूब फटकारा। (vide note (3) in the appendix) ।"

"यह तमाम गोलमाल शीघ्रही मिट जायगा। अंगरेजोंके लिए सात खूनकी माफी है। किन्तु मैं आपसे एक बात कहने आया हूँ। आप प्रतिज्ञा कीजिए कि आप मेरा कोई अनिष्ट नहीं करेंगे, और मैं भी प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपका कोई अनिष्ट न करूँगा। आप जिसलिए हमपर असन्तुष्ट हुए हैं उसे मैं समझता हूँ, किन्तु वह औरत भाग गयी है, कहीं उसका अनुसन्धान नहीं मिला।"

"हम कभी भी आपका अनिष्ट नहीं करेंगे। इस विषयमें आप निश्चिन्त रहें। अब प्रौविंशल काउन्सिलका टूट जाना ही अच्छा है। दो-तीन वर्षोंके बाद किसी प्रकारका परिवर्तन न होनेसे, एक-आध नया आईन जारी न होनेसे, सरकारी कर्मचारियोंको कुछ भी लाभ नहीं होता। आप कुछ काल यहांपर ठहरिए, देखिये कलकी काउन्सिलमें क्या नियम पास होता है। इसके बाद जो कुछ हो हमलोग आपसमें ठीक कर लेंगे।"

"अच्छा तो अब नमस्कार। अबसे हमारे और आपके बीचमें यह तै हो चुका कि न आप हमारे लिए कोई अनिष्ट चेष्टा करें और न मैं आपके लिए करूँ। मैं उस औरतकी खोज अभीतक कर रहा हूँ।"

यह कहकर द्वितीय व्यक्ति दीवान गंगागोविन्दसिंहसे विदा होकर चला गया।

इस द्वितीय व्यक्तिका नाम राजा देवीसिंह था। जब मोहम्मद रेज़ाखाँ नायब सूबेदार थे, उस समय राजा

देवीसिंहको पुर्नियाके राजस्व वसूल करनेका भार मिला था। किन्तु इनके अत्याचारसे पुर्निया प्रायः जनशून्य हो गयी थी। रेज़ाखांकी पदच्युति होनेके बाद सन् १७७२ ई० में जब वारेन हेस्टिंग्ज़ जाँच-कमेटी (Committee of circuit) के सभापति हुए, उस समय आपने राजा देवीसिंहको पदच्युत किया था। किन्तु १७७३ ई० में जब कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, वर्धमान, ढाका, पटना और दिनाजपुरके राजस्व वसूल करनेके लिए एक-एक प्रौविंशल काउन्सिल स्थापित की गयी, तब हेस्टिंग्ज़ साहबने राजा देवीसिंहको मुर्शिदाबाद काउन्सिलकी दीवानीपर फिरसे नियुक्त किया। प्रौविंशल काउन्सिलके मेम्बरान प्रदेशके राजस्व—आदाय—सम्बन्धी नियमके विषयमें कुछ भी नहीं समझते थे। मुर्शिदाबाद काउन्सिलका तमाम काम देवीसिंह अपने इच्छानुसार किया करते थे। बहुतेरे ज़मीदारोंको उनके महालसे निकालकर स्वयं उन सब महालोंका अपने नाम बेनामी ठेका ले लिया करते थे। इसके अतिरिक्त देवीसिंह अंगरेज़ोंको मुट्ठीमें लानेके लिए तरह तरहके कौशलोंकी रचना किया करते थे। आप सर्वदा अपने साथ १०-१२ स्त्रियोंको रक्खा करते थे। प्रौविंशल काउन्सिलके अंगरेज़ कर्मचारियोंके पास प्रयोजन होनेपर इनमेंसे दो-एक स्त्रियोंको भेज दिया करते थे। इससे अंगरेज कर्मचारी लोग देवीसिंहपर विशेष कृपा रखते थे।

किन्तु हमेशा किसीकी एकसी नहीं चलती। सन् १७७८ ई०के कुछ पहले ही मुर्शिदाबादकी प्रौविंशल काउन्सिल देवीसिंहपर अत्यन्त असन्तुष्ट होकर उन्हें बर्खास्त करनेके लिए उद्यत हुई। देवीसिंह फिर किसी प्रकारसे उसको सन्तुष्ट न कर सके। इससे अब आप हेस्टिंग्ज़ साहबका

आश्रय ग्रहण करनेके लिए कलकत्ते आकर (हेस्टिंग्ज़के) प्रियपात्र गंगागोविन्दसिंहके शरणागत हुए ।

तीसरा परिच्छेद

राजस्वकी वसूली या डकैती

ईस्ट इंडिया कम्पनीको बंगाल, बिहार और उड़ीसाकी दीवानी मिलनेपर, राजस्व—आदायके उपलक्षमें अङ्गरेज़ोंने भिन्न-भिन्न श्रेणीके भूम्याधिकारियोंपर जिस प्रकार अत्याचार और निष्ठुर व्यवहार किया था, उन सभोंका संक्षेपमें उल्लेख किये बिना इस उपन्यासकी लिखी घटनाएँ हमारे पाठकोंकी समझमें नहीं आ सकतीं ।

सन् १७६५ ई०में ईस्ट इंडिया कम्पनीने बङ्गाल, बिहार, और उड़ीसाकी दीवानी पायी । लेकिन राजस्वकी वसूलीका भार नायब सूबेदार रेज़ाखांके हाथमें ही रहा । कापुरुष मुहम्मद रेज़ाखां अंगरेज़ोंको प्रसन्न करनेके अभिप्रायसे गरीब प्रजापर अत्याचार करने लगा और दुःख देकर अधिक कर वसूल करने लगा । राजा देवीसिंहने पुर्नियाकी रहनेवाली प्रजा और भूम्याधिकारियोंपर घोर निष्ठुराचरण किया । यहाँतक कि इज़्ज़तदार ज़मीदारों और ताल्लुकेदारोंके घरकी स्त्रियोंको भी पकड़वाकर कचहरीमें उपस्थित कराया । लेकिन निष्ठुर और अत्याचारीका पद और प्रभुत्व कभी चिरस्थायी नहीं हो सकता । अत्याचारी राजा अथवा शासनकर्त्ता शीघ्रही पदच्युत होता है । अत्याचार ही राज-विप्लवका मूल कारण है ।

सन् १७७० ई०के दुर्भिक्षके बाद ही मुहम्मद रेज़ाखां

पदच्युत हुए। बंगालके गवर्नर वारेन हेस्टिंग्ज़ने स्वयं राजस्वके आदायका भार ग्रहण किया। लेकिन दुर्भिक्षके समय बंगालके प्रायः तृतीयांश कृषकोंके प्राण विनष्ट हो चुके थे, इसलिए बंगालके राजस्वका क्रमशः ह्रास होने लगा। तब वारेन हेस्टिंग्ज़ने राजस्वकी वृद्धिके लिए ज़मीदारोंपर कर बढ़ाया और उनको अपनी पैतृक ज़मीदारीसे निकालकर अनेक कुचरित्र बेनियन और दुष्ट लोगोंको उन ज़मीदारियोंका ठेका देना शुरू किया। ये तमाम नये ठेकेदार प्रजाका सर्वनाश कर उनका सर्वस्व लूटने लगे।

पुराने ज़मीदारोंमेंसे बहुतसे ज़मीदार अत्यन्त स्नेहके कारण अपनी-अपनी प्रजाकी रक्षा करने लगे। वे अपनी प्रजापर कभी अत्याचार नहीं करते थे। वे अच्छी तरह जानते थे कि प्रजाके विनष्ट होनेसे उनकी ज़मीदारी कभी सुरक्षित नहीं रह सकती। लेकिन जिन अर्थ-लोलुप बेनियन और महाजनों-के हाथ हेस्टिंग्ज़ने पुराने ज़मीदारोंकी ज़मीदारी छीनकर ठेका देना शुरू कर दिया था, वे प्रजाके अच्छे-बुरेका कुछ भी ख्याल नहीं करते थे। वे केवल दो या एक सालके लिए किसी परगनेका ठेका ले लिया करते थे। इसीलिए वे अपनी ठेकेदारीकी मियाद पूरी होनेके पहले प्रजासे जिस प्रकार हो सकता था छल-बल अथवा कौशलसे जितना ज़्यादा रुपया वसूल कर सकते थे वसूल कर लिया करते थे। यदि किसी गांवकी २-४ घर प्रजा भाग कर दूसरे किसी गांवमें चली गयी तो उस गांवकी बची हुई प्रजासे भागे हुओंका बकाया देन वसूल कर लिया जाता था। इन ठेकेदारोंके अत्याचारसे देशमें हा-हाकार छा गया और उनके प्रहारसे लोगोंके प्राण विनष्ट होने लगे।

कोई-कोई ठेकेदार ज़मीदारी पानेकी आशासे इतना देन बढ़ाकर लेते थे कि, उन लोगोंको गवर्नमेन्टका रुपया देना कष्ट-साध्य होता था; इसलिए उन लोगोंसे कम्पनीका प्राप्य राजस्व वसूल नहीं होता था। ऐसे ठेकोंसे गवर्नमेन्टकी आमदनी दिनोदिन कम होने लगी।

तब हेस्टिंग्ज़ साहबने कम्पनीका बकाया रुपया वसूल करनेक लिए उस समयके चालू नियमके अनुसार, जिन अंगरेज़ कर्मचारियोंको नियुक्त किया, काल पानेपर वे लोग भी अत्यन्त प्रजा-पीड़क हो उठे।

सन १७७७ ई०के तारीख १४ मईकी नियमावलीके पंज-साला मियादके अनुसार देशके कुल ज़मीनका बन्दोबस्त किया गया। हेस्टिंग्ज़ साहबने स्वयं जांच-कमेटी (Committee of circuit) के अध्यक्ष (president) होकर भिन्न-भिन्न जिलोंकी ज़मीनका सबसे ज्यादा वोली बोलनेवालेके साथ बन्दोबस्त किया। इसी बन्दोबस्तके बाद प्रत्येक ज़िलेके कर्मचारियों-को कलक्टरकी उपाधि देकर राजस्व वसूल करनेका भार दिया गया।

लेकिन कोई-कोई कलक्टर अपने जिलेके पुराने ज़मीदारों-को हटाकर किसी दूसरेके नामसे स्वयं ठेका लिया करते थे और उससे जो कुछ कर वसूल होता था डकार जाते थे। वे ईस्ट इंडिया कम्पनीको उसके प्राप्य राजस्वका कुछ भी नहीं देते थे। इस रीतिसे कम्पनीका बहुत धन बकाया पड़ गया। हेस्टिंग्ज़ स्वयं घूस लिया करते थे। इसलिए इन अंगरेज़ कलक्टरोंका शासन करना उनके लिये असाध्य था। इन लागोंका शासन करनेसे उनका दोष भी विलायतमें प्रकाशित हो जायगा, इस आशङ्कासे उनको चुप रहना ही

पड़ता था। अन्तमें हेस्टिंग्ज़ने कोई दूसरा उपाय न देखकर कलक्टरीके पदको तोड़ दिया। राजस्वकी वसूलीका भार फिर बंगाली कर्मचारियोंको दिया गया, और उन्हीं बंगाली कर्मचारियोंका काम देखनेके लिए पटना, मुर्शिदाबाद वर्धमान, दिनाजपुर, ढाका और कलकत्ता इन छः जिलोंके छः प्रौविंशल काउन्सिल अर्थात प्रान्तीय-राजस्व-समितिकी स्थापना हुई। पूर्व परिच्छेदके परिचित राजा देवीसिंह मुर्शिदाबाद प्रौविंशल काउन्सिलके दीवानके पदपर नियुक्त किये गये और गंगागोविन्दसिंह कलकत्तेके प्रौविंशल काउन्सिलके दीवान हुए। ये दोनो हेस्टिंग्ज़के विशेष प्रियपात्र थे। लेकिन पंजसाला बन्दोबस्तकी मियाद पूरी होनेपर नये बन्दोबस्तका समय आ उपस्थित हुआ। प्रौविंशल काउन्सिलकी स्थापनाके समय यह निश्चय किया गया था कि यह बन्दोबस्त भी इन्हीं लोनोंके हाथ रहेगा। लेकिन उन लोगोंके हाथमें रहनेसे गवर्नर जेनरल हेस्टिंग्ज़का कोई लाभ नहीं था, इसलिए अब हेस्टिंग्ज़ साहब प्रौविंशल काउन्सिलको तोड़नेके अभिप्रायसे कोर्ट आव् डाइरेक्टर्सको बराबर पत्र लिखने लगे, लेकिन कोर्ट आव् डाइरेक्टर्सने उनकी बातपर ध्यान ही नहीं दिया (vide note (4) in the appendix)।

प्रौविंशल काउन्सिलको तोड़नेका विशेष कारण था। सिताबरायके पुत्र कल्याणसिंहने पटना-विभागकी बहुतसी ज़मीनका किसीके साथ बन्दोबस्त करनेके लिए गवर्नमेन्टको पत्र लिखा। इधर कल्याणसिंहके कर्मचारी खेलाराम बाबूने आकर, दोवान गङ्गागोविन्दसिंहके द्वारा हेस्टिंग्ज़को ४०००००) चार लाख रुपया घूस देनेका प्रस्ताव भी किया। हेस्टिंग्ज़ने कल्याणसिंहसे ही ज़मीनका बन्दोबस्त करना स्वीकार किया।

किन्तु पटनाके प्रौविंशल काउन्सिलने लिखा कि कल्याण-सिंहने जो राजस्व देना स्वीकार किया है उसकी अपेक्षा अधिक देनेपर इन ज़मीनोंका बन्दोबस्त हो सकता है। इस-पर हेस्टिंग्ज़को कुछ विपद्ग्रस्त होना पड़ा। कारण यह था कि यदि कल्याणसिंहके साथ बन्दोबस्त नहीं होता है तो चार लाख रुपयोंसे हाथ धोना पड़ता है।

हेस्टिंग्ज़के विपक्ष दलवालोंमेंसे दोकी तो मृत्यु हो ही चुकी थी; तथापि फ्रान्सिस, फ़िलिप और ह्विलरसाहब हेस्टिंग्ज़के कामोंका प्रतिवाद करते हुए काउन्सिलकी कार्यवाहीकी पुस्तक (proceeding book) पर कभी-कभी अपने मन्तव्योंको लिख दिया करते थे, इनको देखकर कोर्ट आव् डाइरेक्टर्स हेस्टिंग्ज़के बुरे मतलबोंको सहजमें ही समझ लिया करता था।

किन्तु असच्चरित्रके मनुष्य प्रायः निर्लज्ज हुआ ही करते हैं। काउन्सिलके मेम्बरोंने कई बार हेस्टिंग्ज़को स्पष्ट रूपसे घूसखोर कहकर अपमानित किया था (vide note (5) in the appendix), तिसपर भी हेस्टिंग्ज़को लज्जा नहीं आती थी। पंजसाला बन्दोबस्तकी मियाद पूरी होते ही वे प्रौविंशल काउन्सिलको तोड़नेकी चेष्टा करने लगे। लेकिन किस कौशलसे प्रौविंशल काउन्सिलको उठा सकते थे इसका कोई निर्णय नहीं करपाते थे। इधर उन्होंने अपने प्रिय गङ्गा-गोविन्दसिंहके साथ परामर्श कर सन् १७७६ ई०को फिरसे जांचके लिये एन्डर्सन और बारवेलको नियुक्त किया। हेस्टिंग्ज़ने सोचा कि उनलोगोंकी जांचकी रिपोर्ट आनेपर प्रौविंशल काउन्सिलको उठा देनेकी चेष्टा करेंगे।

हेस्टिंग्ज़के विपक्ष दलवाले हेस्टिंग्ज़को घूसखोर और पक्षपाती समझकर घृणा करते थे। उन लोगोंके ऐसा करने-

का साफ़ कारण था। सन् १७७२ ई०को रेगुलेशन (regulation) द्वारा नियम बनाया गया था कि कोई अंगरेज़ कलक्टर या उनके अधीनस्थ कोई कर्मचारी किसी तरहका ठेका नहीं ले सकता। लेकिन हेस्टिंग्ज़के बेनियनकान्त पोद्दारने कमसे कम १६ परगनोंका ठेका लिया था और उन परगनोंके मालिक पहलेके ज़मींदारोंको, उनकी पैतृक सम्पत्तिसे हटा कर, उनके हक़से वञ्चित किया था। मुंगेरके कलक्टर बेटमैन साहबने धाँधूबहादुर नामके एक कल्पित आदमीके नाम मुंगेर और कारिकपुर परगनेकी ज़मींदारीका ठेका स्वयं ले लिया था। थैकरे साहबने श्रीहट्टके ज़मींदारीका ठेका किसी कल्पित नामसे स्वयं लिया। थैकरे साहबके इन सब कपटपूर्ण कार्य्योंमें काउन्सिलके दूसरे मेम्बर बारबेल साहब भी लिप्त थे, इसी कारण अनुमति मिल गयी थी।

थैकरेके कुकर्मोंको छिपानेके लिए गवर्नर जेनरल और बारवेलने विशेष चेष्टा की थी, यह कोर्ट आव् डाइरेक्टर्सके पत्रोंसे साफ़ मालूम होता था। फिर वर्धमानकी रानी और राजशाहीकी रानीभवानीके साथ हेस्टिंग्ज़ और बारवेलने अत्यन्त अन्याय किया था। बारबेलने अपने दोषोंको छिपानेके लिए वर्धमानकी रानीके नाम विलायतमें मिथ्या अपवाद प्रचार करनेकी चेष्टा भी की थी। उन्होंने नितान्त कापुरुषकी तरह वर्धमानकी रानीको घृणित वेश्या कहकर तथा परम धार्मिक राजा रामकृष्णको मिथ्यावादी कहकर प्रसिद्ध किया था।

वस्तुतः ईस्ट इंडिया कम्पनीके प्रारम्भसे ही सर्वदा इस देशके सत् और असत् मनुष्योंका परिचय हो रहा है। देवीसिंहसे दुश्चरित्र मनुष्य ही राज-सरकारमें विशेष आदर पानेमें समर्थ हो सके हैं।

हेस्टिंग्ज़की काउन्सिलके अन्य मेम्बर फ़िलिप फ्रान्सिसने देशीय पुराने ज़मीदारोंके साथ चिरस्थायी बन्दोबस्त करनेके लिए बारंबार अनुरोध किया था, किन्तु हेस्टिंग्ज़ने उनकी बातोंपर ध्यान तक नहीं दिया। ज़मींदारोंका अधिकार भूमिपर है, इसको वे कभी स्वीकार नहीं करते थे। किन्तु कालक्रमसे फ्रांसिसके मतानुसार ही भावी गवर्नर जेनरल कौर्नवालिसको काम करना पड़ा। उस घटनाके १२ या १४ वर्षके बाद सन् १७९३ ई०में लॉर्ड कौर्नवालिसने ज़मींदारोंके साथ चिरस्थायी बन्दोबस्त कर लिया। भूमि-सम्बन्धी चिरस्थायी बन्दोबस्तसे ही अंग्रेजोंका राज्य दृढ़ हुआ। उसी समयसे ही देशीलोग अंग्रेजोंपर थोड़ा-बहुत अपना विश्वास स्थापन करनेमें समर्थ हुए।

चौथा परिच्छेद

श्वशुर और पुत्रवधू

माघका महीना है। सायंकालका समय है। प्राणनगर रास्तेके दोतर्फा खेतोंमेंसे एक-एक बोझ पुआल सिरपर रखे हुए तीन किसान अपने-अपने घरकी तरफ जा रहे हैं। रास्तेके दोनों तरफ विस्तृत भूमि पड़ी हुई है। किन्तु अधिकांश खेतोंकी पैदावर तीन सालसे नहीं हो रही है। जगह-जगह केवल धानकी खेती दिखायी दे रही है। चार-पाँच वर्ष पहले इन्हीं खेतोंमेंसे असंख्य किसानोंके दल एक कतार होकर गाते हुए अपने-अपने घरको जाया करते थे। लेकिन आजकल प्राणनगर प्रायः प्राणियोंसे शून्य हो रहा है। रास्तेके पश्चिम तरफके खेतके पश्चिम ओर किसानोंकी दो एक झोपड़ियाँ

दिखायी दे रही हैं। आज केवल तीन किसान उन्हीं कुटियोंकी ओर चुपचाप चले जा रहे हैं। सभीके मुँहपर विषादकी रेखा खिंच रही है। जिस प्रकार धीरे-धीरे चल रहे हैं, उसीसे अनुभव होता है कि इनलोगोंके शरीरमें तनिक भी बल नहीं है। अन्न-कष्टसे इनके शरीर भी जीर्ण और दुर्बल हो गये हैं।

ये किसान जिस रास्तेसे अपने घरकी ओर जा रहे थे, वह सड़क दिनाजपुरके शहरसे प्राणनगरके जंगलमेंसे होकर ठाकुरगांव तक गयी है। इन किसानोंका घर प्राणनगरके उत्तरकी ओर है। ये लोग खेतोंमेंसे होकर अपने घरको जा रहे थे। इन तीनोंमें एक बहुत वृद्ध था, वह बेचारा उन दोनोंके बहुत पीछे पड़गया था। जो किसान आगे-आगे जा रहे थे, वे सड़कको पारकर दूसरे तरफ़के खेतोंमें उतर पड़े, पर यह वृद्ध सड़कपर चढ़ ही रहा था कि उसने देखा कि एक वृद्ध वैष्णव अपने कन्धेपर भिक्षाकी थैली रक्खे दक्षिणकी ओरसे सीधे उत्तरकी तरफ़ भागा जा रहा है। वैष्णवको देखते ही उस बूढ़े किसानने कहा "गोसाईंजी! आप जल्द घरको जाइए। आज कम्पनीके चार बर्कन्दाज़ोंको उत्तरकी ओर जाते देखा है"। वृद्ध वैष्णवने घबराकर कहा "रास्तेमें और एक आदमीने भी हमसे यही कहा, इसीलिए मैं दौड़ा जारहा हूँ। भाई बर्कन्दाज़ोंको किस ओर जाते देखा है?"

किसान—जी महाराज बराबर सीधे इसी ओर गये हैं। आप इन धानके खेतोंमेंसे होकर जाइए, तभी आप उनके पहले अपने घर पहुँच सकेंगे। इधर जब वे आये हैं, तब मालूम होता है आपकी ही तलाशमें आये हैं।

वृद्ध वैष्णव अब क्षणभर भी विलम्ब न कर दौड़ते हुए आगेकी तरफ बढ़ा। चारो तरफ अन्धकार छा रहा है। वृद्ध

फिर भी पागलकी तरह ज्ञान-शून्य होकर दौड़ने लगा। "हाय परमेश्वर! पुत्र गया, धन गया, सम्पत्ति गयी, तिसपर भी यह पापमय प्राण नहीं गये" यही कहते हुए कम-से-कम आधे घंटेमें वह एक झोपड़ीके दर्वाज़ेपर आपहुँचा।

इस झोपड़ीके पश्चिम तरफ और भी दो झोपड़ियाँ थीं। इन तीनों झोपड़ियोंके चारो तरफ जंगल था। झोपड़ीमें प्रवेश करनेके लिए जंगलमेंसे होकर जाना पड़ता था, किन्तु जंगलके बाहरसे झोपड़ियाँ दिखायी नहीं देती थीं।

कुटियाके द्वारपर आकर वृद्धके 'पुत्री! पुत्री!!' कहकर पुकारतेही एक रमणी दर्वाजेपर आकर खड़ी हुई। मालूम होता था, रमणीने अपना सिर दो तीन महीने पहलेसे ही घुटवा लिया था। क्योंकि उसके केश युवतियोंके केशकी तरह लम्बे न होकर बालकोंकी तरह छोटे-छोटे थे। पुरुषका वेश धारण करनेपर शायद वह १४ वर्षका बालक मालूम होती। इसका शरीर दुबला और मुखपर बालकोंसा भोला-पन दिखायी देता था। थोड़े गौरसे देखनेपर मालूम होता था कि वह अपने सौन्दर्यको छिपानेके लिए सर्वदा प्रयत्न किया करती है। किन्तु उसकी यह चेष्टा उसके सौन्दर्यकी और भी वृद्धि कर रही है। दीर्घ नासिका, विशाल नेत्र, और चित्राङ्कित भौहोंसे सजा हुआ उसका मुख-कमल, विषाद-मिश्रित पवित्रता और सरलतासे उद्भासित होकर और भी लावण्यमय हो रहा है। जिस सौन्दर्य्यके मूल केवल अङ्ग-प्रत्यङ्ग है, उसी सौन्दर्यको विषाद, दारिद्र्य, रोग और बुढ़ापा सहसा विनष्ट कर सकतो है; किन्तु जो आभ्यन्तरिक सौन्दर्य्यकी छाया है वह अवस्थान्तर होनेपर भी विकृत नहीं हो सकती। इस रमणीका सौन्दर्य्य इसके हृदयमें रहने-

वाली सद्भावनाओंका ही विकाश है। इसलिए यह विनाश-रहित सौन्दर्य्य है।

इस परम सुन्दरी रमणीका वयस २५ वर्षसे कुछही अधिक होगा, किन्तु देखनेमें वह बालिकाके सदृश थी। रमणी-के दर्वाजेपर आतेही वृद्ध बोल उठाः—

"पुत्री, सर्वनाश होना चाहता है। मालूम होता है कि दुरात्मा देवीसिंहने फिर हमारी खोजमें आदमियोंको नियुक्त कियो है। आज भिक्षा माँगने गया तब मार्गमें सुना कि इसी ओर कम्पनीके चार-पाँच बर्कन्दाज़ आ रहे हैं।"

"इसके लिए आप इतना डरते क्यों हैं? हम लोगोंका तो सब कुछ लेही चुके। अब फिर हमारा क्या करेंगे?"

"पकड़कर कैद करेंगे।"

"कैदमें रक्खेंगे, अच्छा, कारागारमें ही पड़े रहेंगे। धन, दौलत, मान-मर्य्यादा सब तो गया ही, अब तो केवल धर्म्मकी रक्षा करनी है।"

"पुत्री! देवीसिंह कैसा नर-पिशाच है, यह क्या तुम नहीं जानती। उसके हाथ पकड़नेसे क्या किसी युवतीके धर्म्म-की रक्षा हो सकती है? मुझे कैदमें रक्खेगा इससे मैं नहीं डरता, किन्तु यदि तुमको पकड़कर ले जायगा, तो मेरा लोक-परलोक सभी नष्ट हो जायगा। इसलिए मैंने यही अच्छा समझा है कि मैं स्वयं अपनेको पकड़ा दूँ। तुमसे जितना शीघ्र हो सके रूपा, जगा और वृद्ध दासीको साथ लेकर इस जंगलके अन्दर भाग जाओ।"

वृद्धकी बातोंको सुनकर युवतीके आँसू रुक न सके, रोती हुई वृद्धके पैरोंको पकड़कर कहने लगी—"मैं आपको छोड़कर कहां जाऊंगी। आपको जहांपर कैद रक्खेंगे वहीं

मैं भी कैद रहूँगी। तब तो मैं आपके ही पास रह सकूँगी। आप जब तृष्णातुर होकर पानी मागेंगे, तब मैं आपको पानी पिलाकर कारागारमें रहती हुई भी सुखी हूँगी। किसके लिए यह पापी जीवन धारण कर रही हूं? विधवाके लिए जीना केवल विडम्बना मात्र है। किन्तु इस दुःख और विपद्‌के होते हुए भी जब मैं आपको रसोई बनाकर क्षुधाके समय खिलाती हूँ, आपको तृषाके समय पानी पिलाती हूँ, क्लान्त होकर घर लौटनेपर मैं जब आपकी सेवा करती हूँ, तब मुझे अत्यन्त सन्तोष होता है। आज १२ वर्षसे मैं आपके ही पास हूँ, अब मैं आपको छोड़कर एक मुहूर्तके लिए भी अलग न हो सकूँगी। अब आपको मैं श्वशुर नहीं समझती। माताके समीप कन्या जिस प्रकार अपने मनके भावोंको सरलतासे प्रकट करती है उसी प्रकार मैं भी आपके सम्मुख अपने मनके सभी भावोंको प्रकट कर देती हूँ। आप मेरे श्वशुर नहीं हैं, आप मेरी माता हैं।"

"पुत्री! तुम कारागारमें जाओगी क्या मैं इसे सह सकता हूँ? तुम्हारे अपमानसे मेरा हृदय पुत्र-शोकसे अधिक दग्ध होगा। तुम इसी समय वृद्धाको साथ लेकर भाग जाओ।"

"अब हम लोगोंको मानापमानका क्या भय है? अब हमें लोक-लाजका क्या भय है? अब तो हम लोगोंका धन-दौलत, मान-मर्यादा सभी चला गया। अब यदि कोई भय है तो केवल धर्मका। धर्मकी रक्षा जिस प्रकार हो सकेगी करूँगी। बस, ईश्वरके सामने निर्दोष रहना चाहिए। अपनी अवस्थाको देखते हुए लोक-लाजको हृदयमें स्थान देनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। आपके आज गिरफ्तार होनेपर मैं अवश्य आपके साथ-साथ कारागारमें प्रवेश करूँगी।"

"पुत्री ! वे यदि हमारे साथ तुमको गिरफ्तार भी करेंगे तो भी तुमको हमारे साथ रहने न देंगे। कैदखानेमें भी अलग रहना पड़ेगा। किन्तु तुमको पकड़ लेनेपर देवीसिंह तुमको किसी कामासक्त अंगरेज़के पास भेज देगा। देवीसिंह बहुतेरे कामासक्त अंगरेजोंके अनुग्रहको प्राप्त करनेके लिए भद्रकुलकी महिलाओंको पकड़वाकर उनके पास भेज दिया करता है। अतएव अब एक क्षणका भी विलम्ब न कर इस वृद्धा दासी और हमारे इन विश्वासपात्र प्रजाको साथ लेकर यहाँसे भागो और श्रीकाशीजी चली जाओ।"

जब युवतीने यह समझ लिया कि वृद्ध श्वशुरके साथ कारागारमें जानेपर भी साथ नहीं रह सकती, तब निराश होकर आँसू बहाने लगी। थोड़ी देर बाद रोती हुई कहने लगी—"सती हो जाना ही मेरे लिए उचित था। आपके पुत्रकी सब बातें अब फल रही हैं। उस समय आपके समझमें भी नहीं आया और मैं तो एक अज्ञान स्त्री-जाति उनकी गूढ़ बातों-को क्या समझ सकती थी ?"

"पुत्री ! उस बच्चेकी तमाम बातें याद आनेपर बोध होता है कि स्वयं भगवान श्रीहरि अथवा किसी महापुरुषने हमारे घर जन्म लिया था। नहीं तो भविष्यमें क्या होगा, इसको उस बच्चेने कैसे बताया। बच्चेने जो कुछ कहा था सभी सामने आ रहा है। हाय ! हमने उसके कहनेके अनुसार काम नहीं किया, इसीलिए वह हमको छोड़कर चला गया। तुम्हारी सास परम साध्वी थीं। मालूम होता है उन्हींके पुण्यसे भगवान श्रीहरिने हमारे घर जन्म लिया था। बच्चेने हमसे बारम्बार कहा था 'आपके भाग्यमें बहुत कष्ट है, आपका सदाव्रत, आपकी अतिथिशाला, आपका दान-धर्म्म कोई भी

इस विनाशके पथसे रक्षा नहीं करेगा।' हाय! हाय!! बच्चेकी सभी बातें सत्य हुईं।"

"आपको छोड़कर हमारे श्रीकाशीजी जानेका कोई प्रयोजन नहीं। मैं इसी जंगलमें कुछ दिनों तक इन्तज़ार करूंगी। यदि चार-पाँच दिनोंके भीतर आपको छोड़ दिया, तो आपके लौटनेपर हम लोग एक साथ ही काशीजीकी यात्रा करेंगे। और यदि मैंने सुना कि आपकी प्राणहानि हुई है, तो निश्चय जानिएगा कि मैं अपने स्वामीकी मूर्ति कुशासे निर्माणकर उसीके साथ अवश्य चितारोहण करूँगी। सहमरणके सिवा हमारे लिए और कोई दूसरा पथ नहीं है।"

"पुत्री! मैं एक मुहूर्तके लिए भी तुमको दिनाजपुरकी सीमाके अन्दर रहने नहीं दे सकता। क्या देवीसिंहको नहीं मालूम है कि अब हमारी धन-सम्पत्ति कुछ भी नहीं है? उसीने तो हमको भिखारी बना डाला। फिर वह हमें क्यों पकड़वा रहा है, क्या तुम इसे नहीं समझती? हाय परमेश्वर! पूर्व-जन्ममें मैंने कितना पाप किया था? मनुष्यको क्या यह भी सह्य हो सकता है?"

"तो फिर क्यों पकड़ना चाहता है?"

"हमारा दुर्भाग्य! वह हम इस पाप मुँहसे तुम्हारे सामने कैसे कहें! बोध होता है कि उसने किसी दुष्टसे सुना है कि तुम परम सुन्दरी हो। यही कारण है कि तुम्हींको पकड़नेके लिए इतना षड्यंत्र रचा गया है। हमने सुना है कि मुर्शिदाबादके किसी ब्राह्मण (भट्टाचार्य) की विधवा स्त्रीको पकड़कर देवीसिंहने गंगागोविन्दसिंहको देना स्वीकार किया था। लेकिन उस ब्राह्मण-कन्याने देवीसिंहके घरसे भागकर अपने धर्म्मकी रक्षा की है। अब वह उस ब्राह्मण-कन्याके

बदले तुमको गंगागोविन्दसिंहके पास भेजेगा। अतएव तुम इसी क्षण यहांसे भाग जाओ।"

"(क्रोधसे) देवीसिंह अथवा गंगागोविन्दसिंहकी इतनी सामर्थ्य कहां कि हमारा धर्म नष्ट कर सके। आपके पुत्र बराबर हमसे यह कहा करते थे कि रमणियोंके इच्छापूर्वक अपने धर्म्मको परित्याग किये बिना पृथ्वीपर ऐसा कोई नहीं है, जो उनके धर्मको नष्ट कर सके। उस समय मैं उनकी बातोंका विश्वास नहीं करती थी। उनके साथ मैं इस विषयमें कितनाही तर्क-वितर्क किया करती थी! ग्रेसाहबके आदमियोंसे विवाद करनेके लिये कितना निषेध कियो था! उसपर वे विरक्त होकर हमसे बात तक नहीं करते थे। किन्तु अब मैं समझती हूँ कि वे जो कुछ कहा करते थे बिलकुल ठीक था। १२ वर्ष बीत चुका, नानाप्रकारके विपद् और विविध प्रकारके संकटोंमें पड़कर अब मैं स्वयं देख रही हूं कि, नारी-जातिके धर्मकी रक्षाका भार स्वयं परमात्माने अपने हाथमें ही रक्खा है। "दुर्बलके बल राम", इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। अपने धर्मको इच्छापूर्वक विसर्जित किये बिना कौन हमारा धर्म नष्ट कर सकता है? किन्तु हमारे लिए यह अत्यन्त कष्टकर हुआ कि अब इस हतभागिनीके निमित्त न मालूम वे आपको कितना कष्ट दें।"

रमणी इतना कहने न पायी थी कि, उच्छ्वाससे भरे हुए शोकावेगसे उसका गला भर गया और वह मूर्च्छित होकर भूमिपर गिर पड़ी। वृद्ध ब्राह्मणने उसको उठाकर अपनी गोदमें बिठा लिया। थोड़ी ही देरके बाद युवतीको ज्ञान हुआ और वह फिर कहने लगी—"हा परमेश्वर! इस अभागिनीके लिए ही इस परम धार्मिक वृद्धको इतना लाञ्छन सहन करना

पड़ेगा। इस हतभागिनीको तुमने इतना रूप और सौन्दर्य क्यों दिया। जिसके निमित्त नारि-जातिका रूप सौन्दर्य है, जब वे ही चले गये, तब रूप और सौन्दर्यकी क्या आवश्यकता थी? इसी क्षण मैं अपने नाक-कान काटूंगी, अपने शरीरको नोच-खसोट डालुँगी।"

यह कहकर रमणी अपने केशको नोचने-खसोटने लगी और बारम्बार अपना सिर पीटने लगी।

वृद्ध ब्राह्मणने स्नेहपूर्वक रमणीका हाथ पकड़ लिया। "आत्मघातिनी होनेसे क्या प्रयोजन? आत्मघात मत करो" यह कहकर वह उसको सान्त्वना देने लगा।

रमणी थोड़ी देर तक शान्त रही, फिर आवेगसे कहने लगी- "हा परमेश्वर, मैं सती क्यों न हो गयी? उस समय सती हो जानेसे समस्त यंत्रणा, समस्त कष्ट, दूर हो गये होते।"

फिर श्वशुरकी ओर देखकर बोली "वह भी तो आपका ही दोष है। आपके पुत्रने जो कुछ कहा था उसका एक शब्द भी मिथ्या नहीं हुआ। हा परमेश्वर! मैंने देवता पति पाया था। किन्तु उस समय मैंने उन्हें नहीं पहचाना। वे सर्वदा कहा करते थे 'कर्मफलसे कोई छुटकारा नही पासकता, कर्मफल सब किसीको भोगना पड़ेगा।' आपने मुझे उस समय सती होने नहीं दिया। अब वही कर्मफल आपको भोगना पड़ेगा।"

"पुत्री! यह समस्त कष्ट और यंत्रणा मेरे ही कर्म्मोंका फल है, इसमें कोई सन्देह नहीं। किन्तु मैं तुमको किसके मृत देहके साथ चितारोहणकी आज्ञा देता। दुरात्मा देवी-सिंहके प्रहारसे उस साल एकही दिनमें प्रायः २०-३० आदमि-योंकी मृत्यु हुई थी। काँटे सहित बेलके डंठों (vide note (8)

in the appendix) से मारकर उन बेचारोंका प्राण लिया गया था। जिन सब आदमियोंके मुँहपर चोट आयी थी, उनके मृत शरीरको देखकर उनको पहचानना कठिन था। उनके मुँहकी आकृति बिगड़ गयी थी। अपने बच्चेका मृत देह हजार कोशिश करनेपर भी मैं खोजकर निकाल न सका। दामादके मृत देहको देखते ही पहचान लिया था, इसीसे प्राणतुल्या स्वर्ण-प्रतिमा पार्वतीके सती होनेकी इच्छा प्रकट करनेपर, मैंने उसको चिरकालके लिए विदा देदी। यदि मैं अपने बच्चेके मृत देहका निश्चय कर पाता तो सरल हृदयसे तुमको अपने स्वामीके साथ स्वर्गारोहण करनेकी आज्ञा दे देता। इस यंत्रणाको भोगनेके लिए मैं कभी भी तुमको इस संसारमें रहनेकी आज्ञा न देता। तुमको देखतेही पुत्रशोकसे मेरा हृदय फटने लगता है, पुत्र शोकानल सौगुना बल उठता है। पुत्री! पुत्र–शोक क्या है, उसे तुम किस प्रकार जान सकती हो। तुमको तो सन्तान हुआ ही नहीं। पुत्र शोकानलका कभी निर्वाण नहीं होता। मालूम होता है कि पुत्र-शोकानल चिन्तानलसे मिलकर जब शरीरको जलाएगा, केवल तभी इस शोककी विस्मृति हो सकेगी।"

"मुझे साथ लेकर यदि आप उनके मृत देहका अनुसन्धान करते तो मैं अवश्य उनके मृत शरीरको खोजकर निकाल लेती। मैं उनके किसी हाथको देख लेती तो निश्चय करके कहती कि यह उन्हींका हाथ है। मैं उनके मस्तकके एक केशको सकड़ों आदमियोंके मस्तकके केशोंमेंसे पहचान कर निकाल सकती थी। मैं उनके हाथोंकी किसी उँगलीको देखकर निश्चय करके कह सक्ती थी कि उन्हीकी उँगली है।"

"यह असम्भव है। सब आदमियोंकी उँगलियाँ एकही

प्रकारकी होती हैं। मुखकी आकृतिको बिना देखे भला किसीको कोई कैसे पहचान सकता है ?"

"मैं सत्य कहती हूँ कि उनकी एक उँगलीको देखकर ही उनके मृत शरीरको खोजकर निकाल सकती थी। केवल मैं ही क्यों ? मुझे बोध होता है कि प्रत्येक पतिप्राणा रमणी अपने पतिके मस्तकको केवल एक केशसे ही दूसरोंके मस्तकके केशोंमेंसे चुन कर निकाल सकती है।"

"पुत्री ! क्या पितृस्नेहकी अपेक्षा पत्नी-प्रेमकी इतनी सूक्ष्म दृष्टि है ? पितृ-मातृ-स्नेहकी क्या पत्नीके प्रेमके आगे कुछ भी गिनती नहीं है ?"

"पितृ-मातृ-स्नेहकी अपेक्षा साध्वीके प्रेमकी अधिक सूक्ष्म दृष्टि होती है या नहीं, इसको मैं नहीं समझ सकती। किन्तु आपके पुत्रने ही एक दिन मुझसे कहा था कि साध्वीका निःस्वार्थ प्रेम ही स्वतंत्र आत्माका सम्मिलन सम्भूत है। इसलिए पुण्यवती माताके निःस्वार्थ स्नेहके तुल्य, साध्वीका प्रेम किसी अवस्थामें भी रूपान्तरित नहीं हो सकता। वे केवल यही कहा करते थे कि मातृ-स्नेह और साध्वीके प्रेममें ही ईश्वरके रूपका वर्तमान होना सम्भव है।"

"मेरा बच्चा ! बच्चा क्या तुम्हारे साथ भी ये सब बातें किया करता था ? हाय ! मेरे बच्चेको सर्वदा शास्त्रालाप और धर्मालोचना ही अच्छी लगती थी। इतने अल्प वयसमें बच्चेने कितने शास्त्रोंका अध्ययन कर डाला था।"

"वे सर्वदा ही मुझसे शास्त्रकी बातें कहना पसन्द करते थे। किन्तु मैं उनकी बातें नहीं समझती थी, उनकी बातोंको उस समय मन लगाकर सुनती भी न थी। कभी-कभी बिना समझे उनके साथ झूठही वादाविवाद कर बैठती थी।

इसीसे उनके प्रेमका संचार मुझपर नहीं हुआ। इतनेपर भी उन्होंने मुझे कभी कष्ट नहीं दिया, कभी कोई कड़ी बात भी नहीं कही।"

"मेरे बच्चेने कभी किसीको कष्ट नहीं दिया। दूसरोंके दुःख और कष्टको देखनेसे उसकी आँखें डबडबा आती थीं। हाय परमेश्वर! ऐसे सुपुत्रका शोक क्या कोई सह सकता है! मैं क्यों नहीं मर गया! जिस समय देवीसिंहका आदमी मुझको धरने आया, मैं भाग खड़ा हुआ! मेरे बच्चेने स्वयं उपस्थित होकर कहा "यदि मेरे वृद्ध पिताको धरनेकी चेष्टा करोगे तो अपने प्राणोंसे हाथ धो बैठोगे, मेरा नाम प्रेमानन्द गोस्वामी है, मैं स्वयं उपस्थित होता हूँ।" अहा! बच्चेका कैसा अद्भुत साहस था। यदि उस समय मैं उपस्थित होता तो मेरा बच्चा अपने प्राण न खोता। पुत्री! आज मैं अपने पुत्रके कार्य्यका अनुसरण करूँगा। मैं स्वयं अपनेको समर्पण करूँगा। तुम शीघ्र भागो।"

श्वशुरकी बातोंको सुनकर रमणी थोड़ी देरके लिए चुप रही। पीछे बहुत सोच-विचारकर भागना ही स्थिर किया। जिस कुटीमें बैठ कर श्वसुर और पुत्र-वधू बातचीत कर रहे थे, उसके थोड़ी ही दूरपर पश्चिमकी ओर और दो कुटियाँ थीं, उन्हीं कुटियोंमें से एकमें वृद्धा दासी रहती थी और दूसरेमें और दो आदमी रहते थे। उन दोनों आदमियोंमेंसे एकका नाम जगा और दूसरेका नाम रूपा था। जगा और रूपा रसोई बनानेके लिए लकड़ियाँ चुनने गये थे। वृद्धा अपने दूसरे कामोंमें लगी हुई थी। वृद्ध वैष्णवके पुकारते ही उनके सामने सब आकर खड़े हो गये। वृद्ध ब्राह्मणने उस समय वर्तमान घटनाको कहना शुरू किया। वृद्धकी बात

खतम होते ही स्वरूपकी मां, जगा और रूपा युवतीको साथ लेकर जंगलके अंदर घुस पड़े। इस तरफ़ वृद्ध ब्राह्मण अपनी कुटियासे बाहर निकलकर धीरे-धीरे प्राणनगरके रास्तेपर आ खड़ा हुआ। रास्तेपर खड़ा होकर उच्चस्वरसे हरिनाम-सङ्कीर्तन करने लगा। उसके सङ्कीर्तनका शब्द सुनते ही चार पाँच आदमियोंने "आज एक साला मिला, साला इसी जंगलके अंदर कहीं छिपा था" ऐसा कहतेहुए बड़ी खुशीसे दौड़कर वृद्धको पकड़ लिया और "अबे कहाँ अनाज छिपाकर रक्खा है, दिखा" यह कहकर वे उसे धमकाने लगे।

पाँचवाँ परिच्छेद

रामानन्द गोस्वामी

पूर्व अध्यायके परिचित वृद्ध ब्राह्मणका नाम रामानन्द गोस्वामी था, और, वे जिस रमणीके साथ बातचीत करते थे उसका नाम देवी सत्यवती था। देवी सत्यवती रामानन्द-की पुत्रवधू थीं। माल्दहके अन्तर्गत गौड़ नगरमें रामानन्द गोस्वामीका पैतृक वासस्थान था। माल्दह दिनाजपुर, रंग-पुर और पुर्निया इन चारों ज़िलोंके तमाम ज़मींदार और सम्पन्न लोग रामानन्द गोस्वामीके शिष्य थे। उनकी सब ब्रह्मस्व ज़मीनकी वार्षिक आय पचास हज़ार ५००००) रूपयोंसे कम नहीं थी। रंगपुर, दिनाजपुर और पुर्नियां सदृश स्थानोंके ज़मींदार और धनाढ्य रामानन्द गोस्वामीका सम्मान किया करते थे। बहुतेरे ज़मींदार विवाह अथवा श्राद्धादिकके उप-लक्षमें गोस्वामीजीको अपने भवनमें बुलानेके लिए दस-बारह हाथियों, आठ-नौ घोड़ों और दस-बीस नौकरोंको उनके यहाँ

भेज दिया करते थे। किन्तु गोस्वामीजीको उनके निमन्त्रण-की रक्षा करनेके लिए अवकाश नहीं मिलता था। उनके शिष्योंकी संख्या इतनी अधिक थी कि वर्षमें एक बार भी सब शिष्योंके यहाँ जाना उनके लिए सम्भव न था।

रामानन्द् गोस्वामी क्या स्वदेश और क्या विदेशमें सभी जगह परम धार्मिक वैष्णवके नामसे प्रसिद्ध थे। उनके मकान-पर एक बड़ी अतिथि-शाला थी। उनकी मधुर भाषिता और दान-शीलताके कारण माल्दहमें कभी किसीको अन्न कष्ट नहीं हुआ। देशके ग़रीब दुःखियोंको अन्नाभाव होनेपर परम वैष्णव रामानन्द् तत्क्षण उनके भरण-पोषणका भार ग्रहण करते थे।

रामानन्दकी सहधर्मिणी सुनीति देवी अत्यन्त सदाचा-रिणी थीं। वे सुसन्तानकी कामनासे तरह-तरहके व्रत और अनुष्ठान किया करती थीं। वे अपने मकानके चारो तरफ़ एक कोसके अन्दर किसी भूखेको अन्न-दान दिये बिना पानी तक नहीं पीती थीं। इसी कारण कोई दुःखी, दीन और भूखा है या नहीं, इसको जाननेके लिए दोपहरके समय दस-बारह दास और दासियोंको उनकी खोजमें चारो तरफ़ भेजा करती थीं। विशेष अनुसन्धानके बाद जब वे दास और दासियाँ लौटकर उनको यह समाचार देती थीं, कि कोई भी मकानसे एक कोसके अन्दर उत्तर, दक्षिण, पूरब और पश्चिममें भूखा नहीं है और जो कोई भूखा था भी, उसको भी अन्नदान दे दिया गया, तब सुनीति देवी अपने हाथोंसे हविष्यान्न बनाकर पहले अपने स्वामी देवताको खिलाया करती थीं, पश्चात् अपने स्वामीका प्रसाद ग्रहण किया करती थीं। परम वैष्णव रामानन्द् गोस्वामी निरामिष भोजन करते थे, इसी कारण

सुनीति देवी पातिव्रत धर्म्मके अनुरोधसे अपने पतिका अनुसरण करती थीं।

रामानन्द गोस्वामीको केवल दो सन्तान हुई थीं। एक पुत्र और दूसरी कन्या। उनके पुत्रका नाम प्रेमानन्द गोस्वामी और उनकी कन्याका नाम प्रभावती देवी था। रामानन्दजीने अधिक शास्त्रोंका अध्ययन नहीं किया था। परन्तु उनके पुत्र प्रेमानन्दजीने, बीस वर्षकी अवस्था प्राप्त करनेके पहले ही साहित्य, न्याय, दर्शन इत्यादि सब शास्त्रोंमें विशेष योग्यता प्राप्त कर ली थी। श्रीमद्भागवत इनको आदिसे अन्त तक कण्ठस्थ था। हमेशा किसीकी सुखसे नहीं कटती, आपत्ति अदृष्ट रूपसे सभीके मस्तकपर झूला करती है। कब किसके सिर आन पड़ेगी यह कोई नहीं कह सकता। तिसपर भी कभी-कभी यह प्रश्न लोगोंके दिलमें उठता है कि, ऐसे धार्मिक परिवारको भी परमात्मा विपत्तिसे नहीं छुड़ाते? ऐसे धार्मिक परिवारको यदि घटना-स्रोतमें बहते हुए विपद्-सागरमें निमग्न होना ही पड़े, तो फिर परमेश्वरको किस प्रकार "मंगलमय" कहा जा सकता है? इस प्रश्नके उत्तरमें हम लोग इतना कह सकते हैं कि जिन लोगोंने विज्ञान-चक्षुसे मानव-जातिके इतिहासका अध्ययन किया है, उन्हीं लोगोंके हृदयको इस प्रकारके सन्देह स्पर्श नहीं कर सकते।

रामानन्द गोस्वामीने अपने पुत्र और कन्या दोनोंका विवाह बड़े समारोहसे किया। किन्तु उनके पुत्रके विवाहके दो ही वर्ष बाद १७६० या १७६१ ई०में इनकी सहधर्मिणी सुनीति देवी परलोक सिधार गयीं। सुनीति देवीकी मृत्युके समय उनके पुत्र प्रेमानन्द अट्ठारह वर्षके, उनकी विवाहिता वधू दस वर्षकी और प्रभावती लगभग चौदह

वर्षकी थीं। प्रभावती अपने पतिके साथ पित्रालयमें ही वास करने लगीं और जननीकी मृत्युके पश्चात् पितृ-गृहकी सारी गृहस्थीका काम उन्हींके जिम्मे किया गया।

इस सुखी परिवारकी जीवन-नौका आज तक शान्ति वायु द्वारा परिचालित होकर आनन्दके श्रोतमें बहती हुई क्रमशः अमृतमय सागरकी ओर जा रही थी। किन्तु प्रत्येक मनुष्यका जीवन इस संसारमें दूसरोंकी जीवन-घटनाके साथ इस प्रकार जटिल सम्बन्ध रखता है कि एकके मंगल और अमंगलका फल, दूसरेके सत् और असत् कार्य्योंका फलाफल उभय पक्षके जीवनोंको परिवर्तित कर देता है।

रामानन्द गोस्वामीकी वर्तमान दुरवस्था जिस प्रकार आन पड़ी, उसको विस्तृत रूपसे कहनेके लिए, कई एक ऐतिहासिक घटनाओंका उल्लेख करना पड़ेगा।

सिराजुद्दौलाके बाद बंगदेशमें अंगरेज़ोंका प्रभुत्व आरंभ हुआ। जिस प्रकार रोम-साम्राज्यकी शेष अवस्थामें प्रेटरियनगार्ड नामी सैन्यदल रोमके हर्त्ता-कर्त्ता विधाता बन बैठे थे, उसी प्रकार अंगरेज़ लोग भी बंगालके प्रेटरियनगार्ड बन बैठे। रोमकी अन्तिम अवस्थामें वहाँके राजा चुननेकी क्षमता भी प्रेटरियनगार्डने अपने हाथों ले लिया था। उसी प्रकार बंगालमें भी अंगरेज़ोंने नवाबके परिवर्तन करने और मुकर्रर करनेका भार अपने हाथोंमें ले लिया। मुर्शिदाबादका नवाब कापुरुष मीरजाफ़र अँगरेज़ोंके भयसे सर्वदा शङ्कित रहता था। अंगरेजोंने इसी अवस्थामें देशको लूटना शुरू कर दिया। वाणिज्यके बहाने वे देशके साधारण मनुष्योंपर अत्याचार करने लगे।

माल्दहमें ईस्ट इन्डिया कम्पनीकी कोठीका ग्रे साहब नामी

एक बड़ी नीच प्रकृतिका अंगरेज़ अध्यक्ष था और माल्दह-का रहनेवाला रामनाथ नामक एक दुश्चरित्र नरपिशाच ग्रेसाहबका बेनियन होकर नियुक्त हुआ। अँगरेज़ लोग कभी किसी सच्चरित्र मनुष्यको अपना बेनियन नहीं बनाते थे। वे इस देशके चोर, डाकू, उठाईगीरे, व्यभिचारी, नर-हत्याकारी इत्यादि लोगोंको, और जो किसी प्रकारके बुरे कामोंको करनेमें किंचिन्मात्र भी कुण्ठित न हों अथवा सर्व प्रकारके कुकर्म्मोंको करनेमें अग्रसर हों ऐसे लोगोंको, कार्य्यकुशल समझकर अपनी कोठीमें गुमास्ता अथवा बेनियनके पदपर नियुक्त किया करते थे।

माल्दहके जिलेमें रामनाथके ऐसे धोखेबाज़ और धूर्त बहुत कम थे। इससे ग्रेसाहबने उसको अपने बेनियनके पदपर नियुक्त किया।

उन दिनों ईस्ट इन्डिया कम्पनीकी कोठीके साहब लोग कम्पनीकी ओरसे विलायत या चीनमें माल भेजनेके लिए बंगालके किसी एक बनियेसे कोई चीज़ खरीदनेपर विक्रेता-को नक़द दाम प्रायः नहीं दिया करते थे (Vide note (9) in the appendix)। कम्पनीके हिसाबमें रुपयेका ख़र्च लिखकर, उसी रुपयेसे साहब लोग अपने वाणिज्यके लिए दूसरा माल खरीद करते थे और उन्हीं मालोंपर डेवढ़ा या दूना लगाकर, मूल्यके रूपमें पहले बनियेके गले लगा देते थे। यह प्रथा गले लगाना या मढ़नेके नामसे कोर्ट औव डाइरेक्टर्स-के पुराने पत्रोंमें लिपिबद्ध है। इसी "मढ़नेकी प्रथा" के कारण बंगालके सैकड़ों वणिक् व्यवसायी एक ही बार अन्नहीन हो पड़े। बेचारे क्यों न अन्नहीन होते ? ईस्ट इन्डिया कंपनी-की कोठीवाले साहबोंने किसी ताँतीसे (हिन्दू कपड़ा बिननेवाले

जोलाहेसे) १०००) रुपयेका कपड़ा लिया। पर उसको नक़द एक कौड़ी न देकर, अध्यक्षसाहबने उसी हज़ार रुपयेके द्वारा अपने वाणिज्यके लिए १००० मन तम्बाकू खरीदा। बाद उन्हीं हज़ार मन तम्बाकूका दाम २०००) रुपये लगाकर उस तांतीके गले मढ़ दिया। बेचारे तांतीको हज़ार मन तम्बाकूके एवज़ १०००) रुपयेका कपड़ा और १०००) एक हज़ार रुपये नक़द देने पड़े। और फिर भी किसीके गले इस प्रकार तम्बाकू मढ़ देनेपर यदि उसको नक़द रुपयोंके देनेमें २-३ महीनोंकी देरी हुई तो उनके गुमास्ते उसी वक्त सिपाहियोंको साथ लेकर उसके घर-द्वार लूट लेते थे, यहां तक कि उसके घरकी स्त्रियोंके धर्म भी नष्ट कर डालते थे।

नवाबके कर्म्मचारीलोग अंगरेज़ोंके इन अत्याचारोंको रोकनेमें असमर्थ थे। फिर कोठीके साहबलोग कहा करते थे कि इस प्रकारकी "मढ़नेवाली सुप्रथाद्वारा" देशीलोगोंके विशेष उपकार होनेकी सम्भावना है, इससे वे विविध प्रकारके वाणिज्यको समझनेका लाभ उठा सकते हैं। यथा एक तांतीके, जो कपड़ेका रोज़गार करता है उसके, माथे तम्बाकू मढ़ देनेसे वह अनायास तम्बाकूका रोज़गार भी सीखले सकता है। इसी प्रकार खिष्टीय धर्म्मावलम्बी सर्वदेश और सर्वजन-हितैषी अंगरेज़ महात्मा लोग निस्वार्थ प्रेमद्वारा परिचालित होकर तांतियोंको तम्बाकूका रोज़गार, तम्बाकूवालेको नमकका रोज़गार और नमकवालेको चावलका रोज़गार सिखाने लगे। ऐसी शिक्षासे देश बिलकुल बर्बाद होने लगा।

इसके अतिरिक्त बहुतसे अंगरेज़ देशी लोगोंसे माल ख़रीद-कर उसका दाम तक नहीं देते थे। यदि कोई बनिया अंगरेज़ोंका माल ख़रीदनेसे इन्कार करता था अथवा किसी

फ्रांसीसी या ओलन्दाज़ोको कोई माल बेचता था तो अंगरेज़ उसको उचित दंड देते थे और उसकी स्त्रियों को बेइज्ज़त कर उसको जाति-भ्रष्ट कर दिया करते थे।

माल्दहमें ग्रे साहब और उनके बेनियन देशी बनियोंको इस प्रकार लूटने लगे। किन्तु मूलधनके न होनेपर वाणिज्य किस प्रकार हो सकता है, इसकी शिक्षाका भार जौन्स्टन, हे और बोल्ट साहबने अपने ज़िम्मे लिया। इन तीनों महात्माओंके व्यापारके साथ ईस्ट इन्डिया कम्पनीके व्यापारका कोई संबंध नहीं था। जौन्स्टन, हे और विलियम बोल्टने पुर्निया जिलेमें अपना संयुक्त व्यापार (वाणिज्य) जमाया। इनके गुमास्ता रामचरणदास देशी बनियोंसे प्रायः माल उधार खरीदा करते थे। इन लोगोंकी वाणिज्यकी रीति बहुतही सुन्दर थी। ये लोग किसी ताँतीसे हज़ार रुपयेका कपड़ा उधार खरीदकर उसे डेवढ़े दामपर किसी तम्बाकूवालेके सिर मढ़ देते थे, और उससे उस वस्त्रके एवज़में १५००) पंद्रहसौ रुपये उसी वक्त वसूल कर लेते थे, उन्हीं डेढ़ हज़ार रुपयोंमेंसे हज़ार रुपया मुनाफ़े बाबत रखकर ५००) पाँचसौ रुपये उस ताँतीको देकर फिर दो हज़ार रुपयेका कपड़ा उसीसे उधार लेते थे। इस उपायसे मूलधनके न रहनेपर भी व्यापारके चलानेमें कोई बाधा नहीं पड़ती थी। अतः मूलधनके न होते हुए भी किस प्रकार व्यापार किया जा सकता है, यह जौन्स्टन, हे, और बोल्ट साहबके प्रसादसे पुर्नियाके रहनेवाले अच्छी तरह सीखने लगे।

इसके पहले कहा जा चुका है कि रामानन्द गोस्वामीकी ब्रह्मस्व ज़मीन पुर्निया और माल्दहमें अधिक थी। रामानन्दके ब्रह्मस्व ज़मीनपर अधिकांश वाणिज्य-व्यवसाय करनेवाले

रहते थे। रामानन्द बड़े प्रजावत्सल थे। वे अंगरेज़ बनियोंके ऐसे अत्याचारोंसे अपनी प्रजाको रक्षा करनेकी चेष्टा करने लगे। उन्होंने माल्दहके ग्रे साहबके बेनियन रामदास और पुर्नियाके जौन्स्टन, हे और बोल्ट साहबके गुमास्ता रामचरण दासको अधिक घूस देकर वशमें किया, फिर तो वे रामानन्दकी, प्रजापर बहुतकम अत्याचार करने लगे। इस प्रकार रामानन्द अपनी प्रजाको थोड़े दिनोंके लिए अंगरेज़ोंके अत्याचारसे बचानेमें समर्थ हुए, किन्तु रामानन्दकी प्रजा बीस-तीस घरके अतिरिक्त पुर्निया और माल्दहके हज़ारों आदमियोंका, ग्रे साहब, उनके बेनियन रामनाथ, जौन्स्टन, हे, बोल्ट और उनके गुमास्ता रामचरणके अत्याचारोंसे, सर्वनाश हो गया। कितने तो अपनी जातिसे भी भ्रष्ट हो चुके थे जिनकी कोई गिन्ती ही न थी।

रामानन्दके पुत्र प्रेमानन्द स्वदेशके लोगोंपर इस प्रकारका भीषण अत्याचार होता हुआ देखकर सर्वदा अश्रुविसर्जन किया करते थे। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि ऐसी स-हृदय, सदाचारिणी, शान्त, सुशीला जननीके गर्भसे जन्म लेकर और इन अत्याचारोंको देखकर उनका हृदय विगलित हो। अंगरेज़ोंकी कोठीके आदमी आज किसीका घर लूट रहे हैं, तो कल किसी ग़रीब तांतीकी औरतका सतीत्व नष्ट कर रहे हैं। ऐसे भीषण कार्य्योंको देखकर प्रेमानन्दने इन अत्याचारोंको रोकनेका सङ्कल्प किया। किन्तु उनके पिता कोठीके आदमियोंसे झगड़ने नहीं देते थे। रामानन्द कहा करते थे "बच्चा! कम्पनीके आदमी हमारी किसी प्रजापर तो कोई अत्याचार नहीं करते, हमने बहुत स्तुतिवादकर ग्रे साहब और रामनाथको वशमें किया है। अब दूसरोंके लिए तुम

उन लोगोंसे झगड़कर अपने पाँव क्यों आप कुल्हाड़ी मारना चाहते हो ?" पिताके ऐसा कहनेपर प्रेमानन्दने कहा "इस देश-व्यापी अत्याचारको निवारण करनेकी कोशिश न करनेसे, यही अत्याचार क्रमशः दावाग्निकी तरह प्रज्वलित् होकर सारे देशको भस्म कर देगा। आज़ दूसरे दस आदमियोंपर अत्याचार हो रहा है, दो दिन बाद वही हमलोगोंपर भी होगा; विशेषतः बेचारे निरपराधी और अत्याचारसे पीड़ित लोगोंकी अत्याचारियोंके हाथसे रक्षा न करनेसे मनुष्य-धर्म्मकी रक्षा नहीं होती।"

रामानन्दजीने कहा कि हमलोगोंपर रामनाथ या ग्रे साहब कभी अत्याचार नहीं करेंगे, हमने बहुत स्तुतिवाद करके उनलोगोंको वशमें किया है। अब यदि तुम दूसरोंके लिये रामनाथके साथ शत्रुता करोगे, तो कल ही वे हम लोगोंपर अत्याचार करना शुरू कर देंगे। दूसरोंके लिए अपना सर्वनाश मत करो।

पिताकी ऐसी बात सुनकर प्रेमानन्द डबडबायी हुई आँखोंसे कहने लगे, "इस देशके प्रत्येक मनुष्यको उचित है कि वह अपने अपने प्राणोंको विसर्जितकर इन अत्याचारोंका निवारण करे। अब इन अत्याचारोंका बीज जड़से उखाड़नेकी चेष्टा न करने से, इसकी वृद्धि क्रमशः होती जायगी और युग-युगान्तर तक वही अत्याचार जन साधारणका जड़-मूलसे विनाश करेगी। अङ्गरेज़ लोग बड़े लोभी हैं, देशका सब धन येही शोषण करेंगे। इसीलिए हमने सोचा है कि फिर अब कभी रामनाथ किसी बनियेका घर लूटनेको आयेगा, उसी समय हम अपनी कई एक लट्ठबाज़ प्रजाको संग लेकर रामनाथको भगा देंगे, और निराश्रय ग़रीबोंको इनके आक्रमणसे बचायेंगे।

रामानन्द पुत्रकी ऐसी बातोंको सुनकर चौंक पड़े और बोले "बच्चा, क्या तुम पागल हुए हो? कम्पनी बहादुरसे युद्ध करोगे?"

प्रेमानन्दने कहा—"इससे कम्पनी बहादुरसे युद्ध होनेकी कोई सम्भावना नहीं है। यह लोग अन्यायपूर्वक दूसरोंपर अत्याचार करते हैं, हम इन लोगोंको कभी ऐसा करने न देंगे।"

रामानन्द पुत्रके कहनेपर किसी प्रकार सम्मत नहीं हुए। उन्होंने बिगड़कर कहा "तुम्हारे ही वजहसे हमारी विषय सम्पत्ति, मान-मर्य्यादा सभी मिट्टीमें मिलेगी। इसीसे तुम्हारी ऐसी दुर्बुद्धि हुई है। कम्पनीके आदमियोंसे स्वयं नवाब जाफर अलीख़ां भी डरते हैं। और तुम उसी कम्पनीके आदमियोंसे विवाद उठा रहे हो! तुम निश्चय पागल हुए हो! मैं तुमको घरके अन्दर बाँधकर रखूँगा।"

पिताद्वारा इस प्रकार तिरस्कृत होकर प्रेमानन्द क्रोधसे बोलउठे "आप मेरे पिता हैं—मेरे समीप साक्षात् ईश्वर हैं, यदि आप मेरे मस्तकपर पदाघात भी करें, तो भी मैं आपके पैरोंतले अपने मस्तकको झुकाकर रखूँगा। कभी भी आपको कोई कड़ा शब्द नहीं कहूँगा। किन्तु मैं आपसे निश्चय करके कहता हूं कि आपके भाग्यमें बहुत दुःख और यन्त्रणा लिखी है। कम्पनीके आदमियोंने जिन निरपराधिनी, निस्सहाया रमणियोंके धर्म्म नष्ट किये हैं, उन्हीं रमणियोंके अश्रुजलसे दावाग्नि उत्पन्न होकर इस देशको भस्म करेगी। उनकी क्रन्दन-ध्वनि और हाहाकार शब्द स्वदेशके प्रत्येक व्यक्तिको सहायताके लिए पुकार रही है। जो कोई इन लोगोंको सहायता देनेसे पीछे हटेंगे, अवश्य उनको इस देशव्यापी अत्याचारकी दावाग्निमें भस्म होना होगा। आपका सदाव्रत,

आपकी अतिथिशाला, आपका दान-धर्म्म कभी आपकी, इस विनाशके पथसे-इस समाजमें फैली हुई दावाग्निसे-रक्षा नहीं कर सकता। आप जिसको आत्मरक्षाका मार्ग समझते हैं, वह वास्तवमें आत्मविनाशका मार्ग है। आपने नरपिशाच रामनाथको घूस देकर उसको और भी अत्याचार करनेके लिए प्रोत्साहित किया है। मैं फिर भी आपसे कहता हूँ कि इस अत्याचारको जड़से उखाड़नेका अभीसे चेष्टा न करनेपर युगयुगान्तर तक इस अत्याचारका श्रोत बहेगा।

जो मनुष्य महाघोर मोहरूपी अन्धकारमें पड़े हुए हैं, भोगशक्तिने जिनलोगोंको अन्धा बना रक्खा है, अज्ञानतासे युक्त होकर अच्छे और बुरेके विचार करनेमें जो लोग बिलकुल असमर्थ हैं; उनलोगोंके हृदयको भी हृदयकी भाषा स्वर्गीय ज्योति और विजलीकी चमककी तरह क्षण भरके निमित्त उद्वेलित और आलोकित कर सकती है।"

प्रेमानन्दकी बातें सुनकर रामानन्द गोस्वामी चौंक पड़े। सुप्तोत्थितके समान आश्चर्य्यमें आकर पुत्रके मुखकी ओर एक टक देखने लगे। मुहूर्तभरके लिए उनके हृदयमें यह आया कि प्रेमानन्द जोकुछ कह रहा है वह बिल्कुल सत्य है। इससे थोड़ीदेर तकके लिए सिर नीचा कर सोचने लगे और फिर बोले "बेटा तब तुम क्या करना चाहते हो?"

प्रेमानन्दने कहा "हमलोग कम्पनी बहादुरके साथ युद्ध तो कर ही नहीं सकते। अब केवल यही रहा कि कम्पनीके वाणिज्यकी कोठीके साहब या उनके गुमास्ता जब किसी गरीबपर अत्याचार करेंगे, उस समय हमलोग अपने आदमियों-को इकट्ठाकर उस गरीबकी इनलोगोंके अत्याचारसे रक्षा करेंगे। दो या तीन बार यदि इन कोठियोंके गुमास्तों और

प्यादोंको मारकर भगा सकेंगे तो फिर ये लोग अत्याचार करनेका साहस नहीं करेंगे। विशेषतः आप यहांके प्रधान लोगोंमें से हैं। आप यदि इस पथका अवलम्बन करेंगे, तो देशके और दूसरेलोग भी आकर हमलोगोंका साथ देंगे। देशके सभी लोगोंकी यही इच्छा है कि इन दुष्टोंके वाणिज्यकी कोठियोंको गंगामें डुबा दिया जाय।"

पुत्रके कहनेके बाद रामानन्दने कहा—"इसके बाद यदि कम्पनीके साहबलोग कलकत्तेसे सिपाही लाकर युद्ध करना आरम्भ करें, तब क्या करोगे?"

प्रेमानन्दने कहा—"हमको नहीं विश्वास होता कि इन दो-चार बंगाली गुमास्तोंके पिटनेसे ही वे कलकत्तेसे सिपाही लाकर युद्ध करेंगे! किन्तु सोचिए यदि ऐसाही हुआ तब भी इस अत्याचारको न रोकनेसे देशके तमाम लोगोंको चिरकालके लिए यह दुःख सहना पड़ेगा। इस समय भयानक अत्याचार हो रहा है, इसको आजीवन सहन करनेकी अपेक्षा युद्धक्षेत्रमें अग्रसर होना ही अच्छा है। अभीतक आपके घरोंकी कुल-वधुओंका अपमान नहीं हुआ है इसीलिए, आप इस पथको अवलम्बन करनेमें अपनी अनिच्छा प्रकट कर रहे हैं। किन्तु सोचिए कि यदि वे आपकी कुल-वधुओंका अपमान करनेको उद्यत हों तो आप क्या युद्ध करनेसे हटेंगे?"

युद्धकी बात सुनकर रामानन्दको त्रास उपस्थित हुआ। प्रेमानन्दकी बातें सुनकर उनके हृदयमें जो कुछ भी परिवर्तन हुआ था वह भाव फिर स्थायी नहीं हुआ। रामानन्दने कहा "बेटा, पागल हुए हो! कम्पनीके साथ युद्ध! नवाब सिराजुद्दौलाको इनलोगोंने परास्त किया है। बेटा, तुम

इनसब विचारोंको दूर करो। हमारी प्रजापर अत्याचार करेंगे तब जैसा होगा देखा जायगा।"

तब प्रेमानन्दजीने दीर्घ निश्वास छोड़कर कहा—"केवल आपकी प्रजापरही क्यों अत्याचार करेंगे, पांच, सात वर्षोंमें यही अत्याचार तमाम देशमें फैलेगा। आज इन कपड़े बीननेवाले, तम्बाकूके व्यवसायी, सोनार इत्यादि लोगोंकी स्त्रियोंपर अत्याचार होही रहा है। पांच-सात वर्षके बाद ठीक यही अत्याचार आपके घरकी कुल-वधुओंको सहन करना पड़ेगा।

यह कहकर वे स्थानान्तरको चले गये। इसके बाद भी और दो-तीन दिनोंतक उनके पितासे वादाविवाद होता ही रहा। किन्तु इस वादाविवादका अन्तिम फल यह निकला किरामानन्द गोस्वामीने समझ लिया कि प्रेमानन्द सांसारिक कामोंको बिल्कुल नहीं समझता और रामानन्दके नातेदारोंने प्रेमानन्दको पागल समझ लिया।

*   *   *   *   *

प्रेमानन्दकी स्त्री सत्यवतीका वयःक्रम प्रायः बारह वर्षका हो चुका था। वे भी अपने पतिको क्षिप्त समझती थीं। अतएव प्रेमानन्दने विचार किया कि मालदहके मकानको छोड़कर स्थानान्तरमें किसी जगह जाकर कुछ दिनों तक वास करें। संयोगवश उनके पिताने ही उनको ब्रह्मस्व ज़मीनकी आमदनी वसूल करनेके लिए पुर्निया भेज दिया।

इसके पहले हम कह चुके हैं कि ये ही जौन्स्टन, हे और बोल्टसाहब पुर्नियामें वाणिज्य किया करते थे। मूलधनके न होनेसे वाणिज्य किस प्रकार चलाया जा साकता है, इस विषय-की शिक्षा देनेके सद् अभिप्रायसे, मालूम होता है इन्हीं तीन

महात्माओंने पुर्नियामें आदर्श वाणिज्यालयकी(Model firm) स्थापना की है। इनके गुमास्ता रामचरणदास पुर्नियाके लोगोंसे तमाम चीज़ें उधार खरीदा करते थे। किन्तु उन बेचारोंको उन चीज़ोंका मूल्य इस आदर्श वाणिज्यालयसे नहीं मिला करता था। मूल्यके न मिलनेसे ही क्या ? मृत्युके बाद भीतो मानव-आत्मा अनन्तकाल तक विचरण करती है। जौन्स्टन, हे और बोल्टसाहब खीष्टधर्म्मावलम्बी हैं। शायद उन्होंने यह सोचा हो कि बंगालियोंके पास रुपया होनेसे वे व्यर्थ खर्च कर देते हैं, इसीलिए तमाम चीज़ोंका दाम कुल रुपया एक साथही परलोकमें चलकर देंगे। क्योंकि वहाँ इन बंगाली महाजनोंको अपने रुपयोंको व्यर्थ खर्च करनेकी सुविधा न होगी। ये अंगरेज़ हैं, इनके ख़याल और उद्देश्य अच्छे तथा महान् हैं। बोध होता है, इसी सदुद्देश्यके कारण ये लोग खरीदी हुई चीज़ोंका दाम नहीं देते थे। फिर बंगालियोंका हृदय काला है। उन लोगोंके इन सदुद्देश्यों-को भला काले बंगाली क्या समझ सकते हैं।

प्रेमानन्दने पुर्निया पहुँचते ही वहांके बंगालियों और अन्य प्रान्तके बनियोंकी दुरावस्थाको सुना। जो बेचारे बनिये जौन्स्टन, हे और बोल्ट साहबके गुमास्तोंको उधार सौदा देनेसे इन्कार करते थे, गुमास्ते उनके घरमें घुसकर उनका तमाम माल-असबाब बलपूर्वक अपहरण करते थे। प्रेमानन्दजीने पुर्निया पहुँचतेही वहांके गवर्नर सियारअलीखांसे मुलाक़ात की। प्रेमानन्दजी नौजवान होनेपर भी अत्यन्त विद्वान और बुद्धिमान थे। गवर्नर सियारअलीखां बहादुर प्रेमानन्दसे बातचीत करनेपर अत्यन्त संतुष्ट हुए। सियार अली स्वयं जौन्स्टन, हे और वोल्टसाहबकी इस बाणिज्य-

नीतिके अत्यन्त विरोधी थे। किन्तु इनलोगोंको पुर्नियासे भगानेकी क्षमता उनमें नहीं थी, इसीलिए वे चुप हो रहे थे।

प्रेमानन्दने सियारअलीसे कहा "यदि आप नवाब क़ासिम अलीके पास इन अत्याचारोंके विषयमें पत्र लिखें तो मैं स्वयं उस पत्रको लेकर मुंगेर जाऊँ और नवाबसे मुलाक़ात करूँ।

सियारअलीने प्रेमानन्दकी बात मानकर जौन्स्टन, हे और बोल्टसाहबके गुमास्तोंके विरुद्ध उनके अत्याचारोंको नवाबके पास लिखा। प्रेमानन्द सियारअलीके पत्रको लेकर मुंगेर गये और नवाब क़ासिमअलीसे मिले। नवाब क़ासिम अलीने सियारअलीखांके पत्रको पढ़कर उसी वक्त उनको हुक्म भेजा "पुर्नियाकी तमाम प्रजाको परवाना द्वारा विदित करो कि अंगरेज़ोंको कोई भी उधार सौदा न दे। यदि कोई नवाबके इस परवानेकी अवमानना करेगा और अंगरेज़ोंको उधार सौदा बेचेगा तो बेची हुई चीज़ नवाब सर्कारमें ज़प्त कर ली जायगी और बेंचनेवालेको इसके अतिरिक्त और भी ज़ुर्माना देना होगा।"

पुर्नियामें उस समय जौन्स्टन, हे और बोल्टके सिवाय और कोई अंगरेज़ बनिया नहीं था। इसलिए बोल्ट साहबने इस परवानेकी बातको सुनते ही अत्यन्त कुपित होकर सियार अलीको धमकाकर एक पत्र (Vide note (10) in the appendix) लिखा। गवर्नर वेरेलेस्ट साहबके विरुद्ध बोल्ट साहबने इस घटनाके बारह वर्ष बाद जब मुकदमा पेश कियो उस समय बोल्ट साहबके इसी पत्रपर बड़ा ही आन्दोलन उपस्थित हुआ था। मीर कासिमके इस प्रकार पर्वाना जारी करनेकी वजहसे, जौन्स्टन और हे साहबने अंगरेज़ोंके साथ

मीर कासिमकी लड़ाई जिसमें जल्द पैदा हो, उसकी चेष्टा करने लगे। किन्तु उन सब ऐतिहासिक घटनाओंके साथ इस उपन्यासका कोई भी सम्बन्ध नहीं है। इसलिए प्रेमानन्दने इसके बाद जो कुछ काम किया था, केवल उसीका यहाँ उल्लेख करूँगा।

इस परवानेके जारी होनेपर जौन्स्टन, हे और बोल्ट साहबकी आदर्श वाणिज्यशाला पुर्नियासे उठ गयी। प्रेमानन्दने देखा कि चेष्टा करनेपर बहुतसे अत्याचारोंका निवारण हो सकता है। इसलिए उन्होंने माल्दह लौटते ही रामनाथके विरुद्ध गवर्नर वेन्सिटार्ट साहबके पास अभियोग उपस्थित करनेके अभिप्रायसे कलकत्ते जाना स्थिर किया। किन्तु उनके माल्दह लौटतेही मीर कासिमके साथ अंगरेज़ोंका युद्ध शुरू हो गया था, अतः इस समय कलकत्ते जानेसे कोई उपकार न होता। निदान प्रेमानन्द दो वर्षतक माल्दहमें रहे। उनके स्वजन उनको अब तक पागल समझते थे। उनकी स्त्री सत्यवती भी समय-समयपर उनका तिरस्कार करती थी।

*   *   *   *   *

मीर कासिमके सिंहासनाच्युत होनेके बाद मीरजाफ़र सिंहासनपर बिठाये गये। उस समय कम्पनीका अत्याचार और भी सौगुना बढ़ गया था। बंगालके वाणिज्य व्यवसायी और दूसरे लोगोंके दुःखका अन्त नहीं था। लेकिन माल्दहकी वाणिज्य कोठीके अध्यक्ष ग्रेसाहब अपने अनेकों कुकर्मोंके कारण कोर्ट आव् डाइरेक्टर्सकी तीव्र दृष्टिमें पड़जानेसे तुरन्त विलायत भाग गये। ग्रेसाहब बंगालके कुलाङ्गार रामनाथका एक बड़ा मुरब्बी था। इससे ग्रेसाहबके विलायत चले जानेपर १७६७ ई०में प्रेमानन्दने कलकत्ते जाकर

रामनाथके विरुद्ध लॉर्ड क्लाइबके पास अभियोग उपस्थित किया। किन्तु इन सब अभियोगोंके विचार होनेके पूर्व ही लॉर्ड क्लाइब विलायत लौटकर चले गये। वेरेलेस्ट साहब बंगालके गवर्नर नियुक्त हुए। वेरेलेस्ट साहबसे रामनाथकी कुछ अनबन थी, इसलिए रामनाथके विरुद्ध अभियोग होते ही वेरेलेस्ट साहेबने उसको अपराधी ठहराकर मुर्शिदाबाद जेलमें भेज दिया (Vide note (11) in the appendix)। रामनाथने विविध अत्याचार और अनुचित उपायोंसे जो कुछ धन-सञ्चय कर लिया था उसका अधिकांश उसको घूसकी तरह नवकृष्ट मुन्शीको देना पड़ा। इसी प्रकार पापात्मा रामनाथ थोड़े ही कालमें धन और प्राण दोनोसे गया।

प्रेमानन्दने सोचा कि माल्दह और पुर्नियाका अत्याचार अब क्रमशः कम हो जायगा; किन्तु उसकी यह आशा दुराशा मात्र थी। एक ग्रेसाहबके विलायत चले जानेसे क्या! दस नये ग्रेसाहब आनकर उपस्थित हो गये। एक रामनाथके मरनेसे या जेल जानेसे क्या हुआ! यहाँ बंगमाता सैकड़ों रामनाथ प्रति दिन पैदा करती रहती हैं।

ईस्ट इन्डिया कम्पनीके अत्याचारोंका ह्रास होना तो दूर रहा क्रमशः उसकी और भी वृद्धि होने लगी। विशेषतः कम्पनीको विहार और बंगालकी दीवानी मिलनेपर अंगरेजोंकी क्षमता और भी जमगई। उस समय उनके अत्याचारके स्रोतको कौन रोक सकता था!

प्रेमानन्द कलकत्तेसे माल्दह लौटकर चार–पांच वर्षतक अपने पिताके साथ रहे। उनको लोग पागल समझते थे। दूसरोंकी क्या कहें, उनकी स्त्री सत्यवती देवी भी उनके कार्य्य-कलापोंका अनुमोदन नहीं करती थीं। प्रेमानन्दने सोचा कि,

अन्ततः वे अपने स्त्रीको अपने मतानुसार बना लेंगे। इस अभिप्रायसे वे १७६८ ई०से १७७० ई० तक जब-तक, कि वे माल्दहमें थे, अपनी स्त्रीसे समय-समयपर अनेक प्रकारके शास्त्रोंकी आलोचना किया करते थे। सत्यवतीने इन्हीं दिनों अपने स्वामीसे बहुतेरे शास्त्रोंकी शिक्षा पायी थी।

* * * * *

१७७० ई०में बंगदेशमें घोर दुर्भिक्ष उपस्थित हुआ। रामानन्द गोस्वामी अत्यन्त प्रजावत्सल भूम्याधिकारी थे। वे अपने पुत्र, पुत्र-वधू, कन्या और जामाताको साथ लेकर अपनी प्रजाके प्राणोंकी रक्षाके लिए पुर्निया चले गये। पुर्नियामें उनकी ज़मींदारी कचहरीमें परिवारोंके रहने लायक मकान बना हुआ था। वे अपनी ज़मींदारी कचहरीमें आकर रहने लगे। उनके पास जो कुछ नगद रुपया था, उसे इस दुर्भिक्ष-पीड़ित प्रजाक प्राणोंकी रक्षाके लिए खर्च करने लगे। पहले जब-कभी रुपयोंकी कमी होती थी, तो शिष्य-मंडलियों-से उनको सहायता मिलजाती थी; किन्तु इस वर्ष उनके शिष्योंसे भी सहायता मिलनेकी कोई आशा न थी।

* * * * *

इस दुर्भिक्षके दो साल पहलेसे ही राजा देवीसिंहने पुर्नियाके अन्तर्गत् प्रायः सभी परगनोंका ठेका ले लिया था। पुर्नियाके राजस्व वसूल करनेका भार भी देवीसिंहके हाथमें ही था। १७७० ई०के दुर्भिक्षके कारण कोई ज़मींदार अपनी प्रजासे लगान एक पैसा वसूल नहीं कर सका था, बल्कि अपनी प्रजाके प्राणोंकी रक्षाके लिए प्रत्येक ज़मींदारको अपने पूर्वसंचित धनमेंसे उन लोगोंकी सहायता करनी पड़ी थी। किन्तु देवीसिंहने ईस्ट इन्डिया कम्पनीका बाकी लगान

वसूल करनेके लिए तमाम ज़मींदार ताल्लुकेदारोंको सरकारी कचहरीमें पकड़वाकर कैद किया। ज़मींदारोंके पास इस समय एक पैसा भी नहीं था। अत्यन्त प्रहार करनेपर भी देवीसिंहने उन लोगोंसे रुपया वसूल न कर पाया। अन्तमें उन्होंने ज़मींदार और ताल्लुकेदारोंके घरकी कुलकामिनियोंको पकड़कर कचहरीमें लानेका हुक्म दिया। देवीसिंहके प्यादे और बर्कन्दाजोंने उन कुल-कामिनियोंके स्वर्णाभरणोंका अपहरण किया। किसी-किसी ज़मींदार और ताल्लुकेदार-की अपमान करनेके लिए उनलोगोंके घरकी स्त्रियोंको नंगी करवा कर कचहरीमें खड़ा किया। जिन हिन्दू कुल-कामिनियोंने चन्द्र और सूर्य्यका मुख तक नहीं देखा था, उन लोगोंपर बंग-कुलाङ्गार देवीसिंहने ईस्ट इन्डिया कम्पनी-को सहायतासे भीषण अत्याचार करना शुरू किया।

रामानन्द गोस्वामीकी तमाम ज़मीन ब्रह्मस्वकी थी, किन्तु देवीसिंहने रामानन्दसे भी लगान तलब किया। ईस्ट इन्डिया कम्पनीके गवर्नर हेस्टिंग्ज़ इस बातको कभी स्वीकार नहीं करते थे कि किसीको निष्कर ज़मीन भोग करनेका अधिकार है। रामानन्दजीने देवीसिंहके डरसे राजशाहीकी रानी भवानीसे ५००००) पचास हजार रुपये कर्ज लेकर गत तीन वर्षका राजस्व चुका दिया। किन्तु १७७१ ई०में देवीसिंहने रामानन्दके ऊपर एक सालके राजस्वका फिर दावा किया। इस समय रामानन्दकी स्थिति एक पैसा देनेकी नहीं थी। कई दिनोंके बाद देवीसिंहने रामानन्दको गिरफ्तार करनेके लिए उनके ज़मींदारी कचहरीपर प्यादा और बर्कन्दाज़ भेज दिये। रामानन्द अपने परिवार सहित अभीतक अपनी ज़मींदारीमें थे। देवीसिंहका प्यादा उनको पकड़नेके

लिए आया है यह सुनकर वे भयसे हतज्ञान हो गये। उस समय प्रेमानन्दने उनको ढाढ़स देकर, कहा—"आप न डरें, स्वयं मैं हाज़िर होता हूँ। आप मेरे लिए चिन्ता न करें, अब यहां एक मुहूर्तका भी विलम्ब न कर शीघ्र अपनी पुत्र-वधू और कन्याको साथ लेकर रंगपुरमें किसी शिष्यके यहां आश्रय लें।"

पिताको इस प्रकार आश्वासन देकर प्रेमानन्द स्वयं बाहर निकल आये। उनके बाहर आनेके पहले ही देवीसिंहके आदमियोंने उनके बहनोईको पकड़ लिया था। प्रेमानन्दने देवीसिंहके बर्कन्दाजोंसे डांटकर कहा, "हमारा नाम प्रेमानन्द गोस्वामी है। हम स्वयं हाज़िर होते हैं। हम अभी कचहरी चलकर देवीसिंहका जो कुछ बाक़ी है, चुका देंगे। किन्तु इसे याद रखो तुमलोग हमारे वृद्ध पिताको पकड़नेकी कोशिश करोगे तो निश्चय तुम लोगोंको हमारे हाथों प्राण गँवाने पड़ेंगे। थोड़ा ठहरो, हम तुम्हारे साथ ही चलेंगे।"

यह कहकर प्रेमानन्द मकानके अन्दर जाकर एक तेज चाकू अपने कपड़ोंके अन्दर रखकर चले। उन्होंने अपने दिलमें यह सोच लिया था कि इसी अस्त्रके द्वारा देवीसिंहका प्राण विनष्ट कर अत्याचारीके हाथोंसे बंगदेशको मुक्त करेंगे।

* * * * *

देवीसिंहके प्यादे और बर्कन्दाजोंने प्रेमानन्द और उनके बहनोई राधाकृष्ण अधिकारीको खज़ानेकी कचहरीमें देवीसिंह-के सामने खड़ा कर दिया।

देवीसिंह तकियापर पीठ लगाये गद्दीदार बिछौनेसे भूषित् तख्तपोषपर बैठे हुए फ़र्शी पी रहे थे। कमरेके सामने बाहरकी तरफ़ तीस-चालीस ज़मींदारोंको देवीसिंहके सिपाही

बेधड़क पीट रहे थे। किसीके हाथ टूट रहे हैं तो किसीके शरीरमें जगह-जगह घाव हो गये हैं; किसी-किसीको तो हिलने तककी ताक़त नहीं है, ज़मीनपर बेहोश पड़े हुए हैं; किन्तु देवी-सिंह अब भी उनको प्रहार करनेका हुक्म दे रहा है। दो-एक चोट और देनेपर उनके सांसारिक दुःखोंके अंत होनेकी सम्भावना है। पापात्मा देवीसिंहके कमरेके ठीक सामने ही सिपाही लोग कैसा भीषण अत्याचार कर रहे हैं? मनुष्य क्या कभी इस प्रकारका अत्याचार कर सकता है? ज़मींदारोंकी सात-आठ कुल-ललनाओंको ये दुष्ट लोग अप-मानित कर रहे हैं। रमणियोंने अपने-अपने हाथोंसे आँख ढँक लिये है। आँसुओंसे लगातार उनके वस्त्र भींगे जा रहे हैं। देखते-देखते इनमेंसे ४-५ स्त्रियां लज्जासे बिल्कुल बेहोश होकर मृतःप्राय हो गयीं।

* * * * *

इस भयानक दृश्यको देखतेही प्रेमानन्द उन्मत्त हो गये। प्रेमानन्दने घरसे चलती समय यह सोच लिया था कि देवी-सिंहको राजस्वका रुपया देनेके बहाने उसके निकट जाकर साथमें लायी हुई छुरी उस नराधमके वक्षस्थलमें अच्छी तरह भोंक देंगे; किन्तु रमणियोंकी ऐसी दुरवस्था देखकर प्रेमा-नन्दसे आत्मसंयम न हो सका। वे गोली खाये हुए सिंहकी तरह गरजकर बोले "नरपिशाच! अबला रमणियोंपर इतना अत्याचार!! अभी तुझे यमलोक भेजूंगा।" इस प्रकार चीत्कार करते हुए कूदकर देवीसिंहके पास पहुँचते ही, उनको चार-पाँच आदमियोंने आगे-पीछेसे पकड़ लिया। अब उनको अपना हाथ उठानेकी भी शक्ति नहीं रही। तिसपर भी वे देवीसिंहको गाली देते ही रहे। अत्यन्त उत्तेजित होकर वे

कहने लगे—"निर्लज्ज नराधम ! जितने दिनोंमें भी हो सकेगा मैं तेरे प्राणका विनाश अवश्य करूँगा—यह तीक्ष्ण अस्त्र मैं तेरेही लिए लाया था।"

यह कहकर प्रेमानन्दने कपड़ोंके अन्दरसे छुरी निकाल ली। देवीसिंह प्रेमानन्दके हाथमें तेज़ कटार देखते ही चौक पड़े और उसी मुहूर्त प्रेमानन्दको स्वतंत्र कारागारमें ले जानेके लिए सिपाहियोको इशारा किया।

उस इशारेका अर्थ था—इसी वक्त इसकी हत्याकर डालो। दूसरे कैदियोंको सिपाहियोने मामूली कैदखानेमें रखा।

* * * *

इसके दूसरे दिन प्रातःकाल प्रायः २५–३० कैदी देवीसिंहके आदमियोके प्रहारसे मारे गये। लोकावादसे रामानन्द गोस्वामीने सुना कि देवीसिंहके आदमियोंके प्रहारसे उनका लड़का प्रेमानन्द और दामाद राधाकृष्ण अधिकारी मारे गये। तब उन्होने उनके मृत देहकी अन्त्येष्टि क्रिया करानेका विचार किया। राधाकृष्ण अधिकारीका मृत देह तो मिल गया, किन्तु प्रेमानन्द गोस्वामीकी लाश किसी तरह न मिली। बहुतसे लोगोंकी लाश प्रहारके कारण बिल्कुल बदशक्ल हो गयी थी। लोगोंने कहा कि प्रेमानन्दको इतना मारा है कि उस बेचारेका मृत देह खोजकर निकालना मुश्किल है।

प्रेमानन्दकी बहिन प्रभावती देवी अपने पतिके साथ सती हुई। रामानन्दजी अपनी पुत्र-वधूको साथ लेकर पैदल कृष्णनगरसे होकर सीधे रंगपुरकी तरफ भागकर चले गये।

———

छठवाँ परिच्छेद

देवीसिंह

रामानन्द गोस्वामी अपनी पुत्रवधू, वृंदा दासी और चार विश्वासपात्र प्रजाको साथ लेकर कष्ट उठाते हुए किसी तरह रंगपुर पहुँचे। रंगपुरके बहुतेरे ज़र्मींदार उनके शिष्य थे। उन्होंने एक शिष्यके यहाँ आश्रय लिया। शिष्य भी बड़े आदरसे उनको अपने मकानमें रखकर उनकी सेवा-सुश्रूषा बड़ी भक्तिसे किया करते थे। किन्तु रामानन्दजी अपने पुत्र और कन्याके लिए कातर हो पड़े।

इधर देवीसिंहके अत्याचारसे पुर्निया प्रायः जनशून्य हो रही थी। १७७२ ई०के सितम्बर महीनेमें बंगके गवर्नर वारेन हेस्टिंग्ज जांच कमेटी (Committee of circuit) के अध्यक्ष के रूपमें स्वयं पुर्निया आकर देवीसिंहके कार्य्य-कलापोंकी जाँच करने लगे। जाँचके समय गंगागोविन्दसिंह हेस्टिंग्ज़के साथ ही रहा करते थे; क्योंकि उनके साथ न रहनेसे हेस्टिंग्ज़ साहबको घूस लेनेमें असुविधा हुआ करती थी, इसी कारण साहब उनको साथ ही रखा करते थे।

महम्मद रेज़ाखांके समय जब गङ्गागोविन्दसिंह मुर्शिदाबदामें कानूनगोका काम करते थे, उसी समयसे देवीसिंह और गंगागोविन्दसिंहमें घोर शत्रुताका आरम्भ हुआ। अतएव बदला लेनेका सुअवसर देखकर देवीसिंहको निकालनेके लिए वे बारम्बार हेस्टिंग्ज़से अनुरोध करने लगे। देवीसिंहके विरुद्ध पुर्नियांके तमाम लोगोंने अभियोग उपस्थित किया था। लेकिन अभियोगके ही कारण वारेन हेस्टिंग्ज़ देवीसिंहको कभी

पदच्युत न करते। गंगागोविन्दसिंहके अनुरोधसे ही उन्होंने देवीसिहको पदच्युत किया।

देवीसिंहके ठेका लेनेसे पहले पुर्नियाका राजस्व सोलह लाख रुपया था। किन्तु देवीसिंहके अत्याचारसे पुर्नियांके अधिकांश अधिवासी (रहनेवाले) स्थानान्तरको चले गये; बहुतसे लोग तो मर गये। इसी कारण पुर्नियाका राजस्व इतना कम हो गया था कि बादको कई एक वर्षोंतक सालोना छः लाख रुपयेसे अधिक वसूल ही नहीं हुआ।

देवीसिंहने देखा कि हेस्टिंग्ज़ सर्वदा गंगागोविन्दसिंहके परामर्शके अनुसारही काम किया करते हैं; इससे अब वे गंगागोविन्दसिंहके साथ संधि करनेका उद्योग करने लगे। जिस कारण इन दोनोंमें अनबन थी वह पीछे बताया जायगा। यहाँ केवल इतना ही कहाजाता है कि देवीसिंहने गंगागोविन्द-सिंहसे क्षमाकी प्रार्थना की और जिस रमणीको लेकर इन दोनोंके बीच पारस्परिक विवाद आरम्भ हुआ था; देवीसिंहने उसका अनुसंधन कर तथा उसको पकड़वाकर गंगागोविन्दसिंह के हाथ अर्पण करनेका वादा किया। इस प्रकार देवीसिंहमें पुनर्वार संधिकी स्थापना हुई। परस्पर एक दूसरेकी सहायता करनेके लिए दोनों महाशयोंने हाथमें गंगाजल लेकर प्रतिज्ञा की। इस घटनाके कई एक महीनोंके बाद गंगा-गोन्दिसिंहके अनुरोधसे हेस्टिंग्ज़ने देवीसिंहको मुर्शिदाबादके प्रोविंशल काउन्सिलके दीवानके पदपर फिरसे नियुक्त किया।

मुर्शिदाबादके प्रोविन्शल काउन्सिलके साहबलोग सुरापान इत्यादि विविधप्रकारके व्यसनोंमें आसक्त थे। वेलोग राजस्व-सम्बन्धी कार्य्योंको कुछ भी नहीं समझते थे और न समझनेकी कोशिश ही करते थे। इन तरुणवयस्क

अंगरेज़ोंकी कुप्रकृतिको विशेष रूपसे उत्तेजित करनेके निमित्त देवीसिंह देशी स्त्रियोंको पकड़कर लाता और इनलोगोंके पास भेज दिया करता था। हम पहले ही कहचुके हैं कि, देवीसिंह अंगरेज़ोंको वशीभूत करनेके लिए सर्वदा दस-बारह स्त्रियोंका संग्रहकर अपने घरमें रखता था (Vide note (12) in the appendix) एवं इन सब हतभागिनी रमणियोंके नये-नये नाम रखकर साहबोंके पास भेजा करता था। किसी स्त्रीको दिलखुश बीबीके नामसे सम्बोधित करता और किसीका रंगबहार नाम रखता था। हिंदू स्त्रियोंको कभी-कभी तप्तकाञ्चन रसमञ्जरी, रसकी डाली, टटका मधु इत्यादि कुत्सित भाव-उत्तेजक नामोंसे अभिहित करता था। प्रौविंशल काउन्सिलके साहबलोग इन्हीं सब तप्तकाञ्चन और दिलखुश बीबियोंको लेकर सर्वदा दिन विताते थे। इधर देवीसिंह काउन्सिलका हर्ता-कर्ता-विधाता होकर देशको वर्बाद करनेलगा; किन्तु कई सालोंके बाद प्रौविंशल काउन्सिलकी निद्रा भंग हुई। घूस-विभागके सम्बन्धमें देवीसिंहके साथ उनलोगोंसे झगड़ा हुआ। वे देवीसिंहको बर्खास्त करनेके लिए उद्यत हुए।

देवीसिंह निरुपाय होकर पुनर्वार गंगागोविन्दसिंहके शरणागत हुए। गंगागोविन्दसिंहको जिस प्रकार आश्वस्थ किया था वह इस उपन्यासके दूसरे परिच्छेदमें लिखा जाचुका हुआ है। गंगागोविन्दसिंह अपनी प्रतिज्ञाके पालन करनेके लिए चेष्टा करने लगे। जिस रमणीको पकड़कर गंगागोवि-न्दसिंहके हाथ अर्पण करनेका वादा किया था, उसकी खोजमें चारो तरफ़ गुप्तचर भेज दिये।

देवीसिंहके गुप्तचरोंने रंगपुरमें जाकर सुना कि एक वृद्ध ब्राह्मण एक युवतीके साथ भागकर रंगपुरके किसी

ज़मींदारके मकानमें आश्रय लेरहा है। एक युवतीने भागकर यहां आश्रय लिया है, यह सुनतेही उनलोगोंने समझ लिया कि वे जिस ब्राह्मण-कन्याकी खोजमें हैं, हो न हो यह वही युवती है। इस प्रकार स्थिर करते हुए वे बलपूर्वक उसे पकड़कर देवीसिंह के पास पहुंचानेका सुयोग ढूंढ़ने लगे। किन्तु यह रमणी रामानन्द गोस्वामीकी पुत्रवधू थी। रामानन्द देवीसिंहके गुप्तचरोंकी इन दुरभिसंधियोंको समझकर अपनी पुत्रवधूको साथ ले रंगपुरको छोड़कर दिनाजपुरके जंगलोंमें भ्रमण करने लगे। देवीसिंहके इन दुरभिसंधियोंके विषयमें पुत्रवधूके सामने कुछ भी प्रकाश नहीं किया। उन्होंने अपने दिलमें सलझ लिया था कि उनकी पुत्रवधू इन सब बातोंको सुनते ही निश्चय आत्महत्या कर अपने धर्म्मकी रक्षा करेगी।

१७७८ ई०में रामानन्द रंगपुरको छोड़कर जंगलोंमें भ्रमण करने लगे। इसी प्रकार महीनों बिताया। बाद दिनाजपुरके अन्तर्गत प्राणनगरके जंगलके उत्तर प्रान्तमें जंगलोंसे परिवेष्ठित किसी स्थानपर तीन कुटियां बनाकर गत तीनवर्षोंसे बास कर रहे थे। इस समय उनके जीविका-निर्वाहके लिए भिक्षाके सिवां और कोई उपाय नहीं था। इससे वैरागीका वेष धारणकर भिक्षावृत्तिका अवलम्बन करने लगे। प्रायः तीन वर्ष पर्यन्त यहां निर्विघ्न रहे। दिनाजपुरके राजाकी मृत्युके बाद १७८१ में देवीसिंह रंगपुर और दिनाजपुरके कलक्टर गुडलैंड साहबके दीवानके पदपर नियुक्त होकर दिनाजपुर आये। उन दिनों देवीसिंहके बर्कन्दाजोंने भागी हुई प्रजाकी खोजमें दिनाजपुरके उत्तर तरफ़ आकर सुना कि रामानन्द गोस्वामी नामक कोई भूम्याधिकारी यहां नज़दीकके किसी जंगलमें आकर वासकर रहे हैं। वे रामानन्द

को, पकड़नेके लिए, ढूंढने लगे। उसके बाद रामानन्द गोस्वामी किस प्रकार पकड़े गये और उनकी पुत्रवधूने वृद्धदासी और दो विश्वासपात्र नौकरोंके साथ भागकर किस प्रकार अपने धर्म्मकी रक्षा की, यह सब वृत्तांत पहले परिच्छेदमें लिखा जा चुका है।

सातवां परिच्छेद

कलकत्तेमें राजस्व कमिटीकी स्थापना

देवीसिंह जिस तरह दिनाजपुर और रंगपुरके कलक्टर गुडलैंड साहबके दीवान बनकर आये, उसका संक्षेपमें उल्लेख किये बिना पाठक आगे आनेवाली घटनाओंको समझ न सकेंगे।

इसके पूर्व कहा जा चुका है कि भारतवर्षके गवर्नर जेनरल वारेन हेस्टिंग्ज़ने पञ्जसाला बन्दोबस्तकी मियाद पूरी होते ही कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, वर्धमान, पटना, दिनाजपुर और ढाका इन छः प्रदेशोंके राजस्व-सम्बन्धी प्रौविन्शल काउन्सिलको तोड़कर उसके बदले कलकत्तेमें केवल एक राजस्व कमिटी स्थापन करनेका अभिप्राय प्रकट किया। किन्तु गवर्नर जेनरलके काउन्सिलमें वे स्वयं और बारबेल साहब एक पक्षमें थे, पर दूसरे दो मेम्बर उनके विपक्षमें थे। काउन्सिलका विपक्ष दल प्रायः उनके किसी भी प्रस्तावका अनुमोदन नहीं करता था। फिर कोर्ट आव् डाइरेक्टर्सने भी अपने १७७७ ई०की चौथी जुलाईके पत्रमें राजस्वके प्रबन्धके सम्बन्धमें हेस्टिंग्ज़के बहुतेरे प्रस्तावोंको रद्द कर किया था। हेस्टिंग्ज़ दिन-दिन नया-नया नियम-प्रचार करना चाहते थे, इस कारण उनको किञ्चित् तिर-

स्कृत भी किया था (Vide note (14) in the appendix)। इससे हेस्टिंग्ज़ साहब फ़िलहाल कुछ कालके लिए मौन रहे।

किन्तु जिस समय विहारका कल्याणसिंह उस प्रदेशकी तमाम ज़मीनका बन्दोबस्त अपने हाथ लेनेके लिए प्रार्थी होकर गंगागोविन्दसिंहके द्वारा हेस्टिंग्ज़को चार लाख रुपये घूस देनेको तैयार हुआ और उसके बाद जब १७८० ई०के जुलाई महीनेमें दिनाजपुरके राजाकी मृत्यु हुई, एवं दिनाज पुरके राजपरिवारके भिन्न-भिन्न पक्षोंसे घूस देनेका प्रस्ताव आनेलगा, उस समय हेस्टिंग्ज़ लालचको रोक न सके। तमाम बन्दोबस्त अपने हाथों लेनेके लिए कृतसंकल्प हुए। किन्तु किस उपाय और प्रणालीसे बन्दोबस्तका भार पुनः अपने हाथों लें कि भविष्यमें उनकी कोई बदनीयती ज़ाहिर न हो, इसीकी वे चिन्ता करने लगे। प्रौविंशल काउन्सिलको उठाकर गवर्नर जेनरलके काउन्सिलके हाथोंमें (अर्थात् अपनी काउन्सिलके हाथोंमें) तमाम क्षमताओंको देनेपर भी बहुतसे विपदोंकी आशङ्का थी। वे अच्छी तरह जानते थे कि उनके विपक्ष दलवाले उनके कामोंमें बाधा न डाल सकने पर भी, काउन्सिलकी कार्यवाहीकी पुस्तकमें उनलोगोंके लिखे हुए विरुद्ध मतोंको देखकर कोर्ट आव् डाइरेक्टर्स उनकी दुरभिसन्धियोंको समझ जायगा। काउन्सिलके सभापति होनेके कारण बराबरके मतभेद होनेपर उन्हींके मतानुसार कार्य्य हुआ करता था, तिसपर भी कोर्ट आव् डाइरेक्टर्सने इससे पहले बहुतसी घटनाओंके विषयमें विपक्ष दलके लिखे हुए मन्तव्योंको पढ़कर उनके दुरभिसन्धियोंको समझ लिया था। वर्धमानकी रानी और राजशाहीकी रानीभवानीके प्रति उन्होंने और बारवेल साहबने जो अन्याय किये थे उन्हें

कोर्ट आव् डाइरेक्टर्सने उनके विपक्ष दलवालोंके मन्तव्योंको पढ़कर समझ लिया था (vide note (7) in the appendix)। हेस्टिंग्ज़ने इन सब विषयोंपर विशेष विचार किया और मन ही मन पहलेसे ही ठीक कर लिया कि, प्रौविन्शल काउन्सिल को उठादेंगे; किन्तु बन्दोबस्तका भार वे अपने हाथों अथवा गवर्नर जेनरलकी काउन्सिलके हाथों नहीं रक्खेंगे। तमाम बन्दोबस्तका भार जिस प्रकार होसके गंगागोविन्दसिंहके हाथों रहे। इसी उद्देश्यके साधनके लिए उन्होंने पूर्व स्थापित् छुहो प्रौविन्शल काउन्सिलोंको उठा दिया और उसके परिवर्तन में कलकत्तेमें केवल एकही कमेटी औव् रेवन्यू (Committee of Revenue) का स्थापन किया। कई एक तरुण वयस्क साहबोंको इस कमेटी औव् रेवन्यूका मेम्बर मुकर्रर किया। गंगागोविन्दसिंहको कमेटीके दीवानका पद देकर राजस्व-प्रबन्ध-सम्बन्धी समुदायक्षमता प्राकारान्तर से उनके हाथ में ही दिया। कमेटी औव् रेवन्यूके तरुण वयस्क अंगरेज़ लोग इस देशके आचार-व्यवहारको कुछ नहीं समझते थे। दीवान गंगागोविन्दसिंह ही तमाम काम अपने इच्छानुसार किया करते थे। कमेटीके मेम्बर लोगों-पर केवल हस्ताक्षर करनेका भार था।

१७७१ ई० में कमेटी औव् रेवन्यू स्थापित हुई। इस समयसे लॉर्ड कौर्न वालिसके आनेतक राजस्व के बन्दोबस्तके सम्बन्धमें गंगागोविन्दसिंह एक तरहसे गवर्नर जेनरल हुए। देशके तमाम ज़मींदार, ताल्लुकेदार गंगागोविन्दसिंहके हाथोंमें आगये।

* * * *

१७८० ई०में दिनाजपुरके राजाकी मृत्युके बाद, उनके

नाबालिग़ दत्तक पुत्रको ही गवर्नमेन्टने उनका असली उत्तराधिकारी स्वीकार किया, एवं चार लाख रुपया सलामी लेकर उनके पैतृक ज़मींदारीका बन्दोबस्त उन्हींसे किया।

हेस्टिंग्ज़ और गंगागोविन्दने उस नाबालिग़ राजाकी देख-रेख गुडूलैंड् और देवीसिंहके हाथोंमें दे दी। इसी बहाने देवीसिंह गुडूलैंड् साहबके दीवान बनकर आये। मालूम होता है कि इस नाबालिग़की तमाम ज़मींदारी गंगा गोविन्दसिंहने स्वयं हड़प करनेकी आशासे देवीसिंहके समान उपयुक्त मनुष्यके हाथों उसकी देखरेखका भार दिया था। साथ ही हेस्टिंग्ज़का प्राप्य घूस सहजही वसूल हो जाय, इस अभिप्रायके साधनके लिए गुडूलैंडके ऐसे उपयुक्त आदमीको असीम क्षमता-प्रदान-करते हुए रंगपुर और दिनाजपुरके कलेक्टरके पदपर नियुक्त किया।

गुडूलैंड और देवीसिंह दोनों एकही प्रकृतिके आदमी थे। गुडूलैंडको विलायती देवीसिंह और देवीसिंहको देशी गुडूलैंड कहना अत्युक्ति न होगा।

इन्हीं दोनों महात्माओंने दिनाजपुर राज्यके पुराने कर्मचारियोंको बर्खास्त किया, उन सब वृद्ध कर्मचारियोंके बदले नितान्त जघन्य चरित्रके कई-एक मनुष्योंको नियुक्त किया। इसके बाद उनलोगोंने स्टेटका खर्च कम करनेके लिए दिनाजपुरकी रानीको मृत राजाके, समयसे धर्म्मानुष्ठान और व्रतादिके खर्चके लिए जो रुपया प्रतिमास मिला करता था, वह भी बन्द कर दिया।

स्टेटके रुपयेका किसी प्रकार अपव्यय न हो इस कारण रानी साहबके पिता अथवा सहोदर भ्राता उनके साथ मुलाकात करने आते तो उनके जलपानके खर्चके लिए आठ पैसेसे

अधिक दिया नहीं जाता था। किन्तु स्टेटके मैनेजर गुड्लैंड साहबके कोई चमरेशियन दोस्तके राजबाड़ीमें उपस्थित होने से, राजाके सन्मानकी रक्षाके लिए और ऐसे अभ्यागतके समादरके लिए स्टेटसे ब्रान्डी और शैम्पियनमें प्रतिदिन तीस या चालीस रुपयोंसे अधिक व्यय होता था (vide note 18) in the appendix) इसी सुन्दर रीति और नियम द्वारा गुड्लैंड और देवीसिंह दिनाजपुरके राज्यकी रक्षा करने लगे।

थोड़े दिनोमें देवीसिंहने दिनाजपुरके राजाकी तमाम ज़मींदारी और उसके साथ रंगपुर और एद्रकपुरकी पूरी ज़मीन किसी मुसलमानके नाम बैनामा करके ठेका ले लिया। यह बन्दोबस्त बुरा नहीं हुआ। कलक्टर गुड्लैंड साहबका निजका दीवान ही उनके इलाकेके अन्तर्गत जिलोंकी कुल ज़मींदारीका अकेला ठेकेदार बन बैठा। गुड्लैंड साहब इन सब बातोंको देखकर भी नहीं देखते थे और सुनकर भी नहीं सुनते थे। वे ख्रीष्टधर्म्मावलम्बी थे। बाइबलमें स्पष्ट उपदेश है 'Resist no evil' अर्थात् अत्याचारका अवरोध मत करो। इससे गुड्लैंड साहबने देवीसिंहके किसी अत्याचार अथवा अन्यायपूर्ण व्यवहारका कभी अवरोध नहीं किया। फिर भी देवीसिंहको धर्म्माधर्म्मका ज्ञान बिल्कुल नहीं था, यह कभी कहा नहीं जा सकता। एक तरफ़ तो उन्होंने अपने उपकारके लिए दिनाजपुरकी सारी ज़मींदारीका ठेका ले लिया और पश्चात्तरमें फिर गंगागोविन्दसिंहके लिए विशेष उपकार-साधनकी चेष्टा करने लगे। दिनाजपुरके नाबालिग़ राजाको बाध्यकर उनकी ज़मींदारीके कुछ अंशका गङ्गागोविन्दसिंहके नाम बैनामा करा दिया। क्यों न ऐसा करते! गङ्गा गोविन्दसिंहके अनुग्रहसे ही तो उन्होंने गुड्लैंड

साहबकी दीवानीका पद प्राप्त किया था। अभीतक वे गङ्गा-गोविन्दसिंहके अनुग्रहाकांक्षी हैं। इससे कृतज्ञताके चिह्न-स्वरूप दिनाजपुरके राजाकी ज़मींदारीका थोड़ासा अंश छल-बल और कौशलसे उनको दिला दिया।

इस प्रकार १७८१ ई०में देवीसिंहने रंगपुर, दिनाजपुर और एद्रकपुरका ठेका लेकर इन तीनों प्रदेशोंके तमाम ज़मींदारोंसे बढ़ा हुआ कर तलब किया। १७७० ई०में दुर्भिक्षके कारण देशके एक तृतीयांस किसानोंके प्राण विनष्ट हो चुके थे। इससे १७७० ई०में ज़मींदारोंकी आमदनी एक दम कम हो गयी थी। उसी दुर्भिक्षके समयसे उनलोगोंके दख़ल-की ज़मीन अबतक बिना जोते-बोये खाली पड़ी है। इसके बाद पञ्चसाला बन्दोबस्तके समय जिन ज़मींदारोंने अपनी पैतृक ज़मींदारियोंको नहीं छोड़ा, उनलोगोंको वारेन हेस्टिंग्ज़की ज़बर्दस्तीसे बहुत ज्यादे लगानपर अपनी-अपनी ज़मींदारीका बन्दोबस्त अपने हाथों लेना पड़ा। इस अवस्थामें ज़मींदारोंको फिरसे बढ़ाया हुआ कर देनेके सिवा और कोई रास्ता ही नहीं था। ज़मींदारोंने जब कर-वृद्धिको स्वीकार नहीं किया तो देवीसिंहने उनलोगोंको पकड़कर कैदमें रक्खा। उस समय ज़मींदारोंने अपनी-अपनी ज़मींदारीका इस्ती-फ़ा देनेके लिए प्रस्थान किया, किन्तु पहले और उससे पहले सालका बकाया कर साफ़ किये बिना इस्तीफ़ा देनेपर भी उन लोगोंको देवीसिंहके हाथों चैन न मिली। इससे ज़मींदारोंने फ़िलहाल देवीसिंहके कैदखानेसे छूटनेके लिए बढ़ाये करको ही स्वीकार किया। ऐसा करनेके चन्द रोज़ बादही देवीसिंह-के अधीनके लोगोंने कर वसूल करना आरम्भ कर

दिया। उनसे हरप्रकारके अबवाब (अतिरिक्त कर) और कम्पनीके सिक्केके हिसाबसे अप्रचलित रुपयोंपर बट्टा इत्यादि तलब किया। बेचारे ज़मींदार इतना रुपया दे न सकते थे। उस समय देवीसिंहके आदमियोंने ज़मींदार, ताल्लुकेदार और किसानोंको पकड़कर लाना और प्रहार करना शुरू कर दिया और कैदखानेमें बन्द कर दिया।

दश वर्ष पहले देवीसिंहने पुर्नियामें जो अत्याचार किया था वह अत्याचार या वह निष्ठुरता इन अत्याचारोंके सामने कुछ भी नहीं थी। देशके बहुतसे किसान अपनी-अपनी स्त्रियों और पुत्रोंके साथ जंगलोंमें घुस पड़े। देवीसिंहने विचार किया कि ये सब किसान अपने खेतोंके धान संग लेकर भाग गये हैं। ऐसा सोचकर उन्होंने उन भागे हुए किसानोंकी खोज-में बर्कन्दाज़ोंको जंगलमें भेजना शुरू किया। उनके भेजे हुए उन बर्कन्दाज़ोंके हाथों, जो कि हालमें ही दिनाजपुरके उत्तर देशकी ओर गये थे, रामानन्द गोस्वामी पकड़े गये।

आठवाँ परिच्छेद

कारागार

देवीसिंहके बर्कन्दाज़ रामानन्द गोस्वामीको गिरफ्तार करते ही उनसे बारम्बार पूछने लगे कि, किसानोंने किस जङ्गलके अन्दर अनाज छिपाकर रक्खा है। रामानन्दने उनके प्रश्नका कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने मौन धारण कर लिया। बर्कन्दाज़ अपने प्रश्नका कोई उत्तर न पाकर उनपर अविश्रान्त प्रहार करने लगा। अत्यन्त प्रहार करनेपर भी जब रामानन्दने अपने मुँहसे आवाज़तक नहीं

निकाली, तब वे उन्हें पकड़कर देवीसिंहकी माल-कचहरीमें ले गये।

रामानन्द गोस्वामीने यह अनुमान किया था कि उनकी पुत्र-वधूको ही गिरफ्तार करनेके लिए देवीसिंहने इन बर्कन्दाज़ोंको भेजा है। किन्तु वास्तवमें यह बात नहीं थी। भागे हुए रैयतोंने किस जंगलके अन्दर अपना अनाज छिपाकर रक्खा है, इसी अनुसंधानके लिए बर्कन्दाज दिनाजपुरके उत्तर प्रान्तमें आये थे। किन्तु इन लोगोंने यहाँ आकर सुना कि रामानन्द गोस्वामी छद्मवेशसे प्राणनगरके जंगलोंमें वास कर रहे हैं। दिनाजपुरमें भी रामानन्दकी बहुत सी ब्रह्मस्व निष्कर ज़मीन थी। किन्तु हेस्टिंग्ज़की ज़बर्दस्तीसे देशकी सब निष्कर ज़मीनोंपर कर लगा दिया गया था। अब इस समय देशमें कोई निष्कर ज़मीन भोग नहीं कर सकता। देवीसहके सरिश्तेमें रामानन्दके नाम बहुतसा लगान बाकी था। बर्कन्दाज रामानन्दका नाम सुनते ही उनकी खोजमें लग गये। उनलोगोंने यह समझा कि, रामानन्द कर न देनेके उद्देश्यसे छद्मवेशी होकर जङ्गलमें वसे हैं।

बर्कन्दाज़ोंने रामानन्दको गिरफ्तार कर लिया और देवीसिंहके कारागारमें बन्द कर दिया। वे कारागारमें प्रवेश करते ही, उस स्थानके भीषण अत्याचारको देखकर, बेहोश होकर गिर पड़े।

* * * * *

कारागार कैसा भयानक स्थान है! कैसा भीषण अत्याचार यहां हुआ करता है! मनुष्य क्या मनुष्यपर इस प्रकार अत्याचार कर सकता है! इस कारागारके उत्पीड़नकारियोंका हृदय क्या पाषाणसे बना है! कारारुद्ध हतभाग्य जिन यन्त्रणा-

ओंका भोग करते थे मालूम होता है नरकमें पापियोंको शायद ही वैसी यन्त्रणा भोग करनी पड़ती हो !

क्रन्दन और आर्तनादकी भीषण ध्वनिसे तमाम कारागार गंज रहा था। चारो तरफसे "मरे" "मरे" "बापरे" "प्राणगया" यही चीत्कार सुनायी देता था। कहीं सिपाही कैदियोंके हाथोंकी उँगलियोंको कसकर बाँधते और उन उँगलियोंके बीच लोहेकी सींक हथौड़ोंसे ठोकते थे, कहीं तीन-चार सम्भ्रान्त ज़मींदारके लड़कोंको एक साथ रस्सीमें बाँधकर उनके पीठोंपर लगातार बेंतसे आघात कर रहे थे। लगातार प्रहारसे उनके पीठके चमड़े उचड़ गये थे। तिसपर भी उन चर्मशून्य पीठ-पर काँटोंसे भरे हुए बेलके डंठोंसे आघात करते थे।

दूधके फेनके सदृश कोमल शय्यापर जिन ज़मींदार सन्तानोंको निद्रा नहीं आती थी, आज उनलोगोंके पीठपर सैकड़ों काँटे गड़े हुए हैं; आज गरम लौह दण्डके प्रहारसे उनके पीठ दग्ध हो रहे हैं।

अत्याचारोंसे पीड़ित इन ज़मीदार और ताल्लुकेदारोंकी समस्त स्थावर सम्पत्ति पूर्व ही कुड़क और नीलाम हो चुकी थी। इतनेपर भी उन लोगोंका देन पूरा नहीं हुआ। इन ज़मींदार और ताल्लुकेदारोंके देवार्चन, दानधर्म्म, और अन्यान्य पारिवारिक खर्च चलानेके लिए जो कुछ निष्कर खमार ज़मीन, अथवा निज जोतकी ज़मीन थी, उन सभोंको भी देवीसिंहने नीलाम कराकर अल्प मूल्यमें स्वयं खरीद लिया। देशके लोगोंमें किसीकी इतनी क्षमता न थी कि उन जमीनोंको खरीद ले, इससे ज़मीदारोंकी हज़ार रुपयेकी सीर ज़मीन देवी-सिंहने दूसरेके नामसे स्वयं एक रुपयेमें खरीद ली।

कलक्टर गुडलैंड साहबने देवीसिंहके इन अत्याचारों और

प्रवञ्चनामूलक व्यवहारोंके विषयमें कुछ भी नहीं सुना। मालूम होता है कि वे निद्रित अवस्थामें थे; नहीं तो इस देशव्यापी अत्याचारके शब्द उनके कानोंमें क्यों न पहुँचते?

देवीसिंहके कारागारमें ज़मींदारों और ताल्लुकेदारोंके अलावा और भी सैकड़ों मनुष्य बन्द किये गये हैं। मारकी चोटसे किसी-किसीके हाथ टूटे हैं, किसीके पैर टूटे हैं तो किसीकी आँखें निकल पड़ी हैं, और किसीको चलनेकी शक्ति तक नहीं है। असंख्य किसान प्रहारकी यन्त्रणासे घबड़ा कर मृत्यु-कामना कर रहे हैं और "संसारमें परमेश्वर नहीं है" यही कह-कहकर चीत्कार कर रहे हैं।

देवीसिंहके बर्कन्दाज़ इन निराश्रय हतभाग्य किसानोंके जिन हाथोंको तोड़ रहे हैं क्या उन हाथोंने कभी किसीका अनिष्ट किया था? इन्हीं दुर्बल हाथोंके परिश्रमके फल बंगवासियोंको अन्न-प्रदान कर रहा है। इन दुर्बल हाथोंके परिश्रमके फलसे ही ईस्ट इन्डिया कम्पनी चीन देशसे तरह-तरहके सुखाद्य पदार्थ मँगा रही है। इङ्गलैन्डके जनसाधारण इन हाथोंके परिश्रमका फल सर्वदा सम्भोग कर रहे हैं। इन बेचारे निराश्रय किसानोंके दिनरात परिश्रम करनेपर भी, जिस परिमाणमें इनको फल मिलता है, उसके शत अंशका एक अंश भी वे बिचारे स्वयं सम्भोग नहीं करते।

तो फिर इन विचारोंपर यह घोर अत्याचार क्यों किया जाता है—इस प्रश्नके उत्तरमें हमलोग क्या सुनते हैं? ईस्ट इण्डिया कम्पनीको अधिक धनकी आवश्यकता है, किसानोंको अपना सर्वस्व देना होगा। धर्म्मकी शिक्षा देनेके लिए ईस्ट इन्डिया कम्पनीको बहुत उँचे वेतनपर लॉर्ड बिशपके नियुक्त करनेकी आवश्यकता है, राजस्व वसूल करनेके लिए गुडूलैंड-

की तरह उपयुक्त कलक्टर और देवीसिंहकी तरह उपयुक्त दीवान रखना पड़ता है। शान्ति-रक्षक और विचारक भी रखने पड़ते हैं। किसानोंको अपना यथा सर्वस्व देकर इनके खर्चको न सम्हालनेसे देश-शासनका खर्च कैसे चल सकता है? बेचारे किसान दिनरात परिश्रमकर धन-सञ्चयभर करेंगे, किन्तु अपने परिश्रमसे उत्पन्न किये हुए फलको उन्हें लेनेका कोई अधिकार नहीं है।

संसारमें यदि न्याय है तो चोरकी निन्दा क्यों करते हैं? डाकुओंको श्राप क्यों देते हैं? यदि विचारक, शान्ति-रक्षक और धर्म-शिक्षार्थ लॉर्ड बिशप इत्यादिको नियुक्त करनेके लिए प्रजाको लुट जाना पड़ता है—तो ऐसे विचारक, शान्ति-रक्षक और लॉर्ड बिशपको नियुक्त करनेके एवज़ प्रजाको चोर और डाँकुओंके हाथ सौपनेसे ही उत्तम होता।

वस्तुतः जब तक इस संसारमें विचारक, शान्ति-रक्षक, और धर्म्म-शिक्षार्थ लॉर्ड बिशप इत्यादिकी आवश्यकता रहेगी तब तक किसानोंको और भिन्न श्रेणीके लोगोंको अवश्य इसी प्रकार कष्ट उठाना पड़ेगा। देवीसिंह केवल किसानोंपर ही प्रहार कर शान्त नहीं हुआ। उसके कारागारमें ज़मींदार, ताल्लुकेदार और प्रजाके घरकी स्त्रियाँ भी लायी गयीं।

इस कारागारमें छोटे-छोटे बच्चे गोदमें लेकर माताएँ रो रही हैं; देवीसिंहके सिपाही बारम्बार उनके पीठपर वेत्राघात कर रहे हैं। इन रमणियोंपर विविध प्रणालीसे और विविध प्रकारके जो कुत्सित् अत्याचार किये गये थे, उनको सविस्तार लिखनेसे पुस्तक अश्लीलतासे पूर्ण हो जायगी। पाठक और पाठिकाएँ अपने हृदयमें लेखकको एक नितान्त जघन्य रुचिका मनुष्य समझेंगे। किन्तु ऐतिहासिक उपन्यासमें

इन सब विषयोंका उल्लेख बिल्कुल न करना उचित बोध नहीं होता।

सैकड़ों कुल-ललनायें देवीसिंहके कारागारमें बैठकर रो रहीं हैं। इनके चीत्कार और आर्तनादसे कारागार गूँज रहा है। कारागारके सिपाही किसी रमणीको विवस्त्रा अवस्थामें प्रहार कर रहे हैं; तो किसी स्त्रीको उसके स्वामीके सम्मुख नंगी कर उसके धर्म्मको नष्ट करनेके लिए सिपाहियोंको नियुक्त कर रहे हैं (Vide note(14)in the appendix) रमणीकी गोदसे उसके बच्चेको छीनकर प्रहार करते ही जननी शिशुकी रक्षा करनेके अभिप्रायसे प्राणपणसे उस बच्चेको अपने वक्षस्थलमें छिपानेकी चेष्टा कर रही है, इसपर असंख्य वेत्राघात उसके हाथोंपर हो रहे हैं।

* * * *

पाठको! इन भीषण अत्याचारोंको लिखनेके लिए लेखनी अग्रसर नहीं होती, हाथ काँपने लगता है। किन्तु एक प्रश्न पूछता हूँ—नाना धुन्धुपन्थकी अपेक्षा भी क्या देवीसिंह अधिक नराधम नहीं था? नाना धुन्धुपन्थका नाम सुनते ही घृणाका उदय होता है; किन्तु देवीसिंहका यह तमाम अत्याचार ज़ाहिर हो जानेपर भी वारेन हेस्टिंग्ज़, गंगागोविन्दसिंह और हेस्टिंग्ज़के पक्षके तमाम अंगरेज़ देवीसिंहकी रक्षाके लिए प्राणपणसे चेष्टा करने लगे। यही तो पुराने ईस्ट इन्डिया कम्पनीका सद्विचार था! यही तो उस समयके सुसभ्य अंगरेज़ोंके सदाचरण थे!

रंगपुर और दिनाजपुरमें जिन लोगोंके घरकी स्त्रियां अभी तक देवीसिंहके कारागारमें पायी नहीं गयीं थीं, वे इन भीषण अत्याचारोंकी खबर सुनकर पहले अपनी कुल स्थावर

सम्पत्ति, बादको लड़के वाले तकको बेचकर देन "कर" चुकाने लगीं। किन्तु देशके सभी लोग अपने घर, द्वार और गौ इत्यादि बेचनेके लिए लालायित थे, खरीददार तो कोई था ही नहीं। इस लिए जिन गौओंका दाम २०) या २५) रूपयोंसे कम नहीं था, वे एक या देढ़ रुपयेमें बिकने लगीं। बाजारमें दस मन धान एक रुपयेमें बिकता था (Vide note (15) in the appendix)।

नवाँ परिच्छेद

प्राणनगरका जङ्गल

इसके पहले उल्लेख किया जा चुका है कि, रामानन्द-गोस्वामीके पकड़े जानेसे पहले ही उनकी पुत्रवधू सत्यवती देवी-ने वृद्धादासी और विश्वास पात्र दो प्रजाको साथ लेकर प्राण-नगरके घोर जंगलमें प्रवेश किया। प्राणनगरका जंगल भया-नक जंगली जानवरोंसे परिपूर्ण था। इन जानवरोंके डरसे दिनके समय भी कोई जंगलके अन्दर घुसनेका साहस नहीं करता था। किन्तु ईस्ट इन्डिया कम्पनीके शासन–कालमें, इस देशके अति दुर्बल मनुष्य भी इस जंगलके भयानक जान-वरोंकी अपेक्षा कम्पनीके सिपाही और साहबोंसे अधिक डरते थे। इसलिए कम्पनीके आदमियोंके आक्रमणसे बचने और धर्म्मकी रक्षाके लिए बंगमहिला परम साध्वी सत्यवती देवीने प्राणनगरके भयङ्कर जानवरोंके बीच आश्रय लिया।

माघका महीना है। दिनाजपुरके उत्तर प्रान्तकी भीषण सर्दीका निवारण करनेके लिए सत्यवती देवीके पास एक मात्र

शरीरपरके वस्त्रके सिवा और कुछ भी नहीं था। रामानन्द गोस्वामीकी साध्वी स्त्री सुनीतिदेवीकी मृत्युके बाद, उनकी पुत्रवधू सत्यवती, हरसाल जाड़ोंमें शीत-वस्त्र खरीदकर देशके तमाम कङ्गालों और ग़रीबोंको दे, उनके कष्टोंका निवारण करती थीं। ग़रीबोंको शीत-वस्त्र देनेके लिए हरसाल एक हजारसे भी अधिक रुपये खर्च करती थीं। किन्तु आज अपने शीत निवारणके लिए उनके पास एक वस्त्र भी नहीं है। रामानन्दके शिष्योंमें प्रायः सभी हर साल जाड़ेके दिन उनके लिए काश्मीरी दुशाले भेज दिया करते थे। जिनके घरमें इतने दुशाले हैं, आज उन्हींकी पुत्रवधू एकवस्त्रा होकर कङ्गालिनीके वेशमें भयानक जन्तुओंसे भरे हुए प्राणनगरके जंगलमें प्रवेश कर रही है। वंग-समाजमें किसीकी इतनी हिम्मत नहीं हुई कि, उनको आश्रय देकर रमणीके धर्म्मकी रक्षा करते। ऐसे बंग-समाज पर धिक्कार है! ऐसे बंगदेशपर धिक्कार है!! ऐसे देशका पतन होना ही अच्छा था!

एकवस्त्रा सत्यवती देवी जंगलोंके बीच बैठकर रात बिता रहीं हैं; ओसके बूंदोंसे उनका वस्त्र भीग गया है, सर्वांगसे ओस टपक रहा है। किन्तु हृदयमें रहनेवाले प्रेम, भक्ति और स्नेहकी अपूर्व महिमा है। भीगे हुए वस्त्रको पहने हुई देवी सत्यवती अपने सब कष्टों और दुःखोंको भूलकर केवल अपने श्वशुरके विपद्के विषयमें चिन्ता कर रहीं हैं। उनको अपने शारीरिक कष्टका कोई अनुभव नहीं हो रहा है। वृद्ध श्वशुरके कष्ट और यन्त्रणाको सोचती हुई अपने शारीरिक कष्टको बिल्कुल भूल गयी हैं। भोर होतेही अपने श्वशुरके छुटकारेका कौनसा उपाय किया जाय इसकी चिन्ता मन-ही-मन करने लगीं।

किन्तु दुःखकी रात जल्द नहीं कटती। सत्यवती इस सोचमें हैं कि रात्रि शेष होते ही श्वशुरके उद्धारके लिए कोई न कोई उपाय अवश्य करूँगी। इससे दो प्रहर रातके रहते ही उन्होंने सोचा कि अब आधे घन्टेमें सबेरा होनेवाला है। किन्तु कितने आधे घन्टे बीत चुके थे, फिर भी इस दुःखकी निशाका अन्त नहीं हुआ। तब वे धीरज न धर सकीं। किस उपायके अवलम्बन करनेसे अपने श्वशुरका उद्धार कर सकूँगी,इस विषयमें रूपा और जगासे सलाह करने लगीं।

पाठकोंकी जानकारीके लिए हम इस स्थानमें रूपा और जगाका कुछ परिचय देना चाहते हैं। इनके पिता माधवदास रामानन्द गोस्वामीके संलग्न खमार (सीर खुदकाश्त) जमीनके थे। बाल्यावस्थामें इनके माता-पिताकी मृत्यु होनेपर, परम दयावती रामान्दकी सहधर्म्मिणी सुनीतिदेवीने इन दोनोंका, अन्न और वस्त्र देकर, प्रतिपालन किया था। उस समय इनलोगोंमें ज़मीन जोतनेकी क्षमता नहीं थी। किन्तु सुनीतिदेवी आदमियोंसे इनके पैतृक जमीनको जोतवाकर तथा खर्च काटकर बाक़ी मुनाफ़ेका रुपया दोनों निराश्रय बालकोंके लिए अमानत अपने पास रखती थीं। जब ये दोनों बड़े हुए तो सुनीतिदेवीने इनके अमानती रुपयोंसे इनके लिए मकान बनवाकर इनकी खेतीके लिए हर तरहका बन्दोबस्त कर दिया। रामानन्द गोस्वामीको ये लोग अपने पिताके समान मानकर उनकी भक्ति और श्रद्धा करते थे और उनकी भलाईके लिए, अपने प्राण तकको देनेमें डरते नहीं थे।

वस्तुतः ईस्ट इन्डिया कम्पनीको दीवानी मिलनेसे पहले इस देशके ज़मींदारलोग अपनी रैयतोंको सन्तानके तुल्य स्नेहके साथ पालते थे। रैयत भी ज़मींदारोंकी पिताके

सदृश श्रद्धा और भक्ति करते थे। किन्तु ईस्ट इण्डिया कम्पनीको दीवानी मिलतेही क्रमशः ज़मींदारोंके देन राजस्व की वृद्धि नाना प्रकारसे होनेलगी। सहस्रों ब्राह्मणोंकी निष्कर ब्रह्मस्व ज़मीनपर भी कर लगा दिया गया। उस समयसे ज़मींदार भी कोई दूसरा उपाय न देखकर अपनी प्रजापर कर-वृद्धि करने लगे; इसी कारण ज़मींदार और प्रजाके बीच मनोमालिन्यको सूत्रपात हुआ। ईस्ट इण्डिया कम्पनी-के शासनकालसे जितनी ज्यादा करकी वृद्धि होने लगी, उतनाही रैयत और भूम्याधिकारियोंके बीच विद्वेषानल दिनो दिन प्रज्वलित होने लगा।

मुसल्मानोंके समय किसी ज़मींदारको अपनी प्रजाके विरुद्ध मुकदमा करनेकी आवश्यकता नहीं हुई और न यही सुना गया कि किसी प्रजाने अपने ज़मींदारके विरुद्ध नालिश की हो। ज़मींदारलोग अपनी प्रजाको उसके रहनेवाले मकानसे कभी नहीं निकालते थे। अत्यन्त स्वेच्छाचारी राजा टीपूसुल्तानके समयमें भी मैसूर प्रदेशके ज़मींदारलोग प्रजाको उसके रहनेवाले मकानसे निकालना अधर्म्म समझते थे। राजपूतोंमें ऐसे मकानको "बपोता" कहते हैं।

* * * * *

१७७१ ई० में जब रामानन्दके पुत्र प्रेमानन्द पुर्नियामें देवीसिंहके कचहरीमें पकड़कर लाये गये थे, उस समय रूपा और जगा अपने घर माल्दहमें थे। लोगोंके मुँहसे इनलोगोंने जब रामानन्द गोस्वामीके विपदकी कथा सुनी, तो ये दोनों भाई अपने-अपने पुत्रों और स्त्रियोंको श्वशुराल भेज पुर्नियां चले गये। किन्तु यहां रामानन्दके साथ इन दोनोंकी मुलाकात नहीं हुई। इनलोगोंके पुर्निया आनेसे छः महीना पहले,

रामानन्दजी अपने दूसरे विश्वासपात्र प्रजाके साथ रंगपुर चले गये थे। ये प्रजा पुर्नियाके रहनेवाले थे। रूपा और जगाने पुर्निया पहुंचतेही इन सब प्रजाओंके परिवारोंसे मालूम किया कि गोस्वामीजी यहांसे रंगपुर भागकर चले गये हैं। अतः देर न कर ये लोग रामानन्दकी खोजमें रंगपुरको चले। बहुत सन्धानके बाद इनलोगोंकी मुलाक़ात रामानन्दसे हुई। उसी समयसे ये लोग रामानन्दके साथ ही हैं। गत दस वर्षके भीतर ये लोग अपने स्त्री-पुत्रोंको देखनेके लिए केवल चार या पांच बार घर गये थे। जब-कभी वे जाया करते थे तो इनमेंसे एक रामानन्दके पास अवश्य रहता था। रूपा केवल दो बार अपने घर गया था। इसी प्रकार इन दोनों भाइयोंने रामानन्द-जीके विपद्में भाग लिया और उनके साथ जंगलोंमें घूमते रहे। आज ये दोनों भाई इस घोर जंगलमें रामानन्दकी पुत्रवधूके साथ बैठकर अश्रुपात कर रहे हैं। जंगलोंमेंसे व्याघ्रकी गरज़ सुनकर जब सत्यवती डरसे चौंक पड़ती थी तब दोनों भाई लाठी हाथोंमें ले खड़े हो उनको निडर करते थे।

थोड़ी देरके बाद सत्यवतीने कहा "रूपा, ठाकुरके उद्धार करनेका क्या उपाय करूँ। वृद्धावस्थामें उनपर प्रहार होनेसे अवश्य उनकी मृत्यु होगी। उन्होंने इतने दान-धर्म्म किये हैं; क्या परमेश्वरने उनके लिए अकाल मृत्यु ही लिखा है"।

रुपाने कहा-बहूजी! हमने उस समय बार-बार उनसे कहा था कि आप भी हमलोगोंके साथ चलें। किन्तु वे इसपर सम्मत नहीं हुए। उन्होंने यह कहा कि "हमारे पुत्रकी जो दशा हुई है मेरी भी वही होगी"। पुत्र-शोकसे वृद्ध ठाकुरकी बुद्धि लुप्त हो गयी है।

सत्यवती—किन्तु इस समय उनके उद्धारके लिए कौन सा उपाय किया जाय ?

जगा—उद्धार तो अभी कर सकता हूं, कितने बर्कन्दाज़ आही रहे हैं ? शायद चार-पांच आदमी होंगे। हमलोग दोनों भाई दो लाठी लेकर जांय तो उन बर्कन्दाजोंको ठिकाने लगाकर ठाकुरको उनके हाथोंसे छीनकर ला सकते हैं। पर ठाकुर ऐसा करनेके लिए निषेध करते हैं।

सत्यवती—उन्होंने यह सोचा है कि उनके पकड़े जानेके बाद और कोई भी हमको पकड़ने नहीं आयेगा। ऐसा सोचकर, हमारी रक्षाके लिए उन्होंने इस पथका अवलम्बन किया है।

रूपा—बहूजी, वे चाहे जिस पथका भी अवलम्बन करें, किन्तु देवीसिंहके हाथों छुटकारा पाना कठिन है। ठाकुरने आपको लेकर काशी जानेके लिए कहा है। अब आप जो आज्ञा दें उसे दास करनेको तैयार है। पर यह याद रखिएगा जबतक हम दोनों भाइयोंके शरीरमें प्राण हैं तबतक तो आपको कोई छू तक नहीं सकता।

सत्यवती—ठाकुरको इस प्रकार डाकुओंके हाथोंमें छोड़कर काशी जानेकी हमारी इच्छा नहीं होती। उनके उद्धारके लिए प्राणपणसे चेष्टा करनी होगी। इसपर यदि कोई कभी हमारे धर्म्मको नष्ट करनेकी चेष्टा करेगा, तो तत्क्षण आत्महत्या कर अपने धर्म्मकी रक्षा करूँगी।

रूपा—उनके उद्धारके लिए आप क्या कर सकती हैं।

सत्यवती—देवीसिंहके प्यादे उनको पकड़कर अवश्य दिनाजपुर ले जायेंगे। हमलोग उनके पीछे-पीछे दिनाजपुर चलेंगे। इतनी दूरपर रहेंगे कि वे हमलोगोंको पहचान न सकें। यदि प्यादे उनको रास्तेमें मारें-पीटें तो हमलोग तुरन्त उनको

उन दुष्टोंके हाथोंसे छुड़ा लेंगे। ठाकुरपर प्रहार करेंगे—यह सोचनेसे भी हमारा हृदय काँप उठता है। और यदि बर्कन्दाज़ लोग उनको कष्ट न दें, तो उनके पीछे-पीछे दिनाजपुर तक चलूंगी। वहां उनके अनेक शिष्य हैं; वे लोग इस विपदके समय उनके उद्धारके लिए अवश्य चेष्टा करेंगे।

जगा—बहूजी! दिनाजपुरमें आप लोगोंके जितने ज़मींदार शिष्य थे, वे प्रायः सभी इस समय जेलमें पड़े सड़ रहे हैं। और कोई-कोई अपने देशको छोड़कर चले गये हैं। शिष्य-सेवकोंका ज्यादा भरोसा न कीजिए। ठाकुरको उनके हाथों-से छीनकर लाये बिना उद्धारका कोई दूसरा उपाय नहीं है। अब आप जो कहें वही किया जाय।

सत्यवती—तुम लोग केवल दोही आदमी हो। यदि देवी-सिंहके आदमी तुम लोगोंको भी पकड़कर लेगये तो मैं भी विपदमें पड़ जाऊंगी। इसलिए झगडा और विवाद न कर उनका उद्धार जिस प्रकार होसके, करनेकी चेष्टा करनी चाहिये।

रूपा—तो फिर उनके पीछे-पीछे हम लोगोंके दिनाजपुर जानेसे क्या होसकता है। उनको दिनाजपुरके जेलमें बन्द करके अन्दर प्रहार करनेसे, हम लोग क्या कर सकते हैं।

सत्यवती—जेलके अन्दर जानेका क्या कोई उपाय नहीं है?

रूपा—जेलके अन्दर क्यों जाने देंगे? वहां हज़ारों स्त्रियों और पुरुषोंको मार-पीट रहे हैं।

सत्यवती—तो फिर अब ठाकुरके उद्धारके लिए कौनसे उपाय का अवलम्बन करें?

जगा—हम लोग लड़कपनसे ही उनके अन्नसे प्रतिपालित हुए हैं। हम लोगोंके प्राण देनेसे भी यदि उनका उद्धार हो सके तो अभी तैयार हैं, इसके अतिरिक्त और कोई उपाय हमें

दिखायी नहीं देता। अब आप जो कहियेगा वही करूंगा।

इन लोगोंकी आपसकी बात-चीतमें रात बीत गयी। प्रभात-के समय वे लोग जंगलसे निकलकर दिनाजपुरकी ओर चले।

दसवाँ परिच्छेद

हरराम

११८६ ई०के माघ महीनेमें (सन् १७८३की जनवरी में) रामानन्द गोस्वामी देवीसिंहके बर्कन्दाजोंके हाथों पकड़े गये। बर्कन्दाज़ोंने उनको देवीसिंहके तहसील कचहरीके पास कारागारमें लाकर रखा। करागारके नामसे हमारे पाठक यह समझते होंगे कि देवीसिंहका कारागार आज-कलके जेलखानेकी तरह होता होगा, किन्तु आजकलका जेलखाना जिस प्रणालीसे बना है उस प्रणालीका कारागार इस देशमें पहले कभी था ही नहीं। आज-कल पुलिस-स्टेशनपर अभियुक्तोंको बन्द रखनेके लिए जिस तरहकी स्वतन्त्र कोठरियां रहती हैं, उसी प्रकारकी कोठरियां ज़मींदारोंके तहसील कचहरीमें रहा करती थीं। ज़मीदार लोग किसी-किसी दुश्चरित्र प्रजाको चोरी इत्यादिके अपराधमें एक या दो दिनके लिए ऐसी कोठरियोंमें बन्द रखा करते थे। ऊंची-ऊँची दीवालोंसे रहित ऐसी कोठरियोंको लोग कारागार कहा करते थे। अब अपराधियोंको प्रायः यावज्जीवन कारागारमें रहना पड़ता है। इससे वर्तमान कारागार दीर्घ काल तक वास करनेके लायक बनाये जाते हैं। किन्तु इसके पहले यहां ऐसे कारागारोंकी कोई आवश्यकता नहीं थी।

दिनाजपुरमें देवीसिंहके तहसील कचहरीके नज़दीक जो कैदखाना था, उसके चारों तरफ़ कोई दीवाल नहीं थी। ऊंचे-ऊंचे दीवालोंसे रहित किसी एक कमरेके अन्दर ज़मीदारों और किसानोंको पकड़कर कैद रखा जाता था। किन्तु ११८८ई० के प्रारम्भमें देवीसिंह इतने आदमियोंको पकड़ लाया था कि इस कमरेके अन्दर बिल्कुल जगह न थी। समय-समयपर बहुत से लोगोंको कमरेके बाहर दालानमें बांधकर प्रहार करना पड़ता था। रामानन्द कोठरीके अन्दर घुसते ही बेहोश होकर गिर पड़े। यही वजह थी कि वे कारागारमें प्रवेश करनेके बाद ज्यादा मार खानेसे बचे। इस तरह चार-पाँच दिनोंके बाद वे किस प्रकार कारामुक्त हुए इस विषयमें अगले परिच्छेदमें उल्लेख किया जायगा। देवीसिंहके आदमियोंने ११८८ ई०से लेकर ११८९ ई० के अगहन मास तक ज़मीदारों, प्रजाओं और किसानोंपर जैसा अत्याचार किया था, मैं केवल उसीका संक्षेपमें यहां वर्णन कर रहा हूँ।

देवीसिंहको प्रायः सर्वदा दिनाजपुरमें रहना पड़ता था। क्योंकि उनके हाथोंमें तरह-तरहके कामोंकी ज़िम्मेदारियाँ थीं। वे कलक्टरके दीवान थे। फिर दिनाजपुरके नाबालिग़ राज स्टेटके रक्षाका भार भी उन्हींके हाथों दिया गया था। इससे सालके अन्दर उनको दो या एक बारसे अधिक रंगपुर जानेकी सुबिधा नहीं होती थी। किन्तु रङ्गपुरकी तमाम ज़मीन उन्होंने दूसरेके नामसे स्वयं खरीद ली थी। रङ्गपुरके ठेकेकी लगान वसूल करनेके लिए उन्होंने ११८८ई०के बैशाख महीने (१७८१ ईसवीके अप्रैल) में कृष्णप्रसादको (vide note (16) in the appendix) नियुक्त किया। कृष्णप्रसादके रङ्गपुरके तमाम ज़मीदारोंसे बढ़ाया हुआ करका कबूलियतनामा तलब करने

पर, कई बड़े-बड़े ज़मीदारोंने देवीसिंहसे देशकी दुरवस्था कहनेके लिए दिनाजपुर जाकर देवीसिंहसे मुलाक़ात की। इस समय तमाम ज़मींदार बढ़े हुए करके देनेमें असमर्थ थे। पहलेसे ही करकी इतनी वृद्धि हो गयी थी कि, इस साल गवर्नरजेनरलने ठेकेदारोंको इश्तहार देकर सूचित किया था कि, अब मालगुज़ारी बढ़ाकर नहीं ली जायगी। किन्तु देवीसिंहने यह सोचा कि गवर्नरजेनरलका इश्तहार जनसाधारणकी आँखोंमें धूल झोंकनेके लिए केवल एक चक्रके सिवा और कुछ भी नहीं है। आये हुए ज़मीदारोंने जब यह कहा कि वे लोग अब ज्यादा कर देनेमें असमर्थ हो गये हैं, तब देवीसिंहने अत्यन्त क्रोधमें आकर एकाएक उन लोगोंको कैदकर लिया और उनपर पहरा बैठा दिया। इसके दूसरे दिन इन ज़मीदारोंको हररामके हाथ कैदी बनाकर भेज दिया। हररामने रङ्गपुर पहुंचकर इन लोगोंसे और दूसरे ज़मीदारोंसे बढ़े हुए करका कबूलियत तलब किया और कृष्णप्रसादको, पूर्वोक्त ज़मीदारों के दिनाजपुर आनेके अपराधमें, बर्खास्त किया।

हररामने कृष्णप्रसादके एवज रङ्गपुरके ठेकेकी तहसीलदारीके काममें नियुक्त होकर, तमाम ज़मीदारोंको कैद किया और उनको बेंत मारनेका हुक्म दिया। बेंत खानेपर भी जिन ज़मीदारोंने कर-वृद्धिकी कबूलियत देना अस्वीकार किया उन लोगोंको बैलपर बिठाकर, ढिंढोरा पीटते हुए गाँवके चारो तरफ़ घुमानेका हुक्म दिया।

देश-प्रचलित लोकाचारके अनुसार ऐसे दंडित लोग जातिभ्रष्ट किये जाते थे। इसलिए दो-चार ज़मीदारोंको बैलपर बिठाते ही बाक़ी कुल ज़मीदारोंने अपनी-अपनी जाति और

अपने मानको बचानेके लिए उसी समय करवृद्धिकी कबूलियत देकर अपनी-अपनी जान बचायी।

कबूलियत देतेही हररामने ज़मींदारोंसे मालगुज़ारी तलब की। ज़मींदारोंकी शक्ति एक पैसा देनेकी न थी। मालगुज़ारी वसूल करनेके लिए हरराम उन लोगोंकी तमाम निज जोतकी माफ़ी ज़मीन और घरकी यावत् सामग्री नीलाम करने लगा। बहुत थोड़े दामोंमें यह सब निष्कर ज़मीन देवीसिंहके आदमियोंने खरीदना शुरू कर दिया। फिर भी तमाम मालगुज़ारी वसूल नहीं हुई। जो कुछ वसूल होता था वह अबवाबमें (extra tax) जमा कर दिया जाता था। इसलिए असली मालगुज़ारी विलकुल अदा नहीं होती थी। उस समय फिर हररामने ज़मीदारोंको कैदकर बेंत लगाना शुरू किया। ज़मींदारोंके घरकी औरतोंका भी कचहरी बुलवाकर अपमान किया। जिन ज़मींदारोंने कबूलियत देकर बैलके पीठपर चढ़नेसे छुटकारा पाया था अब उन लोगोंको भी एक-एक बार बैलके पीठपर चढ़ना पड़ा। देवीसिंहके आदमी नगाड़ा पीटते हुए उन लोगोंको गांव-गांव फिराने लगे।

इधर ज़मीदारोंके अधीनकी प्रजाको भी पकड़वाकर उनकी बाकी लगानको अंगरेज़ोंको देनेके लिए कहा। प्रजाकी अवस्था भी वैसी ही थी। अन्तमें उनके भी हल और बैल नीलाम करने लगा। क्या ज़मींदार, क्या रियाया सभोंपर घोर अत्याचार होने लगा।

इन सब ज़मीदारों, प्रजाओं और उनके घरकी स्त्रियोंपर जैसा अत्याचार किया गया था उसका दिनाजपुरके कारागारकी अवस्था लिखते समय किञ्चित उल्लेख कर दिया गया है। उन सब विषयोंको विस्तारपूर्वक फिरसे लिखनेकी कोई

आवश्यकता न समझकर, केवल संक्षेपमें इतना कहना चाहता हूँ कि दिनाजपुरके अत्याचारोंसे पीड़ित प्रजा और ज़मींदार लाचार हो जंगलोंमें भागकर बाघ और भालू ऐसे भयानक जानवरोंके साथ रहते हुए भी, देवीसिंहके अत्याचारोंसे बचकर, शान्तिलाभ करने लगे। किन्तु रंगपुरकी प्रजा और ज़मीदारोंके लिए वह भी उपाय नहीं था। हरराम बड़ा धूर्त मनुष्य था। कोई ज़मींदार या प्रजा किसी तरह भागने न पाये इसके लिए गाँव-गाँवमें पहरेदार नियुक्त किये गये थे। इन पहरेदारोंकी तनख्वाहके लिए ज़मीदारोंपर फिर "चौकीबन्दी" के नामसे एक नया कर लगाया गया।

इन पहरेदारोंने भी ग़रीब रियायोंके परिवारोंपर घोर अत्याचार करना शुरू किया, बहुतसी रियाया अपनी स्त्रियों और कन्याओंके अपमानको सहन न कर सकनेके कारण गलेमें फाँसी लगाकर मरने लगीं।

ईस्ट इण्डिया कम्पनीके गवर्नर जेनरल हेस्टिंग्ज़को घूसके रुपये देनेके लिए नरपिशाच देवीसिंह, हरराम जैसे पापात्मा लोग देशको इस तरह बर्बाद करने लगे।

इन अत्याचारोंके कारण रंगपुरकी तमाम चीज़ें दिनाजपुरकी तरह महँगी हो गयीं। रंगपुरमें तम्बाकू बहुत ज़्यादा पैदा होता था। लेकिन अब उसके खेत भी पड़ती रहने लगे। इस साल भी जो कुछ तम्बाकू पैदा हुई थी उसका भी कोई खरीदार नहीं मिला। देशके प्रचलित अत्याचारोंके कारण उस समय विदेशी बनिये भी रंगपुरमें प्रवेश करनेका साहस नहीं करते थे। रंगपुर और दिनाजपुर बिल्कुल स्मशान हो गया।

हररामने इस प्रकार अत्याचार करके कुछ रुपये वसूल

किये। किन्तु देवीसिंह इतनेसे सन्तुष्ट नहीं हुआ। उसने और रुपये वसूल करनेके लिए हरराभके पास हुक्म भेजा। स्वयं देवीसिंहने दिनाजपुरमें १८ प्रकारके और हररामने रंगपुरमें २१ प्रकारके अतिरिक्त कर लगाकर रुपये वसूल करने शुरू किये। हररामने देवीसिंहको लिखा कि किसानों-मेंसे बहुतोंने अपने घरकी तमाम चीज़ें बेच डाली हैं। अब वे अपने बालबच्चोंको बेच रहे हैं; किन्तु खरीदार नहीं मिलते। इसीलिए रुपये वसूल करनेमें कुछ अड़चन हो रही है। देवीसिंह हररामका पत्र पातेही उसपर नाराज़ हुआ। फिर भी उसको बर्खास्त नहीं किया। हररामको वह बहुत कामका आदमी समझता था। ११८९ ई०के आषाढ़ महीनेमें उसने हररामके साथ तहसीलके रुपये वसूल करनेके लिए सर्य्यनारायणको नियुक्त किया। सूर्य्यनारायणने हररामकी अपेक्षा अधिक कार्य्यकुशलता दिखलानेके लिए फिरसे ज़मीदा-रोंकी स्त्रियोंपर घोर अत्याचार करना आरम्भ किया किन्तु इस-पर भी एक भी रुपया वसूल नहीं हुआ। इसके बाद देवीसिंहने अपने छोटे भाई भेखधारीसिंहको रंगपुर भेजा। भेखधारीसिंह भी विविध प्रकारका दंड देनेपर भी एक पैसा वसूल न कर सका। रुपया वसूल कैसे करता? हररामके अत्याचारोंसे ज़मींदार प्रजासे भी सर्वस्वान्त हो चुके थे। उनलोगोंकी क्षमता अब एक पैसा दनेकी न रही। जब देवीसिंहने देखा कि भेखधारीसिंहसे भी काम नहीं हुआ, तब ११८९ ई० के अगहन महीनेमें स्वयं रंगपुर आये। उसने प्रजा और ज़मींदारों के अलावा महाजनोंपर भी अत्याचार करना शुरू किया। दवीसिंहके इस अन्तिम अत्याचारसे प्रजा बोल उठी, "जान जाय तो जाने दो। अब अत्याचारियोंके रक्तसे अपने मरे हुए

भाई-बन्धुओंका तर्पण करना चाहिए"। इतने दिनके अत्याचारोंके बाद निर्बोध रंगपुरवासियोंके ज्ञानका उदय हुआ। अब अत्याचारोंको रोकनेका संकल्प किया, किन्तु पहलेही यदि इस शुभ बुद्धिका उदय हुआ होता तो इन यन्त्रणाओं का भोग न करना पड़ता। हीन बुद्धि वंगवासियोंकी निद्रा सहजही भंग नहीं होती! इसलिए इन लोगोंको चिरकाल दुःख और दुर्दशा भोगनी पड़ती है।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

ननकू

दिन बीतनेही को है। देवीसिंहके दिनाजपुरकी तहसील कचहरीके कैदखानेमें प्रायः सभी कैदी ज़मीनपर पड़े हुए हैं। कोई शरीरके दर्दके कारण अत्यन्त क्षीण स्वरसे रो रहा है, तो कोई एकदम बेहोश पड़ा है। किसी रमणीकी गोदका बच्चा प्रहार और भूखसे मर गया है, वह पुत्रशोक और अपने शरीरकी यन्त्रणासे बिलकुल क्षिप्त हो गयी है। रमणी कभी हँस रही है तो कभी रो रही है और कभी गा रही है।

कल ही बर्कन्दाज़ रामानन्दको यहां लाये थे। वे दो दिनोंसे इसी प्रकार बेहोश पड़े थे, उनको पकड़तेही इनलोगोने बहुत मारा-पीटा था। इतना मार खानेपर भी वे दस बारह कोस रास्ता बर्कन्दाजोंके साथ पैदल आये थे। जो रामानन्द गोस्वामी बग़ैर पालकीके अपने शिष्योंके यहाँ कभी आया जाया नहीं करते थे, जब कभी धूपके वक्त एक मुहूर्तके लिए भी घरसे बाहर जाते थे तो नौकर उनके सिरपर छाता लगाया करता था, सैकड़ों शिष्य जिसके खड़ाऊं उठाकर चलते थे,

उसके लिए एकदम दस कोस रास्ता पैदल चलना कितना दुःसाध्य है, इसको दुर्बल बंगवासी अच्छी तरह अनुभव कर सकते हैं। रामानन्द गोस्वामीका वयःक्रम प्रायः सत्तरवर्षका था। अतएव पैदल चलने और अत्यधिक प्रहारके कारण वे बातरोगसे ग्रसित होकर बेहोश पड़े हुए हैं। इस रोगसे उनकी अकस्मात मृत्यु होनेकी सम्भावना थी। किन्तु उनका शरीर आजीवन निरोग था। वे सदाचारी और सच्चरित्र आदमी थे। खाने-पीनेमें भी वे सर्वदा एक ही प्रकारका नियम पालन किया करते थे; जीवात्मा ऐसे निरोग शरीरसे सहजही नहीं निकल सकता। इसीलिए अभीतक रामानन्दकी मृत्यु नहीं हुई, केवल बेहोश पड़े हुए हैं।

तहसील कचहरीके जमादार रामसिंह, कैदखानेके बाहर बराम्देमें बैठे थे, ऐसे समय एक चौदह-पन्द्रह वर्षका बालक धोती-चपकन और मोटे कपड़ेकी पगड़ी बाँधे बराम्देके सम्मुख प्राङ्गण (चौक) में आकर खड़ा हुआ। बालक, कमरेके अन्दर क्या है देखनेके लिए, एकटक कमरेके दर्वाजेकी तरफ़ देख रहा था। बालकके विशाल ललाटपर भस्म शोभा दे रहा था।

रामसिंह दिनाजपुरके कलक्टरके जमादार थे। उनके पूर्व पुरुष पञ्जाबके रहनेवाले थे। दो-तीन पीढ़ियोंसे वे दिनाजपुर में ही वास कर रहे हैं। कलक्टरके दीवान देवीसिंहने उनको अपने ठेकेके तहसील कचहरीके कारागारका अध्यक्ष बनाकर भेजा। रामसिंहकी यहां आनेकी इच्छा न थी। किन्तु देवीसिंह दीवान हैं। दीवानके हुक्मकी वे अवमानना नहीं कर सकते थे। यही कारण था कि वे यहाँ आये हैं। तहसील कचहरीमें कम्पनीके आदमीको देखनेसे ज़मींदार

और प्रजा डरेंगे, इसी अभिप्रायसे देवीसिंहने कलक्टरके जमादार रामसिंहको इस कारागारकी रक्षाका भार देकर यहां भेजा। रामसिंहने यहाँ आनेके लिए आपत्ति की थी। किन्तु दिनाजपुरके कलक्टर गुडलैंड साहब एक गुड लैंड (उत्तम बालक) की तरह देवीसिंहके किसी कामोंमें ज़रा भी बाधा नहीं डालते थे। विशेषतः देवीसिंह उनके बाहरी आमदनीका तरीका स्वयं कर दिया करते थे। काम-काजके बारेमें वे देवीसिंहके गुलाम थे और दूसरे सम्बन्धमें वे देवीसिंह के मौसेरे भाई थे। प्रिय पाठको! यह सुनकर आप आश्चर्य्य न कीजिए। इसमें कोई सन्देह नहीं कि गुडलैंड और देवीसिंह दोनों भिन्नदेशके और भिन्न जातिके होनेपर भी "चोर चोर मौसियावत भाई" थे।

मजबूरन रामसिंह तहसील कचहरीमें आकर रहने लगे। दिनाजपुरसे यह कचहरी दो कोसके फ़ासलेपर थी।

इस तहसील कचहरीके अत्याचारोंको देखकर रामसिंहका हृदय बड़ा व्यथित होता था। रामसिंहका जन्म एक सिख सबादारके रक्तसे था। वे तो कभी कलकत्तेके बेनियन अथवा देवीसिंहकी तरह नर पिशाच नहीं थे? आज दस-बारह वर्षसे रामसिंहको पुत्रशोक हुआ है। उनके सन्तान आदि कोई नहीं है। गृहस्थीमें केवल उनकी स्त्री वर्तमान है।

कारागारके आँगनमें चौदह-पन्द्रह वर्षके बालकको देखकर रामसिंहने उसे अपने पास बुलाया। जब कभी रामसिंह लड़कोंको देखते थे उन्हें अपने पास बुला लेते। उनसे बातचीत करनेमें उन्हें बड़ा आनन्द आता।

बालकके पास आतेही वे उसके सुन्दर गठन और हास्य मुखको देखकर मोहित हो गये। मन ही मन विचारने लगे कि

ऐसा सुन्दर बालक उन्होंने कभी नहीं देखा। स्नेहकी आँखोंसे बारम्बार बालकके मुखकी ओर देखते हुए उन्होंने पूछा—तुम्हारा नाम क्या है ?

बालक—हुजूर मेरा नाम ननकू है।

राम—तुम्हारा मकान कहाँ है ?

बालक—हुजूर मेरे पिताका मकान गया जिलामें था। वे पुर्नियांके जमादार थे। लड़कपनमें उनके मर जानेपर इस देशके एक ग्वालिनने मुझे पालकर इतना बड़ा किया। मैं उसी ग्वालिनको मा कहकर पुकारता हूँ।

राम—यहां क्या चाहते हो ?

बालक—हजूर अब बड़े भये। कहीं नौकरी मिलती तो करते। अब बङ्गालियोंकी नौकरी न करेंगे। बङ्गालीकी जाति बड़ी दुष्ट होती है। काम कराकर पूरा तनख्वाह नहीं देती।

राम—तुम क्या कर सकते हो ?

बालक—जी, सभी काम कर सकता हूं। तम्बाकू भर सकता हूँ। पानी भर सकता हूँ। भाँग पीस सकता हूँ।

रामसिंह बालकके अंग-सौन्दर्यपर पहलेही मुग्ध हो चुके थे। अब उसके मधुर कंठको सुनतेही, उस बालकपर उनको स्नेह आया। बालकको अपने घर रखनेके लिए उनकी प्रबल इच्छा हुई। उन्होंने बालकसे फिर पूछा कितने तनख्वाहपर काम कर सकते हो ?

बालक०—हुजूर, आप कृपाकर जो कुछ देंगे, उसीपर मैं काम करनेके लिए तैयार हूं।

राम०—अच्छा, एक रुपया महीना तनख्वाह देंगे, तुम हमारा काम करो।

बालक रामसिंहके कामपर नियुक्त होकर उनके लिए भांग

पीसने लगा। रामसिंह प्रतिदिन तीसरे पहर भांग पीते थे। बालकने थोड़ेही समयमें बढ़िया भांग तैयार किया। भांगके बनानेमें इस बालककी निपुणता देखकर रामसिंह अत्यन्त सन्तुष्ट हुए। थोड़ी देरके बाद कोठरीके अन्दर अत्यन्त क्षीण स्वरसे किसी एक कैदीके रोनेकी आवाज़ सुनायी दी, बालकने रामसिंहसे कहा—हुजूर, यह आदमी पानी माँगता है। क्या उसको पिलाऊँ ?

रा०—दो भाई, उसको थोड़ा पानी दो। हरामज़ादे देवीसिंहने इन लोगोंको बहुत तकलीफ़ दी है।

बालक इसी सुयोगमें कोठरीके अन्दर घुसकर इधर-उधर देखने लगा। कोठरीके अन्दर देखा कि रामानन्द गोस्वामी एक तरफ़ बेहोश पड़े हैं। दूसरे-दूसरे कैदियोंको थोड़ा-थोड़ा पानी पिलाकर पीछे रामानन्दके पास गया। रामानन्द एकदम बेहोश पड़े थे। हज़ार कोशिश करनेपर भी वह उनको होशमें न ला सका। तब वह रामानन्दके सिरपर पानी छोड़ने लगा। थोड़ी देरके बाद उन्होंने मुँह खोलकर पानी पीनेकी इच्छा प्रकट की। बालक उनके मुँहमें थोड़ा-थोड़ा पानी देने लगा। रामानन्दको कुछ राहत हुई। किन्तु उनको अभीतक पूर्णरूपसे होश नहीं आया था। बालक फिर बाहर आया। रामसिंहके हुक्मके अनुसार दो-एक काम कर कारागारसे थोड़ीदूर एक मैदानमें चला गया। वहां एक वृद्धा औरत और दो युवक मौजूद थे। बालकने इनलोगोंके पास आकर कहा "रूपा, कहींसे थोड़ा दूध लाकर दे सकते हो ? मालूम होता है ठाकुर जबसे पकड़कर आये हैं उन्होंने बिलकुल भोजन नहीं किया है। वे बेहोश होकर पड़े हैं।"

रूपा उसी क्षण दूधकी तलाशमें चला गया।

बालकने वृद्धासे कहा—रूपाके दूध लानेपर, तुम लेकर कारागारके आँगन तक जाना। वहाँ ननकू-ननकू कहकर पुकारते ही मैं कोठरीके अन्दरसे आकर तुमसे दूध ले जाऊँगा।

यह कहकर बालक फिर कारागारको लौट आया। किन्तु सायंकालके समय कारागारको बन्दकर रामसिंह अपने कमरेमें चले गये थे। बालक कारागारका दर्वाज़ा बंद देख अत्यन्त निराश हो गया। कारागारसे थोड़ीही दूरपर रामसिंह-का घर है। बालक फिर रामसिंहके सामने जाकर खड़ा हुआ। बालकके हाव-भावको देखकर रामसिंहने सोचा कि, यह बालक उनसे कुछ कहना चाहता है। रामसिंहने पूछा—ननकू! क्या तुम मुझसे कुछ कहना चाहते हो?

बालक—(संकोच से) हुजूर एक बात कहना चाहता हूँ। किन्तु भय लगता है कि कहीं आप कुपित न हो जायँ!

राम०—कोई डरनेकी बात नहीं है। तुमको जो कहना हो कहो।

बालक—हुजूर, कैद्खानेके एक कैदीने मुझसे थोड़ा दूध माँगा है। उसने तीन दिनोंसे कुछ खाया पीया नहीं है। मैंने मासे उसके लिए थोड़ा दूध लानेको कह दिया है। किन्तु कारागारका दर्वाज़ा बन्द है—

रामसिंह—इसके लिए तुमको क्या भय है। यह चाभी लो और दर्वाज़ा खोलकर कोठरीके अन्दर जाओ। साला देवीसिंह बड़ा पाजी है। इन सब आदमियोंकी जान मुफ़्त ले रहा है। भैया, हमारा कोई जोर नहीं है। नहीं तो हम तमाम कैदियोंको छोड़ दिये होते। कैदियोंपर तुम्हारी दया देखकर हम बड़े सन्तुष्ट हुए। भैया हमारा पुत्र भी इसी प्रकार कैदियोंपर दया करता था।

इतना कहतेही रामसिंहकी आँखोंसे अविरल अश्रुधारा बहने लगी।

ननकू चाभी लेकर दर्वाज़ा खोलही रहा था कि कारागारके चौकीदारोंने दर्वाज़ा खोलनेके लिए निषेध किया। किन्तु, रामसिंहने दर्वाज़ा खोलनेके लिए कहा है यह सुनतेही किसीने उसके काममें बाधा नहीं डाली।

ननकूके दर्वाज़ा खोलनेपर एक वृद्धा लोटेमें दूध लेकर कारागारके आँगनमें आ उपस्थित हुई। 'ननकू' कहकर पुकारतेही, बालकने बाहर आकर वृद्धाके हाथोंसे दूधका लोटा ले लिया और उसको विदा किया। वृद्धाके चली जानेके बाद बालक घरके अन्दर घुसकर रामानन्दके मुँहमें थोड़ा-थोड़ा दूध देने लगा।

थोड़ीदेरके बाद रामानन्दको होश आया। उनके मुँहमें एक लड़का दूध दे रहा है, देखकर क्रोधसे बोल उठे-"दुरात्मा देवीसिंह अब हमको जाति-भ्रष्ट करना चाहता है। तुम कौन हो जो हमारे मुँहमें दूध दे रहे हो? हाय परमेश्वर! हमने कभी शूद्रका छुआ पानीतक स्पर्श नहीं किया। किसने हमारे मुँहमें दूध डालकर हमको जाति-भ्रष्ट किया?"

तब बालक अपना मुँह उनके कानोंतक ले गया और उसने धीरे-धीरे कहा "डरिये नहीं, मैं सत्यवती-आपकी पुत्रवधू हूँ।"

"सत्यवती" यह शब्द वृद्धके कानोंतक पहुँचतेही, सिंहकी तरह गरजकर एकदम खड़े हो गये और कहा "परमेश्वर! हमारी पुत्रवधूको भी पकड़कर वे यहांतक लाये! हम इसी वक्त देवीसिंहका प्राण-संहार करेंगे।" यह कहतेही वृद्ध फिर मूर्छित होकर भूमिपर गिरपड़ा। कारागारके पहरेवाले बाहरसे भीतर आकर पूछने लगे "क्या हुआ है?"

बालकने कहा यह वृद्ध कई दिनोंकी तकलीफ़से एकदम पागल हो गया है।

पहरेवालोंको बालकके इस कथनपर अविश्वास करनेका कोई कारण नहीं था। देवीसिंहके हतभाग्य कैदियोंमेंसे बहुतेरोंने पागल होकर कारागार छोड़ा था। पहरेवालोंके चले जानेके बाद सत्यवती अत्यन्त चिन्तित होकर अपने श्वशुरके सिरहाने बैठकर सोचने लगीं। उनका मुख-कमल सूख गया। फिर वृद्धके मस्तकपर पानी देने लगीं। प्रायः एक घंटे पानी देनेपर रामानन्दको पुनः होश आया। इस बार सत्यवतीने अपने हाथोंसे सिर पकड़कर उनके कानोंके पास अपना मुँह ले जाकर कहा-"आप डरिये मत, आप कोई बात अपने मुखसे न निकालिए। मैं पुरुष-वेषमें यहांसे आपका उद्धार करने आयी हूँ। मुझको कोई पकड़कर नहीं लाया है।"

वृद्धके कानोंमें इन बातोंके पहुँचतेही उसमें ज्ञानका संचार धीरे-धीरे होने लगा। थोड़ी देर तक स्तम्भित रहकर फिर क्षीण स्वरसे कहनेलगे "पुत्री? क्यों तुमने हमारे लिए अपनेको व्याघ्रके मुखमें डाल दिया है? तुमको पहचान लेनेपर सर्वनाश हो जायगा।

छद्मवेशी बालकने कहा-कोई भय नहीं। मैं आपको एकही दो दिनके अन्दर कारामुक्त कर लूंगी। लीजिए दूध पी लीजिए, मुझे अधिक समयतक यह लोग यहाँ रहने न देंगे।

वृद्ध दूध पीकर स्वस्थ हुआ। सत्यवतीने दर्वाज़ा बन्द कर दिया और जाकर रामसिंहको कारागारकी ताली दे दी।

बारहवां परिच्छेद

कारामुक्त

ननकूने दोही दिनोंमें रामसिंहका स्नेहाकर्षण किया। रामसिंहको कोई सन्तान नहीं थी। इससे वे मनही मन विचार करने लगे कि ननकू अवश्य किसी भद्र हिन्दुस्तानीका बालक है; दुरवस्थामें पड़कर नौकरी करने आया है; अतएव ननकूको नौकर न रखकर गोद ले लें, इससे उनकी स्त्रीको विशेष आनन्द होगा और वे स्वयं पुत्रशोकको धीरे-धीरे भूल जायँगे। ऐसा सोचकर रामसिंहने स्थिर किया कि जितना शीघ्र हो सकेगा, इस कारागारके कामसे छुट्टी लेकर ननकूको साथ ले अपने घर दिनाजपुरको चले जायँगे। रामसिंहको अब नौकरी करनेकी विशेष इच्छा नहीं है। उनकी उम्र चालीसके पार हो गयी है। देवीसिंहने उनको कारागारके कामोंमें नियुक्त किया है। इससे वे एकान्तमें बैठकर उनको साला बज्जात इत्यादि ललित शब्दोंमें कोसा करते थे। किन्तु प्रकाशमें कुछ कह नहीं सकते थे। देवीसिंह कलक्टरके दीवान हैं। देवीसिंह यदि चाहें तो उनको बर्खास्त कर सकते हैं।

रामसिंहके कामोंसे अवसर मिलनेपर सत्यवती क़रीबके मैदानमें जाकर वृद्धा दासी रूपा और जगासे परामर्श किया करती थीं। किस उपायसे रामानन्द गोस्वामीको कारा-मुक्त कर सकेंगी केवल इसी चिन्तामें लगी रहतीं। रामानन्द-को उठकर खड़े होनेकी शक्ति नहीं है; यदि उनमें उठकर चलने-फिरनेकी ताकत होती तो सत्यवती पहलेही दिन उनको कारागारसे मुक्त कर लेतीं। बहुत सोचनेके बाद रूपाने कहा "बहुजी! बूढ़े महराजको यदि आप किसी तरह कैदखानेके

बाहर बारान्दे पर सुला सकें तो मैं अनायास उनको लेकर भाग सकता हूँ।"

जगा भी इस बातसे सहमत हुआ। बाद इनलोगोंमें यह तय हुआ कि सत्यवती रामानन्दको कारागारके बाहर बारान्देमें सुलायगी और रूपा या जगा उनको गोदमें उठाकर ले भागेगा।

सत्यवती यही परामर्श स्थिर कर तीसरे पहर रामसिंहके पास आयीं। पहलेकी तरह रामसिंहके लिए भांग तैयार करना शुरू किया। पहली रातको जो चार बर्कन्दाज़ पहरेपर रहेंगे उनलोगोंको भांग पिलानेका वादा किया। बूटी तैयार होनेपर रामसिंहने पीया और कैदखानेका दर्वाज़ा बन्द करने चले। इस समय ननकूने उनके पास जाकर कहा--हुजूर यह वृद्ध कैदी कहता है कि रातको कोठरीमें शोर होनेके कारण निद्रा नहीं आती, यह बारान्देमें सोना चाहता है। इसको उठनेकी शक्तितो है ही नहीं कि भाग जायगा। क्या आप इसे बारान्देमें सोनेका हुक्म देंगे?

रामसिंहने कहा "उसकी इच्छा है तो वह बारान्देमें सो सकता है, जो कैदी भागना चाहते हों उनको भागने दो, अब कितने दिनोंतक साला देवीसिंह इनलोगोंको कष्ट देगा।" तब ननकू बड़े कष्टसे वृद्ध रामानन्दको गोदमें उठाकर बारान्दे में ले आया। रामानन्द बारान्देमें सो रहे।

* * * * *

पहली रातके पहरेदारोंने अधिक बूटी पी ली थी। नव बजते-बजते निद्रादेवीने उनपर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया। रात अंधेरी थी। रूपा, जगा और वृद्धा दासी कारागारसे

थोड़ी दूरपर खड़ी थीं। प्रायः डेढ़ प्रहर रात्रि बीतनेपर ननकू रामसिंहके कमरेसे निकलकर कारागारके समीप आया। तब रूपा और जगा ननकूके पास गये। ननकू उनलोगोंको संग लेकर कारागारके बारान्देपर चढ़ गया। रामानन्द गोस्वामीपर वातरोगने आक्रमण किया था, वे प्रायः बेहोश पड़े रहा करते थे, कभी-कभी उनको होश आजाता था? रूपा रामानन्दको गोदमें उठाकर धीरे-धीरे कारागारके आँगनमें आया। इसी समय द्वितीय प्रहरके सिपाहियोंमेंसे एकने देखा कि, रामानन्दको गोदमें लेकर रूपा भागा जाता है। उसके पीछे-पीछे जगा, वृद्धदासी और ननकू दौड़ते हुए पूर्व दिशाको जा रहे हैं।

"कैदी भागा" "कैदी भागा" यह कहकर बर्कन्दाज़ चिल्ला उठा।

उसके चीत्कारसे प्रायः बारह-चौदह प्यादे और बर्कन्दाज़ जाग पड़े और जगा, रूपाके पीछे दौड़े।

रूपाने रामानन्दको जगाके गोदमें देकर कहा "तुम इनलोगोंको लेकर भागो। हम यहां खड़े हैं। इनलोगोंके साथ मरते दमतक युद्ध करेंगे। ऐसा करनेसे वे लोग तुमलोगोंका पीछा छोड़ देंगे और केवल हम्हींको पकड़नेकी चेष्टा करेंगे।

सत्यवतीने कहा—वे लोग तुमको धरनेपर निश्चय मार डालेंगे।

रूपा जल्दी-जल्दी बोलने लगा "हमारे मरनेसे भी यदि तुमलोग भाग सको तो उसमें कोई हानि नहीं है। हमारे अकेले मरनेसे क्या? किन्तु तुमलोगोंके पकड़े जानेसे सर्वनाश हो जायगा। तुमलोग जाओ और जल्द जाओ।

जगा रूपाका छोटा भाई है, उसके प्रति रूपाका स्नेह

विशेष रूपसे है। इसीलिए उसने जगाको उनलोगोंके साथ जानेके लिए कहा और स्वयं जानकी आशा त्याग बाँसकी लाठी हाथमें लेकर खड़ा हो गया। तीन-चार बर्कन्दाज़ोंके नज़दीक आनेपर उसने दोको तो यमलोक भेज दिया। बाद दस बारह बर्कन्दाजोंने इकट्ठे होकर उसपर आक्रमण किया। वे लोग निद्रासे उठतेही खाली हाथों आये थे? उनलोगोंके साथ कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं था। यदि रूपा चाहता तो अनायासही इनलोगोंके हाथोंसे भाग सकता था। किन्तु शायद यहलोग रामानन्द और सत्यवतीको धरनेके लिए अग्रसर हों, इसी आशङ्कासे वह वहीं अकेला खड़ा-खड़ा लड़ने लगा। धीरे-धीरे करके उसने चारपांच आदमियोंका प्राण-संहार किया। वाद लाठी लेकर और भी आदमी आने लगे। इस अवस्थामें रूपा उत्तरकी ओर भागा। रात अंधेरी थी। अकस्मात वह एक गड़हेमें गिर पड़ा। किन्तु बर्कन्दाज़ उसको न देखकर सीधे उत्तरकी तरफ दौड़ने लगे। इधर जगा रामानन्दको लेकर सीधे पूरबकी ओर चला।

रामसिंह बर्कन्दाज़ोंके गोलमालसे जाग पड़े। ननकू कारागारमें बाहरसे दोचार आदमियोंको ला, किसी कैदीको लेकर भागा है, यह सुनकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। किन्तु उनका ननकूके प्रति गहरे स्नेहका सञ्चार हो गया था, अभीतक ननकूके विरुद्धके एक बात न कहकर केवल देवीसिंहको गालियाँ देने लगे। ननकूको वे गोद नहीं ले सके, ननकू भाग गया, यह तमाम दोष देवीसिंहका है, यह मानकर तमाम रात देवीसिंहकी मा, बहन, फूफी, मासी और उनके आत्मीय स्वजनोंको अश्लील भाषामें गालियां देते रहे। तमाम रात उनको निद्रा नहीं आयी।

किसी बर्कन्दाज़ने उनसे कारागारके अन्य कैदियोंकी गिनती मिलानेके लिए कहा। रामसिंहने क्रोधसे कहा—हम सब कैदियोंको छोड़ देंगे। साला देवीसिंहके कारण हमारा ननकू भाग गया साले्ने दूसरोंकी ज़मीन बेनाम ठेका लेकर मुल्कको बर्बाद किया है।

तेरहवाँ परिच्छेद

यह देवी है या मानवी ?

रात अँधेरी है। एकदम निस्तब्धता छायी हुई है। जगा रामानन्द गोस्वामीको कन्धेपर लेकर क्रमशः माल्दहकी ओर अग्रसर होने लगा। वृद्धा दासी और सत्यवती जगाके पीछे-पीछे चलीं। इन लोगोंके गंगारामपुरकी सीमा तक पहुँचते-पहुँचते भोर हो गया। जगा कमसे कम आठकोस इस वृद्ध ब्राह्मणको कन्धेपर लादकर लाया है। इसके पहले दिन तीसरे पहर जगाको भोजन नहीं मिला था। इस समय वह अत्यन्त थक गया है, परन्तु ज़ाहिरा सड़कके किनारे बैठकर आराम करनेके लिए इनलोगोंको साहस नहीं हुआ। सड़कसे थोड़ीदूरपर एक जंगलके अन्दर प्रवेशकर विश्राम करने लगे। रूपा जिस प्रकार जगाको प्यार करता था, उसी प्रकार जगा अपने ज्येष्ठ भ्राता रूपाको भी बहुत चाहता था। जगाने इस समय जंगलके अन्दर प्रवेश करतेही रूपाके लिए रोना शुरू कर दिया। सत्यवती देवी और वृद्धा दासी भी अत्यन्त विलाप और परिताप करने लगीं। अभीतक सत्यवती-के साथ दो विश्वासपात्र आदमी थे। किन्तु रूपाने इनलोगोंका उद्धार करनेके लिए स्वेच्छापूर्वक अपने प्राण-विसर्जित किये

हैं। जिस अवस्थामें ये लोग रूपाको छोड़ आये हैं, उसमें उसकी मृत्युके सम्बन्धमें इन लोगोंको ज़रा भी सन्देह नहीं रहा। ये लोग विचार करने लगे कि रूपा अवश्य देवीसिंहके हाथों मारा जायगा। रूपाके शोकसे जगाकी अपेक्षा सत्यवती देवी विशेष कातर हुईं, वे रूपाके लिए अविश्रान्त विलाप करने लगीं।

रामानन्द गोस्वामी अभीतक बेहोश पड़े थे। थोड़ीदेर हुई उनको किञ्चित होश हुआ है। बातके रोगीको प्रातः-कालके समय संज्ञा होती है। जिस प्रकारसे वे कारामुक्त हुए, और जिस प्रकार रूपाने अपने प्राणोंको विसर्जित कर इनलोगोंके भागनेका सुयोग कर दिया, इन सब वृतान्तों को सुनकर वे भी रोने लगे। इन लोगोंके विलाप और परितापसे डेढ़ पहर दिन वीत गया। रामानन्दका कंठ सूखने लगा। सत्यवतीने अपने श्वशुरकी प्यासको बुझानेके लिए जगाको किसी निकटके जलाशयसे थोड़ा पानी ले आनेके लिए कहा।

वे लोग जहाँ विश्राम कररहे थे उसी स्थानपर बहुतसे बेल-के पेड़ थे। सैकड़ों पके हुए अच्छे बेल पेड़ोंके नीचे पड़े हुए थे। गंगारामपुरकी सभी जगह बेलके पेड़से भरी हुई थी। ऐसी किंवदन्ती है कि प्राचीन कालमें इस गंगारामपुरके निकटवर्त्ती किसी स्थानपर वाण राजाकी राजधानी थी। उनके शैव होनेके कारण उनके राज्यमें तमाम बेलके ही पेड़ थे।

जगाके पानी लानेके बाद, सत्यवती पेड़ोंके तलेसे कई एक बेल उठा लायीं। उन्होंने केवल पानीसे बेलका शर्बत बनाकर वृद्ध श्वशुरकी क्षुधाको शान्त किया। बाद जगा और वृद्धा दासीको भी बेलका शर्बत बनाकर पिलाया। ये लोग बेलका शर्बत पीकर किञ्चित स्वस्थ हुए। दिन डूबनेके बाद वे लोग फिर मालदहकी तरफ चले। दूसरे दिन दोपहर-

के वक्त पडुआके जंगलमें आकर पहुँचे। यह तमाम रास्ता जगाने रामानन्दको कन्धेपर लादकर तै किया था।

उनलोगोंने पहलेसे ही स्थिर कर लिया था कि कुछ दिनों तक पडुआके जङ्गलमें छिपकर रहेंगे। फिर देवीसिंहके अत्याचारोंके कम होनेपर वेलोग गौड़में रामानन्दके पैतृक मकानपर जानेकी चेष्टा करेंगे। आज आठ-नौ वर्ष हुए कि माल्दहकी रामानन्दकी तमाम ब्रह्मस्व ज़मीन जब्र कर ली गयी है। वाँरेन हेस्टिंग्ज़के उपद्रवसे देशके प्रायः तमाम लोगोंकी माफ़ी और देवार्पणकी हुई ज़मीन जप्त कर ली गयी थी। किन्तु रामानन्दको रहनेवाले मकानसे अभीतक उनको किसी ठेकेदारने बेदखल नहीं किया है। वह मकान अभीतक शून्य पड़ा हुआ है। बाकी मालगुज़ारीके लिए ईस्ट इन्डियाके आदमी उनको कैद करेंगे, इसी आशङ्कासे वे अपने पैतृक मकानको त्यागकर जङ्गलोंमें घूम रहे हैं।

पंडुआके जंगलोंमें पहुंचते ही, जगा जंगलके बीच किसी जलाशयके निकटका स्थान खोजने लगा। जंगलमें वास करनेके समय नज़दीक जलाशय न रहनेसे उस स्थानपर वास करनेकी सुविधा नहीं होती। जगाने जंगलके अन्दर कुछ दूर जाकर एक तालाबके पास दो कुटियां देखी। उनमेंसे एक कुटी खाली पड़ी थी और दूसरेमें एक विधवा रमणी योगासनपर बैठकर फूल और चन्दनसे पार्थिव (मिट्टीके शिवलिङ्ग) का पूजन कर रही थी। उसको देखतेही जगाके दिलमें शंका उत्पन्न हुई "यह देवी है या मानवी"? किन्तु उसने उस स्त्रीसे कोई बात नहीं पूछी। विशेषतः रमणी निमीलित नेत्रोंसे बैठकर ध्यान कर रही थी। उसका ध्यान तोड़नेका जगाको साहस नहीं हुआ।

जगाने ऐसी विमल और पवित्र मूर्ति कभी नहीं देखी थी। इस ध्यानशीला रमणीको देखकर शायदही कोई उसे मनुष्य कह सकता। जगाने बाल्यावस्थासे सुना है कि जंगलमें अनेक प्रकारके देव और देवियाँ वास करतों है। इसीसे उसने यह सिद्धान्त कर लिया कि निश्चय यह कोई देवकन्या है। किन्तु इससे बात करना उचित है या नहीं, उस समय केवल यही चिन्ता वह करने लगा। बहुत सोच-विचारकर उसने निश्चित किया कि, जंगलमें सब प्रकारके अपदेवता, भूत-प्रेत, भी रहा करते हैं और वे ही मनुष्योंका अनिष्ट-साधन करते हैं। अच्छे देवता कभी किसीका अनिष्ट नहीं करते। इस देवकन्याके मुखमें जब दया और स्नेहका भाव प्रकाशमान है, तब यह अवश्य कोई अच्छी देवी होगी। इसलिए इसका आश्रय मिलनेसे इस विपद्के समय बहुत उपकार होनेकी सम्भावना है। यह सोचकर जगाने मन ही मन स्थिर किया कि, रमणीकी शिव-पूजा समाप्त होतेही वह उसके चरणोंपर मस्तक रखकर उसके शरणागत होगा।

प्रायः आधे घण्टेके बाद अञ्चलके वस्त्रको गलेमें लपेटकर गलवस्त्र होकर-प्रणाम करती हुई रमणी बोल उठी-"भगवान देवादिदेव महादेव! इस चिरदुःखिनीको यदि और भी कष्ट देना हो तो दो, किन्तु प्रेमानन्दको आशीर्वाद दो, शत्रुके हाथोंसे उसको निरापद् रक्खो।"

"प्रेमानन्दको आशीर्वाद दो" "उनको निरापद् रक्खो" यह सुनतेही जगा चौंक पड़ा। वह सोचमें पड़ गया कि, यह किस प्रेमानन्दकी मंगल-कामना कर रहीं हैं। मालदहमें हम लोगोंके प्रेमानन्दके सिवा और भी कोई प्रेमानन्द हैं, सो तो

हम नहीं जानते । किन्तु हम लोगोंके प्रेमानन्दकी मृत्यु हुए तो बारह वर्ष हो चुके ।

रमणी अभी तक सिर नीचा किये स्तुति पाठ कर रही थीं । जगा एकटक उस रमणीकी तरफ देखने लगा । थोड़ी देरके बाद रमणीका स्तुति-पाठ समाप्त हुआ । उसने खड़ी होकर पीछेकी तरफ देखा कि, कुटीके बाहर एक दीर्घकाय कृष्णवर्ण आदमी खड़ा है । रमणी इसको देखकर शंकित हुई । किन्तु जगा उसी समय उसको प्रणाम कर ज़मीनमें लोटने लगा और बड़ी नर्मीसे उसने पूछा-"माता आप कौन है ? और कौनसे प्रेमानन्दकी मंगल-कामनाके लिए शिवकी पूजा कर रही हैं ।"

रमणीने जगाके प्रश्नका कोई उत्तर नहीं दिया, वह मौन रहीं।

जगाने फिर विनीत भावसे कहा-"मा ! हम लोग बड़े विपदमें पड़े हैं । इस जंगलमें कुछ कालतक छिपकर रहेंगे, इसीलिए यहाँ आये हैं । हम लोगोंके गोसाईंजीके पुत्रका नाम भी प्रेमानन्दजी था । आपके मुखसे प्रेमानन्दका नाम सुन-कर आपका परिचय जाननेकी इच्छा हुई है ।"

रमणी इस बातको सुनतेही कुछ आस्वस्थ हुई । उसने पहले सन्देह किया था कि यह आदमी गंगागोविन्दसिंहका गुप्तचर होगा । किन्तु अब उसकी यह आशङ्का दूर हुई । उसने जगासे पूछा "तुम किस प्रेमानन्दके पिताकी बात कह रहे हो ?"

जगा—जी, गौड़के रामानन्द गोस्वामीके पुत्रका नाम प्रेमानन्द गोस्वामी था । प्रायः दस-बारह वर्षका समय हुआ कि पुर्नियाके जंगलमें प्रेमानन्दकी मृत्यु हो गयी ।

रमणी—रामानन्द गोस्वामी इस समय कहां है ?

जगा—जी, आपका परिचय जाने बिना उस बातके कहनेका साहस नहीं होता।

रमणी—हमारे द्वारा तुम लोगोंके अनिष्ट होनेकी कोई सम्भावना नहीं है।

जगा—आप कौन है? देवी या मानवी?

रमणी—हम कौन हैं यह तुम्हें जाननेका कोई प्रयोजन नहीं। रामानन्द गोस्वामी कहां हैं-यह बतलाओ।

जगा—जी हम लोगोंका तो आप कोई अनिष्ट नहीं करेंगी?

रमणी—रामानन्द गोस्वामीका अनिष्ट करना तो दूर रहा, मैं सर्वदा उनके लिए मंगल-कामना करती हूँ।

जगा—आप रामानन्द गोस्वामीको पहचानती हैं?

रमणी—उनका नाम सुना है। उनको कभी देखा नहीं है।

जगा—किससे आपने उनका नाम सुना है?

रमणी—उनके पुत्रसे उनका नाम सुना है।

जगा—उनके पुत्रके साथ आपकी कहाँ मुलाक़ात हुई थी? उनकी तो मृत्यु हुए आज प्रायः बारह वर्ष होगये।

रमणी—(थोड़ा हँसकर) तुम ठीक जानते हो कि उनकी मृत्यु हो गयी है?

जगा—जी, ठीक जानता हूँ। उनकी विधवा स्त्री और उनके वृद्ध पिताके साथही मैं रहता हूँ।

रमणी—उनकी स्त्री क्या विश्वास करती हैं कि उनके स्वामीकी मृत्यु हुई है?

जगा—ऐसा वह क्यों न करतीं? ऐसा न करनेसे सफेद कपड़ा क्यों पहने रहती हैं? विधवाकी तरह हविष्यान्न क्यों भोजन करती हैं?

रमणी—प्रेमानन्दने परम साध्वी सुनीतिदेवीके गर्भमें जन्म

लिया है। देवीसिंह अथवा गंगागोविन्दसिंहमें इतनी शक्ति नहीं है कि उनका प्राण-विनाश कर सकें।

जगा और रूपा दोनों भाई सुनीति देवीकी, मातासे बढ़ कर भक्ति किया करते थे। सुनीतिदेवीका नाम सुनतेही जगाका हृदय अत्यन्त विगलित हुआ, उसके नेत्रोंसे एहसान-का आँसू निकलने लगा और इस रमणीके साथ बात करनेमें उसका और भी साहस बढ़ने लगा। तब वह रमणीके और समीप जाकर उसके पैरोंपर अपना मस्तक रखकर बोला—माता! आप देवी हैं अथवा मानवी? प्रेमानन्द अभी जीवित हैं, यह बात उनके वृद्ध पिताको मालूम होतेही वे अत्यन्त सुखी होंगे। वे रोग और शोकसे संज्ञाशून्य हो गये हैं। प्रेमानन्द-के पिता और उनकी स्त्री इसी जंगलमें हैं। देवीसिंहके कारा-गारसे भागकर आज यहाँ तक हम लोग पहुँचे हैं।

जगाकी बात सुनकर रमणीने प्रेमानन्दके पिता और स्त्रीको अपनी कुटियामें ले आनेके लिए कहा।

उस समय जगा एक साँस दौड़ता हुआ सत्यवतीके पास जाकर कहने लगा—बहूजी! बड़ा शुभ समाचार है। पिता जीसे अभी कहो, इसी समय कहो 'हमारे प्रेमानन्दजी अभी तक जीवित हैं। उनकी मृत्यु नहीं हुई है।'

सत्यवती रामानन्द और वृद्धा दासी जगाकी बातोंका अर्थ बिलकुल समझ नहीं सके। आज दस-बारह वर्षकी बात है और उन लोगोंके दिलमें यह बात दृढ़ रूपसे जम गयी थी कि, प्रेमानन्दकी मृत्यु अवश्य हुई है। वे लोग आश्चर्यसे जगाके मुँहकी ओर देखने लगे। जगा वारम्बार यही कहने लगा "प्रेमानन्दजी अभी तक जीवित हैं।"

सत्यवती देवीने थोड़ी देरके बाद जगासे पूछा–क्या तुमने उनको इस जंगलमें कहीं देखा है ?

जगा—जी, हमने उनको अभी अपनी आँखोंसे तो नहीं देखा है, पर इस जंगलमें एक देव-कन्या रहती हैं। उन्होंने कहा है कि, प्रेमानन्द अभी तक जीवित हैं। वहाँ चलनेपर वे आपसे तमाम बातें कहेंगी।

सत्यवतीने फिर पूछा–किसीने तुमको धोखा देनेके लिए ऐसी बातें तो नहीं कहीं ?

जगा—कभी नहीं। वे सत्यही देव-कन्या हैं, वे क्या कभी किसीको धोखा दे सकती हैं ? उनके साथ प्रेमानन्दजीकी मुलाक़ात न होनेसे उन्होंने माताजीका नाम किस तरह जान लिया। उसी देव-कन्याने कहा है कि परम साध्वी सुनीति देवीके गर्भमें प्रेमानन्दका जन्म हुआ है। भला उनको कोई मार सकता है ?

सत्यवती—देवकन्याने और क्या-क्या कहा ?

जगा—जी, मैं जब उस कुटियाके समीप गया, तब वे शिवजीका पूजन कर रहीं थीं। वे दोनों आँखें बन्दकर पूजा कर रहीं थी, मुझे उन्होंने देखा तक नहीं। पूजाके अन्तमें गलवस्त्र होकर शिवको प्रणामकर उन्होंने कहा 'भगवन् देवादिदेव महादेव, प्रेमानन्दको आशीर्वाद दो, उनको निरापद रक्खो।' उस समय मैंने उनके चरणोंपर माथा रखकर कहा "माता! आप किस प्रेमानन्दकी शुभकामना कर रही हैं ? हम लोगोंके भी एक प्रेमानन्द थे। आज दस-बारह वर्ष हुए उनकी मृत्यु हो गयी।" तब उन्होंने हँसकर कहा "प्रेमानन्दने परम साध्वी सुनीतिदेवीके गर्भमें जन्म लिया है। देवीसिंहकी क्या सामर्थ्य है कि, उनके प्राण ले सके।" बहूजी! हम अब निश्चय

कह सकते हैं कि, रूपा भैया भी नहीं मर सकते। प्रेमानन्द-की माताने जब उनको पाला है तो किसीकी क्या सामर्थ्य कि उनको मार सके? रूपा दोही एक दिनोंके अन्दर यहां लौट आयेगा। कल दिनमें मुझे निद्रा आयी थी, मैंने स्वप्न में देखा है कि रूपा आ गया।

जगाकी बात ख़तम होतेही सत्यवतीने रामानन्दसे कहा—जगाके स्वप्नकी बात सुनकर मुझे भी अपने स्वप्नका स्मरण आता है। जिस दिन आपकी माता और आपके पुत्रको देवीसिंह-का आदमी पकड़कर ले गया, उसी दिन रातको मैं अपने सोने-के कमरेमें बैठकर रो रही थी। रोते-रोते मुझे निद्रावेश हुआ। मैंने स्वप्नमें देखा कि एक शुभ्रवसना परमा सुन्दरी रमणी मेरे पास आयी। मैं उनको पहचान न सकी। मैं उनके विमल प्रशान्त मुखकी ओर देखने लगी। उनके मुखकी ज्योतिसे मेरा कमरा यकायक प्रकाशसे भर गया। रमणीने धीरे-धीरे मुझे पुकारकर कहा "बेटी, तुमने हमको पहचाना नहीं, हम तुम्हारी सास हैं।" यह बात सुनतेही मैंने उनके चरणोंमें प्रणाम किया। उन्होंने मुझे स्नेहसे गोदमें उठा लिया और वारम्बार मेरा मुख चूमकर कहने लगीं "बेटी विपदमें पड़कर कभी ईश्वरको न भूलना। विपद-भञ्जन श्रीहरि सर्वदा तुम्हारे साथ रहकर विपदोंसे तुम्हारी रक्षा करेंगे। पतिके लिए तुम क्यों इतनी उद्विग्न हो रही हो। बारह वर्षके बाद उनसे तुम्हारी मुलाक़ात होगी।

मैं उनसे कुछ पूछूँ कि उसके पहलेही उन्होंने थोड़ा हँस कर कहा—"धन्य वह जननी है जिसने प्रेमानन्दके ऐसा सुपुत्र अपने गर्भमें धारण किया हो, धन्य वह रमणी जिसने प्रेमानन्द कासा पति पाया हो।" यह कहकर रमणी अन्तर्धान हो

गयी। मेरी भी निद्रा भंग हुई। प्रातःकाल जब आपने मरे हुए आदमियोंकी लाशोंमें खोजकर कहा कि, उनका मृतदेह नहीं मिला तो मैंने सोचा कि शायद उन्होंने भागकर अपनी आत्मरक्षा की हो।

सत्यवतीके कहनेके बाद रामानन्द गोस्वामीने कहा-"जगा, अब तुम हमको उसी देवकन्याकी कुटीमें ले चलो। वह कुटिया कितनी दूरपर है? क्या मैं पैदल नहीं चल सकता?

जगा इन लोगोंको साथ ले पूर्वोक्त रमणीकी कुटियाको चला। कुटीरवासिनी रमणीने स्नेहपूर्वक इन लोगोंका स्वागत किया। सत्यवती और रामानन्द रमणीको देखतेही सोचने लगे "यह देवी है या मानवी?"

चौदहवाँ परिच्छेद

कुटीर-वासिनी

कुटीर-वासिनी सत्यवती और रामानन्द गोस्वामीको सम्बोधन कर कहने लगी-मेरा परिचय आप लोगोंको क्रमशः मिलता रहेगा। इस दुरवस्थामें पड़नेके बाद मैंने इस संसारमें प्रेमानन्द और लक्ष्मणके सिवा और किसीको अपना परिचय नहीं दिया। उन सब दुःखोंकी कथा याद आनेपर मेरे हृदयकी शोकाग्नि और भी प्रज्वलित हो उठती है; इससे मेरा परिचय आप लोगोंको सुननेका कोई प्रयोजन नहीं। प्रेमानन्द मुझे माता कहा करते हैं; और मैं उनको अपनी कोखका बच्चा समझती हूँ, इससे मैंने उनसे अपनी आत्मकथा कही है।

प्रेमानन्द जिस तरह देवीसिंहके कारागारसे भागे और अपनेको बचाया-मैं केवल उसीको कहूंगी। रमणीके इतनाही

कहनेपर रामानन्द बात काटकर बोल उठे "मेरा बच्चा इस समय कहाँ है, क्या वह इसी जङ्गलमें है? पहले मैं उसको एक बार देखना चाहता हूँ। बाद सब कुछ सुनूंगा।"

रमणीने कहा—इस समय उनको कलकत्तेके जेलमें रक्खा है। गंगागोविन्दसिंहने चालबाज़ी करके कमसे कम पन्द्रह आदमियोंको जेलमें रक्खा है। उन्हीं पन्द्रह आदमियोंमें प्रेमानन्द भी हैं। किन्तु उनके उद्धारके लिए रङ्गपुरके तमाम आदमी चेष्टा कर रहे हैं। माघकी ७ तारीखको प्रेमानन्दके आनेकी बात थी, किन्तु आज माघका आठवाँ दिन है, न मालूम क्यों उनके आनेमें इतनी देर हो रही है।

रामानन्दने फिर बीचहीमें छेड़कर पूछा—"उसके आनेके लिए माघकी ७वींतारीख क्यों निर्दिष्ट हुई?"

रमणी—सातवीं माघ प्रेमानन्दका जन्म-दिन है। रङ्गपुरके लोगोंने सर्वसम्मतिसे स्थिर किया था कि, इसी शुभ दिनमें रङ्गपुर और दिनाजपुरके अत्याचार-पीड़ित लोग अत्याचारोंको रोकनेके लिए लड़नेको तैयार होंगे। किन्तु जब वे अभी तक नहीं आये तब मालूम होता है कि उन लोगोंकी तमाम चेष्टा और उद्यम विफल हुए है। मैं आज उन्हींके मंगलके लिए अत्यन्त बेचैन होकर श्रीभगवान शिवजीका पूजन कर रही थी।

रामानन्द—प्रेमानन्दने किस प्रकार देवीसिंहसे आत्म-रक्षा की?

रमणीने फिर कहना शुरू किया—आप लोगोंने अवश्य सुना होगा कि, दुरात्मा देवीसिंह दस-बारह स्त्रियोंको संग्रह कर सर्वदा अपने साथ रक्खा करता है। साहब और सूबेदारोंको सन्तुष्ट करनेके लिए वह इन सब स्त्रियोंको समय-समयपर दुष्ट अंगरेज़ोंके पास भेज दिया करता है। मैं भी दुर्भाग्यवश

दुरात्मा देवीसिंह द्वारा पकड़ी जाकर उन्हीं स्त्रियोंके बीच रक्खी गयी थी। अन्तर्यामी परमात्माके अतिरिक्त और कौन जान सकता है कि, इस पापात्माने मुझे कितना कष्ट और यन्त्रणा दी। जब मैं पति और पुत्रके शोकसे पागलोंकी तरह कभी-कभी सड़कोंमें घूमा करती थी उस समय वह मुझे पकड़ कर ले गया। किन्तु मैं पागल होनेपर भी अपने धर्म्माधर्म्मके ज्ञानसे शून्य नहीं थी। मैं किसी तरह अपने धर्म्मको छोड़नेके लिए तैयार नहीं हुई। उस समयकी दुरवस्था और आत्म-विपद्की चिन्ताने मेरे प्रबल पुत्र-शोकका धीरे-धीरे ह्रास कर दिया। दो ही चार दिनोंके बाद जब मुझे पूर्ण ज्ञान हुआ, तबसे मैं देवीसिंहके भयसे सर्वदा एक तेज़ चाकू अपने कपड़ों-के अन्दर छिपाकर रक्खा करती थी। उस नराधमने मुझे एक बार धोखा देकर किसी अँगरेज़के पास भेज दिया था। यदि मैं पहले उसके चालोंको जान लेती तो वहाँ कभी न जाती। मुझे मेरे घर भेजनेके बहाने उस म्लेच्छके पास भेज दिया। दुरात्मा अंगरेजके हाथ बढ़ाकर मुझे पकड़नेके लिए तैयार होनेपर मैंने तुरन्त अपना तेज़ चाकू निकाल उसके वक्षस्थल-में भोक दिया। उसका सारा अंग कपड़ोंसे ढका हुआ था, इसीलिए छुरी उसके छातीमें प्रविष्ट न हो सकी। परन्तु उस नराधमने फिर मुझे स्पर्श नहीं किया। वह देवीसिंह-पर अत्यन्त कुपित हुआ। देवीसिंह उसी समयसे फिर मुझे किसीके पास नहीं भेजा करता था। किन्तु उसको आशा थी कि वह दो ही चार महीनोंमें मुझे अपने वशमें कर लेगा। इसके बाद वह मुझे अन्य दस-बारह स्त्रियोंको साथ लेकर मुर्शि-दाबादसे पुनियाको चला। मैं किसी प्रकार पुर्निया जानेमें सम्मत न हुई। तब वह मुझको बांधकर पुर्निया ले गया।

जो स्त्रियाँ अपने प्राणोंका भय करती हैं अथवा जो प्राणोंका विसर्ज्जन कर अपने धर्म्मकी रक्षा करनेके लिए तैयार नहीं हैं, केवल उन्हीं स्त्रियोंको दुरात्मा लोग कुपथमें ले जा सकते हैं। किन्तु धर्म्मकी रक्षाके लिए जो स्त्रियाँ अपने प्राणों-का विसर्जन करनेके लिए हमेशा तैयार हैं, इस भूमण्डलमें किसीकी सामर्थ्य नहीं है कि उनके धर्म्मको नष्ट कर सके। मैं प्रायः डेढ़वर्षतक देवीसिंहके स्त्री-बाड़ेमें रही। पुनियामें मेरे सिवा और भी दस स्त्रियाँ मेरे साथ थीं। उनमें छः मुसल्मान और चार हिन्दू थीं। उन सरल प्रकृति मुसलमान कुमारियों-को, ऊंचे ओहदेवाले साहब सूबेदारोंसे उनका निकाह करा देगा इस प्रकार आशा दिलाकर प्रलुब्ध करता था। किन्तु हिन्दू महिलाएँ इसको अच्छी तरह जानती थीं कि अंगरेज़ोंके स्पर्शसे ही उनलोगोंको जातिसे भ्रष्ट होना पड़ेगा, इससे वे स्त्रियाँ केवल प्रहारके भयसेही आत्मविक्रय करनेके लिए सम्मत होती थीं।

पुनियामें देवीसिंहके अधीन एक सिक्ख जमादार था। उसका नाम लक्ष्मणसिंह था। लक्ष्मणने जब देखा कि मैं अपने धर्मकी रक्षाके लिए प्राणतक देनेको तैयार हूँ, तब मेरे प्रति उसकी प्रगाढ़ भक्ति और श्रद्धाका उदय हुआ। वह मुझे माता कहने लगा। एक दिन दोपहरको लक्ष्मणने मेरे पास आकर कहा "विश्वास-घात करना मैं पाप समझता हूँ, नहीं तो अबतक तुम्हारे भागनेका कोई बन्दोबस्त कर दिये होता।" मैंने लक्ष्मणसे कहा "बेटा! पति और पुत्रके शोकसे मेरा हृदय दग्ध हो रहा है। मेरे लिए मृत्यु ही श्रेय है। व्यर्थके लिए विपदमें क्यों पड़ोगे? मैं केवल यही चेष्टा कर रही हूँ कि जितनी जल्दी हो सके इस संसारका परित्याग करूँ।

मालूम होता है कि, और दो एक महीना यहां रहनेसे परमेश्वर इस संसारके यन्त्रणाओंसे मेरा उद्धार करेंगे।"

लक्ष्मण मेरी इस बातको सुनते ही बालककी तरह रोने लगा। वह एक दीर्घाकार वीर पुरुष था। उसको देखनेसे वह यमराजका सहोदर मालूम होता था। किन्तु मैं नहीं जानती थी कि, ऐसे बलवान सैनिक पुरुषका हृदय इतना कोमल होता है। वह रोता हुआ यों कहनेलगा कि "मा! मैं सचमुच आपको अपनी जननीके तुल्य समझता हूँ। आपके धर्म्म और पवित्रताका भाव देखकर मैं मोहित हुआ। दुरात्मा देवीसिंहने यहाँ सैकड़ों स्त्रियोंको लाकर सहज ही उनको कुपथगामिनी किया है? किन्तु आपकी तरह परम साध्वी मैंने इसके पूर्व कभी नहीं देखी। बाबा नानकने कहा है कि साध्वी स्त्रियाँ जहां रहती हैं, वही एकमात्र तीर्थस्थान है। मैंने अपने हृदयमें सोच लिया है कि मैं आपको अपनेघर अपनी स्त्रीके साथ रखकर, जननी समझकर प्रतिदिन आपकी पूजा किया करूँगा। और यदि आप मुझे अपना निज सन्तान समझें तो मैं अपनेको कृतार्थ समझूँगा। आपके रहनेसे मेरा गृह एक पवित्र तीर्थ-स्थान बन जायगा।"

"लक्ष्मणकी इन बातोंको सुनतेही उस वक्त मेरे हृदयमें सन्तान-स्नेहका उदय हुआ। वह दीर्घाकार वीर पुरुष था, उसको देखनेसे ही रमणीमात्रके हृदयमें भयका संचार होता था। किन्तु हृदयके वेगसे परिचालित होकर मैं उसके पीठपर हाथ फेरने लगी। और वह एक पले हुए सिंहकी तरह मेरे पैरोंपर पड़ा रहा।"

"थोड़ी देर तक लक्ष्मणने अपने मनही मन न मालूम क्या विचार किया और फिर वह मुझसे कहने लगा-"मा मुझे

कोई सन्तान नहीं है। एक भतीजा था वह भी मर गया। मैं अब नौकरी नहीं करूँगा। देवीसिंहकी तरह दुरात्मा अथवा ईस्ट इन्डिया कम्पनीकी तरह विधर्म्मी म्लेच्छोंकी नौकरी करनेसे अवश्य अपने धर्मका विसर्ज्जन करना पड़ता है। मैं नौकरी छोड़ दूँगा और आपको लेकर अपने देशको चला जाऊँगा। इसपर भी यदि देवीसिंह आपको न छोड़े तो उसीवक्त (अपनी तलवार दिखाकर) इस तेज तलवारसे उसका सिर काटकर आपका उद्धार करूँगा। किंतु जितने दिनों तक मैं उसकी नौकरी करूंगा, उतने दिनों तक उसकेविरुद्ध किसी प्रकारका विश्वासघात न करूँगा। निमकहरामी करना बड़ाभारी पाप है। गुरु नानकने कहा है कि, 'जिसका वेतन लेना, अपना प्राण देकर भी उसका उपकार करना'।"

लक्ष्मणके इनसब बातोंको कहकर चले जानेपर, मैं एकान्तमें बैठकर उसकी तमाम बातोंपर विचार करने लगी। क्रमशः मैं आत्मविस्मृत हो पड़ी। देखते-देखते मुझे कुछ निद्राका आवेश हुआ। अचानक मैंने अपने पीछेकी ओरसे एक चीत्कारकाशब्द सुना। उस समय प्रायः दो घड़ी रात्रिबीत चुकी थी। चाँदकी रोशनीमें मैंने देखा कि एक वृक्षके नीचे किसी अत्यन्त सुन्दर युवा पुरुषका वध करनेका देवीसिंहके बर्कन्दाज़लोग आयोजन कर रहे हैं। देवीसिंह जिन लोगोंका चुपचाप प्राण लेना चाहता था, अंदर लाकरउनका उसी वृक्षके नीचे वध करता था। युवकने विशेष रूपसे अपनी ताक़त दिखायी और उनमेंसे एकके हाथसे तलवार छीनकर उसीका स्वाहा कर दिया। मालूम होता है इसीलिए बर्कन्दाजोंमें चिल्लाहट मची थी। इस युवकके मुखकी सुन्दरता देखकर मेरे हृदयमें दयाका सञ्चार हुआ। मैं मन ही मन सोचनेलगी

कि, ऐसे सुन्दर पुत्रके शोकसे इसके मातापिता अवश्य पागल हो जायँगे। फिर किस प्रकारसे इसके प्राणोंकी रक्षा हो सकती है-केवल यही उपाय ढूँढ़नेलगी। जितना मैं उसके मुखकी ओर देखने लगी, उतनाही स्नेह बढ़ने लगा। बहुत सोच-विचारकर मैंने दौड़कर लक्ष्मणसे जाकर कहा-देखो बेटा लक्ष्मण, देवीसिंहके आदमी एक परम सुन्दर ब्राह्मण-कुमारके वध करनेकी चेष्टा कर रहे हैं। यदि तुम मेरे यथार्थ पुत्र हो तो मेरे अनुरोधसे उसके प्राणोंकी रक्षा करो।

लक्ष्मणने कहा—यह बड़ा कठिन काम है। इस ब्राह्मण कुमारका नाम प्रेमानन्द गोस्वामी है। यह युवक देवीसिंहका वध करनेके अभिप्रायसे अपने साथ एक छूरी लाया था। देवीसिंह जिस प्रकारका मनुष्य है, उससे क्या कभी वह इसको क्षमा करेगा?

मैंने कहा-मेरे अनुरोधसे विवश होकर तुम विश्वास-घातक बनकर भी इसके प्राणोकी रक्षा करो। तब लक्ष्मण बहुत सोच-विचार कर मेरे साथ-साथ उस वध्य स्थानपर आया, और बर्कन्दाजोंको डाटकर कहा कि इसको अभी वध करनेका हुक्म नहीं है। रातको दस बजेके बाद जैसा हो किया जायगा। इसको मेरे जिम्मे देकर तुमलोग चले जाओ। बर्कन्दाजोंने कहा "जमादार साहब, यह साला बड़ा बदज़ात है। अकेले इसको आप पकड़कर नहीं रख सकते।"

लक्ष्मणने कहा—कोई डर नहीं है ऐसे सात बंगालियोंको हम अकेले पकड़कर रख सकते हैं।

बर्कन्दाजोंने यह सोचा कि शायद देवीसिंहने पीछेसे लक्ष्मणको ऐसाही हुक्म दिया हो। इसीसे वे लोग प्रेमानन्दको लक्ष्मणके जिम्मे सौंप कर चले गये।

देवीसिंह भी लक्ष्मणका बहुत विश्वास करता था। लक्ष्मण उनके यावत् कुकर्मोंसे हार्दिक घृणा रखता है, इस बातको देवीसिंह अच्छी तरह जानते थे। किन्तु यह जानते हुए भी लक्ष्मणको बर्खास्त करनेके लिए तैयार नहीं थे। देवीसिंहको दृढ़ विश्वास था कि लक्ष्मण कभी मिथ्या प्रवञ्चना करके उसके धनका अपहरण नहीं करेगा। इसीलिए देवीसिंहने लक्ष्मण-को अपने मालख़ज़ानेका पहरेदार नियुक्त किया था। लक्ष्मण देवीसिंहके मालख़ज़ानेका जमादार था।

रातको नौ बजेके वक्त चन्द्रमा आकाशमें छिप गये। चारो तरफ़ घोर अन्धकार छा गया। उस समय लक्ष्मण मुझे चुपचाप अपने घरमें बुलाकर ले गया और सिपाहीका पोशाक पहननेके लिए कहा। मैं और प्रेमानन्द दोनों सिपाहीका पोशाक पहनकर लक्ष्मणके साथ देवीसिंहकी मालकचहरीसे बाहर आये। कुछ दूर चलनेपर हमलोग एक मैदानमें आ पहुँचे। वहां और दो आदमी हमलोगोंका इन्तज़ार कर रहे थे। लक्ष्मणने उनलोगोंसे कहा "इस ब्राह्मण-कन्याका मैं अपनी माताके तुल्य सम्मान करता हूँ। आप परमसाध्वी हैं। इनको और इस युवकको दिनाजपुरमें मेरे भाई रामसिंहके पास पहुँचा देना और इस पत्रको रामसिंहको दे देना।"

"हमलोगोंके लक्ष्मणसे विदा होनेके पहलेही उसने मुझसे कहा "मा! मैं गुरुनानकका शिष्य हूँ। इस जन्ममें मैंने कभी विश्वासघात नहीं किया था। देवीसिंह कभी भी इस ब्राह्मण-कुमारको न छोडता। आज बाध्य होकर मुझको विश्वास-घात करना पड़ा। अतएव मैं अभी स्वयं देवीसिंहके पास जाकर कहूँगा कि माताकी आज्ञापालन करनेके लिए मैंने विश्वासघात किया है। अब मैं उसकी नौकरी नहीं करूँगा।

वह अगर चाहे तो विश्वासघातके लिए मुझे उचित दंड दे सकताहै। और मैं भी सिर झुकाकर उसके दिये हुए दंडको स्वीकार करूँगा।”

मैं लक्ष्मणकी इन बातोंको सुनकर चौंक पड़ी। मेरे मनमें आया कि शायद देवीसिंह लक्ष्मणको जानसे मारनेका हुक्म देगा, और लक्ष्मण उसे अपने विश्वासघातका दंड-स्वरूप समझकर अपना प्राणविसर्जन करनेके लिए तैयार हो जायगा। ऐसा सोचकर मैंने लक्ष्मणका हाथ पकड़ लिया और कहा—“बेटा! पुत्र-शोकसे मेरा हृदय दग्ध हो रहा था, और तुमने मेरी इस विपन्नावस्थामें भी मुझको माता कहा जिससे मेरे हृदयमें कुछ शान्ति हुई। ऐसी अवस्थामें क्या मैं तुम्हारे प्राणोंके बदले आत्मरक्षा कर सकती हूँ? मैं फिर तुम्हारे साथ लौटूँगी। केवल इस ब्राह्मण-कुमारको जाने दो।”

लक्ष्मण मेरी बातोंको सुनकर थोड़ी देरके लिए चुप हो रहा। फिर कहने लगा—मा! कोई डर नहीं, मैंने सोच लिया था कि मैं अपना प्राणविसर्जन करूँगा। परन्तु अब मैं आपकी बातोंका अपमान नहीं कर सकता। मेरे ज़िन्दा रहनेसे यदि आपका कोई लाभ है, तो मैं आपके सुख और शान्तिके लिए जीवन धारण करूँगा। आजसे यह जीवन आपके चरणोंमें अर्पित हुआ। आपकी सेवा-टहल करना ही मेरे जीवनका एकमात्र उद्देश्य हुआ। जिससे आप सुखी हों वही मैं करूँगा। आजसे आप मेरी एक मात्र आराध्य देवी हुईं। देवीसिंहके मालखज़ानेकी ताली मेरे पास है। मैं अभी नौकरी छोड़ दूँगा, और उसके खज़ानेकी ताली उसको लौटा दूँगा, और उससे कह दूँगा कि जब वह ब्रह्महत्या करनेसे भी नहीं डरता, तब मैं उसके अधीन नौकरी नहीं करूँगा।

लक्ष्मण यह कह हम लोगोंसे विदा होकर चला गया। हम लोग उसके नियुक्त किये हुए आदमियोंके साथ कृष्णनगर होते हुए दो दिनमें दिनाजपुर आ पहुँचे।

रामसिंहने लक्ष्मणके पत्रको पाते ही बड़े आदरसे हम लोगोंको अपने घरमें रहनेके लिए जगह दी। रामसिंहका हृदय दया और स्नेहसे परिपूर्ण था। लक्ष्मण मुझको मा! कहकर पुकारता था, इसलिए रामसिंह भी मुझे मा कहने लगे। किन्तु रामसिंह शोकसे कातर हो रहे थे। हम लोगोंके उनके घर पहुँचनेके कई महीने पहिले ही उनके एक मात्र पुत्रकी मृत्यु हुई थी। रामसिंह प्रेमानन्दको अपना पुत्र समझकर स्नेह करने लगे।

प्रेमानन्द मुझे और रामसिंहकी स्त्रीको मा कहने लगे। इसके दो ही दिनोंके बाद लक्ष्मणसिंह नौकरी छोड़कर दिनाजपुर आ गया। लक्ष्मणकी स्त्री भी रामसिंहके यहाँ रहती थी। वे पुत्र-वधूकी तरह मेरी सेवा करने लगीं। किन्तु मुझे सर्वदा रोती देखकर लक्ष्मण और उसकी स्त्री दुःख प्रकाश किया करती थीं। और मेरे दुःखोंको निवारण करनेका कोई उपाय है या नहीं, हमेशा यही पूछा करती थीं। अन्तमें मैंने उन लोगोंसे अपना दुःख विस्तारपूर्वक कह सुनाया।

* * * * *

तब लक्ष्मण और प्रेमानन्द मुझको रामसिंहके घर रखकर मेरे बड़े लड़केकी खोजमें दिल्ली रवाना हुए। दो ही तीन महीना हुआ प्रेमानन्द स्वदेश लौट आये हैं; किन्तु लक्ष्मण अभी तक पंजाबमें मेरे लड़केका अनुसंधान ही कर रहा है। प्रेमानन्दने जैसा कहा उससे मालूम होता था, लक्ष्मण मेरे लड़केको साथ लेकर बहुत जल्द यहाँ पहुँचेगा। सुनते हैं

मेरा बड़ा लड़का अभी तक ज़िन्दा है।

रमणीके इतना कहनेपर सत्यवतीने पूछा—आपके कितने पुत्र थे?

रमणीने कहा—इन सब बातोंको मैं अब किसीसे कहना नहीं चाहती। इतना मैं अवश्य कहती हूँ कि दुरात्मा गंगा गोविन्दसिंहकी प्रतारणासे मेरे स्वामीने आत्महत्या की और अनाहारसे मेरे दो छोटे-छोटे बालकोंकी मृत्यु हुई।

रामानन्द गोस्वामीने कहा—मा! आपके ही प्रसादसे मेरा प्रेमानन्द अभी तक ज़िन्दा है। यदि आप हमलोगोंसे अपना परिचय देंगी तो क्या हम लोग कोई अनिष्ट करेंगे?

रमणी—आप लोग मेरा कोई अनिष्ट नहीं करेंगे, इसे मैं अच्छी तरह समझती हूँ। किन्तु प्रेमानन्दने मुझे अपना आत्म-विवरण किसीसे कहनेके लिए मना किया है। मेरी समझमें नहीं आता कि गंगागोविन्दसिंह अभी तक मुझको पकड़नेके लिए क्यों चेष्टा कर रहा है। मालूम होता है प्रेमानन्द इस विषयमें कुछ जानते हैं। इसीलिए वह सर्वदा मुझे आत्म-गोपन करनेको कहा करते हैं।

रामानन्द—प्रेमानन्दको गंगागोविन्दसिंहने फिर क्यों कारागारमें बन्द किया है? मैंने अपनी तमाम ब्रह्मस्वकी ज़मीन, आज दस-बारह वर्षके दिन हुए, छोड़ दी है। पैतृक भद्रासनको भी त्याग दिया है।

रमणी—प्रेमानन्दको किसलिए कारागारमें रक्खा है यह मैं कुछ नहीं जानती। सुनती हूँ कि गौरमोहन चौधरी नामक किसी दुष्ट ज़मींदारने उनके तमाम अभिसन्धियोंको व्यक्त कर दिया है।

रामानन्द—पुर्नियामें देवीसिंहके कारागारसे भागनेके

बाद प्रेमानन्द कितने दिनोंतक दिनाजपुरमें रहे ?

रमणी—पुर्नियासे भागकर दिनाजपुर आनेके बाद मैंने प्रेमानन्दसे उनके पिता और स्त्रीके पास जानेके लिए कहा था, लेकिन वे मेरी बातपर राज़ी नहीं हुए। उन्होंने मुझसे कहा "मा! आपके ही प्रसादसे मेरे जीवनकी रक्षा हुई है। आपके पुत्रका अनुसन्धान किये बिना मैं घरको कभी नहीं जाऊँगा।" विषेशतः उसी समय उन्होंने गुप्तरूपसे अनुसन्धान कर मालूम किया कि आप लोग किसी शिष्यके यहाँ रंगपुरमें निर्विघ्न वास कर रहे हैं। आपलोगोंपर इस समय किसी प्रकारके विपदकी आशङ्का नहीं है, इसीसे वे लक्ष्मणके साथ मेरे ज्येष्ठ पुत्रके अनुसन्धानके लिए चले गये। किन्तु ग्यारह वर्षों से काशी, प्रयाग, वृन्दावन और अयोध्या इत्यादि नाना देशोंमें घूमनेपर भी मेरे पुत्रका कोई पता नहीं लगा। अन्तमें वे लोग एक प्रकारसे निराश होकर घरको लौटने लगे। काशीजी तक लौटनेपर किसी महापुरुषसे उन्होंने सुना कि, मेरा पुत्र पञ्जाबमें है, तब लक्ष्मण काशीजीसे फिर पञ्जाबको चला गया, प्रेमानन्द अपने वृद्ध पितासे मिलनेके लिए स्वदेश आये। किन्तु रंगपुरमें जिस शिष्यके यहां आप अपनी पुत्र-वधूको लेकर रहते थे, उस मकानका कोई चिह्न भी उनको दिखायी नहीं दिया। रंगपुरसे उस समय आप कहाँ चले गये थे, यह कोई नहीं बतला सका। तब वे अत्यन्त दुःखी होकर पुनः दिनाजपुरमें मेरे पास लौट आये। यहाँ आकर उन्होंने सुना कि, गंगागोविन्दसिंह और देवीसिंहने मुझे पकड़नेके लिए गुप्तचर नियुक्त किये हैं। इससे हम लोग बहुत डर गये। तब प्रेमानन्द रामसिंहसे परामर्श कर मुझे साथ ले इस जंगलमें आकर वास करने लगे। मैं

यहाँ दो महीनोंसे हूँ, परन्तु प्रेमानन्द बीच-बीचमें आप लोगोंके अनुसन्धानके लिए रंगपुरमें जाया करते थे। उसी रंगपुरसे देवीसिंहके आदमियोंने उनको पकड़कर गंगागोविन्दसिंहके पास भेज दिया है? गंगागोविन्दने उनको कारागारमें बन्द कर रक्खा है।

रामानन्द—रंगपुरमें देवीसिंहके आदमियोंने उनको पकड़ लिया है, यह आपने किससे सुना।

रमणी—आज कल प्रेमानन्दके परामर्शसे ही रंगपुरकी तमाम अत्याचार-पीड़ित प्रजा दलबद्ध हुई है। देवीसिंहके आदमियोंने उन लोगोंपर घोर अत्याचार किया था, इसीलिए उनलोगोंने दृढ़ प्रतिज्ञा की है कि कम्पनीकी आधीनता स्वीकार न करेंगे, कम्पनीको इस देशसे निकाल देंगे। प्रेमानन्दके दलके लोग सर्वदा यहाँ आकर मेरी खोज-ख़बर लिया करते हैं। वे ही लोग मेरे खाने-पीनेका इन्तज़ाम भी कर दिया करते हैं। प्रेमानन्दजीने कलकत्ते जानेके पहले उन लोगोंको मेरी खोज-खबर लेनेके लिए कह दिया था। किन्तु आज मुझे बड़ी आशङ्का हो रही है। मालूम होता है कि प्रेमानन्दकी सब चेष्टाएँ और उद्यम विफल हुए। प्रेमानन्दजीने माघकी सात तारीखको सब बन्दोबस्त कर लेंगे—ऐसा ठीक कर लिया था। पर वे आज भी नहीं आ सके, इसीलिए विपदकी आशङ्का हो रही है।

रमणीकी बात खतम होनेके पूर्व ही जंगलमेंसे पाँच आदमी कुटियाके सामने आकर खड़े हुए। रामानन्द गोस्वामी और सत्यवती डरसे चौंक पड़ीं, किन्तु रमणीने इन लोगोंको आश्वासन देकर कहा—डरिये नहीं। ये लोग प्रेमानन्दके अनुगत आदमी हैं। प्रेमानन्दके विषयमें अभी मालूम हो जायगा।

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

कलकत्तेकी यात्रा

नवागत पाँच आदमियोंने कुटियाके द्वारपर आते ही कुटीरवासिनी रमणीको भक्ति-भावसे प्रणाम किया। रमणी-ने उनलोगोंको आशीर्वाद देकर कहा "भगवान, तुमलोगोंकी मनोवाञ्छना पूर्ण करें।" इन पाँच आदमियोंमें एकका नाम दयाराम था। इन्को कोई-कोई दयाशील कहा करते थे। दूसरे चार आदमी रमणीके लिए खानेकी चीजें सिरपर रख-कर दयारामके साथ आये थे।

दायारामने कुटीरवासिनीको पुकारकर कहा—मा! हम लोग विशेष उत्कण्ठित हो पड़े हैं। प्रेमानन्द अपने पकड़े जाने-के समय हमलोगोंसे कह गये थे कि जिस प्रकार हो सकेगा, जेल तोड़कर भी सातवीं माघके पहले रंगपुर आ पहुँचूँगा। किन्तु आज तक वे आ न सके। उन्होंने और भी कहा था कि, यदि किसी वजहसे वे सातवीं माघके पहिले आ न सके. तब भी उसी दिन हमलोगोंको अपना काम शुरू कर देना होगा। उनके आदेशानुसार कल कूरुल् महम्मद-को नवाबके पदपर बिठाकर कम्पनीके प्यादे और बर्कन्दा-ज़ोंको गाँवके बाहर निकाल दिया है। परन्तु उनलोगोंने उसी विश्वास-घातक गौरमोहन चौधरीकी सहायता से काजीके हाटके तमाम आदमियोंको पकड़ना शुरू कर दिया है। इसी वजहसे कल हमलोगोंके साथ उनलोगोंका युद्ध हो चुका है। युद्धमें हमलोग उनको पूर्णतया परास्त कर चुके हैं। ईस्ट-इण्डिया कम्पनीके सिपाही, बर्कन्दाज़ और प्यादे एक भी प्राण लेकर भाग नहीं सके। किन्तु प्रेमानन्दजीने कहा था

कि भागनेवालोंपर कभी हाथ न उठाना। हमारी तरफके लोगोंने उनके उपदेशको भूलकर, सामयिक उत्तेजनाके वशीभूत हो, कम्पनीके तमाम आदमियोंका प्राणनाश किया है और गौरमोहन चौधरीको भी उनलोगोंके साथ मार डाला है। गौरमोहन चौधरीके विश्वास-घातके कारण ही प्रेमानन्द ठाकुर पकड़े गये थे। इसी दुश्मनीको निकालनेके आवेशमें हमारे आदमियोंने गौरमोहनका वध किया है। हमको मालुम होता है कि प्रेमानन्दके लड़ाईकी जगह उपस्थित रहनेसे उनके निर्धारित किये हुए तमाम नियमोंका पालन पूरे तौरसे करना कठिन होगा। वे बार-बार यही कह गये थे कि धर्म्मका पथ, सत्यका पथ, परित्याग करनेपर हमलोगोंकी विजय कदापि नहीं होगी। उनके उपदेशोका पालन करनेके लिए हमलोग प्राणपणसे चेष्टा कर रहे हैं। किन्तु विपक्षवाले इतने विश्वास-घातक हैं, जिससे भय होता है कि आत्म-रक्षाके लिए हमलोगोंको भी कभी-कभी न्यायका पथ छोड़कर अन्याय युद्धमें प्रवृत्त होना पड़ेगा। इस समय हमलोगोंको कोई उपदेश देनेवाला नहीं है। प्रेमानन्दके उद्धारके लिए हमलोगोंको अब क्या करना चाहिए, यही आपसे पूछनेके लिए आया हूँ।

दयारामकी बातें ख़तम होतेही कुटीर-वासनीने कहा—बेटा! जब संग्राम छिड़गया है तब तुम लोगोंमेंसे किसीको इस समय कार्य्य-क्षेत्र परित्यागकर प्रेमानन्दके उद्धारके लिए स्थानान्तरको जाना उचित नहीं है। तुमलोग कार्य्य-क्षेत्रमें रहकर प्राणपणसे युद्ध करो। प्रेमानन्दके उद्धारके लिए जो कुछ करना होगा वह मैं स्वयं करूँगी। एकतो कम्पनीके उपद्रवसे देश, अराजकतासे परिपूर्ण है, दूसरे इस युद्धके कारण नानाप्रकारके अत्याचारोंके होनेकी सम्भावना है। विपक्ष-

दलवाले देशी रमणियोंके प्रति किसी प्रकारका अत्याचार करने न पावें, इसकी प्राणपणसे चेष्टा करो । प्रेमानन्दने तुम-लोगोंसे बारम्बार यही कहा था कि युद्ध-कालमें क्या स्वपक्ष-की और क्या विपक्षकी किसी पक्षकी स्त्रियोंके प्रति किसी प्रकारका अत्याचार न हो, इस विषयमें ज़रूर सावधान रहना। तुमलोग उनके इस उपदेशका उल्लंघन कभी न करना।

दयाराम—हमलोग मरते दमतक उनके इस उपदेश का उल्लंघन नहीं करेंगे। किन्तु कम्पनीके सिपाहीलोग स्त्रियों पर भी अत्याचार करनेसे कुंठित नहीं होते; इससे उनलोगोंकी ऐसी निष्ठुरताको देखकर हमलोगोंके आदमी भी क्रोधान्वित हो उनका अनुसरण कर सकते हैं।

कुटीरवासिनी—सैनिकोंमें जो लोग स्त्रियोंपर अत्याचार करते हैं, वे लोग अत्यन्त कापुरुष हैं। वे लोग कभी 'वीर' नामके उपयुक्त नहीं हैं। वे लोग सत्यही आततायी हैं।

दयाराम—हमलोग आपके इस उपदेशका प्रतिपालन करनेके लिए प्राणपणसे चेष्टा करेंगे। कल युद्धके बाद सायं-कालके समय मैंने रंगपुर छोड़ा था और आज दोपहरको यहाँ आकर पहुँचा हूँ। मुझे क्या इसी समय रंगपुर लौट-नेकी आज्ञा होती है?

कुटीरवासिनी—तुम एक क्षणका भी विलम्ब न कर अपने साथियोंके साथ घोड़ेपर रंगपुर चले जाओ। ईश्वरकी इच्छा होनेपर प्रेमानन्दजी चारही पाँच रोजके अन्दर यहाँ पहुँच जायेंगे।

दयाराम उसी समय रमणीको प्रणामकर रंगपुर चले। उनके चले जानेके बाद कुटीरवासिनी देवीने सत्यवतीसे कहा—बेटी! मैं स्वयं प्रेमानन्दके उद्धारके लिए कलकत्ता जाऊँगी।

तुमलोग मेरे लौटने तक यहीं रहो। किन्तु मुझे एक आशंका हो रही है। प्रेमानन्दने मुझे इस स्थानका परित्याग करनेके लिए बारम्बार निषेध किया है। किस उद्देश्यसे उन्होंने मुझे निषेध किया है, यह मैं नहीं जानती।

सत्यवतीने कहा—माता! यदि उन्होंने कहीं जानेके लिए मना किया है तो आप यहीं रहें। मैं कलकत्ता जाकर उनके उद्धारकी चेष्टा करूँगी।

कुटीरवासिनी—उद्धारके लिए क्या उपाय करोगी?

सत्यवती—वहाँ जा देखभालकर जैसा उचित समझूंगी, वैसा करूँगी।

कुटीरवासिनी—तुम उच्चकुलकी स्त्री हो। तुम्हारे लिए यह व्यापार कठिन है।

सत्यवती—विपद्में पड़कर बहुतसे असाध्य कार्योंका साधन करना मैंने सीखा है। विपद् और दुरवस्था मनुष्य-को बहुत कुछ सिखला देती है।

रामानन्द गोस्वामीने इनलोगोंकी परस्परकी बातें सुनकर कहा—बहूने जिस प्रकार साहस दिखाकर मुझको कारागारसे मुक्त किया है उससे प्रतीत होता है कि वह अवश्य मेरे बच्चेका उद्धार कर यहाँ ला सकेगी। मैं ज्यादा दिनोंतक ज़िन्दा नहीं रह सकूँगा। मृत्युके पहले मुझे अपने बच्चेको देखनेकी प्रबल इच्छा हो रही है।

रामानन्दकी बात ख़तम होते ही इन लोगोंके सामने रूपा खड़ा हुआ। रूपा पहलेसेही जानता था कि ये लोग पंडु-आके जंगलमें भागकर आ रहेंगे। रूपाको निरापद लौटते हुए देखकर ये लोग बड़े प्रसन्न हुए। बहुत सी बातचीतके बाद सत्यवती जगाको लेकर अपने पतिके उद्धारके लिए

कलकत्ते रवाना हुईं। उनकी अनुपस्थितिमें कुटीरवासिनी रमणी रामानन्दकी सेवा-टहल करने लगीं।

सोलहवाँ परिच्छेद

स्वप्न

Ganga Govind was considered as a general oppressor of every native he had to deal with. By Europeans he was detested, by natives he was dreaded—*Evidence of Mr. Petermoore in the trial of Hastings.*

इस संसारमें जो लोग दूसरोंका अनिष्ट कर पद और प्रभुता लाभ करते हैं, जो लोग हमेशा स्वार्थपरताके वशमें होकर दूसरोंके भले-बुरेकी तरफ ध्यान तक नहीं देते, इस जीवनमें कभी उनको शान्ति नहीं मिलती। चिरकालके लिए अशान्ति ही उनका पुरस्कार होता है। किन्तु वे लोग एक ही तरहकी अशान्तिका भोग नहीं करते। अपनी-अपनी प्रकृतिके अनुसार हरएक मनुष्य हरतरहकी अशान्ति भोग करता है।

स्वार्थपरता, अर्थ-लोलुपता, काम, क्रोध इत्यादि रिपुओंने जिसके हृदयको पाषाण कर दिया है, जिसके हृदयमें दयाका चिह्न तक दिखायी नहीं देता, दरिद्रोंका आर्त्तनाद और क्रन्दन-ध्वनि जिसके कानोंतक किसी तरह नहीं पहुँचती, आत्म-सुख-की चिन्ता जिसके विवेकको नहीं हिलाती, यश और प्रभुत्व-लाभकी अभिलाषाके ओर ही जिसकी चिन्ताशक्ति परिचालित होती है, उसकी निराशा और भय ही उसकी चिर-अशान्तिका एक मात्र मूल कारण है।

जिसका विवेक अभीतक सम्पूर्ण रूपसे कलुषित नहीं हुआ है, दया, स्नेह, और ममता जिसके हृदयमें बिजलीकी रोशनीकी तरह कमसे कम एक क्षणके लिए भी कभी उदय हो जाती है, परमेश्वर उसको सन्मार्गमें ले जानेके लिए, समय-समयपर उसके हृदयमें अनुतापानल प्रज्वलित कराकर, उसको आत्म-संशोधनका सुअवसर देता है।

देवीसिंहका हृदय बिलकुल पाषाण हो गया है; उसकी अन्तरात्मा जलकर भस्म हो गयी है। दया, ममता और स्नेहकी रोशनी उसके हृदयके अन्धकूपमें कभी प्रवेश नहीं कर सकती। किसी प्रकारका दुष्कर्म और असदाचरण उसके हृदयमें अनुतापानल प्रज्वलित नहीं कर सकता।

किन्तु गंगागोविन्दसिंह देवीसिंहकी तरह बिलकुल मनुष्यता-विहीन नहीं है। स्वार्थपरता और अर्थ-लिप्साने अभी तक पूरे तौरसे उसकी विचार-शक्तिको कलुषित नहीं किया है। एडमन्ड, बर्क प्रभृति इङ्गलैंडके सहृदय महात्माओंने देवीसिंह और गंगागोविन्दसिंह दोनोंको बराबरका नरपिशाच कहा है। किन्तु गंगागोविन्दके हृदयमें क्षण-स्थायी विद्युतकी तरह समय-समयपर दया, स्नेह और ममताका चिह्न दिखायी दे जाता था। दिनके समय गंगागोविन्द सर्वदा राजस्व-सम्बन्धी कार्योंमें लगे रहते थे। देशके तमाम राजस्व-सम्बन्धी कार्य्योंका भार उन्हींके हाथोंमें था। इससे दिनमें उनको किसी दूसरी चिन्ताके लिए एक मुहूर्तका भी अवकाश नहीं मिलता था। प्रायः प्रत्येक रात्रिको एक भयानक स्वप्न उनकी निद्रा भंग कर दिया करता था। स्वप्नावस्थामें वे कभी-कभी रातको चीत्कार कर उठते थे।

प्रायः बारह-तेरह वर्षोंसे वे रातको स्वप्नमें देखा करते थे

कि "तीक्ष्ण कुठार हाथोंमें लिए एक परम सुन्दरी ब्राह्मण-कन्या अपने दोनों कोखमें दो मरे बच्चोंको लेकर उनकी ओर दौड़ी चली आ रही है। ब्राह्मणी इनके निकट आते ही मरे हुए बच्चोंको उनके सिरपर पटककर उनकी छातीमें कटार भोंक रही है, और पीछेसे एक ब्राह्मण अपना यज्ञोपवीत उतार कर वही यज्ञोपवीत उनके गलेमें डालकर ऐंठ रहा है और बारम्बार क्रोधसे कह रहा है कि तेरी ही प्रवञ्चनासे मैंने अपना सर्वस्व खो दिया और अपने गलेमें फाँसी लगा लिया। आज तुझको भी उसी प्रकार फाँसी लगाकर मरना होगा।" यज्ञोपवीत गलेमें लपटाते ही उनकी सांस रुकनेके ऐसा मालूम होता था, तब वे स्वप्नमें चिल्ला उठते थे। उनके चीत्कारसे उनकी सहधर्म्मिणीकी निद्रा कभी-कभी भंग हो जाया करती थी।

गंगागोविन्दसिंहकी सहधर्म्मिणी अत्यन्त पतिप्राणा और पुण्यवती थीं। वे अपने पतिकी ज़बानी इस स्वप्नके बारेमें सुनकर अत्यन्त दुःखित हुईं। ऐसे स्वप्नके सम्बन्धमें हिन्दू रमणियोंके प्रचलित संस्कारोंद्वारा परिचालित होकर एक दिन उन्होंने अपने पतिसे कातर होकर कहा—नाथ, आपके किये हुए पापोंका प्रायश्चित किये बिना इस स्वप्न-स्वरूप कठिन रोगसे आपका छुटकारा कभी नहीं हो सकता। अतएव जिस ब्राह्मण-कन्याको आप स्वप्नमें देखा करते हैं, उनका अनुसन्धान कीजिए। जितनी भूमिसे वे वञ्चित किये गये हैं उसकी सौ गुणी भूमि उनको देकर प्रसन्न कीजिए। आपके भलेके लिए मैं कुछ दिनोंतक उनको अपने घरमें रखकर प्रतिदिन उनकी चरण-सेवा करूँगी, उनसे क्षमा माँगूंगी।

गंगागोविन्दसिंह देवीसिंहकी तरह नराधम और

पाखण्डी नहीं थे। वे अपनी सहधर्म्मिणीके उपदेशानुसार काम करनेको तैयार हो गये। स्वप्नमें वे जिस ब्राह्मण-कन्याको देखा करते थे, उसको वे पहलेसे ही जानते थे। इससे उन्होंने उनको बुलानेके लिए आदमियोंको भेजा। किन्तु उनके भेजे हुए आदमियोंने आकर कहा कि वह ब्राह्मण-कन्या पागल हो गयी है और प्रकाश्य रूपसे रास्तेमें चला-फिरा करती है। कई एक महीनोंसे राजा देवीसिंहने उसको पकड़कर कैदमें रक्खा है। गंगागोविन्दने देवीसिंहसे इस ब्राह्मण-कन्याको छोड़ देनेके लिए अनुरोध किया। किन्तु उस समय गंगागोविन्द मुर्शिदाबादके एक कानूनगो थे, उस समय उनकी कोई विशेष प्रभुता नहीं था। देवीसिंहने इस समय उनकी बातोंपर ध्यान नहीं किया। इसीसे देवी-सिंहके साथ गंगागोविन्दकी पहली शत्रुता हुई।

देवीसिंह पहले समझते थे और अब भी समझते हैं कि गंगागोविन्दसिंह उस ब्राह्मण-कन्याका, अपनी उपपत्नी बनाने के लिए, अनुसन्धान कर रहे हैं; किन्तु वास्तवमें यह बात नहीं थी। पर देवीसिंहकी तरह जिसकी अन्तरात्मा नरक-सदृश हो गयी हो, उसको किसी मनुष्यके किसी काममें अच्छा उद्देश्य दिखायी नहीं देता।

गंगागोविन्द हज़ार कोशिश करनेपर भी उस ब्राह्मण-कन्याको बुलवा नहीं सके। बारह वर्षतक प्रायः प्रति रात्रिको उन्होंने उस ब्राह्मण-कन्यको स्वप्नमें देखा।

सत्रहवाँ परिच्छेद

यही तो विप्लवका फल है,
अरे पापिष्ठ राजा रायदुर्लभ दुर्बल,
बंगाली कुलकी ग्लानी, विश्वास घातक,
डुबाया डूबे पापी! तूने यह क्या किया बोल,
तेरे ही पापोंसे बंगालियोका होगा नरक,

नवीनचन्द्रसेन

पूर्व परिच्छेदमें लिखे हुए स्वप्न-विवरणको पढ़कर हमारे पाठक और पाठिकाओंको सहज ही मालूम हो गया होगा कि गंगागोविन्द स्वप्नमें जिस ब्राह्मण-कन्याको देखा करते थे, वह हमारी परिचित कुटीर-वासिनी देवी थीं। परन्तु यह कुटीरवासिनी देवी कौन हैं? और किस तरह इनकी यह दशा हुई है?—इसको स्पष्ट करनेके लिए हमें कुछ ऐतिहासिक घटनाओंका उल्लेख करना आवश्यक होगा। अतएव इस परिच्छेदके आरम्भमें उन ऐतिहासिक घटनाओंका उल्लेख किया जाता है।

मुसल्मानोंसे अधिकृत होनेके बाद, महाराज मानसिंह और टोडरमल इत्यादि बंगालके सहृदय सूबेदारोंने अपने-अपने कालमें बंगालके ब्राह्मणों और पंडितोंको बहुत सी पुष्कर भूमि ब्रह्मस्व स्वरूप दान दी थी। वे ब्राह्मणों और पंडितों-के अलावा देशके अन्यान्य सद्गुणियों और सदाचारी मनुष्योंको भी, सम्मान और उपाधि देते समय, साथ-साथ ज़मीन भी देते थे। वर्तमान कालमें जिस तरह कोई रेलवे कन्ट्रैक्टर (Railway contractor) अथवा पबलिक वर्क्स् (Public works) विभागके ओवरसीयरको (Overseer)

गवर्नमेंटका दो-तीन लाख रुपया चोरी करनेके बाद उन्हीं रुपयोंमेंसे दस या बारह हज़ार रुपया, किसी कमिश्नरके कहनेपर, किसी साधारण अच्छे काममें दान देनेसे ही फांके मस्तीकी राय-बहादुरी अथवा सी. एस. आइ.की उपाधि मिल जाती है, पहले वैसी प्रथा नहीं थी। हिन्दू या मुसल्मान राजा जब किसीको सम्मान-सूचक उपाधि देते थे, उस समय साथ-साथ उसको ज़मीन भी देते थे। कभी-कभी मूल्यवान वस्तु भी बख़्शीशकी तरह दे दिया करते थे। उसका कुछ दाम नहीं लेते थे। इस प्रकार भूमिदानकी प्रथा प्रचलित होनेके कारण बंगालकी प्रायः एक चौथाई ज़मीन देशके ब्राह्मण पंडित और अन्यान्य सच्चरित्र लोग निष्कर भोग किया करते थे। बंगालके मुसल्मान सूबेदारोंने, जो नितान्त जघन्य प्रकृतिके समझे जाते थे उनलोगोंने भी, इन निष्कर और ब्रह्मस्व ज़मीनोंको जब्र करनेकी अथवा क़ानूनी दाँव पेंच (Legal fiction) लगाकर उन निष्कर ज़मीनोंपर किसी तरहका नया कर लगानेकी चेष्टा तक नहीं की। किन्तु सिराजुद्दौलाके तख्तसे उतरनेके बाद लार्ड क्लाइव प्रभृति की अर्थलोलुपताके कारण मुर्शिदाबादका राजकोष बिल्कुल खाली हो गया। उस समय राजस्वकी वृद्धि न करनेसे खर्च-का चलना मुश्किल था। इसलिए मीरजाफ़रको जब तख्त मिला, तभीसे देशके तमाम ज़मीदारोंपर घोर अत्याचार शुरू हो गया। इसके बाद मीरकासिमने तख्त लेनेके लिए ईस्ट इन्डिया कम्पनीके कर्मचारियोंको घूस देनेका वादा किया और उसी घूसका रुपया वसूल करनेके लिए उनको बंगालका राजस्व प्रायः दूना करना पड़ा। सन् १५८२ ई०में महाराजा टोडरमलके समय बंगालका वार्षिक राजस्व एक करोड़ सात

लाख रुपये था। इसके बाद सन् १७५६ ई०में सिराजुद्दौलाके समय तक ज़मीनका राजस्व एक करोड़ पैंतालीस लाखसे अधिक कभी नहीं हुआ। किन्तु मीरकासिमके समय (१७६३ ई० में) दो करोड़ छप्पन लाख रुपयेसे अधिक राजस्व हो गया था। तबसे क्रमशः राजस्वकी वृद्धि होने लगी।

महम्मदरज़ाखांके समयसे ही निष्कर ब्रह्मस्वकी ज़मीन जब्र होने लगी थी। किन्तु महम्मदरज़ाखांकी पदच्युतिके बाद जब वॉरेन हेस्टिंग्ज़ने राजस्व वसूलीका इन्तज़ाम अपने हाथोंमें लिया, उस समयसे बंगदेशमें निष्कर ज़मीन भोग करनेका किसीको अधिकार है, वे इसको कभी स्वीकार नहीं करते थे। उन्हाने ज़मींदारों और ताल्लुकेदारोंको उनकी पैतृक ज़मींदारीसे बेदखल कराकर कलकत्तेके नीचकुलोत्पन्न बेनियनोंको उसका ठेका देना शुरू किया। इन ठेकेदारोंने यथासाध्य कर बढ़ाना शुरू किया। इसी प्रकार सिराजुद्दौलाकी सिंहासन च्युतिके कारण राज-विप्लवके उपलक्षमें देशके भूमि-विभाग और भूमि-विधानके सम्बन्धमें घोर परिवर्तन उपस्थित हुआ।

वर्तमान समयके दो एक खास महालों (बन्दोबस्तके लिए किये गये विभागों) के डेपुटी कलेक्टरोंकी तरह, महम्मद रजाखां वॉरेन हेस्टिंग्ज़को प्रसन्न करनेके अभिप्रायसे नाना प्रकारके अनुचित उपायों द्वारा राजस्वकी वृद्धि करनेकी चेष्टा करने लगे। रज़ाखांके अधीन गंगागोविन्दसिंहके बड़े भाई राधागोविन्दसिंह मुर्शिदाबादके अन्तर्गत किसी एक पर्गनाके कानूनगोका काम करते थे। किन्तु इन्हीं दिना जो लोग (कानूनगो) अपने-अपने पर्गनेका रजिस्टर बदलकर ब्रह्मस्व ज़मीनोंको जब्त करनेकी सुविधा कर देते थे, वही महाशयलोग रज़ाखां और ईस्ट इन्डिया कम्पनीको प्रसन्नता-

लाभ कर सकते थे। राधागोविन्दसिंह बड़े धार्म्मिक पुरुष थे। मिथ्या प्रवञ्चनासे उनकी हार्दिक घृणा थी। इसलिए उनके ऐसे धार्मिक पुरुषको महम्मदरज़ाखां अथवा ईस्ट इन्डिया कम्पनीके अधीन नौकरी करना कठिन हुआ। किन्तु उनके छोटे भाई गङ्गागोविन्दसिंह लड़कपनसे ही बड़े चतुर और कार्य्यकुशल थे। वे अपने बड़े भाईकी जगहपर कानूनगोका काम करने लगे और दो ही तीन महीनोंके अंदर उन्होंने बहुतेरे ब्राह्मणोंकी ब्रह्मस्व ज़मीन जब्त करनेकी सुविधा करा दी।

इन्हीं दिनों मुर्शिदाबादकी राजधानीके निकट किसी प्रसिद्ध गाँवमें जगन्नाथ भट्टाचार्य्य नामके एक ब्राह्मण रहते थे। उनकी सहधर्म्मिणीका नाम कमलादेवी था। कमलादेवी जितनी रूपवती थीं उतना ही उनका चरित्र भी सुन्दर था। शान्त और सुशीला कमलादेवीको विष्णुकमलाकी तरह परमसाध्वी और सदाचारिणी समझकर गाँवके तमाम लोग उनकी भक्ति और श्रद्धा किया करते थे। जो कोई उनकी स्नेहमयी शान्त मूर्त्तिको एकबार देख लेता, वह उनको कभी न भूलता। कमलादेवीके गर्भसे जगन्नाथको तीन पुत्र हुए। उन बालकोंको जो देखता था, वही मुग्ध हो जाता था।

शास्त्रज्ञ और धर्म्मनिष्ठ जगन्नाथ भट्टाचार्य्य अपनी स्त्री-पुत्रों सहित सुखसे दिन काटते थे। उनको सांसारिक कोई कष्ट नहीं था। पैतृक ब्रह्मस्व ज़मीनकी आमदनीसे वे आनन्द पूर्वक जीविका-निर्वाह करते थे। कभी किसी शूद्रका दान तक नहीं लेते थे।

किन्तु दैव-विडम्बनावश गङ्गागोविन्दके षड्यन्त्र द्वारा महम्मदरज़ाखांकी अमलमें जगन्नाथकी तमाम ज़मीन जब्त

हो गयी। महाराज मानसिंहने इनके पूर्वपुरुषको यह ज़मीन ज़बानी दान दिया था। इसका कोई दलील-दस्तावेज़ नहीं था। कमसे कम ३००·तीन सौ वर्षोंसे इनके पूर्व-पुरुष वंशानुक्रमसे इस ज़मीनके लिए एक मात्र प्रमाण थे। किन्तु गङ्गा गोविन्दके रजिस्टरमें ऐसे ब्रह्मस्व ज़मीनका कोई उल्लेख नहीं था। इससे महम्मदरज़ाखांके समय जगन्नाथकी ब्रह्मस्व ज़मीन जब्त हो गयी।

जगन्नाथ अपने दिलमें यह सोचा करते थे कि गङ्गा गोविन्द ही उनके विपदका मूल कारण है। वे सर्वदा गङ्गा गोविन्दको कोसा करते थे। उनकी स्त्री और पुत्रोंके प्रतिपालनके लिए अब कोई उपाय न रहा। ब्रह्मस्व ज़मीन दख़ल हो जानेपर भी उनकी पुरानी प्रजा उन्हींको मालगुज़ारी दिया करती थी। किन्तु थोड़े दिनोंके बाद उनके ज़मीनका ठेका कासिम बज़ारके बेबर (Baber) साहबके बेनियनने ले लिया। इस नये ठेकेदारने प्रजापर घोर अत्याचार करना शुरू कर दिया। उस समय प्रजाको आत्म-रक्षा करना कठिन हो गया। इससे वे लोग फिर जगन्नाथको किसी प्रकारकी सहायता दे न सके।

एक साल तक जगन्नाथने अपने घरकी चीजें बेचकर, बड़े कष्टसे बालबच्चोंका प्रतिपालन किया। किन्तु दूसरे साल वह अत्यन्त कष्टमें पड़ गये। उस साल (१७६६ ई० में) देशमें पैदावार भी बहुत थोड़ी हुई। चावलका दाम बढ़ गया। जगन्नाथ अब किसी प्रकार भोजनके लिए प्रबंध न कर सके। बीच-बीचमें वे अपनी स्त्री और पुत्रोंके साथ उपवास किया करते थे।

कमलादेवी जनेऊका सूत कातकर, या उनके मकानके

अन्दर आँगनमें आम, कटहल आदि जो कुछ पैदा होता था, उसे बेचकर अपने बच्चोंके लिए खानेका इन्तज़ाम कर लेती थीं। इस घोर विपदने जगन्नाथको पागल बना दिया। वे सर्वदा अपनी स्त्रीसे कहा करते थे कि मैं स्वयं दिल्लीके बादशाहके पास जाऊँगा और अपने ज़मीनका स्वत्व उनसे बहाल करा लाऊँगा। हमारे पुरखोंकी ज़मीनसे क्या बादशाह हमको बेदखल करेंगे ?

इस समय जगन्नाथके बड़े लड़केकी उम्र प्रायः बारह वर्षकी थी। वह प्रतिदिन अपने पिताके ज़बानी दिल्लीके बादशाहका नाम सुनकर एक दिन कहने लगा "पिताजी, आप घरपर रहिए। आपके दिल्ली चले जानेसे मेरी माताको लकड़ियाँ कौन चुनकर ला देगा। बाजारमें आम कौन बेचने जायगा। मैं दिल्लीके बादशाहके पास जाऊँगा।"

पुत्रकी ज़बानसे इन बातोंको सुनकर जगन्नाथ आँसू बहाने लगे। बच्चोंकी दुरवस्था देखकर उनका हृदय विदीर्ण होने लगा। छोटे-छोटे दोनों बच्चोंके शीत-निवारणके लिए एक टुकड़ा वस्त्र खरीदनेकी भी सामर्थ्य नहीं थी। वे प्रतिदिन प्रातःकालके समय दोनों बच्चोंको छातीमें दबाकर उन लोगोंको शीतके कष्टसे बचाया करते थे। कमलादेवी स्वयं फटेहुए कपड़ेका एक टुकड़ा पहनकर कमरसे घुटनोंतक ढांक लेती थीं और अपनी लज्जा निवारण करती थीं। किन्तु उनका ऊपर-का अंग खुला रहता था। इससे वे कहीं बाहर जाने से रहीं। ऐसे जीर्ण वस्त्रको पहनकर कोई रमणी अपने स्वामी और पुत्रके सिवा और किसीके सामने नहीं हो सकती। दिन-दिन जगन्नाथकी दरिद्रता बढ़ने लगी। तो एकबार तीन दिनों तक उनको एक मुट्ठी अन्न नहीं मिला। उनकी स्त्री और

उनके तीनों बच्चे पेड़के पत्ते और अरुई उबालकर पेट भरने लगे। स्त्री और पुत्रका दुःख और यन्त्रणा जगन्नाथसे सहा नहीं गया और वे बिलकुल पागल होकर आत्महत्या करनेके लिए तैयार हो गये। कमलादेवी उनको हर तरहसे सान्त्वना देने लगीं। किन्तु उन्होंने उसे ठान लिया था, वे उस बुरे कामके करनेमें किसीतरह ठंढे नहीं पड़े। चुपचाप रातको घरसे बाहर निकलकर आमके पेड़में डोरी बाँध, फाँसी लगाकर उन्होंने अपनी पवित्र आत्माको शरीरसे निकाल दिया।

पतिके वियोगसे कमलादेवी बिलकुल घबरा गयीं। अब उनके दुःखका अन्त न रहा।

जगन्नाथकी मृत्युके दोही दिनोंके बाद उनके बड़े लड़के क्षेत्रनाथने अपनी मासे आकर कहा—मा! पिताजी कहा करते थे कि वे यदि दिल्लीके बादशाहके पास पहुँच जाँय तो हमलोगोंकी ब्रह्मस्व ज़मीन छुड़ा लें। इसलिए अब मैं दिल्लीश्वरके पास जाता हूँ। आप घरपर रहकर इनलोगोंके (दोनों छोटे भाइयोंके) प्रतिपालनकी चेष्टा कीजिए।

पुत्रकी बातें सुनकर कमलादेवी डबडबी आँखोंसे कहने लगीं "बच्चा तुम बारह वर्षके बालक हो। तुम किस प्रकार दिल्ली जा सकोगे। मेरी ज़िन्दगी रहते क्या मैं तुमको जाने दे सकती हूँ। परमेश्वरने भाग्यमें जो कुछ लिख रक्खा है, वही होगा। मैं तुमको इस समय अपने पाससे कहीं जाने न दूँगी।" परन्तु वह बालक अपनी माताकी बातोंपर राज़ी न हुआ। वह रातको घरसे भागकर चला गया।

इस समय कमलादेवीको विपदपर विपद, दुःखपर दुःख, शोकपर शोक झेलने पड़े। दरिद्रताके कारण तो इतना कष्ट भोगती ही थीं; अब बच्चोंके मुखमें दो दाने अन्नके देनेका भी

सामर्थ नहीं रहा। इतने दुःखोंपर भी पति-वियोग, पुत्रका देश-त्याग! मनुष्य क्या इतना कष्ट, इतनी यन्त्रणा सह सकता है? वे भी आत्म-हत्याकर अपने सब दुःखों और यन्त्रणाओं-को दूर कर सकती थीं; किन्तु बच्चोंके स्नेहने उनको यह पथ अवलम्बन करने नहीं दिया।

हाय! मातृ-स्नेह भी क्या अमूल्य रत्न है! कैसा स्वर्गीय पदार्थ है! माता केवल दोनों बच्चोंके लिए धीरजधर संसारके सब यन्त्रणाओंका भोग करने लगीं। धन्य नारी-जातिका धैर्य्य! धन्य उन लोगोंकी सहिष्णुता! कमलादेवीके बड़े लड़केके घर छोड़कर चले जानेके चारही दिनोंके बाद उनके दोनों बच्चोंकी मृत्यु हुई। उस समय चिन्ता और दुःखके कारण वे बिलकुल पागल हो गयीं और मरे हुए बच्चोंको गोदमें लेकर और एक तीक्ष्ण छूरी साथ लेकर गंगागोविन्दको मारनेके लिए उनके घरकी ओर दौड़ीं।

मुर्शिदाबादके शहरके अन्दर एक छोटासा मकान लेकर गंगागोविन्द कभी–कभी उसमें रहा करते थे। कमलादेवी उनके उस मकानमें पहुँचकर गंगागोविन्दको देखतेही उनकी तरफ दौड़ीं। किन्तु उनकी छातीमें छूरी मारनेके पहलेही, दूसरे लोगोंने कमलाको पकड़ लिया और पगली समझकर भगा-दिया। भगाये जानेके समय जब कमलादेवी पागलकी तरह बक–बक करती हुईं, अपने पतिकी ब्रह्मस्व ज़मीन और अपनी दुरवस्थाकी कथा कहने लगीं, तब गंगागोविन्दसिंहने स्पष्टरूपसे समझ लिया कि, यह ब्राह्मणी जगन्नाथ भट्टाचार्य्यकी सहध-र्म्मिणी है। उस समय गंगागोविन्दके हृदयमें बिच्छूने डंक मारा। यह कुल व्यापार उनको स्वप्नकी तरह मालूम होने लगा और वे स्तब्ध होकर खड़े रह गये।

यह गंगागोविन्दके आत्म-संशोधनका पहला मौका था। यदि वे इस शुभ मुहूर्तमें प्रतिज्ञा कर लिये होते कि वे अब किसी-का अनिष्टसाधन नहीं करेंगे, तथा अपने भीतरी इच्छाओंके अनुसार पद और प्रभुत्वकी आकांक्षाका यदि त्याग करते तो वे इस जीवनमें रातको सुखकी निद्रा लेते। किन्तु संसारमें लोग मोहान्धकारमें पड़कर ईश्वरके दिये हुए ऐसे सुअवसरों-की अवहेलना करते हैं, और पद तथा प्रभुत्वमें केवल अपना सुख ढूंढा करते हैं।

कमलादेवी गंगागोविन्दके मकानसे निकलनेके बाद पग-लीकी तरह मुर्शिदाबाद राजधानीके निकटकी सड़कोंमें प्रकाश्य रूपसे घूमने लगीं। उनके किसी पड़ोसीने उनकी गोदसे उनके दोनों मरे हुए बच्चोंको ज़बर्दस्ती छीनकर दाह किया।

थोड़े दिनोंके बाद देवीसिंहने एक रोज़ कमलादेवीको सड़कोंमें खुलेआम घूमती हुई देखकर अपने आदमियोंको उन्हें पकड़ लेने-का हुक्म दिया। कमलादेवी बड़ी रूपवती थीं। खुले हुए दीर्घ केशों सहित पागलकी तरह सड़कोंमें घूमती हुई कमलादेवीको देखकर भी उनके रूप-सौन्दर्यपर लोग मोहित हो जाते थे।

दुरात्मा देवीसिंह अपने मन ही मन यह सोचने लगा कि यह पगली अत्यन्त रूपवती है। पागलपन छूटनेपर इसको किसी साहब बहादुरके पास भेज देनेसे अनायास वह उनका अनुग्रह प्राप्त कर सकेगा। विशेषतः साहबलोग इस देशकी भाषा बिलकुल नहीं समझते। पगलीकी कोई बात अथवा भाव वे कुछ समझ न सकेंगे। इसको इसी तरह पागल अवस्थामें भी साहबोंके पास भेजनेसे कोई हानि नहीं हो सकती। यह सोचकर नरपिशाच देवीसिंहने परमसाध्वी कमलादेवीको अपने स्त्री-बाड़ेमें आवद्ध रक्खा। इसके बाद कमलादेवी

जिस तरह लक्ष्मणसिंहकी सहायतासे देवीसिंहके कारागारसे निकलकर भागीं, वह आपलोगोंको पहलेही अवगत करा दिया गया है। उसको अब यहां दुहरानेकी कोई आवश्यकता नहीं है। कमलादेवीने यह सोच लिया था कि वे कैदखानेमें बिना खाये-पीये अपने प्राण दे देंगी। कभी-कभी वे दो-तीन दिनोंतक भोजन नहीं करती थीं। फिर भी वे अपने बड़े लड़केके स्नेहके कारण अपने संकल्पको त्याग देती थीं। बड़े लड़केसे फिर भेंट होगी, इसी आशासे वे जीवनधारण कर रही थीं।

अठारहवाँ परिच्छेद

अनुसन्धान

पाठकोंको याद होगा कि, कमलादेवी लक्ष्मणकी सहायतासे कारामुक्त होकर दिनाजपुरमें रामसिंहके मकानपर आयीं। लक्ष्मणसिंह भी अपनी नौकरी छोड़कर–लौट आये। वे कमलादेवीको मातृदेवी मानकर गृह अधिष्ठात्री भगवतीकी तरह उनकी सेवा अपनी स्त्री सहित करने लगे। किन्तु कमलादेवी पति और पुत्रके शोकसे सर्वदा दुखी रहा करती थीं। लक्ष्मण सैकड़ों कोशिश करनेपर भी उनको सुखी न कर सके। लक्ष्मणने अपना तन, मन, धन सबकुछ कमलादेवीके चरणोंमें अर्पण कर दिया। वे कमलादेवीको किस तरह सन्तुष्ट कर सकेंगे, केवल यही चिन्ता करने लगे। वे अपने विश्वास--घातके लिए प्राण देनेको तैयार थे, किन्तु उनकी मृत्युसे कमलादेवीको दुःख होगा, कमलादेवीके हृदयमें कष्ट होगा, यही सोचकर उन्होंने उस पथका अवलम्बन नहीं किया। वे कमलादेवीके सुख और शान्तिके लिए अपना जीवन धारण कर रहे हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि कमलादेवीको दुःखी देखकर वे स्वयं दुखी हो रहे थे।

पाठकोंकी जानकारीके लिए हम यहां लक्ष्मणसिंहका कुछ परिचय दिया चाहते हैं। रामसिंह और लक्ष्मणसिंह दोनों भाई सूबेदार फतहसिंहके पुत्र थे। फतहसिंहके बाप दिनाजपुरके राजाके अधीन नौकरी करते थे। फतहसिंहने स्वयं ईस्ट इन्डिया कम्पनीकी फ़ौजमें सूबेदारी पाकर रोहिला युद्धके समय जेनरल चैम्पियनके आधीन अयोध्याके वज़ीर शुजाउद्दौलाके पक्षमें रोहिलाओंके विरुद्ध युद्ध किया था। रोहिलाधिपति वीरकुल तिलक हाफ़िज़ रहमतखाँके, स्वदेश-रक्षाके लिए, रणक्षेत्रमें प्राण-विसर्ज्जन करनेके बाद, ईस्ट इन्डिया कम्पनीके सिपाही रोहिलाओंके घर लूटना और रोहिला रमणियोंपर घोर अत्याचार करना शुरू कर दिया।

फतहसिंहने इन अंगरेज़ सैनिकोंके निष्ठुर और पशुवत आचरणोंको देखकर जेनरल चैम्पियनसे कहा-जनरल साहब आपके फ़ौज़के आदमी सिपाही हैं या चोर? इन सब सालोंने औरतोंको बेइज़्ज़त किया है-और प्रजाके घरकी चीज़ोंका भी अपहरण किया है।

जेनरल चैम्पियनने कहा कि उन्होंने इन अंगरेज़ सैनिकोंके दुर्व्यवहारको दूर करनेके लिए वाँरेन हेस्टिंग्ज़के पास पत्र लिखा था, किन्तु हेस्टिंग्ज़ने इसको रोकनेके लिए मना किया है। इससे उनकी सामर्थ्य नहीं कि इन निष्ठुराचरणोंको रोक सकें।

जेनरल चैम्पियनकी इन बातोंको सुनकर फतहसिंह क्रोधसे बोल उठे-हम चोरकी नौकरी नहीं करेंगे! जेनरल साहब, अभी हमारा इस्तीफ़ा लीजिए।

यह कहकर फ़तहसिंहने नौकरी छोड़ दी और काशीमें आकर वास करने लगे। उनके पुत्र रामसिंह और लक्ष्मणसिंह भी पहले पहल ईस्ट इन्डिया कम्पनीके अधीनस्थ सिपाहियोंमें थे। किन्तु सन् १७६६ ई० के पहलेही उनलोगोंने सैन्यविभाग छोड़ दिया और राजस्व विभागके जमादारका काम करने लगे। उसके बाद १७७१ ई० में लक्ष्मणने नौकरी छोड़ी। रामसिंह अभी तक (अर्थात् १७८३ ई० तक) कलेक्टरके जमादार हैं।

लक्ष्मण कमलादेवीके तमाम दुःखोंका कारण मालूम करनेके बाद विलम्ब न कर उनके ज्येष्ठ पुत्र क्षेत्रनाथके अनु-सन्धानके लिए रवाना हुए। प्रेमानन्द भी लक्ष्मणके साथ हो लिये। ये लोग नाना देशोंमें पर्य्यटन करने लगे। पटना, गया, काशी, अयोध्या, वृन्दावन, उसके बाद दिल्लीतक कमलादेवीके पुत्र क्षेत्रनाथकी खोजमें चले गये। लगातार कमसे कम ग्यारह बर्षों तक इन लोगोंने क्षेत्रनाथका अनुसन्धान किया। किन्तु कहीं उनका पता नहीं मिला। अन्तमें लक्ष्मणने प्रेमानन्दसे कहा "भाई तुम स्वदेशको चले जाओ। मैं अब देशको नहीं जाऊँगा। कमलादेवीको मैं अपनी जननी समझता हूँ। मैंने जिस स्नेहमयी जननीके गर्भमें जन्म लिया है यदि वे जीती होतीं तो उनकी मैं जिस प्रकार भक्ति और श्रद्धा करता, कमलादेवीकी भी मैं उसी प्रकार श्रद्धाभक्ति करता हूँ। वाल्यावस्थामें ही मेरी गर्भधारिणीकी मृत्यु हुई थी। उनको सुखी करना मेरे नसीबमें नहीं था। अब मातृ सदृश कमलादेवीको सुखी न कर सकनेपर मेरा जन्मही वृथा होगा। अतएव अब मैं उनको अपना मुँह नहीं दिखाऊँगा। काशीजीमें जाकर महादेवजीके मन्दिरके द्वारपर धरना देकर बैठूँगा। क्षेत्रनाथ कहां है इसके सम्बन्धमें, विना स्वप्नादेश

हुए, शिवजीके द्वारपर ही प्राणविसर्जन करूँगा।"

इस प्रकार संकल्प कर लक्ष्मण प्रेमानन्दको संग लेकर फिर काशीजीको लौटे। यहां लक्ष्मणके पिता फतहसिंहसे उनलोगोंकी मुलाक़ात हुई। फतहसिंहने लक्ष्मणकी बातें सुनकर कहा—बेटा, यहाँ एक परमहंस हैं, वे भूत, भविष्य सभीकी गणना कर सकते हैं। तुम्हें धरना देनेकी कोई ज़रूरत नहीं है। मैं तुमको उन परमहंसके पास ले चलता हूँ। कमलादेवीके पुत्र जीवित हैं या नहीं, और जीवित हैं तो कहां और किस प्रकारसे हैं, ये सभी बातें परमहंसजी अवश्य बता देंगे।

तब लक्ष्मणने अपने पिताके साथ परमहंसके पास जाकर अपना सम्पूर्ण वृतान्त कहा। लक्ष्मणकी बातोंको सुननेके बाद परमहंसजी मुस्कराकर बोले—बच्चा, जिस ब्राह्मण-कुमारके बारेमें पूछते हो, उसके विषयमें गणना करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। वह बालक बहुत दिनों तक मेरे आश्रममें था। उसकी सभी हालतोंसे मैं वाकिफ़ हूं। वह आजकल पञ्जाबमें है।

परमहंसकी बातोंपर लक्ष्मणको विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने परमहंससे क्षेत्रनाथके बारेमें बार-बार तरह-तरहके प्रश्न किये।

तब परमहंसने थोड़ा हँसकर कहा—बेटा, इस समय देशके राजा म्लेच्छ हैं। आदमीकी बातोंपर आदमी विश्वास नहीं कर सकता। राजाके अर्थलोलुप होनेसे प्रजा भी वैसीही सङ्कुचित हृदयकी हो जाती है। उस बालकके विषयमें मैं जो कुछ जानता हूँ। वह सब मैं तुमसे कहता हूँ तमाम बातोंके सुननेपर तुम्हारे अविश्वास का कोई कारण नहीं रह जायगा।

मैं बीस वर्षोंसे इस काशीजीमें वास कर रहा हूँ। आज दस-बारह वर्ष हुए अर्थात जिस साल बंगदेशमें बड़ा दुर्भिक्ष हुआ था उसके पहले साल बारह-तेरह वर्षका एक बालक मणिकर्णिकाके घाटपर अनाहारसे मृतः प्राय होकर पड़ा था। मैं गंगाजीसे प्रातः स्नान करके लौट रहा था, उस समय मैंने उस बालकको देखा। उसकी जीवन-वायु तबतक शेष नहीं हुई थी। वह बड़ा सुलक्षणयुक्त बालक था। उसको देखनेसे मालूम होता था कि भगवान वैकुण्ठपतिने किसी साध्वीकी मनोवाञ्छा पूरी करनेके लिए स्वयं मर्त्यलोकमें आकर उसके गर्भमें जन्म लिया है। बेटा! मैं तुमसे अधिक क्या कहूँ, ऐसा सुन्दर बालक मैंने इसके पहले कभी नहीं देखा था। बालकको इस प्रकार मृतावस्थामें देखकर मैं उसको अपनी गोदमें उठाकर आश्रममें ले आया। मेरे शिष्योंने उसका दवा-दर्पण किया और वह पाँच-सात दिनोंमें धीरे-धीरे आरोग्य होने लगा। बालक होशमें आतेही केवल यही कहने लगा "हमको छोड़ दो, हम दिल्लीके बादशाहके पास जायँगे। निज ब्रह्मस्वकी ज़मीन हम छुड़ाकर लायँगे। मेरी मा और दोनों छोटे भाई भूखों मर रहे हैं।"

उस समय हम लोगोंने बालककी बातोंका कोई अर्थ नहीं समझा, फिर भी नाना प्रकारसे उसको समझा-बुझाकर सान्त्वना देने लगे। प्रायः पन्द्रह दिनोंके बाद वह आरोग्य हुआ। उसने हम लोगोंसे कहा कि कम्पनीके आदमियोंने बहुतेरे ब्राह्मणोंकी ब्रह्मस्व ज़मीन जब्त कर ली है इससे सैकड़ों ब्राह्मणोंके परिवार अन्ना-भावसे मर रहे हैं। उसके पिताकी ब्रह्मस्व ज़मीन जब्त हो जानेपर वे लोगभी अन्नहीन हो गये। उसके पितासे अपनी स्त्री और पुत्रोंका दुःख

सहन नहीं हुआ, इसीलिए उन्होंने अपने गलेमें फाँसी लगा-कर प्राण त्याग दिये। उसकी माता और छोटे-छोटे दोनों भाई अन्नाभावसे मृतः प्राय होकर घरमें पड़े हुए हैं। अब वह अपनी ब्रह्मस्व ज़मीन छुड़ानेके लिए दिल्लीके बादशाहके पास जा रहा है।

बालकके ज़बानी ऐसी बात सुनकर मेरा हृदय व्यथित हुआ। परन्तु मुझे उसका साहस और सहृदयता देखकर आश्चर्य्य भी हुआ। मैंने थोड़ा हँसकर कहा—बेटा! तुम बिल्कुल बालक हो। तुम कभी दिल्लीके सम्राटसे मुलाकात नहीं करने पाओगे। विशेषतः इस समय सम्राटकी कोई क्षमता भी नहीं रही। सम्राटने बंगदेश कम्पनीको दे दिया है। और यदि सम्राटकी कोई क्षमता भी होती तो वे क्या तुम्हारी नालिश सुनते? या तुम्हारा कोई प्रतिकार करते? तुमने अपने देशको छोड़कर बड़ी मूर्खताका काम किया है। किन्तु तुम्हारे दुःखोंकी कथा सुनकर मैं बड़ा दुःखित हुआ। यहांके धनी लोग मेरे परिचित हैं। मैं उन लोगोंसे कुछ रुपया संग्रहकर तुमको दूँगा। तुम उन रुपयोंको लेकर घर लौट जाओ। किन्तु, सावधानीसे जाना। तुम्हारी तरहके बालकको रुपया साथ लेकर चलनेसे रास्तेमें अनेक विपदोंकी आशङ्का है।

बालक मेरी बातोंको सुनकर कुछ देरतक तर्क-वितर्क करनेके बाद कहने लगा—क्या दिल्लीके बादशाह हमारे सात पुरुषोंकी ज़मीन नहीं छोड़ेंगे?

बालककी बुद्धि तीव्र थी। जब मैंने सब बातें अच्छी तरह समझाकर कहा, तब वह मेरे आदेशानुसार काम करनेको सम्मत हुआ। मैंने यहांके दस-पांच भले आद-

मियोंसे दस मुहर और पचास रुपये इकट्ठाकर उसको दिये। मेरे शिष्योंने उन रुपयों और मुहरोंको अच्छी तरह उसके कमरसे बाँधदिया। वह स्वदेशको चला गया। किन्तु कई महीनोंके बाद वह बंगदेशसे फिर लौटकर आया और मेरे दिये हुए रुपयों और मुहरोंको लौटाकर बोला—पिताजी, अब हमको रुपयोंकी कोई ज़रूरत नहीं है। मैं अग्निकुंडमें कूदकर अपना प्राण विसर्ज्जित करूँगा।

मैं उसको इतना जल्द यहाँ लौटते देखकर और उसकी बातें सुनकर बड़े आश्चर्य्यमें हुआ। उसकी शारीरिक अवस्था भी अत्यन्त शोचनीय मालूम होती थी। यद्यपि उसके शरीरमें कोई रोग नहीं दिखलायी देता था, किन्तु उसका वह उज्ज्वल वर्ण बिलकुल विवर्ण हो गया था और शरीर भी बिलकुल दुबला-पतला हो गया था।

मैं बारम्बार उसके वर्तमान दुःखका कारण पूछने लगा, किन्तु उसने अपने मनका भाव किसी तरह व्यक्त नहीं किया। मैंने उससे उसके छोटे भाइयोंके बारेमें पूछा। उसने दीर्घ श्वास लेकर कहा कि उन दोनोंकी मृत्यु हो गयी। बाद मैंने उसकी जननीके बारेमें पूछा, इसपर उसने कोई जवाब नहीं दिया। तब मुझे सन्देह हुआ कि इसको अपनी जननीके सम्बन्धमें किसी प्रकारका कुसम्बाद मिला होगा, इसीलिए इसकी यह अवस्था हुई है।

बालकपर मेरा अत्यन्त स्नेह उत्पन्न हुआ, इसीलिए मैंने उसकी सब बातोंको सुननेकी इच्छा की। मैं बारम्बार उससे कहने लगा—अपने सब दुःखोंकी कथा मुझसे कहो, मैं तुम्हारे दुःखोंको दूर करनेके लिए भरसक चेष्टा करूँगा।

बालकने कहा—उसके दुःखको दूरकरे—ऐसा कोई इस

संसारमें नहीं है। एक मात्र मृत्यु ही उसके दुःखको दूर कर सकती है।

मैंने फिर उससे कहा-तुम मत डरो, मैं तुम्हारी किसी गुप्त बातको प्रकट नहीं करूँगा। अपने वर्तमान दुःखकी कथा मुझसे कहो।

आखिरकार वालक रोता हुआ कहने लगा "पिताजी, मातृ-कलङ्ककी कथा क्या कोई अपने जबानपर ला सकता है?" इतना कहतेही शोकावेगसे उसका कंठ रुन्ध गया। वह मूर्छित होकर गिर पड़ा।

थोड़ीही देरके बाद होशमें आतेही वह फिर रोने लगा। मैंने फिर उससे कुछ भी नहीं पूछा। किन्तु दूसरे दिन सवेरे फिर मैंने उसको निरालेमें बुलाकर कहा-"बेटा! तुम धीरज धरकर अपनी तमाम बातें मुझसे कहो। इस सम्बन्धमें यदि तुम्हारा कोई भ्रम हुआ हो तो मैं उस भ्रमका संशोधन कर सकूँगा। बालकने रोते हुए कहा, "वह यहांसे लौटकर अपने पैतृक मकानपर गया था। किन्तु उसका मकान बिलकुल सूना पड़ा था। किसी पड़ोसीके ज़बानी सुना कि, उसके घरसे चले जानेके तीनही चार दिनोंके बाद उसके दोनों भाइयोंकी मृत्यु हुई। उसके बाद उसकी माताने देवीसिंहके स्त्री-बाड़ेमें प्रवेशकर वेश्यावृत्तिका अवलम्बन किया है।

"वेश्या-वृत्ति अवलम्बन किया है" यह कहते समय उस बालकका गला तीन वार भर आया। वह अविश्रान्त रोने लगा। उसकी ये सब बातें सुनकर मुझे अत्यन्त कष्ट हुआ। पीछे बहुत सोच-विचार कर मैंने कहा—बेटा! तुम्हारी जननीके चरित्रके सम्बन्धमें तुम्हारा ख्याल बिलकुल

ग़लत है। मुझे यह विश्वास नहीं होता कि जिसने तुम्हारे ऐसे सुपुत्रको अपने गर्भमें धारण किया है, वह कभी ऐसे कुकर्मों में प्रवृत्त हो सकती है ?

किन्तु बालकने मेरी बातोंपर विश्वास नहीं किया। उसने आत्म-हत्या करनेका संकल्प किया। उसको आत्म-हत्यासे हटानेके लिए मैंने फिर उससे कहा-बेटा! मैं फलको देखकर वृक्षकी प्रकृतिका निर्णय कर सकता हूँ। कोई-कोई तो अपने पिता मातासेही सत्प्रकृतिको पाकर सच्चरित्र होते हैं, और कोई-कोई सत्शिक्षा द्वारा सत्-चरित्रता लाभ करते हैं। केवल सत् शिक्षाकेही द्वारा जो लोग सच्चरित्रता लाभ करते हैं उनको अपनी प्रकृतिके साथ सर्वदा संग्राम करना पड़ता है। उन लोगोंकी इच्छा-वासना सर्वदा असत् पथकी तरफ ज्यादा दौड़ती है। किन्तु ये लोग अपने ज्ञानके द्वारा उन सब अदम्य वासनाओंको परास्त करते हैं। दूसरी तरफ़ जो लोग अपने पिता मातासेही अपनी सत् प्रकृति पाते हैं वे लोग बाल्य-कालसेही अपनी प्रकृतिके अनुसार सत्पथकी ओर दौड़ते हैं। तुम तेरह वर्षके बालक हो। तुम्हारे अन्दर जो साधु भाव मैं देख रहा हूँ, वह कुछ शास्त्रोंकी शिक्षा-का फल नहीं है! तुमने अभी तक ऐसी कोई शिक्षा नहीं पायी है, जो कुपथ-गामिनी इच्छाको और अदम्य वासनाको परास्त कर सके। इससे तुमने अपने हृदयके सभी साधुभाव अपनी जननीकी प्रकृतिसे ही प्राप्त किये हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। पापोंके प्रति, मिथ्या प्रवञ्चनाओंके प्रति, तुम्हारी जननीको विशेष घृणा न होती, तो तुम इतनी थोड़ी उम्रमें इस प्रकारको पवित्र जीवन-लाभ करनेमें समर्थ न होते। तुम्हारी जननी निश्चय परम साध्वी हैं। वे कभी कुपथ-गामिनी

नहीं हो सकतीं। तुम बिलकुल भ्रम-जालमें पड़ गये हो।

मेरी इन बातोंको सुनकर बालक कुछ शान्त हुआ। किन्तु, फिर उसने मुझसे पूछा—पिताजी! सत्य ही यदि हमारी जननी कुपथ-गामिनी न होतीं तो हमारे पड़ोसीने इस प्रकार झूठी बातें क्यों कहीं? उसके साथ हमारी माताकी कोई शत्रुता तो थी नहीं?

मैंने कहा-"बेटा! इस दुनियाकी हालत तुम्हें कुछ मालूम नहीं। जिस व्यक्तिके हृदयमें जो भाव होता है, वह दूसरोंको भी वैसाही देखता है। देवीसिंहने तुम्हारी माता-को पकड़ लिया है, यह सुनकर उन लोगोंने निश्चय कर लिया है कि तुम्हारी जननीने अवश्य अपना धर्म्म नष्ट कर दिया है। उन लोगोंके इस प्रकार सिद्धान्त करनेके सिवा और क्या हो सकता है? उन लोगोंने तो तुम्हारी जननीको धर्म्म-विसर्ज्जन करते हुए देखा नहीं है। वह लोग ऐसी अवस्था-में पड़नेपर जैसा करते, तुम्हारी जननीने भी वैसाही किया है, यह समझकर, उनलोगोंने तुमसे ऐसी असम्भव बातें कह दीं हैं।

मेरी इन बातोंको सुनकर बालकके हृदयका सन्देह कुछ कम हो गया। कुछ दिनोंके बाद उसने आत्म-हत्याका विचार छोड़ दिया। अब वह कहाँ जायगा, किस तरह अपने जीवनको बितायेगा आदि सम्बन्धमें मुझसे परामर्श करने लगा। मैंने उसको स्वदेश लौटनेके लिए कहा। किन्तु वह उसपर भी सम्मत नहीं हुआ। उसने कहा-"स्वदेश जाने-से लोगोंके बुरा कहनेपर उसको फिर आत्म-हत्याकी इच्छा होगी।" तब मैंने भी समझ लिया कि इसके लिए अभी स्वदेश जाना अच्छा नहीं है, इसलिए उससे मैंने कहा कि मेरे

पास रहकर शास्त्रोंकी शिक्षा ग्रहण करो। थोड़ेही दिनोंमें वह नाना प्रकारके शास्त्रोंमें पारंगत हो गया। प्रायः पांच या सात वर्ष हुए वह पंजाबको चला गया है। सुना है उसने वहाँ एक प्रधान सेनाध्यक्षका पद पाया है। इस समय वह पञ्जाबमें दयाल बाबूके नामसे लोगोंमें प्रसिद्ध है।

परमहंससे ये बातें सुनकर लक्ष्मणको बड़ा आनन्द हुआ। उन्होंने प्रेमानन्दको स्वदेश भेज दिया और स्वयं क्षेत्रनाथकी खोजमें पञ्जाब रवाना हुए।

उन्नीसवां परिच्छेद

दयाल बाबू

लक्ष्मणसिंह काशी परित्यागकर पञ्जाबकी ओर चले। इन दिनों सड़कोंका कोई अच्छा प्रबन्ध नहीं था। पथिकोंको एक प्रदेशसे दूसरे प्रदेशमें जानेके लिए जंगलों और पहाड़ोंमें से होकर जाना पड़ता था। किन्तु लक्ष्मण कमलादेवीको सुखी करनेके लिए किसी तरहके कष्टको कष्ट नहीं समझते थे, किसी प्रकारके दुःखको दुःख नहीं समझते थे।

वर्तमान उन्नीसवीं सदीका समाज लक्ष्मणके इन आचरणोंकी प्रसंशा न करे, लक्ष्मणको अशिक्षित और सनकी कहकर पुकारे–किन्तु विचारवान पुरुष लक्ष्मणके इस निःस्वार्थ प्रेममें देव–भावका दर्शन करेंगे।

उन्नीसवीं सदीके स्वार्थका, विद्यालयमें अध्ययन न करनेसे, का पुरुषताके मंत्र द्वारा दीक्षित न होनेसे, यदि शिक्षाकी त्रुटि होती है, तो लक्ष्मणसिंह अवश्य अशिक्षित थे। किन्तु चित्तोत्कर्ष और हृदयोन्नति यदि शिक्षाका एक मात्र उद्देश्य है, तो

हमलोग लक्ष्मणसिंहको बिलकुल अशिक्षित नहीं कह सकते। उन्नीसवीं सदीकी सत्शिक्षाने बंगके युवकोंके हृदयको शुष्क कर, उनके आन्तरिक अच्छे भावोंको हटाकर, उनके बदले अभिमान और आत्म-सुखकी चिन्तासे उनकी अन्तरात्माको भर दिया है। ऐसी शिक्षाके अभावसे ही लक्ष्मणका आचरण और व्यवहार नये समाजके आचरणों और व्यवहारोंसे स्वतन्त्र था।

कोई-कोई यह पूछ सकते हैं कि लक्ष्मण कमलादेवीके लिए इतना कष्ट और यन्त्रणा क्यों सह रहे हैं? इससे उनको लाभ ही क्या है? इसके उत्तरमें हम इतना कह सकते हैं कि महात्मा यीशूखीष्टके लिए उनके शिष्य स्टीफेन और पोल प्रभृति अपने प्राणोंको विसर्ज्जित करनेमें कुण्ठित क्यों नहीं होते थे? हनुमानजी अपने प्राणोंको तुच्छ समझकर रामचन्द्र-जीके कार्योंको क्यों करते थे? चैतन्यदेवके लिए रूप और सनातनने अपने पद और प्रभुत्वका परित्याग क्यों किया था? खीष्ट, श्रीरामचन्द्र और चैतन्यदेवमें उनके भक्त जिन सुन्दर भावोंको देखकर मोहित हुए थे, लक्ष्मणने भी कमलादेवीमें उन्हीं भावोंको देखकर उनके चरणोंमें जीवन समर्पित किया था। हमने पहलेही कह दिया है कि लक्ष्मणने बीसवीं सदी-की सत्शिक्षा नहीं पायी है, इससे उनके हृदयका उत्तम भाव विनष्ट नहीं हुआ है, और यही कारण है कि कमला-देवीके आन्तरिक पवित्र भावोंको देखकर लक्ष्मण सहज ही मोहित हो गये।

लक्ष्मण रास्तेमें तरह-तरहके कष्ट और यन्त्रणाओंका भोग करते हुए प्रायः दो महीनेके बाद पञ्जाब पहुँचे।

कमलादेवीके जेष्ठ पुत्र क्षेत्रनाथ प्रायः सात-आठ वर्षों से पञ्जाबमें वास कर रहे हैं। उन्होंने अपने बारह अथवा तेरह

वर्षकी अवस्थामें बंगालका परित्याग किया था। इस समय उनकी अवस्था प्रायः तेईस–चौबीस वर्षकी है। यहाँ इनको क्षेत्रनाथ भट्टाचार्य्यके नामसे बहुत थोड़े लोग जानते हैं। यहाँ वे दयालबाबूके नामसे परिचित हैं। वे इस समय पञ्जाबमें प्रधान सेनापतिका पद पाकर प्रचुर धन-सञ्चय कर रहे हैं। किन्तु वे अपने सुख और स्वच्छन्दताके लिए धन खर्च नहीं करते थे। उनका उपार्जित किया हुआ धन दीन-दुःखियोंके उपकारमें खर्च होता था। कोई आदमी अन्नाभावसे कष्ट उठा रहा है, यह सुनतेही वे उसी वक्त उसके मकानपर जाकर, उसको धन देते थे, उसका हाल-चाल लिया करते थे, और अपने भरसक उसके दुःखोंको दूर करनेकी कोशिश करते थे। अपने पैदा किये हुए धनके सोलह हिस्सेके पन्द्रह हिस्सोंको वे दीन-दुःखियोंके कष्ट दूर करनेमें ही खर्च करदेते थे। बाकी एक हिस्सेका आधा स्वयं खर्च करते थे और आधा अपनी जननीके लिए रख छोड़ते थे। परमहंसजीकी बातोंको याद कर वे सोचा करते थे कि, यदि उनकी माता जीवित होंगी तो भविष्यमें उनसे मुलाकात हो सकती है, और साक्षात् होनेपर उनके भरण-पोषणके लिए इस सञ्चित धनको अर्पण करेंगे। प्रत्येक महीनेमें अपनी जननीके लिए रुपया रखते समय उनके नेत्र आँसुओंसे भर जाते थे, उनका हृदय उमड़ आता था। वे एकान्तमें बैठकर सोचा करते थे "हाय! मेरे छोटे भाइयोंकी मृत्यु अन्नाभावसे ही हुई है; अतएव जब तक मेरे पास रुपया रहेगा, अपने भरसक किसीके अन्नकष्टको दूर करनेमें कभी त्रुटि नहीं करूँगा।"

जब लक्ष्मणसिंह क्षेत्रनाथके मकानपर पहुँचे, उस समय वे अपने आँगनमें बैठकर दीन और दुःखियोंको वस्त्र दान

दे रहे थे। इन सभोंमें एक औरत एक टुकड़ा कपड़ा अपने कमरसे घुटनों तक ढाँके हुए उनके सामने आकर खड़ी हुई। इस औरतका बदन कमरसे सिर तक खुला हुआ था। इस औरतको देखतेही क्षेत्रनाथकी आँखोंसे आँसू टपकने लगे। वे फ़ौरन उस औरतके हाथमें चार-पाँच धोती और कुछ रुपये देकर कमरेमें प्रवेश करतेही हाहा करते हुए रोने लगे। बारह-तेरह वर्ष पहले जब क्षेत्रनाथने दिल्लीश्वरसे मुलाकात करनेके लिए घर छोड़ा था, उस समय उनकी माता इसी प्रकार एक टुकड़े फटे वस्त्रसे अपनी लज्जा-निवारण करती थीं। आज इस दरिद्रा रमणीको इस प्रकार फटा हुआ कपड़ा पहने देखकर उनको माताका दुःख और कष्ट याद आ गया। उनके आँसू रुक न सके। दूसरे भिखारियोंको दान देनेके लिए अपने नौकरको आज्ञा देकर स्वयं कमरेके अन्दर चले गये।

कपड़ोंको बाँटनेके बाद नौकरने शीघ्रतासे कमरेमें जाकर कहा—हुजूर आपके घरसे आपकी माताका पत्र लेकर एक आदमी आया है। वह दर्वाज़ेपर खड़ा है।

क्षेत्रनाथ शोकसे विह्वल होकर रो रहे थे। उनको नौकरकी आवाज़ सुनायी नहीं दी। नौकर आश्चर्यमें आकर चुप हो रहा।

थोड़ी देर ठहरकर उसने फिर कहा—हुज़ूर आपके घरसे आपकी माताका पत्र लेकर एक आदमी आया है।

नौकरकी बात सुनकर वे मनही मन सोचने लगे, क्या यह स्वप्न है! मेरी माके पाससे पत्र लेकर आदमी आया है! माताके दुःख और कष्टकी स्मृतिने क्या मुझे पागल कर दिया है! माताके जीते रहने पर भी, वे यहां किस तरह आदमी भेज सकती हैं। उनका कौन ऐसा बन्धु है जो मेरे अनुसन्धानमें पञ्जाब आवेगा। और मैं यहां हूँ, इसको वे

किस प्रकार जान सकती हैं। शायद यह मातृ-शोक है, जो मुझे पागल कर रहा है। मालूम होता है, मैं स्वप्न देख रहा हूँ।

नौकरने फिर कहा-हुजूर आपके घरसे आदमी आया है।

तब वे बड़े कष्टसे अपनेको सम्हालकर आँखोंको पोछते हुए बाहर आये और नौकरसे पूछा-कौन आये हैं, उनसे यहां आनेको कहो।

तब नौकरने लक्ष्मणसिंहको बुलाया। लक्ष्मणने नौकरके पीछे-पीछे जाते हुए देखा कि बहुतसे दीन और दुःखी "दयाल बाबूकी जय हो" कह कर आशीर्वाद देते हुए नये वस्त्रोंको लेकर बाहर जा रहे हैं। वे क्षेत्रनाथके पास आये और आसनपर बैठते हुए कहा-महाशय, मैं बङ्गदेशसे आ रहा हूँ। क्या आपका नाम क्षेत्रनाथ भट्टाचार्य्य है?

क्षेत्रनाथने कहा-हां, मेरा नाम क्षेत्रनाथ है।

लक्ष्मण-मुर्शिदाबादके जगन्नाथ भट्टाचार्य्य आपके पिता थे?

क्षेत्रनाथ—जी हाँ।

लक्ष्मण—आपकी ब्रह्मस्व ज़मीन जब्त होनेके बाद, आपने बारह या तेरह वर्षकी अवस्थामें अपने देशको छोड़ दिया था?

क्षेत्रनाथ—आप इन बातोंको क्यों पूछ रहे हैं?

लक्ष्मण—मैं आज ग्यारह वर्षों से आपको देश-देशान्तरोंमें खोज रहा हूँ। कई महीने हुए काशीजीमें एक परमहंस महात्मासे आपकी ख़बर पाकर यहाँ आया हूँ। मुझे आप शत्रु न समझें, अपना सहोदर जानिए। आपकी जननी कमला देवीको मैं अपनी गर्भधारिणीके समान समझता हूँ।

माताका नाम सुनतेही क्षेत्रनाथकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। वे थोड़ी देर तक चुप रहे। फिर अपनेको रोककर उन्होंने पूछा "मेरी माता इस समय कहाँ हैं, किस अवस्थामें

हैं, क्या आप जानते हैं ? कहिए न, क्या आपको मालूम है ?"

इस प्रश्नके उत्तरमें लक्ष्मणने कमला देवीके सम्बन्धकी सब बातें धीरे-धीरे कह सुनायीं। जिस प्रकार कमलादेवी क्षिप्तावस्थामें देवीसिंहके आदमियों द्वारा पकड़ी गयी थीं, जिस प्रकार उन्होंने देवीसिंहके बाडेसे मुक्त होकर रामसिंहके घर आश्रय लिया था, उसके बाद उनको सुखी करनेके लिए उनके पुत्रका अनुसन्धान, फिर परमहंसके साथ मुलाक़ात इत्यादि तमाम घटनाओंको उन्होंने क्षेत्रनाथसे कह सुनाया।

उनकी बातोंको सुनते समय क्षेत्रनाथकी आँखोंसे अविश्रान्त आँसू बह रहे थे। लक्ष्मणकी सब बातें समाप्त होते ही क्षेत्रनाथने अपनी छातीको हाथोंसे पीटते हुए कहा— हा परमेश्वर, मेरे ऐसा पापात्मा इस जगतमें और कोई नहीं है! परम साध्वी मातृदेवीके चरित्रके सम्बन्धमें इस पापीके हृदयमें सन्देहका उदय हुआ था। शास्त्रमें कहा है कि विवेक ईश्वरकी वाणी है। फिर विवेकने मुझे क्यों धोखा दिया? या तो मेरेमें कोई विवेक नहीं है, या मेरा विवेक दूषित हो गया है। अभी इसी समय इस पापी प्राणका विसर्ज्जन कर इस पापका प्रायश्चित्त करूँगा।

यह कहते ही वे मूर्छित होकर गिर पड़े। लक्ष्मण उनके मस्तकको अपनी गोदमें उठाकर हवा करनेलगे, और नौकर सिरपर पानी देनेलगा।

थोड़ी ही देरके बाद वे होशमें आते ही चिल्लाकर रोने लगे। बारम्बार अपना तिरस्कार करते हुए बड़े आक्षेपसे कहने लगे—"हाय, मैं कैसा पापात्मा हूँ! कैसा नराधम हूँ! बारह वर्षोंसे मेरी माता इतना कष्ट उठा रही है! अब यह पापी मुँह अपनी माताको कभी न दिखाऊँगा!

लक्ष्मण उनको नाना तरहसे सान्त्वना देने लगे। लेकिन किसी तरह उनका रोना बन्द न हुआ। उन्होंने रोते-रोते लक्ष्मणके चरणोंपर सिर रखकर कहा—भाई, तुम धन्य हो! तुम देवता हो! तुम मेरी पुण्यवती जननीके उपयुक्त पुत्र हो और वे तुम्हारी उपयुक्त माता हैं। मेरे समान पापात्माके उस पुण्यवतीको माता कहकर पुकारनेसे उनको कष्ट होगा। भाई, मैं अपने प्राण देकर इस पापका प्रायश्चित्त करूँगा। आप घर लौटकर मातासे कह दीजिएगा कि आप उस पापात्मा अकृतज्ञ सन्तानको भूल जायँ। इस पापात्माके लिए वे एक बूंद आँसू न बहायें। मैं नितान्त नराधम हूँ, मेरा हृदय बड़ा कुटिल है। ऐसा न होनेसे पड़ोसीके कहनेपर मेरे मनमें सन्देह क्यों हुआ? धन्य परमहंसजी! आप सत्यही भूत, भविष्य कह सकते हैं।

लक्ष्मणने कहा—भाई, तुम क्या पागलकी तरह बक रहे हो? तुम्हारे शोकसे तुम्हारी माता सर्वदा अश्रुजल विसर्ज्जन कर रहीं हैं। सैकड़ों कोशिश करनेपर भी मैं उनको सुखी न कर सका। देवीसिंहके स्त्री-बाड़ेमें रहती समय, उन्होंने अनायास अपने प्राणोंको त्याग देनेके लिए तीन बार सङ्कल्प किया था। किन्तु केवल तुम्हारा मुख देखनेकी आशासे उन्होंने आत्महत्या नहीं की। यदि तुम आत्महत्या करोगे, तो वे भी आत्महत्या करेंगी। इससे तुमको मातृहत्याका पाप अवश्य होगा।

लक्ष्मणकी बातें सुनकर क्षेत्रनाथने कहा—मैं बड़ा अकृतज्ञ सन्तान हूँ। मैं किस प्रकार अपना मुँह मांको दिखाऊँगा! मैं इतने दिनोंतक उनको छोड़कर रहा!

लक्ष्मण—भाई, सन्तान भले ही अकृतज्ञ हो सकती है,

पर माता उसका कभी परित्याग नहीं कर सकती। सन्तान अच्छी हो या बुरी, परमात्माके स्नेहका ह्रास कभी नहीं होता। मातृस्नेह क्या पदार्थ है, इसको कोई वाक्यों द्वारा व्यक्त नहीं कर सकता। वह कविकी कल्पनाओंको भी परास्त करता है।

लक्ष्मणके इस प्रकार समझानेपर क्षेत्रनाथकी आत्म-ग्लानि धीरे-धीरे कम होने लगी। लक्ष्मणकी सम्पूर्ण बातें सुनकर वे उनको देवता समझने लगे और दो ही तीन दिनोंमें उन्होंने स्वदेश जानेका निश्चय किया।

दो ही तीन दिनोंमें दयालबाबूके पञ्जाब छोड़देनेकी कथा चारो तरफ फैल गयी। कितने ही लोग उनसे मुलाकात करनेके लिए आने लगे। सभी उनके लिए दुःखित हुए। गरीब दुःखियोंने आकर कहा—दयालबाबू आपके यहांसे चलेजानेके बाद हमलोगोंकी क्या दशा होगी ?

क्षेत्रनाथने सबको सान्त्वना देकर कहा कि वे बहुत जल्द अपनी माताको साथ लेकर पञ्जाब लौटेंगे। वे नरकतुल्य बंगदेशमें कभी न रहेंगे। ११८९ के माघ महीनेमें (सन् १७८३ ई० की जनवरी) क्षेत्रनाथ लक्ष्मणके साथ स्वदेशको रवाना हुए।

बीसवां परिच्छेद

सुप्रीम कोर्ट।

विपद, दारिद्रता और दुःख किसी अवस्थामें भी मनुष्योंका शत्रु नहीं हैं। विपद और दुःख मित्रकी तरह मनुष्यके हृदय-को उन्नत करता है, गुरुकी तरह सत्‌शिक्षा देता है; नेता बनकर

जीवन-संग्राममें परिचालन कराता हैं, इसी तरह सम्पत्ति और ऐश्वर्य्य बहुत जगहोंमें शत्रुकी तरह मनुष्योंको घमंडी बनाता है, अहङ्कारी बनाता है, उनके हृदय और मनको कलुषित् करता है, और परिणाममें उसको विलासी, आलसी और अकर्मण्य बनाकर छोड़देता है।

चिरसम्पत्ति और अतुल ऐश्वर्य्यकी गोदमें पले हुए बंगालके सैकड़ों ज़मींदारोंकी सन्तान मूर्ख बनकर बैठी हैं; पशुओंकी तरह जीवन बिता रही हैं। मनुष्योंकी तरह इनके हाथ-पैर हैं, मनुष्योंकी तरह इनके अंगकी गठन है, इन्हीं कारणोंसे हमलोग इनको मनुष्य कहनेके लिए बाध्य होते हैं। किन्तु इनलोगोंकी विद्या-बुद्धि, इनलोगोंके कार्य्यकलाप, इनलोगोंके आचार-व्यवहार देखनेसे कौन साहस कर कह सकता है कि इनलोगोंमें भी मनुष्यत्व है!

बंगमहिला सत्यवतीदेवी अब अपने पतिके उद्धारके लिए कलकत्ते आयी हैं। इसके पहले अलौकिक साहस और वीरता दिखाकर अपने श्वशुरको कारामुक्त किया था। उनके साहस, वीरता और अलौकिक त्यागके भावोंको किसने प्रज्वलित किया था? किस विद्यालयमें उन्होंने ऐसी सत्-शिक्षा पायी थी? वर्तमान समयके उपस्थित विपदोंने उनको कैसा बना दिया है! उनका हृदय, उनका मन कितना उन्नत हुआ है, इनभावोंकी परीक्षा करनेके लिए उनके ज़बानसे निकलीं हुई बातोंका स्मरण करना चाहिए। उनके बूढ़े श्वशुर जब पकड़ गये थे, उस दिन उन्होंने स्वयं कहा था कि विविध प्रकारके विपद् और संकटोंमें पड़कर उन्होंने बहुत शिक्षा पायी है। सम्पत्तिकी गोदसे उतरनेके पहले वे अपने पतिको समय-समय अच्छे अनुष्ठानोंसे अलग रहनेके लिए कहा करती थीं।

लेकिन अब कहती हैं कि उनके पति देवता थे, उन्होंने उनको पहचाना ही नहीं था।

मनुष्य विपद्में पड़कर परमेश्वरको फिर क्यों दोष देता है? विपद् मनुष्योंका मित्र है, मनुष्योंका गुरु है और मनुष्यों-का नेता है।

विपद्ने ही सत्यवतीको अलौकिक साहस प्रदान किया है। वे अपने पतिके उद्धारके लिए इस समय कलकत्ते आयीं हैं। माल्दहके अन्तर्गत पंडुआके जङ्गलसे सीधे पैदल आयीं हैं। तीन दिनके अन्दर वे कलकत्ते पहुँच गयीं। दिन और रात उन्होंने रास्तेमें कहीं विशेष विश्राम नहीं किया। रंगपुर-में युद्ध आरम्भ हो गया है। इस समय प्रेमानन्दके वहाँ न जानेसे सब चेष्टा और उद्यम नष्ट हो जायँगे। इसी लिए सत्यवती एकसौ कोस तीन रात और तीन दिनोंमें पैदल आयीं।

कलकत्ते आनेके समय ही उन्होंने पुरुषका वेश धारण कर लिया था। कलकत्तेमें आते ही उन्होंने अपनेको रामकृष्ण अधिकारीके नामसे परिचित किया।

यहां आकर उन्होंने सुना कि सुप्रीम कोर्टमें वगैर दर्खास्त किये उनके पतिके उद्धारका कोई उपाय नहीं है। इन दिनों राजस्वकी वसूलीके लिए या और किसी कारणसे ईस्ट इन्डिया कम्पनीके गवर्नर अथवा कर्मचारी लोग जिन देशी आदमियोंको कैद करते थे, सुप्रीम कोर्टमें दर्खास्त करनेसे उन लोगोंको छोड़नेके लिए हेबसकौरपस (Habeas Corpus) नामका परवाना जारी होता था। सुप्रीम कोर्ट और ईस्ट इन्डिया कम्पनीके कर्मचारियोंके साथ बिलकुल वैमनस्य था। इसीसे कम्पनीके कर्मचारी लोग जिनलोगोंको कैद करते थे;

सुप्रीम कोर्ट उनलोगोंको छोड़ दिया करती थी।

इस परिच्छेदको समाप्त करनेके पहले पाठकोंकी जानकारीके लिए सुप्रीम कोर्ट और ईस्ट इन्डिया कम्पनीके कर्म्मचारियों के बीच जो दूसरा झगड़ा पैदा हुआ था, उसका पहले उल्लेख किया जायगा,।

सुप्रीम कोर्टकी स्थापनाके पहले कलकत्तेमें मेयर कोर्टके नामसे एक अदालत थी। ईस्ट इन्डिया कम्पनीके अंगरेज कर्मचारियोंमें से मेयर कोर्टके न्यायकर्त्ता निर्वाचित हुआ करते थे। किन्तु ईस्ट इंडिया कम्पनीके प्रायःसभी कर्मचारी घोर अत्याचार और निष्ठुर व्यवहारोंके द्वारा देशके तमाम लोगोंका धन अपहरण किया करते थे। इसीलिए मेयर कोर्टसे किसी प्रकारके सुविचारकी सम्भावना नहीं थी। जो लोग रातको अस्त्र और शस्त्र लेकर चोरी और डकैती करते थे, वे ही दिनको विचारकका गाउन पहन मेयर कोर्टके विचारासनपर बैठकर उन्हीं (रातवाले) अत्याचारोंका विचार किया करते थे। इसी तरह मेयर कोर्टका सद्विचार चलने लगा।

डॉन्डूस् प्रभृति इङ्गलैन्डके कई एक सहृदय लोग मेयर कोर्टकी अत्याचारोंकी कथा सुनकर बड़े दुःखित हुए। उन लोगोंने इङ्गलैन्डेश्वरकी ओरसे कलकत्तेमें सुप्रीम कोर्टकी स्थापनाके लिए प्रस्ताव किया। यही कारण था कि उसी वक्त मेयर कोर्ट एब्रोलिश होकर कलकत्तेमें सुप्रीम कोर्टकी स्थापना हुई। सर एलिजाइम्पे (Elijah Impey) चीफ़ जस्टिसके पदपर, हाइड् (Hyde), लीमेस्टर (Lemaistre), और चेम्बर्स (Chambers) ये तीनों सहकारी जजके पदपर नियुक्त होकर आये। किन्तु सुप्रीम कोर्ट ही क्या, और मेयर कोर्ट ही क्या; लङ्कामें जो प्रवेश करेगा वही हनुमान

होगा। अमृतफलका लोभ कोई त्याग नहीं सकेगा; सभी पेड़ को जड़से ग्रास करना चाहते हैं, सभी एकाधिपत्यके लिए लालायित रहते हैं। सुप्रीम कोर्टके जज लोग भी सब विषयों-में और देशके सब लोगोंपर अपना आधिपत्य रखना चाहते थे। पहले-पहल वॉरेन हेस्टिंग्ज़ अपने विपक्ष दलवालोंके आक्रमणोंसे आत्मरक्षा करनेके लिए दो बार सुप्रीम कोर्टके शरणागत हुए, उस समय वे सुप्रीम कोर्टको सर्वोच्च क्षमता प्रदान करना अस्वीकार नहीं करते थे, किन्तु अब मृत्युने उनके विपक्षदलका ह्रास किया है, इसलिए अब वे सुप्रीम कोर्टकी अधीनता क्यों स्वीकार करने लगे। यही कारण है कि सुप्रीम कोर्टके साथ गवर्नमेन्टका विवाद उपस्थित हुआ।

सुप्रीम कोर्ट गवर्नमेन्टके विरुद्ध चलने लगा। राजस्वकी वसूलीके लिए अथवा किसी कारणसे जिन देशी आदमियोंको गवर्नमेन्ट कैद किया करती थी, सुप्रीम कोर्ट उन लोगोंको रिहा कर दिया करता था।

इस समय गवर्नमेन्ट और सुप्रीम कोर्टमें विवाद होनेके कारण ही बहुतसे लोग वॉरेन हेस्टिंग्ज़ और गङ्गागोविन्दसिंह-के अत्याचारोंसे अपनी-अपनी जान बचानेमें समर्थ हुए।

रामकृष्ण अधिकारी नामधारी छद्मवेशिनी सत्यवतीसे कलकत्तेके तमाम लोगोंने कहा कि सुप्रीमकोर्टमें दर्ख्वास्त करनेपर प्रेमानन्द गोस्वामीका उद्धार दो ही एक महीनेमें हो जायगा। किन्तु इधर रङ्गपुरमें युद्ध छिड़ गया है, अब और दो-एक महीनेके लिए प्रेमानन्द यदि जेलमें रहें, तो उनकी सम्पूर्ण चेष्टा और उद्यम विफल हो जायँगे। युद्धक्षेत्रमें उनके उपस्थित न रहनेसे हर तरहकी विशृङ्खला होनेकी सम्भावना है।

इसके अतिरिक्त सुप्रीमकोर्टमें दर्ख्वास्त करनेके लिए बहुत

से खर्चकी ज़रूरत है। किन्तु सत्यवतीकी अवस्था किसी प्रकारके खर्च उठानेकी नहीं है।

कलकत्तेका जेल देवीसिंहके कारागारकी तरह नहीं है कि जेलके अन्दर प्रवेशकर अपने पतिसे मुलाक़ात कर लेंगी। अतएव वे अत्यन्त चिन्तित हुईं।

इस समय गंगागोविन्दसिंहभी कलकत्तेमें नहीं थे। वे अपनी माताकी श्राद्धके लिए कांदीके अन्तर्गत अपने पैतृक वासस्थानको गये थे।

कलकत्तेसे सैकड़ों ब्राह्मण और पण्डित लोग गंगागोविन्द-सिंहके मातृ-श्राद्धके उपलक्षमें उनके घरको जा रहे थे। ये सब आदमी आपसमें बात-चीत कर रहे थे कि मातृ-श्राद्धके दिनों दीवान गंगागोविन्दसिंह बिलकुल कल्पतरु होकर सब-की प्रार्थनाको पूरा करेंगे। उनसे उस दिन जो जो कुछ मांगेगा वे उसी क्षण उसको वह मांगी हुई वस्तु प्रदान करेंगे।

सत्यवतीने इन सब आदमियोंकी बात सुनकर अपने दिलमें सोचा कि, वे ब्राह्मण-कुमारके वेषमें गंगागोविन्दसिंहके पास जाकर अपने पतिकी कारामुक्तिके लिए प्रार्थना करेंगी; और गंगागोविन्द अपने व्रतका प्रतिपालन करनेके लिए वाध्य होकर अवश्य उनके पतिको कारामुक्त करेंगे।

इस प्रकार स्थिर कर वे और और लोगोंके साथ गंगागो-विन्दके मकानकी ओर चलीं।

इक्कीसवां परिच्छेद

दक्ष यज्ञसे भी अधिक

Ganga Govind—"a name at the sound of which all India turns pale—the most wicked, the most atrocious, the boldest, the most dexterous villain that ever the rank servitude of that country has produced.

Edaund Burke.

'गंगागोविन्द', सौ वर्ष पहले इस नामके सुननेसे बंगालियोंका हृदय काँप उठता था। देशके तमाम ज़मींदार उनके पैरों तले अपना सिर झुकाते थे। नज़र हाथमें लेकर उनके सामने खड़े रहते थे। बंगालके तमाम छोटे-बड़े अबाल-वृद्ध बनिता गंगागोविन्द्से डरते थे। क्यों न डरते? भारतवर्षके गवर्नर जेनरल वारेन हेस्टिंग्ज गंगागोविन्द्के समीप कृतज्ञताके डोरसे बँधकर उनके क्रीत दास हुए हैं। इधर गंगागोविन्द् देशके तमाम लोगोंका धन-अपहरणकर हेस्टिंग्ज़का जेब भर रहे हैं, प्राण-पणसे चेष्टाकर हेस्टिंग्ज़के लिए घूसका बन्दोबस्त कर रहे हैं, हेस्टिंग्ज़के उपकारके लिए वे अपने प्राण तक देनेमें कुंठित नहीं हैं, इसी कारण हेस्टिंग्ज़ गंगागोविन्द्के क्रीत दास हैं।

अभी गंगागोविन्द्को मातृवियोग हुआ है। उन्होंने अपने मनही मन स्थिर कर लिया है कि विशेष समारोहके साथ अपनी माताका श्राद्ध करेंगे। नवकृष्ण मुन्शीने अपनी माताके श्राद्धमें नव लाख रुपया खर्च किया है। नवकृष्णकी अपेक्षा उनका पद और प्रभुत्व उँचा है। यदि नवकृष्णके मातृ-श्राद्धकी अपेक्षा उनकी माताके श्राद्धमें अधिक समारोह

न हुआ, तो उनका यह पद और प्रभुत्व वृथा है।

गंगागोविन्दने अपनी माताकी श्राद्धके समय वॉरेनहेस्टिंग्ज़की सहायता माँगी। हेस्टिंग्ज़ने उसी वक्त बंग देशके प्रत्येक जिलेके कलेक्टर और कलेक्टरके दीवानोंके पास पत्र लिख भेजा "गङ्गागोविन्दके मातृ-श्राद्धको हमारा मातृ-श्राद्ध समझ कर, इस श्राद्धके निर्वाहके लिए तुम लोग अपने-अपने जिलेकी जितने प्रकारकी उत्कृष्ट खाने-पीनेकी चीज़ें मिल सकती हों, ज्यादा परिमाणमें भेजो। इस विषयमें कभी कोताही न करना। तुम लोगोंकी भेजी हुई चीजोंका मूल्य श्राद्धके बाद दे दिया जायगा।"

हेस्टिंग्ज़के इस प्रकारके सर्क्यूलर मिलने पर, प्रत्येक ज़िलेके दीवान अपने-अपने इलाकोंके भिन्न-भिन्न हाटों और बाजारोंमें बिविध प्रकारके फल-मूल और अन्यान्य खाने-पीनेकी चीज़ें खरीदनेके लिए बर्कन्दाज़ोंको भेजने लगे। बंग देश भरमें हड़कम्प मच गया। श्रीहट्टके पूर्व सिमानेसे लेकर बिहारके पश्चिम प्रान्त तक, रंगपुर और दिनाजपुरके उत्तर प्रान्तसे लेकर समुद्र तटपर डायमुड हार्बरके नज़दीक दक्षिण प्रदेश तक, देशके समस्त हाटों और बाज़ारोंमें केवल गंगागोविन्दके मातृ-श्राद्धकी चीज़ें खरीदी जाने लगीं। किन्तु सब चीज़ें उधार खरीदी गयीं। हेस्टिंग्ज़ने कलेक्टरोंको लिखा कि चीज़ोंके दामका हिसाब श्राद्धके बाद किया जायगा। कलेक्टरके दीवानोंने अपने मातहतके जमादारों और बर्कन्दाज़ोंको चीज़ें खरीदनेके लिए हुक्म दिया। ज़मादारों और बर्कन्दाज़ोंने जिस दुकानमें जो चीज़ पाया, उधार खरीदना शुरू किया। चीज़ोंके दर और दाम करनेकी ज़रूरत नहीं हुई। सरकारी कार्यके लिए चीज़ोंकी खरीद हो रही है, बिल भेजते

ही रुपया मिलेगा, इसके लिए दर-दामकी क्या ज़रूरत है?

इन सब चीज़ोंके खरीदनेके उपलक्षमें भिन्न-भिन्न जिलोंके बर्कन्दाजोंन चीज़ बेचनेवालोंके साथ जिस प्रकारका व्यवहार किया था, उसको विस्तारपूर्वक लिखनेके लिए पुस्तकके आकारमें और भी ५०० पृष्ठ बढ़ाने पड़ेंगे, इसके लिए पाठकों-से हम क्षमा चाहते हैं। पुस्तकका आकार अब बढ़ाया नहीं जा सकता। संक्षेपमें इस विषयकी दो-एक घटनाओंका उल्लेख कर देनेसे ही हमारे पाठकगण तमाम बातोंको समझ लेंगे।

जिन सब फलोंके थोड़ेही दिनोंमें पककर नष्ट होनेकी सम्भावना है, उन सबोंकी खरीद कृष्णनगर इत्यादि, निकट वर्ती स्थानोंमें की गयी थी। नदियाके अन्तर्गत शान्तिपुरके बाज़ारमें ग्यारह वर्षकी एक बालिका केलेका एक बड़ा गुच्छा बेचनेको आयी थी। कलेक्टरके बर्कन्दाज़ लोग उस समय कला इत्यादि तरह-तरहके फलोंका संग्रह कर रहे थे। उन लोगोंने उस बालिकाके हाथोंसे केलेका गुच्छा छीन लिया।

बालिका डबडबायी हुई आँखोंसे देखती हुई बोली-मेरी मा अच्छी नहीं है। कल तीसरे पहर हम लोगोंके घर चावल नहीं था, कुछ खानेको नहीं मिला। इनको बेचकर चावल ख़रीदूँगी। मुझे केलोंका दाम दो।

बर्कन्दाज़ साहबने कहा-चुप रह, लौंडी! पीछे दाम मिलेगा, अभी घर जा।

बालिका भय और त्राससे खाली हाथों घर चली गयी। हुगलीके अन्तर्गत आजकलके उलूबेड़ियाके नज़दीक किसी स्थानमें चौदह वर्षका एक बालक कच्चा नारियल (डाभ) बेचता था, बर्कन्दाज़ लोग उसके डाभको छीनकर ले चले।

बालकने रोते हुए कहा—डाभका पैसा दो। पिताके लिए गाँजा ख़रीदना है। घर गाँजा लेकर न ले जानेसे पिता मुझे बहुत मारेंगे। मेरे डाभका पैसा दो, मेरे डाभका पैसा दो।

बर्कन्दाज़ साहबने बालकको ढकेल दिया और डाभ लेकर चलते बने। बालक अपने पिताके भयसे घर नहीं लौटा। न मालूम वह भागकर कहाँ चला गया, उसका कोई पता न लगा।

दिनाजपुरकी एक औरत एक टोकरी आलू बेच रही थी। एक बर्कन्दाज़ आकर उसके आलूकी टोकरी पकड़कर खींचा-तानी करने लगा।

वह औरत अपनी छातीके नीचे टोकरी रखकर बराबर कहने लगी-पैसा दो तो दूँ नहीं तो नहीं देते, नहीं देते, नहीं देते।

बर्कन्दाज़ औरतको ज़मीनपर पटककर उसका तमाम आलू लेकर चलते बने।

बाकरगञ्जके अन्तर्गत काऊखालीके बाजारमें सत्रह-अठारह वर्षका एक मुसलमान युवक सात-आठ टोकरियाँ चावलोंको लेकर बेचनेके लिए बैठा था। चावलोंकी टोकरियाँ उसके सामने रक्खी हुईं थीं। उसके पिता, चाचा और मामा नदीके किनारे एक बड़ी नौकाके मालिकसे चावलोंका दाम ठीक करनेके लिए गये हुए थे। उसी अवसरमें ईस्ट इंडिया कम्पनीके बर्कन्दाज़लोग चावलोंकी खरीद करनेके लिए वहाँ आकर, उस युवकके सामने रक्खी हुई चावलोंकी टोकरियोंको उठा लेजानेको उद्यत हुए। युवक बड़े ज़ोरोंसे चिल्ला उठा—अोब्बाजान—आदुदू—आमामू—बर्कन्दाज़ चावल छीन रहे हैं।

युवकके पिता, चाचा और मामा उसके चीत्कारको सुन कर दौड़े हुए आये। बर्कन्दाज़ोंके हाथोंसे चावल छीन उनकी खूब मरम्मत की। बर्कन्दाज़ लोगोंने ठोंकेजानेपर कोतवाल-

के घर इत्तला की कि उनके खरीदे हुए चावलोंको काऊखालीके मुसल्मानोंने डाका मारकर छीन लिया है। इसपर कोतवाल-ने जांचकर काऊखालीके बाजारसे तीस आदमियोंको डांकू कहकर ढाकेको चलान किया। चलान होनेके चार-पाँच महीनेबाद प्रत्येकको पाँच-पाँच सालकी क़ैदकी सजा हुई।

इसी ढंगसे दीवान गङ्गागोविन्दसिंहके मातृ-श्राद्धकी चीज़ें संग्रह की जाने लगीं। श्राद्धका दिन निकटवर्ती होनेपर ये सब चीज़ें क्रमशः उनके मकानपर पहुँचने लगीं। प्रायः बीस लाख आदमियोंके खाने-पीनेकी चीज़ें लायी गयीं। काँदीमें गङ्गागोविन्दसिंहका मकान श्राद्धके पन्द्रह दिन पहले ही आदमियोंसे भर गया था। कमसे कम तीन कोसके गिर्दमें आदमियोंके रहनेके लिए छप्परके घर बनाये गये थे।

इधर देशके तमाम राजाओं, ज़मींदारों, ताल्लुकेदारोंको निमन्त्रण दिया गया। गङ्गागोविन्दसिंहके निमन्त्रण-पत्रको सभीलोगोंने फ़ौज़दारी अदालतका सम्मन समझा। इस निमन्त्रणकी रक्षा न करनेसे शायद गङ्गागोविन्दसिंह असन्तुष्ट हो जायँ। ब्रह्मा, विष्णु और शिवके असन्तुष्ट होनेसे आदमियों-की रक्षा हो सकती है, किन्तु गङ्गा गोविन्दके असन्तुष्ट होनेपर किसीकी रक्षा नहीं!

नदियाके राजा कृष्णचन्द्रने निमन्त्रण पाकर अपने पुत्र राजा शिवचन्द्रसे गङ्गागोविन्दके यहाँ जानेके लिए कहा। राजा शिवचन्द्र बड़े जात्याभिमानी थे। वे गङ्गा गोविन्दके ऐसे किसी कायस्थके मकानपर जानेके लिए राज़ी न हुए।

उस समय राजा कृष्णचन्द्रने क्रुद्ध होकर कहा—"बेटा! तुम न जाओगे, तो क्या हम इस रुग्ण शरीरको लेकर गङ्गा गोविन्दके यहां जायेंगे? गङ्गा गोविन्दको हम कभी असन्तुष्ट

नहीं करेंगे ।" राजा शिवचन्द्रने देखा कि उनके न जानेसे उनके पिता रुग्णावस्थामें ही गंगागोविन्दके घर जायेंगे इस लिए उन्होंने गङ्गा गोविन्दसिंहके यहां जाना स्वीकार किया। राजा कृष्णचन्द्र प्रायः रुग्णावस्थामें हीं अपने दिन विताते थे। इसीसे वे गङ्गा गोविन्दके पत्रमें लिखते थे—

"दुर्वार असाध्य पुत्र अवाध्य ।
केवल भरोसा गङ्गा गोविन्द ॥"

गङ्गा गोविन्दके मातृश्राद्धके पहिले ही दिन राजा शिवचन्द्र काँदी आ पहुँचे। गङ्गा गोविन्द उनको अत्यन्त आदरके साथ लेकर श्राद्धके तमाम आयोजनोंको दिखाने लगे।

शिवचन्द्र अपने साथ हज़ार आदमियोंको लेकर वहां गये थे। उन्होंने सोचा था कि अधिक आदमियोंको साथ ले जानेसे, गङ्गा गोविन्द उनके भोजनके लायक सामान देनेमें असमर्थ होंगे, इससे वे अनायास ही गङ्गा गोविन्दको अपमानित कर लौट सकेंगे। शिवचन्द्रके वहां पहुँचनेपर गङ्गा गोविन्दने पाँच हज़ार आदमियोंके लायक खाने-पीनेकी चीज़ें उनके रहनेके मकानपर भेज दीं। शिवचन्द्रने उसी समय तमाम चीज़ोंको कङ्गालोंको बांट दिया। गङ्गा गोविन्दने फिर पाँचहज़ार आदमियोंके खाने-पीनेकी चीज़ें उनके पास भेज दीं। शिवचन्द्रने उसको भी उसी समय कंगालोंको बाँट दिया। शिवचन्द्रकी इच्छा गङ्गा गोविन्दको अपमानित करने की थी। किन्तु गङ्गा गोविन्दसिंहने इतनी अधिक सामग्री इकट्ठा की थी, कि उन्होने क्रमशः पांच बार शिवचन्द्रके घर इसी प्रकारसे खाने-पीनेकी चीज़ें भेजीं। आखिरकार शिवचन्द्रने अवाक् होकर गंगा गोविन्दसे कहा—भाई यह तो तुम्हारा दत्त-यज्ञका आयोजन है, तुम कुबेरका भाण्डार खोल बैठे हो।

गंगागोविन्दने मुस्कराकर कहा—जी हां, दक्ष-यज्ञसे भी अधिक है।

शिवचन्द्र इन बातोंको सुनकर मनहीं मन जल गये। उन्होंने सोचा था कि उनकी बातोंपर गंगागोविन्द नम्रभाव अवलम्बन कर अपनेको झुकावेंगे, किन्तु गंगागोविन्दने उसके बदले विशेष स्पर्धा दिखलाकर कहा कि दक्ष-यज्ञसे भी अधिक है।

गंगागोविन्दकी इस प्रकारकी स्पर्द्धा देखकर शिवचन्द्र मुँह फुला बैठे ।

गंगागोविन्दने उनके मनोभावको समझकर कहा—क्यों महाराज, दक्षयज्ञसे क्या अधिक नहीं है? दक्षयज्ञमें शिवजीका आगमन नहीं हुआ था; किन्तु हमारे मकानपर स्वयं शिवचन्द्र उपस्थित हैं।

खुशामदसे सभी खुश होते हैं। शिवचन्द्र इस बातको सुनकर अत्यन्त सन्तुष्ट हुए। उन्होंने घरसे चलती समय सोच लिया था कि वे स्वयं गंगागोविन्दके यहाँ पानी तक नहीं पीयेंगे; किन्तु अन्तमें उन्होंने श्राद्धके उपलक्षमें गंगागोविन्दके घर भोजन कर ही लिया।

आये हुए राजा और ज़मींदारोंका यथोचित स्वागतकर रातके समय गंगागोविन्दने सोनेके लिये शयनागारमें प्रवेश किया। देशके चिरप्रचलित प्रथाके अनुसार मातृ-वियोगके बाद एक महीने तक कोई भी अपनी पत्नीके साथ नहीं सोता, किन्तु गहरी रातको गंगागोविन्द प्रायः निद्रितावस्थामें चीत्कार किया करते थे। इसलिए उनकी सहधर्म्मिणीको इस अवस्थामें भी गंगागोविन्दके शयनागारके नज़दीक कमरेमें रहना पड़ता था। गंगागोविन्दके चीत्कार करनेपर वे

उनके सोनेके कमरेमें जाकर पतिके मस्तकपर पानी छोड़ती और हवा करती थीं। पतिके इस स्वप्नका वृत्तान्त वे किसी-को भी न बतलाती थीं।

गंगागोविन्दने विश्राम करनेके लिए शयनागारमें प्रवेश किया। किन्तु सुनिद्रासे भूषित विश्राम उनके भाग्यमें नहीं था। निद्राका आवेश होतेही उन्होंने दूसरे दिनोंकी तरह आज भी स्वप्नमें देखा कि, छुरी हाथमें लेकर कमलादेवी, अपने दोनों बच्चोंको गोदमें लिये हुए, उनकी ओर दौड़ी आ रही हैं। मरे हुए बच्चोंको उनके मस्तकपर पटक रही हैं, और पीछेसे कमलादेवीके पति जगन्नाथ भट्टाचार्य्य अपने यज्ञो-पवीत द्वारा उनके गलेको कस रहे हैं।

इसके पहले गंगागोविन्दकी सहधर्म्मिणीने एक दिन अपने स्वामीसे कह रक्खा था, कि फिर जब कभी कमलादेवी-को स्वप्नमें देखिए, उसी समय स्वप्नावेशमें ही उनके पैरोंपर अपना सिर नवाकर कहियेगा "मा! मुझे क्षमा कीजिए, इस ब्रह्म-हत्याके पापसे मेरा उद्धार कीजिए।"

अपनी सहधर्म्मिणीका यह उपदेश आज निद्रितावस्थामें उनको स्मरण आया। कमलादेवीके पैरोंपर अपना सिर झुकाकर उन्होंने कहा—मा! आप परम साध्वी हैं। मुझे क्षमा कीजिए। इस ब्रह्म-हत्याके पापसे मेरा उद्धार कीजिए।

परन्तु स्वप्नावस्थामें गंगागोविन्दके इस बातके कहते ही, कैसी भयानक अवस्था उपस्थित हुई! वे निद्रितावस्थामें देखने लगे कि सैकड़ों ब्राह्मण, सहस्रों किसान दौड़ते हुए उनकी ओर आ रहे हैं। वे लोग सभी कहने लगे "राजस्वकी वृद्धि कराकर हेस्टिंग्ज़की प्रसन्नता लाभ करनेके लिए तूने हम लोगोंको स्वत्वसे वञ्चित किया है। हमलोगोंका तमाम

ब्रह्मस्व, हम लोगोंकी तमाम ज़मींदारी तूने नष्टकी है। तेरे ही अत्याचारोंके कारण हमलोग सवंश नष्ट होकर पृथ्वीको छोड़कर चले गये हैं। अनाहारसे हम लोगोंके शिशु, सन्तान मर गये हैं। तू आज बारह वर्षोंसे अत्याचार कर रहा है। इसका प्रतिफल तुझको अभी दूँगा।"

इन सब ब्राह्मणोंके बीच चार-पाँचके गलेमें दीर्घ रस्सी लटक रही थी। मालूम होता है इन लोगोंने अपने स्वत्वसे वञ्चित् होनेपर, अपनी सन्तानके दुःखों और कष्टोंको सहन न कर सकनेके कारण, फाँसी लगाकर प्राण त्याग किये थे। इनमेंसे कोई तो गंगागोविन्दकी छातीपर चढ़ बैठा, किसीने मुँहको दबाकर पकड़ा। गंगागोविन्द एकबारगी आफ़तमें आन पड़े। आज उनको चीत्कार करनेकी भी क्षमता नहीं रही। छाती और गलेको पत्थरसे दबा देनेपर जिस प्रकारकी अवस्था होती है, आज गंगागोविन्दकी भी दशा वैसी ही थी।

थोड़ी देरके बाद वे देखने लगे कि सामने एक रक्तकी नदी बह रही है। सैकड़ों मृत शरीर उस नदीके बीच बह रहे हैं। उन सब मरे हुए लाशोंमें से दुर्गन्ध निकल रही है। सामनेके ब्राह्मण और कृषक लोग गंगागोविन्दको उसी नदीके बीच फेकनेके लिए उनके हाथ और पाँव बाँध रहे हैं। हाथ और पैर बाँधनेके बाद वे लोग उनकी छाती और गलेको पकड़कर उनको नदीमें फेकनेकी तैयारी करने लगे, इतनेमें वे जोरोंसे चिल्ला उठे।

आजके चीत्कारके शब्दसे उनकी सहधर्म्मिणीके अलावा गृहके और-और लोग भी जाग पड़े और शीघ्रतासे उनके-सोनेके कमरेमें घुस गये। सभी लोगोंने देखा कि वे बिछौने-

पर बैठे हुए काँप रहे हैं।

दूसरे लोग उनके इस स्वप्नके विवरणको न जान सकें, इसी अभिप्रायसे उनकी सहधर्म्मिणीने घरके दूसरे-दूसरे लोगोंको विदा किया और आप ठीक दमयन्तीकी तरह अपने स्वामीके मस्तकको गोदमें लेकर पानी छोड़ने और हवा करने लगीं।

थोड़ी देरके बाद गंगागोविन्दने स्वस्थ होकर अपनी स्त्री-से कहा—प्रिये! मैंने तुम्हारे उस उपदेशके अनुसार आज स्वप्नावस्थामें कमलादेवीको सम्बोधन कर कहा था "मा! मुझे क्षमा करो! इतना कहतेही कमलादेवी तो अदृश्य हो गयीं, किन्तु उसी क्षण सैकड़ों ब्राह्मण और सहस्रों किसान मेरी तरफ दौड़ते हुए आकर और मुझे बाँधकर सामनेकी रक्तमयी नदीमें फेकनेके लिए तैयार हुए। वे लोग जब मेरी छातीपर चढ़ बैठे थे, उस समय आवाज़ बन्द हो गयी थी।

गंगागोविन्दके इतना कहनेपर उनकी स्त्री कुछ देरके लिए मौन रह चिन्ता करने लगीं। किन्तु कितना आश्चर्य्य है! साध्वी रमणियाँ किसी तरहकी पुस्तकका पाठ अथवा किसी तरहके शास्त्रका अध्ययन न करनेपर भी, केवल स्वाभाविक बुद्धिसे धर्म्मके गूढ़ तत्वोंके सम्बन्धमें अनेक तरहके उचित अनुमान करनेमें समर्थ होती हैं। गंगागोविन्दकी स्त्री अत्यन्त पुण्यवती थीं। मालूम होता है इन्हींके पुण्योंके कारण बाद-में लाला बाबूकी तरह परम धार्म्मिक महात्माने इस परिवारमें जन्म लिया था।

पुण्यवती साध्वी अपने स्वामीके स्वप्नका विवरण सुनकर कहने लगीं "नाथ! मुझे मालूम होता है कि कमला देवीके निकट क्षमाकी प्रार्थना करते ही भगवान तुम्हारे प्रति सन्तुष्ट

होकर, तुम्हारे अन्याय-पथों और कुकर्मों की तरफ़ तुम्हारा दृष्टि फेर रहे हैं। किसी एक कुकर्मके प्रति दृष्टि पड़नेसे ही क्रमशः अन्यान्य कुकर्मों के प्रति भी दृष्टि जाती है। इन सब लोगोंसे भी तुम क्षमा माँगो और तुम्हारे द्वारा जिनलोगोंका अनिष्ट हुआ हो उनलोगोंके उपकार करनेकी चेष्टा करो। परमेश्वर अवश्यही तुम्हारे प्रति सदय होकर इस दुष्कृतिसे रक्षा करेंगे।

गंगागोविन्द्ने कहा—प्रिये! मुझे बड़ा डर लगता है। मैं अब क्षमाकी प्रार्थना नहीं करूँगा। एक आदमीसे क्षमाकी प्रार्थना करते ही, आज हज़ारों आदमियोंने गला दबाया है। फिर इन हज़ार आदमियोंसे क्षमाकी प्रार्थना करनेपर, लाखों आदमी आकर मेरे प्राणोंका संहार ही कर डालेंगे। जैसा स्वप्न देखा है, उससे शरीर काँप रहा है। इन सब कथाओंको विस्मृतिके सागरमें बिना डुबाये अब मेरे लिए सुख-शान्ति नहीं है।

इन सब बातोंके बाद गंगागोविन्द पुनः निद्राके लिए अपनी पत्नीकी गोदमें मस्तक रखकर सो गये। किन्तु निन्द्राका आवेश होते ही कोई भयानक दृश्य फिर देखने लगे। वह पहलेवाली रक्तकी नदी इस बार सागर हो गयी। इस सागरका कोई ओर-छोर न था। उसी अकूल रक्त-सागरके बगलमें वे खुद सोये हुए हैं। बड़ी दूरसे एक औरत दौड़ी हुई उनके नज़दीक आ रही है। औरतके पीछे-पीछे सहस्रों आदमी हाथोंमें लाठी वगैरह विविध प्रकारके अस्त्र-शस्त्र लिये हुए दौड़ रहे हैं। उस औरतके पास आनेपर उन्होंने देखा कि यह उनकी माता हैं। वे स्वप्नावस्थामें उठकर बैठ गये। उनकी मा बोलीं "बेटा, मेरी रक्षाकर-मेरी रक्षाकर। यह

देख, सैकड़ों आदमी मेरे पीछे दौड़े आ रहे हैं।" इतनेमें पीछेके सब लोग उनके नजदीक आ ही गये। उस समय उनकी माता उनके गोद और वक्षस्थलमें छिपनेकी कोशिश करने लगीं।

जनतामेंसे कोई श्रीहट्टकी भाषामें, कोई दिनाजपुरकी भाषामें गालियाँ देने लगे। इन लोगोंमेंसे एक वृद्धा एक ग्यारह वर्षकी बालिकाके पीछे छड़ीका सिरा पकड़े हुए आ रही थी, जैसे बालिका अन्धीको साथ लेकर भिक्षा माँगने जा रही हो। किन्तु बालिका गंगागोविन्दके निकट पहुँचते ही घायल व्याघ्रीकी तरह दाँत पीसती हुई हाथकी छड़ीसे उनके पीठपर मारने लगी और पीछेसे वृद्धाने 'भूखसे मेरी जान जाती है' कहकर उनके मस्तकको दाँतोंसे पकड़ लिया।

इसके बाद हाड़ मांससे जटित बहुत दुबला-पतला एक लम्बा आदमी गँजेड़ीकी तरह खों-खों करके खाँसता हुआ उनके समीप आया। उनके हाथोंको पकड़ कर खींचता हुआ शोणित-सागरके किनारेपर ले गया। समुद्रके बीच बालकका एक मृत देह तैरता हुआ दिखायी दिया। गँजेड़ीके-उस लाशको समुद्रसे निकाल कर, उनकी ओर फेकते ही वे चौंक पड़े।

थोड़ी देरके बाद उन्होंने फिर देखा कि भीड़मेंसे चार-पाँच आदमी दौड़ते हुए आकर उनकी माताको उसी शोणित-सागरमें फेकनेकी तैयारी कर रहे हैं। वे उसी समय मा! मा!! कहकर चिल्लाते हुए एक दम खड़े हो गये।

"फिर क्या हुआ—फिर क्या हुआ" कहकर उनकी सहधर्म्मिणी भी घबराकर उनके साथ-साथ खड़ी हो गयीं और उनके मस्तकपर पानी छोड़ने लगीं।

रातको दो बजेके समय इस प्रकार गंगागोविन्दकी निद्रा भंग हुई, वे जाग पड़े। डरके मारे फिर सोनेकी चेष्टा उन्होंने नहीं की। वे बैठे-बैठे अपने स्वप्नके विषयमें सोचने लगे। संसारमें इस पद और प्रभुताकी असारता उन्हें मालूम होने लगी, किन्तु रात बीतते ही संसारके कोलाहलमें वे सब भूल गये और विस्मृतिके सागरमें रातकी सब यन्त्रणाएँ उन्होंने डुबा दी।

बाईसवाँ परिच्छेद

यह तो नदीका पानी नदीमें ही छोड रहे हो!

आज गंगागोविन्दके माताका श्राद्ध है। रात बीतते ही उनके भद्रासनसे तीन कोस तक आदमियोंसे भर गया। निमंत्रित ब्राह्मणों, पंडितों और दूसरे-दूसरे सम्भ्रान्त लोगोंके लिए पहलेसे ही निर्दिष्ट किये हुए गृहोंमें खाने-पीनेकी चीज़ें अधिक परिमाणमें भेजी गयी थीं।

सैकड़ों भिक्षार्थी ब्राह्मण दानकी आशासे एक स्वतन्त्र गृहमें आकर बैठ गये। निमन्त्रित शास्त्रज्ञ ब्राह्मण पंडित-लोग अपने रहनेके निर्दिष्ट कमरोंमें बैठकर दूर देशोंसे आये हुए पंडितोंके साथ शास्त्रालोप करने लगे। वे लोग निमंत्रित होकर आये थे। इसलिए इन लोगोंको भिक्षाजीवियोंके समान साधारण दान-गृहमें जाकर माँगनेकी आवश्यकता नहीं थी।

छद्मवेशी रामकृष्ण अधिकारी भिक्षाजीवी लोगोंके साथ साधारण दान-गृहमें बैठकर इन्तजार कर रहे हैं। थोड़ी देरके बाद गंगागोविन्दके कर्म्मचारी लोग भिक्षाजीवियोंको

विदा करनेके लिए चाँदीके सिक्कोंका ढेर लेकर आये। किसीके हाथ चार रुपये, किसीके हाथ पांच रुपये, देने लगे। भिक्षाजीवियोंमें तो कोई-कोई चाँदीके सिक्कोंको पातेही सन्तुष्ट होकर चले गये, किन्तु कोई-कोई और थोड़ा मिलने-की आशासे इन्तज़ार करने लगे। रामकृष्ण अधिकारीने रुपया लेना स्वीकार नहीं किया और बोले "स्वयं देनेवालेके सिवा दूसरेके हाथोंसे दान ग्रहण नहीं करूँगा।"

गंगागोविन्द आज स्थिर होकर बैठ नहीं सकते थे। वे कभी यहां, कभी वहां, कभी ब्राह्मण पंडितोंके ठहरनेकी जगह जाकर तमाम बिषयोंको देख-रेख कर रहे थे।

साधारण दान-गृहमें भिक्षाजीवी ब्राह्मणलोग शोरगुल मचा रहे थे। शोरगुल सुनकर वे उसी तरफ़को चले। जिन लोगोंने पहले ही चार-पांच रुपये पा लिये थे, उनमें से कोई-कोई कुछ और मांग रहे थे। गंगागोविन्दने वहाँ आकर उन लोगोंको एक-एक रुपया और देनेके लिए कहा। सभी लोग 'महाराजकी जय हो' कहकर आशीर्वाद देने लगे।

रामकृष्ण अधिकारीने बादको गंगागोविन्दके सम्मुख आकर कहा—माहाराज मैं रुपयोंका प्रार्थी नहीं हूँ। गत पौष मासमें रंगपुरके कई-एक लोग कैद किये गये हैं, उन लोगोंकी कारामुक्तिकी प्रार्थना कर रहा हूँ।

इस ब्राह्मण-कुमारकी बातोंको सुनते ही गंगागोविन्दकी आई-बाई पच गयी। उन्होंने अपने किसी अभिप्रायके साधनके लिए उन लोगोंको अपने चक्रमें डालकर जेलखानेमें रख छोड़ा था। देवीसिंह, गुडलैंड साहब और हेस्टिंग्ज़के सिवा इस चक्रके विषयमें दूसरा कोई कुछ नहीं जानता था। ब्राह्मण-कुमारकी प्रार्थनाको सुनकर उन्होंने कहा—महाशय!

किसी कैदी को कारामुक्त करनेका अधिकर मुझे नहीं है। तुम रुपया पैसा जो कुछ चाहो, वह तुम्हें अभी मिल सकता है।

रामकृष्णने कहा—मुझे रुपये-पैसोंकी ज़रूरत नहीं है। रंगपुरके उन्हीं पंद्रह (vide note (17) in the appendix) आदमियोंको कारामुक्त कर दीजिए। उन लोगोंकी कारा-मुक्ति ही आपके निकट मेरी एक मात्र भिक्षा है।

गंगागोविन्द—मैं किसीको कारामुक्त करनेमें असमर्थ हूँ।

रामकृष्ण—आप अपने भरसक आज सभीकी प्रार्थना पूरी करेंगे, ऐसी प्रतिज्ञा आपने की है; आप समर्थ होते हुए भी मेरी प्रार्थनाकी पूर्ति न करनेका यह बहाना कर रहे हैं।

गंगागोविन्द-तुम्हारी इस प्रार्थनाको पूर्ण करनेकी क्षमता मुझमें नहीं है। तुम जितना रुपया चाहो, तुम्हें दिला सकता हूँ।

रामकृष्ण—जी, आप रुपयोंका दान कर पानीमें पानी बढ़ा रहे हैं। नदीका पानी नदीमें डालनेसे कोई उपकार नहीं होता।

गंगागोविन्द—पानीमें पानी डाल रहे हैं! इससे क्या मतलब ?

रामकृष्ण—जी, देशके लोगोंका धन-दौलत अपहरणकर उसका थोड़ासा अंश आज फिर कई आदमियोंको दे रहे हैं। अर्थात् नदीका पानी उठाकर फिर नदीमें डाल रहे हैं।

रामकृष्णकी यह बात सुनते ही कल रातका स्वप्न-वृत्तान्त गंगागोविन्दको याद आ गया। थोड़ी देरके लिए वे चुप रहे।

रामकृष्णने फिर कहा—यह नदीका पानी नदीमें डालनेसे तुम्हारी माताको स्वर्गवास कभी नहीं होगा। यदि अपनी माताको स्वर्ग भेजना चाहते हो, तो निरपराधियोंको अभी कारामुक्त करो।

गङ्गागोविन्दका इस प्रकार तिरस्कार करनेका साहस आज तक किसीको नहीं हुआ था। तीन-चार आदमी रामकृष्ण-को भगा देनेके लिए आये। गङ्गागोविन्दने उन लोगोंको मना कर कहा-आज अभ्यागतोंमें से किसीको कर्कश वाणी मत कहो, या किसीको घरसे बाहर मत निकालो।

यह कहकर वे तुरत दूसरी ओर चले गये। छद्मवेशी रामकृष्ण अत्यन्त निराश हो गये। उन्होंने मन ही मन आशा-की थी कि, मातृ-श्राद्धके दिन गङ्गागोविन्द अवश्यही उनकी प्रार्थना पूरी करेंगे, किन्तु उनकी आशा विफल हुई। केवल रास्ता नापनेमें उनका समय व्यर्थ नष्ट हुआ।

अन्तमें वे निराश होकर कलकत्तेकी ओर चले। उस समय सुप्रीम कोर्टमें दर्ख्वास्त देनेके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं था। किन्तु सुप्रीम कोर्टमें दर्ख्वास्त देनेके लिए अधिक व्ययकी आवश्यकता थी और फिर दरख्वास्त देनेपर भी डेढ़ दो महीनेसे कममें उनके छुटकारा पानेकी आशा न थी। रङ्गपुरके तमाम लोग प्रेमानन्दकी प्रतीक्षा कर रहे थे। क्या करेंगे, कुछ स्थिर न कर सके।

मातृ-श्राद्धके दोही तीन दिनोंके बाद गंगागोविन्द कलकत्ते लौटकर आये। भिन्न जिलोंके कलेक्टरके दीवानोंको, उनकी भेजी हुई चीज़ोंके दामका हिसाब भेजनेके लिए लिखा। किन्तु उन लोगोंने लिख भेजा कि, बहुत थोड़े दामोंमें थोड़ीसी चीज़ें-भेजी गयी थीं। प्रजा और ज़मीदारोंमें से बहुतोंने इच्छा-पूर्वक दीवान बहादुरके मातृ-श्राद्धके उपलक्षमें इन सब चीज़ों-को दिया है। वे लोग कोई भी मूल्य लेना स्वीकार नहीं करते।

किसी-किसी कलेक्टरके दीवानने लिखा कि दीवान बहा-दुरके पत्रको पाकर मैं अत्यन्त लज्जित हुआ। श्राद्धके थोड़े ही

दिन बाकी रहते, हम लोगोंको खबर मिली थी, इससे इस जिले-
की तमाम सामग्री इकट्ठी करनेके लिए समय नहीं था। जो
कुछ थोड़ा सा फल-फूल भेजा गया था वह मेरे बगीचेका था।

प्रत्येक ज़िलेमें से प्रायः पचास-साठ हज़ारकी चीज़ें भेजी
गयी थीं। उन सब चीज़ोंको संग्रह करनेके समय उसका
चौथाई हिस्सा बर्कन्दाज़ोंने रख लिया था। कुछ अंश दीवानों-
के घर भी गया था। तिसपर भी दीवान साहब लोगोंमें से
बहुतोंने कहा कि यह उन्हीं लोगोंके बगीचोंका फल-फूल
भेजा गया है।

तेईसवाँ परिच्छेद

कारामुक्त

It was in a struggle to make him (Ganga Govind) do his duty, that, we fell under a charge of neglect of duty and disobedience of order. We were therefore divested of our trust:—Evidence of Mr. Peter Moore in the trial of Hastings.

सत्यवती छद्मवेशमें पुनर्वार कलकत्ते लौटकर अपने स्वामी-
के उद्धारका उपाय ढूँढने लगीं। उनको सर्दी, गर्मी और
बर्सात् किसीका भी ध्यान नहीं है। स्वामीके उद्धारकी चिन्ता-
ने ही उनके हृदय और मनपर अधिकार कर लिया है। दिन-
को पेड़ तले बैठना, रातको पेड़ तले सोना—आहार निद्रा प्रायः
सभीका परित्याग किया। जिस जीर्ण वस्त्र द्वारा दिनको लज्जा
निवारण करती थीं, उसी वस्त्रके अञ्चलको रातके वक्त पेड़
तले बिछाकर सोती थीं। इतना होनेपर भी उनके शरीरमें

किसी प्रकारका रोग प्रवेश न कर पाया। जिस समय नाना प्रकारके ऐश्वर्य-सुखमें पड़ी हुई ससुरालके दुमन्जिलेपर सोती थीं, उस समय एक दिन भी रातको घरका दर्वाज़ा खुला रहनेसे ठंढ लग जाती थीः किन्तु आज बारह दिनोंसे वृक्षोंके नीचे सो रही हैं, पर किसी रोगने उनको नहीं सताया। विपद्-धर्म्म उनके शरीरकी रोगके आक्रमणसे रक्षा कर रहा है। चिन्तानल सर्वदा उनके हृदयमें प्रज्वलित रहती है, इससे उनको शीतका अनुभव नहीं हो रहा है।

माघका महीना समाप्त हो चला है। आज माघकी इक्कीस तारीख है। माघ महीनेकी पहली तारीखको रामानन्द देवीसिंहके आदमियों द्वारा पकड़े गये थे। उसी तारीखसे आज तक बंग-कुलवधू सत्यवती जिन सब कठिनाइयोंका सामना कर रही हैं, उन सबको सोचनेसे आश्चर्य्य होता है। इन इक्कीस दिनोंका कष्ट और यन्त्रणा, इन इक्कीस दिनोंकी परीक्षा, उनके इक्कीस वर्षोंके अनुभवकी सूचना दे रही है।

पाठकोंको स्मरण होगा कि प्रेमानन्द गोस्वामी आज दो-तीन महीने हुए, काशीजीमें लक्ष्मणसे जुदा होकर स्वदेशको आ गये हैं। उन्होंने पहले दिनाजपुर पहुँचतेही देवीसिंहके अत्याचारोंको देखा। बाद दिनाजपुरसे पिता और स्त्रीकी खोजमें रङ्गपुर चले गये। वहाँ उन लोगोंका कोई पता नहीं चला। रङ्गपुरके बहुतसे ज़मींदारोंने अपना घर द्वार छोड़ दिया था, यह देखकर उन्होंने अनुमान किया कि उनके पिता और स्त्री शायद अपने किसी शिष्यकी गृहस्थीके साथ कहीं चले गये हैं।

रङ्गपुरके जनसाधारणके दुःखों और कष्टोंको देखकर वे अत्यन्त दुःखित हुए। प्रजाके अत्याचारोंको रोकनेके लिए

उपदेश देने लगे। इन अत्याचारोंसे पीड़ित प्रजापर सहानुभूति दिखानेवाला कोई भी न था। प्रेमानन्दकी सहानुभूति पाकर, प्रजा और बहुतसे ज़मींदार प्रोत्साहित हुए। बहुतसे लोग जान देकर भी अत्याचारोंको रोकनेके लिए कृतसङ्कल्प हुए। बहुतसे भागे हुए ज़मींदारोंने भी उन लोगोंका साथ देना स्वीकार किया।

देवीसिंह प्रजाकी अभिसन्धि समझ कर डरे। अत्याचारी लोग प्रायः भीरु और कापुरुष हुआ करते हैं। देवीसिंहकी तरह भीरु और कापुरुष बंगालमें कम दिखायी देंगे। उनके मौसेरे भाई गुडूलैंडसाहब भी बड़े संकटमें पड़ गये। अब वे लोग, दो एक ज़मींदारोंको वशमें करनेकी चेष्टा करने लगे। बंग देशमें कापुरुष ज़मींदारोंका अभाव कभी नहीं था। गौर-मोहन चौधरीके नामसे एक ज़मींदार पहले कितनीही बार हरराम, सूर्य्यनारायण और भेकधारीसिंह द्वारा अपमानित हो चुका था। किन्तु इस समय उसने देवीसिंहके अनुग्रहकी आशासे उनका पक्ष अवलम्बनकर प्रेमानन्द और दूसरे-दूसरे कई एक आदमियोंको पकड़कर देवीसिंहके पास भेज दिया। विद्रोह-निवारण करनेके लिए, देवीसिंहने इन लोगोंको एक दम कलकत्तेके जेलमें भेज दिया।

देवीसिंहने जो अत्याचार किया था उसके प्रकट होनेपर क्या गुडूलैंड, क्या गङ्गागोविन्द और क्या वॉरेनहेस्टिंग्ज़ सभीको पदच्युत होना पड़ता। इन सबने उन अत्याचारोंको आश्रय दिया था, इससे अब वे सब अत्याचार किसी तरह प्रकट न हों, इसके लिए सब मिलकर कोशिश करने लगे। गंगा गोविन्दने चक्र रचकर देवीसिंह द्वारा भेजे हुए इन आदमियों-को जेलमें कैद करा लिया। आज प्रेमानन्द प्रायः बीस दिनोंसे

जेलमें हैं। कारामुक्त होनेके लिए वे कोई उपाय न कर सके। उनकी धर्म्मपत्नी भी कलकत्ते आकर उनकी मुक्तिका कोई उपाय स्थिर न कर सकीं।

आज माघकी २१ वीं तारीख है। सत्यवती जगाके साथ कलकत्तेके एक आम रास्तेके किनारे वट-वृक्षकी छायाके नीचे बैठकर सोचने लगीं। मनही मन परमेश्वरसे अपने स्वामीकी मुक्तिके लिए प्रार्थना करने लगीं। सैकड़ों आदमी उस रास्तेसे अपने-अपने दफ्तरोंको जा रहे थे, उनमेंसे एक आदमी कागज़ोंका पुलिन्दा हाथोंमें लिये इस वट-वृक्षकी तरफ़से उत्तरकी ओर जा रहा था। उसकी बेखबरीके कारण हाथमेंके कई कागज़ात सड़कपर गिर पड़े, पर वह अपनी धुनमें चलता ही रहा।

सत्यवतीने उस सज्जनके हाथोंसे कागज़ोंको गिरते हुए देखकर, जगाको उसके पीछे दौड़ाया और कागज़ोंको उसे दे आनेके लिए कहा। जगाने दौड़कर उस आदमीके हाथमें उन सब कागज़ोंको दिया। वह कागज़ोंको पातेही चौंक पड़ा। उसने अपने हाथके कागज़ोंके पुलिन्देको खोलकर देखा कि ये तमाम कागज़ात उसीके हैं, उसके अनजानमें गिर गये हैं। उन कागज़ोंको पाकर वह बड़ा सन्तुष्ट हुआ और जगासे कहा—भाई, तुमने मेरा बड़ा उपकार किया। इन कागज़ोंके खोजानेसे मेरी इतिश्री हो जाती। गंगागोविन्दसिंह मेरा परम शत्रु है। वह अवश्यही मेरे अपकारकी चेष्टा कर बैठता।

इस आदमीका नाम रामचन्द्र सेन है। काउन्सिलके अधिकांश मेम्बरोंने गंगागोविन्दको सन् १७७५ ई०में बर्खास्त किया था और फ़िलिप फ्रान्सिसके अनुरोधसे रामचन्द्रसेन

नायब दीवानके पदपर मुकर्रर किये गये थे। लेकिन हेस्टिंग्ज़ और बारवेलने कर्नल मॉन्सनकी मृत्युके बाद उनको पदच्युत किया और गंगागोविन्दको पुनः उस कामपर नियुक्त किया।

उन्होंने जगासे पूछा—तुम क्या किसी नौकरीकी तालाश-में कलकत्ते आये हो? तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है। अगर तुम्हारी कोई प्रार्थना हो तो मुझसे कह सकते हो।

जगाने कहा—महाशय, मेरे मालिक रामकृष्ण अधिकारी इस पेड़के नीचे बैठे हुए हैं। उन्होंने आपके काग़ज़ोंको रास्तेमें पड़े पाकर, मेरे द्वारा आपके पास भेजा है। उनके किसी आत्मीयको गंगागोविन्दने कैद कर रक्खा है। उनके उद्धारका क्या आप कोई उपाय बतला सकते हैं? हम लोग नौकरीके लिए यहाँ नहीं आये हैं।

तब रामचन्द्रसेन रामकृष्ण अधिकारीके पास आये और उनके तमाम वृत्तान्तको सुनकर कहा—अधिकारी महाशय, आप न डरिए। आपको सुप्रीम कोर्टमें दर्ख्वास्त करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। आपके स्वजनको छुड़ानेका उपाय आज ही मैं कर दूँगा। आप मेरे साथ राजस्व कमेटीके दफ्तरमें चलिए।

रामकृष्ण अधिकारी और जगा रामचन्द्र सेनके साथ राजस्व कमेटीके दफ्तरमें आये। रामचन्द्रने पीटर मूर साहबसे इन लोगोंकी तमाम बातें अच्छी तरह समझाकर कहीं। पीटर मूर साहबने उनकी बातोंको सुनकर गंगा-गोविन्दसे उन कैदियोंको जेलमें रखनेका कारण पूछा।

गंगागोविन्द उन लोगोंको जेलमें रखनेका कोई सन्तोष-जनक उत्तर न दे सके और न उन्होंने यथार्थ कारण ही

बतलाया। तब मूर साहव उनका तिरस्कार करने लगे। और तुरन्त प्रेमानन्द वगैरहको छोड़ देनेका परवाना निकालनेके लिए कहा।

तीसरे पहर गंगागोविन्दने सब बातें वॉरेन हेस्टिंग्ज़से कहीं। हेस्टिंग्ज़ मूर साहबपर बड़े नाराज़ हुए। हेस्टिंग्ज़ने पहलेसे ही ठीक कर लिया था कि राजस्व कमेटीका सब काम गंगागोविन्द ही करेंगे। कमेटीके मेम्बरोंको केवल हस्ताक्षर भर करना रहेगा। मूर साहबने गंगागोविन्दके कामोंमें हस्तक्षेप किया, इस कारण हेस्टिंग्ज़ने पहले उनको ढाका भेजा। बादमें धीरे-धीरे करके उनको सत्तर घाटका पानी पिलाया।

चौबीसवाँ परिच्छेद

स्वामी और स्त्री

प्रेमानन्द गोस्वामी और उनके साथियोंके छोड़नेका परवाना लेकर राजस्व कमेटीका प्यादा जेलकी तरफ़ चला। पुरुष-वेशधारी सत्यवती और जगा भी उसके पीछे-पीछे जेलकी तरफ़ चले। चलते समय सत्यवतीने जगाको अपना असली परिचय प्रेमानन्दको देनेके लिए मना किया।

प्रेमानन्दके कारागारसे बाहर निकलते ही, जगा और सत्यवती उनके पास जाकर खड़ी हुईं। जगाको पहले प्रेमानन्द पहचान न सके, किन्तु उसके आत्म-परिचयके देते ही पहचान लिया और उससे पूछा कि रामानन्द गोस्वामी इस समय कहाँ हैं। जगाने एक-एक कर तमाम बातें उनसे कहीं,

किन्तु सत्यवतीका परिचय उनके आदेशानुसार रामकृष्ण अधिकारीके नामसे ही दिया।

प्रेमानन्दने रामकृष्ण अधिकारीको बिलकुल नहीं पहचाना पर बहुत देर तक उनके मुखकी ओर देखते रहे। मन ही मन सोचने भी लगे कि वे जब इतना कष्ट सहनकर, मेरा उद्धार करनेके लिए यहांतक आये हैं, तब अवश्य ही कोई आत्मीय होंगे।

सत्यवती भी अनिमिष नेत्रोंसे स्वामीके मुखकी ओर देखने लगीं; खराब हालतमें भी स्वामीके मुखको देखतेही उनके हृदयमें कैसे अपार आनन्दका स्रोत बहने लगा, यह वाक्य द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता। पतिपरायणा साध्वी स्त्रियाँ जब कभी अपने पतिके मुखको देखती हैं, तब उनका हृदय आनन्दसे परिपूर्ण हो जाता है।

सत्यवतीने आज बारह वर्षोंके बाद अपने स्वामीका मुख देखा। पूर्व विश्वासके अनुसार, बारह वर्षों से जिस स्वामीकी मृत्यु हुई है, आज उसी मृत स्वामीका दर्शन कर रहीं हैं। आज उनका हृदय जिस तरह आनन्दके हिलोरोंसे उछल रहा है, उसका वर्णन करनेमें भाषा, वाक्य और कल्पना असमर्थ है।

प्रेमानन्द भी थोड़ी देर तक पुरुषवेशधारी सत्यवतीकी ओर देखते रहे। फिर बोले—महाशय अवश्यही आप कोई आत्मीय हैं। बारह वर्षोंसे मेरी किसी आत्मीयसे मुलाक़ात नहीं हुई है, इसीलिए मैं आपको पहचान नहीं सका।

रामकृष्णने कहा—जी, आपके देशसे चले जानेके बाद, आपकी फूफीजी सर्वदा आपके लिए विलाप किया करती थीं। उनके कष्ट-निवारणके लिए मैं, रंगपुर और दिनाजपुरमें, आपके पिताका अनुसन्धान करने लगा। फिलहाल पडुआके जंगलमें आपके पिता और स्त्रीसे मेरी मुलाक़ात हुई। वहाँ

कमलादेवीके नामसे और एक स्त्रीरत्न हैं। उनसे जब सुना कि आप कलकत्तेके कैदखानेमें हैं, तब मैं आपको कारामुक्त करनेके लिए यहाँ आया। जिस कष्टसे आपको छुड़ाया, वह आपने जगाकी मार्फ़त सुन ही लिया है।

प्रेमानन्द—मेरी फूफीजीसे आपका क्या सम्बन्ध है?

रामकृष्ण—जी, वह मेरी सास हैं।

प्रेमानन्द—मेरी फुफेरी बहनसे आपकी शादी हुई है क्या? मेरी कोई फुफेरी बहन है, यह भी मुझे नहीं मालूम। अवश्य मेरे एक फुफेरे भाई थे, बहुत दिन हुए उनकी मृत्यु हो गयी।

रामकृष्ण—आप किस तरह जान सकते हैं? आपके देशसे चले जानेके बाद आपकी फुफेरी बहनने जन्म लिया था। उनकी उम्र ग्यारह वर्षसे अधिक न होगी। गत वर्ष माघके महीनेमें हम लोगोंकी शादी हुई है।

प्रेमानन्द—हां, आप भी १७-१८ वर्षके युवक मालूम होते हैं। किन्तु आपका साहस विलक्षण है। इतने अल्प वयसमें ही आपने परोपकारार्थ इतना कष्ट स्वीकार किया, यह बड़े ही आनन्दका विषय है।

रामकृष्ण—अन्तर्यामी परमेश्वर जानता है कि मैं आपको कभी अपनेसे पृथक नहीं समझता। हाँ, यह ज़रूर है कि मुलाक़ात नहीं है।

प्रेमानन्द—मेरे लिए आपने बड़ा कष्ट उठाया।

रामकृष्ण—जी, माल्दहमें सब लोग परोपकारी कहकर आपकी प्रसंशा करते हैं। यदि आपक समान परोपकारी सम्बन्धीके लिए थोड़ा कष्ट ही उठाया तो क्या हुआ।

जगा उन लोगोंकी बातोंको सुनकर हँसी रोक न सका। जगाको मुस्कुराते हुए देखकर, सत्यवतीने उसको स्थानान्तर

जानेका इशारा किया। किन्तु प्रेमानन्दने यह नहीं देख पाया। जगा वहाँसे चला गया।

प्रेमानन्दने—महाशय मैं आपका सदैव ऋणी रहूँगा। किन्तु मुझे इसी समय रंगपुर जाना होगा। आप माल्दह जाकर मेरे पिता, कमलादेवी और फूफीजीसे मेरे छूटनेका समाचार कह दीजिएगा। मैं रंगपुरके कुल कामोंको समाप्त कर पडुआ में उनलोगोंसे मुलाकात करूँगा।

रामकृष्ण—अपनी स्त्रीसे आपने तो कुछ कहनेके लिए कहा ही नहीं। यदि वे मुझसे आपके विषयमें कुछ पूछें, तो मैं उनसे क्या कहूंगा ?

प्रेमानन्द—मेरे पितासे जो कुछ कहिएगा, उनसे भी वही कह दीजिएगा।

रामकृष्ण—आपकी स्त्री आपको देखनेके लिए बड़ी व्याकुल हैं। एक बार उनसे मुलाकात कर जाइये न ?

प्रेमानन्द—इस समय मैं एक मुहूर्त्तका भी विलम्ब नहीं कर सकता। नहीं तो क्या वृद्ध पिता और कमलादेवी-से मुलाकात न करता ?

रामकृष्ण—मेरे यहाँ आनेके समय आपकी स्त्रीने मुझसे बार-बार आपको संग लेकर पडुआके जंगलमें आनेके लिए कहा था।

प्रेमानन्द—अभी विलकुल समय नहीं है। रंगपुरकी क्या अवस्था हुई है, मुझे कुछ भी नहीं मालूम। जनता मेरे ही परामर्शसे युद्धमें प्रवृत्त हुई है। इस समय प्राण देकर भी मुझे उनलोगोंकी सहायता करनी होगी।

रामकृष्ण-आप माल्दहसे होकर भी रंगपुर जा सकते हैं। इसमें एक दिनसे अधिक विलम्ब नहीं होगा।

प्रेमानन्द—इस समय एक दिनके विलम्बसे भी सर्वनाश हो सकता है।

रामकृष्ण—मुझे क्षमा कीजिए! आप एक विद्वान् आदमी हैं। आपके सामने मैं एक बालक मात्र हूँ। किन्तु मुझे मालूम होता है कि निज स्त्रीके प्रति आपका प्रेम कुछ भी नहीं है। स्त्रीसे प्रेम होता, तो क्या आप उनसे बिना मुलाकात किये चले जाते।

प्रेमानन्द—कर्तव्योंका उल्लंघन कर, स्त्रीके प्रति प्रेम दिखाना. क्या उचित है? प्राणान्त होनेपर भी मनुष्योंको अपने कर्तव्यका उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

रामकृष्ण—जी, स्त्रीके प्रति भी तो कोई कर्तव्य है?

प्रेमानन्द—जरूर है! स्त्रीकी रक्षा करना, उसके भरण-पोषणका भार उठाना और साध्यानुसार उसको सुखी रखनेकी चेष्टा करना, यही मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। प्राणान्त होनेपर भी इन कर्तव्योंका पालन करनेमें मैं त्रुटि नहीं करूँगा। ग्यारह वर्षोंसे जो विदेशमें रहा, वह भी कर्तव्यके अनुरोधसे। जिन्होंने मेरी प्राण-रक्षा की थी, उनके उपकारकी चेष्टा न करनेसे अकृतज्ञ होना पड़ता। इसीसे उनके कामोंके लिए मुझे ग्यारह वर्षों तक विदेशमें रहना पड़ा। विशेषतः यह मैं स्वप्नमें भी नहीं जानता था, कि मेरे पिता और स्त्रीको इस प्रकार इतने संकटमें पड़ना होगा। मेरे विदेश जाते समय वे लोग किसी शिष्यके यहाँ निर्विघ्न रूपसे निवास कर रहे थे।

रामकृष्ण—महाशय मैं बालक हूँ। मुझे क्षमा कीजिए। पहले आपके साथ मेरा कोई सम्बन्ध न रहनेपर भी आप मेरे प्रधान सम्बन्धी हैं। इसीलिए मैं आपसे खुलकर

बातें कर रहा हूँ। यदि स्त्रीके प्रति आपका प्रगाढ़ अनुराग होता, तो आप उनसे बिना मुलाक़ात किये कभी न जाते।

प्रेमानन्द—स्त्रीके प्रति जिस प्रकारकी आसक्ति मनुष्योंको अपने कर्तव्योंके पथसे भ्रष्ट कराती है, भोगासक्त कराती है, स्वार्थी बनाती है, उसका न रहना ही अच्छा है। स्त्री-के प्रति मेरी वैसी आसक्ति नहीं है। मैं स्त्रीके लिए उतना प्रमत्त नहीं हूँ।

रामकृष्ण—किन्तु। जो स्त्री पतिके प्रत्येक कार्य्योंमें सहानुभूति दिखाकर, उसको सर्वदा कर्तव्य-पथकी ओर परिचालित करती है, ऐसी स्त्रीके प्रति प्रगाढ़ आसक्ति रहनेसे कर्तव्य-साधनमें कभी कोई बाधा नहीं पड़ सकती। किसी स्वार्थ परायणा रमणीके प्रति प्रगाढ़ आसक्ति होनेसे मनुष्य क्रमशः कर्तव्य-पथसे भ्रष्ट हो सकता है।

प्रेमानन्द—सहृदय पतिके प्रत्येक कार्य्योंमें सहानुभूति दिखा सकती हो, ऐसी स्त्री इस जगतमें दुर्लभ है। ऐसी सहधर्म्मिणी जिसको भाग्यसे मिली है, उसका प्रगाढ़ अनुराग और दाम्पत्य प्रेम, उसको कर्तव्य-पथसे भ्रष्ट करना तो दूर रहा, वरन उसको कर्तव्य-मार्गमें और भी आगे बढ़ाता है।

रामकृष्ण—अच्छा तो आपके भाग्यसे आपको वैसी स्त्री नहीं मिली, इसीसे आपका प्रेम निज स्त्रीपर नहीं है।

प्रेमानन्द—इन सब विषयोपर बातचीत करनेका यह उपयुक्त समय नहीं है। इन सब बातोंको छोड़िए।

रामकृष्ण—अवश्य ये सब बातें करनेका यह समय नहीं है, किन्तु मैं आपकी स्त्रीका अनुरोध बिलकुल त्याग भी नहीं सकता। उन्होंने बारम्बार मुझसे आपके मनकी अवस्था

जाननेके लिए कहा था। अब आपकी बातचीतसे मुझे स्पष्ट मालूम होता है कि स्त्रीके प्रति आपका प्रेम नहीं है। आपने सोच लिया है कि वे आपके सब कार्यों में सहानुभूति दिखानेमें असमर्थ हैं, इससे आप उनसे प्रेम नहीं करते।

प्रेमानन्द—मेरा उनपर प्रेम है। किन्तु वे सब कार्योंमें मेरे साथ सहानुभूति दिखा नहीं सकतीं। ऐसे तो हमारे देशके पुरुषोंने भी मेरे कार्योंमें सहानुभूति नहीं दिखलायी थी, फिर वह तो औरत है, उनका मैं क्या दोष दे सकता हूँ?

रामकृष्ण—अब यदि आपकी स्त्री आपके सब कार्य्योंमें सहानुभूति दिखावें, तो क्या आप उनसे प्रेम करेंगे?

प्रेमानन्द—इन सब बातोंको अभी छोड़िए। रंगपुरके सोचने मुझे अस्थिर कर दिया है। ये सब बातें अभी अच्छी नहीं लगतीं।

रामकृष्ण—बारह-तेरह वर्ष पहले आपने शायद अपनी स्त्रीसे कहा था, कि यदि वे आपके सब कार्य्यों से सहानुभूति करें, तो वे आपकी एक मात्र आराध्यदेवी हो सकती हैं।

प्रेमानन्द इन बातोंको सुनकर रामकृष्ण अधिकारीके मुँह-की तरफ़ देखने लगे। वे सोच रहे थे, मैंने अपनी स्त्रीसे यह बात माल्दहमें कई बार कही थी, किन्तु इस युवकने इस बात-को कैसे जान लिया?

रामकृष्णने कहा—महाशय आपको आश्चर्य्य क्यों हुआ? आपकी मृत्यु हुई है, कहकर जब आपकी स्त्री आपके लिए विलाप करती थीं, उस समय ये सब बातें उनके मुखसे निकलती थीं।

प्रेमानन्दने सोचा यह झूठी बात नहीं है। उसके शोकसे विह्वल होकर विलाप और परिताप करनेके समय

शायद ये सब बातें स्त्रीके मुखसे निकल गयी हों। उन्होंने रामकृष्णको सम्बोधन करके कहा—महाशय, मैं आपसे बराबर अनुरोध कर रहा हूं कि ये सब बातें अभी छोड़ दीजिए। मैं रंगपुरकी चिन्तासे अस्थिर हो रहा हूँ। मैं इस समय आपसे विदा होना चाहता हूँ। आपने जो मेरे साथ उपकार किया है, उससे इस प्रकार आपसे विदा होना अकृतज्ञता-सूचक अवश्य है; किन्तु कर्तव्यके अनुरोधसे आज मुझे आपके निकट अकृतज्ञ होना पड़ा।

रामकृष्णने इतना सुनते ही प्रेमानन्दका हाथ पकड़कर कहा—मुझको क्षमा कीजिए! इन बारह वर्षोंके बाद आपके समान सम्बन्धीको पाकर इतनी जल्दी छोड़ नहीं सकता। निश्चय यदि आप अभी रंगपुर जाना चाहते हैं, तो मैं दो-एक दिन आपके साथ ही चलूँगा। आपके साथ रंगपुर तक जाता, किन्तु आपके पिता बहुत बीमार हैं, शीघ्र आपको भी पडुआ आना होगा।

प्रेमानन्द सोचने लगे कि मैं बड़े संकटमें पड़ गया। यदि इसको संगमें लेकर रंगपुर जाता हूँ। तो रास्तेभर यह केवल स्त्रीकी चर्चा कर दिक करता रहेगा। युवकको इन्हीं सब बातोंमें आनन्द आता है, और फिर मैं इसका साला हूँ, इसलिए यह और भी मूर्खता कर रहा है। प्रकटमें उन्होंने कहा—आप यदि पडुआ जाकर इस संकटके समय मेरे वृद्ध पिताकी सेवा-शुश्रूषा करें, तो बड़ा उपकार हो। आपकी उम्र अभी बहुत कम है। रंगपुरमें युद्ध होनेवाला है, वहाँ आपका जाना उचित नहीं है।

रामकृष्ण—रंगपुरके युद्धमें मेरा जाना उचित नहीं है, यह क्यों? आप तो जा रहे हैं!

प्रेमानन्द—मैं मरनेसे नहीं डरता। अभी आपकी उम्र थोड़ी है। आप व्यर्थमें क्यों अनर्थक वहां जाकर विपद्में पड़ना चाहते हैं ?

रामकृष्ण—मैं भी आपके साथ प्राण विसर्जित करनेके लिए तैयार हूँ। ऐसे सम्बन्धीके साथ प्राण देनेमें चिन्ता ही किस बातकी ? मृत्युके बाद साथ ही स्वर्गमें चलकर गपाष्टक करेंगे।

प्रेमानन्दने अपने दिलमें सोचा कि यह बड़ा नासमझ है। इसको जिस प्रकार हो सके, यहींसे विदा करना होगा। यह स्थिर कर वे जगाको बुलाने लगे। उन्होंने सोचा था कि जगाको शीघ्र पडुआ जानेके लिए कहनेपर, यह नासमझ लड़का बाध्य होकर जगाके साथ पडुआ चला जायगा।

किन्तु सत्यवतीने प्रेमानन्दके मनोगत भावोंको समझकर कहा—आप यदि निश्चयतः मुझसे विदा होना चाहते है, तो मेरी एक बात कानमें सुनकर, चले जाइए। आपकी स्त्रीने आपसे उसे कह देनेके लिए बड़ा अनुरोध किया है।

इसके बाद उनके कानके पास अपना मुँह ले जाकर धीरेसे दो-एक बात कहते ही, प्रेमानन्द चौंक पड़े और रामकृष्ण अधिकारीके मुँहकी ओर देखने लगे, पर कुछ स्थिर न कर सके।

तब पुरुष-वेशधारी सत्यवती अपने पतिके गलेसे लिपट कर रोती हुई कहने लगीं—नाथ, पहले अज्ञानताके वश हो समय-समयपर मैं आपके शुभ अनुष्ठानोंमें बाधक हुआ करती थी, आपका तिरस्कार भी कभी-कभी किया करती थी, किन्तु विपद्में पड़कर मैं समझ गयी कि आप सत्यही देवता हैं। अबसे छायाकी तरह मैं पीछे-पीछे रहूँगी।

आपके सब सत्अनुष्ठानोंमें सहायता करूँगी। आपके सब कामोंसे सहानुभूति रखूँगी। इस चिर-अपराधिनीके पुराने अपराधोको क्षमा करें।

स्त्रीको ऐसी अवस्थामें देखकर प्रेमानन्दकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। प्रायः आधे घन्टेतक सत्यवती अपने पतिके गलेसे लिपट कर खड़ी रहीं। दोनों ही चुप थे। थोड़ी देरके बाद जगाके इन लोगोंके पास आनेपर प्रेमानन्दने सत्यवतीसे कहा—तुमको पडुआके जंगलमें रखकर, मुझे रंगपुर जाना होगा। किन्तु यहांसे पैदल चलना पड़ेगा, मुझे डर है, कि तुम उतनी जल्दी शायद ही चल सको!

सत्यवतीने कहा-नाथ! इस बातकी आप चिन्ता न करें। विपद्ने शरीरको भी अत्यन्त बलिष्ठ कर दिया है। मैं तीन दिनोंमें यहां आयी थी। पडुआके जंगलसे होकर रंगपुर जानेमें आपको विलम्ब न होगा। रंगपुरके लोगोंने वहां आपके लिए घोड़ा छोड़ रखा है। इससे सब रास्ता पैदल चलनेमें जितना समय लगेगा, उससे थोड़े समयमें ही आप पडुआसे रंगपुर पहुंच जायँगे। आपके पिताकी जो अवस्था है, उससे मालूम होता है, वे अब ज्यादा दिन नहीं जीयेंगे। उनके साथ इस समय मुलाक़ात न करनेसे, शायद ही फिर मुलाक़ात हो।

इसके बाद प्रेमानन्द, अपने चौदह साथियोंके साथ सत्यवती और जागाको लेकर माल्दहकी तरफ़ चले। ये लोग दो दिनोंमें पडुआके जंगलमें जा पहुँचे।

पचीसवाँ परिच्छेद

अन्तिम समय की चिन्ता

सत्यवतीके कलकत्ते चली जानेके बाद कमलादेवी और रूपाने वृद्ध रामानन्द गोस्वामीकी सेवा अच्छी तरह की। रामानन्द गोस्वामीकी आयु शेष हो चली थी। उस दिन देवीसिंहके बर्कन्दाजोंके प्रहारसे उनका काम तमाम हो ही चुका था, किन्तु शरीरका दंडभोग होनेके कारण वे आजतक जीवित हैं।

रामानन्द केवल आशामें ही दिन बिता रहे थे, प्रत्येक मुहूर्त-में रूपा और कमलादेवीसे पूछा करते थे "बहू मेरे बच्चेको लेकर आयी, कि नहीं।" पेड़के सूखे पत्तोंकी आवाज़ होतेही वे रूपासे पूछ बैठते थे "देखो बाहर कोई आदमी तो नहीं आया"। रूपा जब बाहरसे लौट आकर कहता था "कोई नहीं" तब वे दीर्घ स्वांस छोड़कर कहते थे "मेरे प्रेमानन्दसे शायद मुलाक़ात न होगी।"

कमलादेवी ढाढ़ँस देती हुई कहती थीं "आप न डरें निश्चय आपसे उनकी मुलाक़ात होगी।"

आज माघकी २४ तारीख़ है। रामानन्दको देवीसिंहके आदमियों द्वारा मार खाये २४ दिन हो गये। कलसे ही इनके जीवनकी आशा बिलकुल नहीं है। रूपा रामानन्दके गाँव, गौड़से जाकर उनके कई हितनातोंको साथ बुला लाया। इनमेंसे कइयोंने रामानन्द गोस्वामीको उनके पैतृक वासस्थान-में भेजनेका प्रस्ताव किया। किन्तु कमलादेवी इससे सहमत नहीं हुईं।

अभी रामानन्द बेसुध नहीं हुए थे। उन्होंने सबसे कहा-

यदि मेरे मरनेसे पूर्व बहू और प्रेमानन्द न आजायँ, तो उनसे कह देना कि मेरा कर्जा लाख कोशिश कर चुका देगें। मेरे मरने बाद, श्राद्धके पहले ही, ऋण अवश्य दे दिया जाय। क्योंकि ऋणके रहते श्राद्धका कोई फल नहीं होता। मेरी झोलीमें एक कागज़ रक्खा है, उसमें जो कुछ लिखा हुआ है, वही मेरी समाधि-स्तम्भपर लिखा जाय।

रामानन्दकी बातें खतम होते ही, कुटियाके बाहर आदमीके पैरोंकी आवाज़ सुनायी दी। रूपाने बाहर आकर देखा कि सत्यवती, प्रेमानन्द, जगा और चौदह आदमियोंको साथ लेकर, कुटियाकी तरफ़ आ रही हैं। वह दौड़कर कुटियाके अन्दर आया और कहने लगा "प्रेमानन्दजी आगये।"

रामानन्द यह सुनकर खुश हुए। अकस्मात् खुशीके कारण वे उत्तेजित हो पड़े। उनमें उठनेकी शक्ति बिलकुल नहीं थी, तिसपर भी वे उठकर बैठनेकी कोशिश करने लगे। रूपाने उनके मनके भावोंको समझकर उन्हें गोदमें उठा लिया। प्रेमानन्द और सत्यवतीके कुटियामें प्रवेश करतेही रामानन्द गोस्वामीने अपने दोनों हाथोंको फैलाकर, पुत्रको गोदमें लेने-का प्रयत्न किया; किन्तु उनका हाथ न उठा। प्रेमानन्द प्रणाम कर उनके चरणोंको अपनी गोदमें लेकर बैठ गये। सत्यवती उनके पीठपर धीरे-धीरे हाथ फेरने लगीं।

इस समय कमरेके सभी लोग चुप थे। किसी-के मुँहमें बात नहीं थी। पिता और पुत्रकी आँखोंमें जल देख-कर सभी आँसू बहाने लगे।

थोड़ी देरके बाद रामानन्द निस्तेज हो पड़े। क्रमशः बेहोशी भी आने लगी। उनकी बोली बन्द हो गयी। तब प्रेमानन्दने उनको रूपाकी गोदसे अपनी गोदमें ले लिया।

सत्यवती अपने आँचलसे हवा करने लगीं। भाग्यसे हवा करनेके लिए कुटियामें पंखा भी नहीं था।

प्रायः आधे घण्टेके बाद रामानन्दको होश आया; पर शरीरमें बिलकुल ताक़त नहीं थी। बड़े कष्टसे उन्होंने टूटी हुई आवाज़में अपने पुत्र और पुत्रवधूसे कहा-बेटा, मैं तो ऋणी होकर चला। ऋणसे मुक्त करनेके लिए क्या करोगे?

सत्यवती—(रोती हुई) मैं अपनेको बेचकर आपका ऋण भरूंगी। मैं रानीभवानीके यहां दासीका काम कर आपको ऋणसे मुक्त करूंगी।

प्रेमानन्दने अपनी स्त्रीसे पूछा-किसका ऋण है?

सत्यवती—अपने जीवनमें इन्होंने केवल एक ही बार ऋण लिया है। दुर्भिक्षके साल जब देवीसिंहने पुर्नियाके ब्रह्मस्व ज़मीनकी मालगुज़ारी तलब की थी, उस समय रानीभवानीसे पचास हज़ार रुपये ऋण लिये गये थे। इसके सिवा और कोई ऋण नहीं है।

रामानन्द अपने ऋणकी कथा कहते ही फिर बेहोश हो गये। तब प्रेमानन्द पिताको होशमें लानेके लिए "पिताजी, पिताजी" कहकर पुकारने लगे; पर कोई उत्तर न मिला।

"पिताजी! आप ऋणके लिए इतने दुःखी क्यों हो रहे हैं? मैं जिस प्रकार हो सकेगा, आपको ऋण-मुक्त करूंगा।"

रामानन्द—(अति क्षीणस्वरसे) किस तरह—क—हाँ—रू—प—या—पा—ओ—गे—

प्रेमानन्द—मैं रङ्गपुरसे लौटकर आपका ऋण भरूंगा।"

रामानन्द—ब—ड़ी—दे—री—हो—गी बा—र—ह—ब—र्ष—का—ऋ—ण—है—

सत्यवती—(रोती हुई) पिताजी, मुझको छोड़कर चले?

आपके स्वर्गारोहणके बाद तुरन्त ही मैं, आपका ऋण चुकानेके लिए, राजशाही चली जाऊँगी। मैं रानीभवानीकी दासी बनकर आपका ऋण चुकाऊँगी।

रामानन्द—ऋणी—को स्वर्ग—नहीं—मि—ल—ता—

प्रेमानन्द—ऋणकी चिन्ता आप न करें। जिस प्रकार भी होगा, उसे चुकाऊँगा।

रामानन्द—व—ह—का—ग—ज़—

प्रेमानन्द और सत्यवतीको रामानन्दकी यह बात समझमें न आयी। तब कमलादेवीने कहा—थोड़ी देर पहले आपने कहा था कि, आपकी झोलीमें कोई काग़ज़ है, और उस काग़ज़में जो कुछ लिखा है वह आपकी समाधि-स्तम्भपर लिखा जाय।

प्राणनगरकी कुटियासे भागती समय सत्यवती रामानन्दकी एक झोली अपने साथ लायी थीं। उस झोलीमेंसे उन्होंने एक टुकड़ा पीले रङ्गके काग़ज़का निकाला। प्रेमानन्दने उस काग़ज़को पढ़कर देखा कि उसमें यह लिखा है—

"पापात्मा दुर्म्मति रामानन्द गोस्वामीने आत्मरक्षाके लिए जिस मार्गका अवलम्बन किया था, वह केवल आत्म-विनाशका मार्ग था। अत्याचारोंसे पीड़ित समाजके लोगोंके, अत्याचारियोंके निष्ठुराचरणोंसे अपनी रक्षा करनेके लिए आत्मोत्सर्ग न करनेसे, इस संसारमें कोई भी आत्मरक्षा नहीं कर सकता। यदि कोई आत्मरक्षा करनेकी चेष्टा करे तो रामानन्दके सुपुत्र प्रेमानन्दकी तरह समाजमें फैले हुए पाप और अत्याचारोंके साथ संग्राम करनेके लिए तैयार हो जाय। दुर्म्मति रामानन्द गोस्वामीका दान, धर्म्म, सदाव्रत और अतिथिशाला कोई भी इन अत्याचारोंकी दावाग्निसे रक्षा नहीं कर सकता। पापात्मा रामानन्दके अन्तिम समयके कष्टोंके इतिहासको

पढ़कर भी यदि तुमलोगोंमें ज्ञानका उदय न हो, तुम्हारी निद्रा भंग न हो, तुम्हारा मोहान्धकार दूर न हो, तो निश्चय तुममें मनुष्यत्व नहीं है। तुम रामानन्दकी तरह भ्रमजालमें पड़ गये हो। अंतमें रामानन्दकी तरह ही कष्ट पाओगे।"

प्रेमानन्दके पत्रको पढ़ते ही सत्यवती रोती हुई कहने लगीं—मेरे श्वशुर पुण्यात्मा हैं, धार्म्मिक हैं। अपने श्वशुरके समाधि-स्तम्भपर कभी पापात्मा, दुर्म्मति शब्द लिखने न दूँगी।

तब प्रेमानन्दने पापात्मा शब्दको काटकर "पुण्यात्मा" और दुर्म्मतिके स्थानपर "सदाचारी" शब्द बैठा दिया।

इसके बाद रामानन्द गोस्वामीकी साँस चलने लगी। उनकी बोली बन्द हो गयी। सत्यवती उनके कानोंके पास अपना मुँह ले जाकर हरि-नाम सुनाने लगीं। पुत्र और पुत्र-वधूके मुँहकी ओर अन्तिम दृष्टि डालकर, परमवैष्णव रामानन्द गोस्वामीने आँखें मूँद लीं। अत्याचारोंसे परिपूर्ण नरक सदृश वंगभूमिका परित्याग कर वैष्णवश्रेष्ठ रामानन्दने स्वर्गारोहण किया।

उनकी मृत्युके बाद प्रेमानन्दने सत्यवतीसे कहा—मैं अभी रंगपुर जाऊँगा, पिताकी अन्त्येष्टि क्रियातक ठहर न सकूंगा। मेरी ही उत्तेजनासे रंगपुरकी तमाम प्रजा संग्राममें कूदपड़ी है। अपनी जान देकर भी उन लोगोंके शुभाशुभका ध्यान रखना मेरा प्रधान कर्त्तव्य है। तुमने बारह वर्षों तक मेरे पिताकी सेवा की है। तुम्हीं धन्य हो! पिताका दाह और श्राद्ध सब तुम्हीं करो। तुम और मैं एकाङ्ग और एक आत्मा हूँ। तुम्हारे श्राद्ध करनेपर भी वे अवश्य मुक्तिपद पावेंगे। मैं अकृतज्ञ सन्तान हूँ। मेरे जीतेजी पिताने इन बारह वर्षोंमें कितने कष्ट सहन किये हैं! यह दुःख मेरे हृदयसे कभी नहीं जायगा। इस समय आत्मीय लोगोंके साथ पिताकी मृत देह-

को लेकर तुम गौड़ चली जाओ। मेरे पैतृक मकानमें मेरी माताके समाधि-स्तम्भकी दक्षिण ओर पिताका समाधि-क्षेत्र बनाना। और वहाँ स्तम्भ गड़वाकर पिताजीके दिये हुए काग़ज़के अनुसार लिखवा देना।

यह कहकर प्रेमानन्द रंगपुरकी ओर चले गये। रामानन्द-की मृत देहके साथ सत्यवती, कमलादेवी, रूपा और जगा गौड़-को चले। रामानन्दके आत्मीय ब्राह्मण उनके शवको अपने कन्धेपर ले चले।

अन्त्येष्टि क्रियाके हो जानेपर सत्यवतीने रामानन्दके समा-धिस्तम्भपर इस प्रकार लिखवा दिया—

समाधिस्तम्भ

पुण्यात्मा सदाचारी रामानन्द गोस्वामीने आत्मरक्षाके लिए जो पथ अवलम्बन किया था, वह केवल आत्म-विनाशका पथ था। समाजके अत्याचार-पीड़ित लोगोंको अत्याचारियों-के निष्ठुर आचरणसे रक्षा करनेके लिए, आत्मोत्सर्ग न करने-से, इस संसारमें कोई भी आत्मरक्षा नहीं कर सकता।

यदि कोई आत्मरक्षाकी इच्छा करे, तो रामानन्दके सुपुत्र प्रेमानन्दकी तरह समाज-व्याप्त पापों और अत्याचारोंके संग संग्राम करनेके लिए तैयार हो। धर्म्मात्मा रामानन्द गो-स्वामीका दान, धर्म्म, सदाव्रत और अतिथिशाला कोई भी उनको वर्त्तमान अत्याचारोंकी दावाग्निसे बचा नहीं सका। परमवैष्णव रामानन्दके अन्तिम कष्टोंका इतिहास पढ़कर भी यदि तुम्हारे ज्ञानका उदय न हो, तुम्हारी निद्रा भंग न हो, तुम्हारा मोहान्धकार दूर न हो, तो तुममें अवश्य ही मनुष्यत्व नहीं है। रामानन्दकी तरह अन्तमें कष्ट पाओगे।

११८९ की २४ वीं माघ (जनवरी सन् १७८३ ईसवी)

सत्यवती द्वारा प्रतिष्ठित

छब्बीसवाँ परिच्छेद

ऋणमुक्त

रामानन्दके समाधि-स्तम्भकी प्रतिष्ठा करनेके बाद सत्यवती श्वशुरके ऋणको चुकानेकी चिन्ता करने लगीं। कमलादेवीके साथ परामर्श करनेके बाद सत्यवतीने स्थिर किया कि, ऋणके बदले वे अपने श्वशुरके मकानका क़िबाला रानीभवानीके नाम कर दें। मकानसे ये लोग अभी बेदखल नहीं हुए थे। किन्तु यदि मकानके मूल्यसे सब ऋण चुकाया न जा सका तो प्रेमानन्दके कर्ज चुकाने तक वे रानीभवानीके घर दासी बनकर रहेंगी।

मन ही मन यह स्थिर कर सत्यवती रूपाको संग लेकर नाटोरकी ओर चलीं। जगा और कमलादेवी उनके लौटने तक माल्दहमें रामानन्दके मकानमें रहने लगीं।

दो ही तीन दिनोंमें सत्यवती नाटोर पहुँचकर रानी भवानीके साथ मुलाक़ात करनेकी चेष्टा करने लगीं। वे केवल एक जीर्ण वस्त्र पहने हुए थीं। कंगालोंकी तरह राजप्रासादके द्वारपर पहुँचनेसे वहाँके दर्बान, मेरे आनेका कोई ख्याल न कर, मुझे भगा दे सकते हैं-इसी आशंकासे उन्होंने राजबाड़ीके समीप किसी औरतके मकानमें आश्रय लिया और उसी औरतके मार्फ़त रानी भवनीके पास खबर भेजी।

रानीभवानी रामानन्द गोस्वामीको अच्छी तरह जानती थीं। रामानन्दपर रानीभवानी विशेष श्रद्धा रखती थीं। रामानन्द गोस्वामीकी पुत्रवधू विपदमें पड़कर उनसे मिलने आयी हैं, यह सुनतेही उन्होंने उसी समय उनको बुलानेके

लिए पालकी और चार दासियोंको भेजा। उनकी दासियाँ सत्यवतीको कङ्कालिनीके वेशमें देखकर आश्चर्य्य करने लगीं।

सत्यवती माल्दहसे पैदल नाटोर आयी थीं। उनको पालकीकी विशेष आवश्यकता नहीं थी; किन्तु रानी असन्तुष्ट न हो जायँ, इस आशंकासे अनिच्छा होते हुए भी पालकीमें बैठकर अन्तःपुरको गयीं। रानीने उनको स्नेहपूर्वक बड़े आदरसे लिया।

रानीभवानीने उनको जीर्ण और मलीन वस्त्र पहने देखकर, उनके वर्तमान दुःखका कारण पूछा। तब सत्यवतीने सन् १७७१ ई० में प्रेमानन्दके देवीसिंहके आदमियों द्वारा पकड़े जानेकी कथासे लेकर, बीते हुए चौदह वर्षोंके विपद् और यन्त्रणाओंको एक-एक कर रानीसे कह सुनाया। परम दयावती कोमलहृदया रानीभवानी उनके इन सब विपदोंकी कथा सुनकर रोने लगीं। अन्तमें जिस उद्देश्यसे सत्यवती रानीके पास आयी थीं, उसके सुनतेही रानी क्रोधित हो कहने लगीं—बेटी! क्या रामानन्द गोस्वामी मुझे चाण्डालिनी समझते थे।

सत्यवती—आपको वे आराध्या देव-कन्या समझते थे।

रानी—ऐसा होता तो तुम लोग इस दुरवस्थामें मेरे रुपये देनेके लिए इतने व्यस्त न होते। विशेषतः यह रुपया रामानन्द गोस्वामीसे लेनेका विचार भी कभी मैंने अपने दिलमें नहीं किया था।

सत्यवती-उन्होंने रुपया लौटानेकी आशामें आपका दिया हुआ रुपया लिया था। आपके इन रुपयोंको न लेनेसे वे चिरकाल ऋणी रहेंगे।

रानी--दान दिया हुआ रुपया लेनेसे मुझे भी धर्म्म-भ्रष्ट होना पड़ेगा।

सत्यवती-आपने क्या यह रुपया दान कह कर दिया था?

रानी--बेटी! उस दुर्भिक्षके साल बहुतसे ज़मींदारोंमें राजस्व देनेकी क्षमता नहीं थी। अर्थलोलुप कम्पनीके आदमियोंने सब ज़मींदारोंसे इकट्ठी मालगुज़ारी तलब की। ज़मींदारोंको धमकाया कि यदि वे लोग अपना-अपना राजस्व न दे सकेंगे, तो उनको उनकी पैतृक ज़मींदारीसे निकाल देंगे। उस समय मैंने अपनी ज़मींदारीका रुपया न देकर, दूसरे-दूसरे ज़मींदारोंकी ज़मींदारीकी रक्षा करनेके लिए, किसीको दस हज़ार और किसीको बीस हज़ार और किसीको पचास हज़ार रुपये दिये। इसीसे बहुतेरे ज़मींदारोंके ज़मींदारीकी रक्षा हुई थी। किन्तु बहिरबन्दरका पर्गनेका राजस्व मुझसे दिया नहीं गया। कम्पनीने मुझे बहिरबन्दर पर्गनेसे निकाल दिया (vide note (7) in the appendix) उस एक पर्गनेकी ज़मींदारी निकल जानेसे मुझे कोई कष्ट नहीं हुआ। किन्तु बहुतसे ग़रीब ज़मींदार और ब्रह्मस्व ज़मीनके मालिक अपने पैतृक सम्पत्तिकी रक्षा करनेमें समर्थ हुए, यही मेरे सुखका विषय था। उस समय जिन लोगोंको मैंने रुपये दिये थे, उनमेंसे किसीसे भी वापस नहीं लिये। मैंने रामानन्द गोस्वामीसे रुपये लौटा लेनेकी नीयत कभी नहीं की, इसलिए वे किसी तरह मेरे ऋणी नहीं हैं।

सत्यवती—गोस्वामीजीने कहा था कि उन्होंने दस्तावेज़ लिखकर रुपये लिये थे। अतएव वे रुपये उन्होंने अवश्य ऋण-स्वरूप लिये थे।

रानी—मैंने उनसे दस्तावेज़ लिखनेके लिए नहीं कहा था और उनको ऐसा करनेसे मना भी किया था, किन्तु गोस्वामी-जीका पागलपन तो तुम लोग जानती ही हो। बिना दस्तावेज़के वे किसी तरह रुपये लेनेके लिए राज़ी न हुए। तब मजबूरन् मैंने कहा—आपके मनमें जो आवे, लिख दीजिए। उन्होंने एक टुकड़े काग़ज़पर लिखकर दिया "धर्म्मको साक्षी कर मैंने आपसे पचास हज़ार रुपये कर्ज़ लिये"।

सत्यवती—तब तो उन्होंने ऋणके ही तौरपर उन रुपयों-को लिया था, इसलिए उस रुपयेके बदले मैं अपने पैतृक मकानका किबाला था आपके नाम कर दूँगी और स्वयं आपके यहाँ परिचारिका बनकर रहूंगी।

रानी—यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम इस विपद्-कालमें मेरे यहाँ रहो। मैं अपनी कन्याकी तरह तुमको रखूंगी। मेरी पुत्र-वधू तुम्हारी सेवा करेगी।

सत्यवती—मैंने अपने श्वशुरकी मृत शय्यापर बैठकर प्रतिज्ञा की है, इसलिए उनके ऋणका परिशोध न करनेपर मुझे अपनी प्रतिज्ञासे भ्रष्ट होना पड़ेगा।

गोस्वामीजीका कोई ऋण रहनेसे तो तुम परिशोध करोगी! उन्होंने धर्म्मको साक्षी कर मुझसे रुपये लिये थे। मैं भी धर्म्मको साक्षीकर कहती हूँ कि मैंने वे रुपये उनको ऋण-स्वरूप नहीं दिये थे। वे कभी मेरे ऋणी नहीं थे। अब भी यदि तुम उस रुपयेको ऋणस्वरूप समझती हो, तो मैं फिर धर्मकी साक्षी कर कहती हूँ, कि मैंने रामानन्द गोस्वामीको ऋणसे मुक्त किया।

सत्यवती—रुपये बिनापाये आपने ऋणसे मुक्त कैसे किया?

रानी—(थोड़ा हँसकर) उनकी परम पुण्यवती पुत्रवधूकी,

जिन्होंने अपने पुण्यके बलसे अपने स्वामी और श्वशुरको कारामुक्त किया है, पदधूलिके मूल्यके बदले रामानन्द गोस्वामीको मैंने ऋणसे मुक्त किया।

रानी भवानीके इन स्नेहपूर्ण वाक्योंको सुनकर सत्यवतीकी आँखोंसे आनन्दाश्रु बहने लगे। वे रानीके अनुरोधसे तीन दिनोंतक वहीं रहीं। रानीभवानी स्नेहपूर्वक अपनी पुत्र-वधू रानी सर्वाणीके साथ उनको बैठाती और खिलाती थीं। ठीक पुत्रवधूकी तरह उनका स्नेह करती थीं। तीन दिनोंके बाद उन्होंने बहुतसा धन और रत्न देकर सत्यवतीको पालकीमें माल्दह रवाना किया।

सत्ताईसवाँ परिच्छेद

मोगलहाटका युद्ध

प्रेमानन्द गोस्वामी अपने पिताके मरनेके बाद थोड़ा भी विलम्ब न कर, घोड़ेपर सवार हो रंगपुर चले गये। अत्याचारोंसे पीड़ित रंगपुरकी प्रजाने माघकी सातवीं तारीखसे देवीसिंहके आदमियोंके साथ युद्ध करना शुरू किया। ईस्ट इंडिया कम्पनीके अधीन रंगपुर और दिनाज-पुरमें जितने बर्कन्दाज़ और सिपाही थे, प्रायः सभी प्रेमानन्दके रंगपुर पहुँचनेके पहले ही प्रजाके द्वारा मारे जा चुके थे।

रंगपुरके कलेक्टर गुडलैंडने निरुपाय होकर लेफ्टनेन्ट मेक्डॉनलको सेनाध्यक्ष बनाया। किन्तु प्रजाने कहीं-कहीं दलबन्दी कर ली थी। उन लोगोंको परास्त करना मेक्डॉनलके लिए दुःसाध्य काम था। उस समय गुडलैंडने अपना पाँच नम्बरका हुक्मनामा जारी किया (Vide note

(18)in the appendix) और उसी हुक्मनामेके ज़रिये लेफ्टनेन्ट मेकूडॉनल जिसको पकड़ पाते थे, उसीका वध कर डालते थे। जिस गाँवमें जाते उसके सब किसानों और कुलियोंके घर जला देते थे। बहुतसे निरपराधी कुली और बेचारे किसान मारे गये और उनके घर जला दिये गये। प्रेमानन्दके परामर्शसे जिन गाँवोंकी प्रजा दलबद्ध हुई थी, उनका कुछ भी नहीं हुआ।

प्रेमानन्दने गाँवोंमेंसे होकर अपने निर्दिष्ट स्थानको जाते हुए देखा कि तमाम गाँव सूने पड़े हैं। गाँवके जिन जगहोंपर मकान बने हुए थे, वहाँ अब राखकी ढेर लगी हुई है। वे पकड़कर यदि कलकत्ते भेजे न गये होते, तो ऐसी अवस्था कभी न होने पाती। व्यर्थमें प्राण देनेके लिए उन्होंने किसीसे नहीं कहा था। उन्होंने युद्ध करनेवालोंको स्पष्ट रूपसे यह कह दिया था कि जो लोग अपनेही स्वार्थके लिए, राज्य अथवा पद और प्रभुता पानेके अभिप्रायसे युद्ध करते हैं, वे आततायियोंकी तरह हज़ारों नर-हत्याकर अपने हाथोंको कलङ्कित करते हैं, मनुष्य जातिका घोर अनिष्ट-साधन करते हैं, और अन्तमें ईश्वरके निकट अपराधी होते हैं। किन्तु इसके विपरीत जो लोग जनताकी स्वाधीनताकी रक्षाके लिए और देश-प्रचलित अत्याचारोंको रोकनेके लिए, समस्त मानव-जातिका उपकार करनेके लिए, अस्त्र धारण करते हैं, वे लोग इच्छा पूर्वक कभी भी नरहत्या नहीं करते। मानव-समाजका भला करनाही उन लोगोंका एक मात्र उद्देश्य होता है। वे लोग, जिस परिमाणसे बल-प्रयोग करनेपर अत्याचारोंका निवारण हो सकता है, उसकी अपेक्षा अधिक बल प्रयोगकर, कभी भी पशुवत् आचरण नहीं करते।

किन्तु अशिक्षित प्रजाओंने उनके इस उपदेशका मर्म नहीं समझा। इसीसे ईस्ट इन्डिया कम्पनीके आदमियोंने जिस तरह पशुवत् आचरणकर बहुतसे निरपराधी मनुष्योंका वध किया था, उसी तरह रङ्गपुरकी प्रजाने भी कम्पनीके बर्कन्दाजों और सिपाहियोंके प्राण लिये थे।

प्रेमानन्दने, रङ्गपुर पहुँचतेही, मोगलहाटके पास नूरुल मुहम्मद और दयारामके साथ मुलाक़ात की। नूरुल मुहम्मद नवाबकी उपाधि पाकर प्रजाके सेनापति हुए थे। दयाराम नूरुल मुहम्मदके दीवान बनकर देशकी अन्य प्रजासे युद्धका खर्च वसूल करते थे। ये लोग प्रेमानन्दको पाकर बड़े प्रसन्न हुए; किन्तु इतनेमेंही अकस्मात् ईस्ट इन्डिया कम्पनीकी फ़ौज़ने इन लोगोंपर आक्रमण किया। नूरुल मुहम्मदके अधिकांश आदमी पाटग्राममें थे। इस समय कलेक्टर गुडलैंडके साथ इन लोगोंकी समझौतेकी बात-चीत चल रही थी; और यही कारण था कि मोगलहाटमें पचास आदमियों-से अधिक नहीं थे। ईस्ट इन्डिया कम्पनीकी फ़ौज़के लड़ने-के लिए आते ही, ये लोग बेधड़क संग्रामक्षेत्रमें डट गये। किन्तु लोकसंख्या कम होनेके कारण, चार घंटे तक लड़नेके बाद, इन लोगोंकी हार हुई। ये लोग भागकर आत्म रक्षा कर सकते थे, किन्तु रणक्षेत्रसे भागनेकी अपेक्षा सम्मुख युद्धमें प्राण-विसर्जन करना अच्छा समझकर, इनमेंसे एक आदमी भी नहीं भागा। दयारामने इस युद्धमें अपने प्राण विसर्जित किये। नूरुल मुहम्मद ज़ख़्मी हुए थे। इस युद्ध-के दोही चार रोज़ बाद उनकी मृत्यु हुई। प्रेमानन्दने और लोगोंके साथ सायंकाल तक युद्ध किया। दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी घायल हुए और बहुतसे मारे गये। संध्या-

के बाद अँधेरा होतेही युद्ध बन्द हुआ। प्रेमानन्द केवल आठ आदमियोंको लेकर पाटग्राम चले गये।

पाटग्रामके लोग मोगलहाटकी दुर्घटना सुनकर बड़े दुःखी हुए। किन्तु प्रेमानन्दने उन लोगोंको समझाकर कहा—भाई जय और पराजय दोनों ही हम लोगोंके लिए बराबर हैं। हम लोग राज्य करनेके लिए युद्ध करने नहीं आये हैं। देश-प्रचलित अत्याचारोंको दूरकर जन-समाजका उपकार करना ही हम लोगोंका एक मात्र उद्देश्य है। हम लोगोंके पूर्ण रूपसे पराजित होनेपर भी, ईस्ट इन्डिया कम्पनी देवीसिंह-की तरह नरपिशाचोंको राजस्व वसूल करनेका भार देकर, फिर अत्याचार करनेका साहस नहीं करेगी। जिन अत्याचारों-का निवारण करनेके लिए युद्धक्षेत्रमें आये थे, वे अत्याचार दूर हो चुके हैं। अब हम लोगोंके दुःखका कोई कारण दिखायी नहीं देता। यदि हम लोग युद्धके लिए प्रस्तुत न हुए होते, तो यह अत्याचार चिरकालके लिए प्रचलित हो जाता। चिरकाल तक देवीसिंहके कारागारमें सैकड़ों प्रजाके प्राण विनष्ट होते, सैकड़ों कुल-कामिनियोंका धर्म्म नष्ट किया जाता।

इस भयानक अत्याचारको दूर करनेके लिए जिन लोगोंने रणक्षेत्रमें अपने प्राण विसर्जित किये हैं, इतिहासमें स्वर्णाक्षरों-में उनके नाम लिखे जायेंगे। भावी सन्तान उनको देवता कहकर पूजेगी। जो लोग इस अनित्य देहका जन-समाजके उपकारके लिए परित्याग करते हैं, वे लोग अवश्य देवता हैं।

अट्ठाईसवाँ परिच्छेद

पाटग्राम-कलङ्क

प्रेमानन्दने पाटग्राम पहुँचतेही सोचा कि मोगलहाटके युद्धके बाद अब युद्ध न होगा। उनके ऐसा सोचनेका कारण था। कलेक्टर गुडलैंड बारम्बार परवाना द्वारा सूचित करते थे, कि प्रजा यदि अस्त्र-शस्त्रोंका परित्याग करे, तो भविष्यमें मालगुज़ारी वसूल करनेके लिए उनपर किसी प्रकारका अत्याचार नहीं किया जायगा, सन् ११८७ (बंगला) में उनलोगोंने जिस निर्खसे मालगुज़ारी दी थी, उसकी अपेक्षा ज्यादा निर्खसे कोई भी मालगुज़ारी नहीं ले सकेगा, और उन लोगोंको किसी प्रकारका अबवाब (Extra tax) भी न देना होगा।

ऐसे परवानोंको जारी होते देखकर प्रेमानन्दने प्रायः सभी प्रजाको विदा कर दिया। उनके साथ केवल अस्सी-नब्बे आदमी पाटग्राममें रह गये।

मोगलहाट युद्धके दो ही दिनोंबाद सन् १७८३ ई०की २२ वीं फरवरीको ईस्ट इन्डिया कम्पनीके सिपाही अपने-अपने कपड़ोंके अन्दर अस्त्र-शस्त्रोंको छिपाकर बर्क़न्दाज़के भेषमें इन लोगोंके पास आने लगे (vide note (19) in the appendix) प्रेमानन्द और उनके साथियोंने यह सोचा कि ये लोग गुडलैंड साहबका परवाना लेकर आये हैं। किन्तु एक-एक, दो-दो करके बहुतसे सिपाही आकर इकट्ठे हो गये।

प्रेमानन्दके तरफके लोगोंके पास उस समय कोई हथियार नहीं था। सिपाहियोंने बर्कन्दाज़के भेषमें आकर उनलोगों-पर आक्रमण किया। प्रेमानन्दने तमाम लोगोंको भागनेके

लिए कहकर, स्वयं संग्राम-क्षेत्रमें नूरुल मुहम्मदकी तरह अपने प्राणविसर्ज्जन करनेका निश्चय किया। उन्होंने अपने अनुयायियोंसे कहा—तुमलोग भागकर अपने-अपने प्राण बचाते जाओ, पर मैं भागकर अपने प्राणांकी रक्षा नहीं करूँगा।

उनकी तरफके तमाम लोगोंने भी बुलन्द आवाज़से कहा—अपने नेताको छोड़कर हमलोग आत्मरक्षा कभी नहीं करेंगे।

यह कहकर उनकी सेना उनको चारो ओरसे घेरकर खड़ी हो गयी और एक स्वरसे कहने लगी-देवीसिंहके कारागारमें तो सड़ना पड़ेगा ही, अतः जिसके सत्परामर्शों और उपदेशोंके कारण हमारे बालबच्चे देवीसिंहके अत्याचारोंसे बचेंगे, जिनके सत्परामर्शोंसे भविष्यमें जननी, स्त्री, भगिनी और कन्याका धर्म्म नष्ट होनेसे बचेगा, आज उस महापुरुषको संग्राममें अकेला छोड़कर कदापि नहीं भागेंगे।

सभी प्रेमानन्दको घेरकर खड़े हो गये। उनको बचानेके लिए सभी अपनी-अपनी जान देने लगे।

इधर विपक्षियोंने गोली चलाना शुरू किया और एक-एक कर पांच मिनटके अन्दर प्रायः साठ आदमियोंको धराशायी कर दिया। उस समय फिर प्रेमानन्दने उनलोगाको भागकर आत्म-रक्षा करनेके लिए कहा, किन्तु किसीने उनको अकेला छोड़कर जाना स्वीकार नहीं किया।

तब प्रेमानन्दने अपने दिलमें सोचा कि व्यर्थ ये लोग मेरे लिए अपने प्राण क्यों दें? जब विपक्षी छद्मवेशमें आये हैं, तब भागकर आत्म-रक्षा करनेमें कोई दोष नहीं है। फिर विपक्षके लोगोंने आततायियोंका सा काम किया है। अन्तमें प्रेमानन्द उन बचे हुए तीस आदमियोंको लेकर भाग गये। पाट-

ग्रामका यह युद्ध पाटग्राम-कलङ्कके नामसे वंगसाहित्यमें लिपिबद्ध हुआ है ।

पाटग्राम-युद्धमें जितने मनुष्य मारे गये थे, उनके सिवा प्रेमानन्दके पक्षके और किसीको कम्पनीके सिपाहियों और जमादारोंने नहीं पकड़ पाया । किन्तु विद्रोही-प्रजाको पकड़-कर ले आनेका हुक्म था, इससे कम्पनीके जमादार, बर्कन्दाज़ और सिपाही दल बाँधकर चारो तरफ दौड़े । सब गाँव शून्य पड़े हुए थे । एक आदमी भी नहीं मिलता था । तीन कुली पाटग्रामके रास्तेसे प्रातःकाल घर जा रहे थे । शेखमहम्मद मुल्लो जमादारने उन लोगोंको पकड़कर अपने साथ ले लिया (vide note (20) in the appendix)

दूसरे जमादार मिर्ज़ामहम्मद दूसरी ओर गये । उनको कोशिश करनेपर भी एको आदमी दिखायी न दिया । सड़क-के किनारे एक वृद्धा चाण्डालिनीका २२ वर्षका लड़का आज दो वर्षोंसे ज्वर और प्लीहा रोगसे ग्रसित होकर पड़ा था। जमादार मिर्ज़ाबहादुर कोई दूसरा आदमी न मिलनेपर उस चांडा-लिनीके पुत्रको ले चले । किन्तु प्लीहासे उसके पेटका वजन बढ़कर प्रायःआधा मन अधिक हो गया था । वह पैदल चल ही नहीं सकता था ।

चांडालिनीने रोते हुए कहा—भाई, यदि तुम मेरे बच्चेको ले ही जाना चाहते हो, तो गोदी उठाकर ले जाओ । मेरा बच्चा बहुत बीमार है । सबेरे इसको थोड़ा दही और चिउड़ा खानेको दे देना ।

मिर्ज़ामुहम्मद करते ही क्या ? ज़िन्दा आदमी पकड़नेका हुक्म था, मरे आदमीको पकड़नेसे कोई लाभ नहीं । इससे उन्होंने उस चांडालिनीके लड़केको कन्धेपर उठाकर ले चलने-

के लिए दो बर्कन्दाज़ोंको हुक्म दिया। वे लोग इस प्लीहा-रोगग्रस्तको कन्धेपर उठाकर ले चले।

इसी प्रकार तिलकचन्द्र आदि जमादारोंमेंसे कोई किसी अन्धेको, कोई किसी लँगड़ेको पकड़कर विशेष समारोहके साथ ले चला।

सैनिकोंने युद्धमें विजय प्राप्त की है। तिसपर भी जमादार लोग कमसे कम बाईस ज़िन्दे आदमियोंको पकड़ कर लाये हैं। इनलोगोंके आनन्दकी सीमा नहीं थी। सभीने अपने दिलमें सोच लिया था, कि गुडलैंड साहबसे इसका पुरस्कार माँगना चाहिए।

उन्तीसवाँ परिच्छेद

पीटर्सन साहब

कुकर्म, असदाचरण और अत्याचार करके कोई उसे छिपा नहीं सकता। ईश्वरके अखण्डनीय नियमके अनुसार समय आनेपर वे सभी प्रकट हो जाते हैं। मनुष्य बहुत छिपकर नर-हत्या करता है, किन्तु वह भी छिपा नहीं रहता।

रङ्गपुर और दिनाजपुरके अत्याचारोंको छिपानेके लिए देवीसिंह, गङ्गागोविन्दसिंह तथा गुडलैंड और हेस्टिंग्ज़ने कितनी ही कोशिशें की, किन्तु समय आनेपर सभी प्रकट हो गये। कारागार-वासिनी अनाथ रमणियोंकी क्रन्दन-ध्वनि समुद्र-को पारकर लन्दन तक पहुँची। शान्त, सुशीला और लज्जावती वंगमहिलाएँ अत्यन्त क्षीण स्वरसे करागारमें बैठ-कर रोया करती थीं, वही दुर्बल क्रन्दन-ध्वनि, वही क्षीण आर्तनाद, समय पाकर एड्मन्ड बर्कके गम्भीर कण्ठसे प्रकाशित

होकर जगत्में व्याप्त हो गया। करुण रससे परिपूर्ण जीवित भाषा द्वारा इतिहासमें, उस क्रन्दन-ध्वनिका उल्लेख होकर, भावी सन्तानोंके कानोंतक पहुँचने लगा।

देवीसिंहके अत्याचार और निष्ठुर व्यवहारोंसे प्रजाके विद्रोही होनेपर, कलकत्तेकी काउन्सिलने इस विद्रोहके मूल कारणकी जाँच करनेके लिए पीटर्सन साहबको रंगपुर भेजा। पीटर्सन साहबके उस काममें नियुक्त करनेके समय, हेस्टिंग्जने मनही मन सोच लिया था, कि यह पूर्व घटनाओंके सम्बन्धमें कोई जाँचही नहीं करेगा। विद्रोही होकर प्रजाने जो कुछ आचरण किये हैं, केवल उन्हींके सम्बन्धमें वह रिपोर्ट करेगा। इस बार आदमी चुननेके सम्बन्धमें हेस्टिंग्ज़को बड़ा भ्रम हुआ। पीटर्सनको नियुक्त करनेसे उनको आशाके अनुरूप फल नहीं मिला।

मैं पाठकोंके सूचनार्थ संक्षेपमें यहाँ पीटर्सनका कुछ परिचय देना चाहता हूँ। पीटर्सन साहबके पिता बड़े धार्म्मिक पुरुष थे। पुत्रके भारत वर्ष जानेकी बात सुनकर वे बहुत डरे। उनको विश्वास था कि, अंगरेज़ लोग भारत वर्षमें जाते समय उत्तमाशा अन्तरीप पहुँचते ही अपने बाइबिल (धर्म्म पुस्तक)को समुद्रमें फेक देते हैं और बम्बई-के किनारे पहुंचते ही तलवार हाथोमें लेकर जहाज़से उतरते हैं।

अँगरेज़ोंके इन सब बुरे दृष्टान्तोंसे अपने पुत्रकी रक्षा करनेके लिए वृद्ध पीटर्सनने पुत्रके कोटके ऊपरवाले जेबमें एक बाइबिल रखकर, जेबका मुंह सी दिया। उन्होंने यह समझ लिया कि उनका पुत्र भी दूसरे अंगरेज़ोंकी तरह शायद बाइबिलका पाठ न करे। बाइबिलकी एक भी पुस्तक

वक्षस्थलके पास रहनेसे हृदयमें विवेक बना रहेगा, वह एक बारगी नष्ट न हो जायगा।

वृद्ध पीटर्सनकी यह आशा बिलकुल निष्फल हुई। उनके पुत्र युवक पीटर्सनके वक्षस्थलके पास धर्म्म पुस्तक रहनेसे उनका विवेक बरफ़की तरह गल नहीं गया; बल्कि बाइबिलके दाबसे और भी जम गया।

किन्तु वारेन हेस्टिंग्ज़ने सोच लिया था कि गुड्लैंड और लॉर्किन साहबकी तरह पीटर्सनका भी विवेक नष्ट हो गया है। इसीसे रङ्गपुरके वर्तमान गड़बड़ीकी जाँच करनेके लिए उन्होंने पीटर्सनको रंगपुर भेज दिया।

पीटर्सनने रंगपुर पहुँचकर जाँच शुरू कर दी। शेख मुहम्मद मुल्ला, मिर्ज़ा मुहम्मद और तिलकसिंह आदि जिन लोगोंको विद्रोही कहकर पकड़ लाये थे, उनको गुड्लैंड साहबने पीटर्सन साहबके पास भेज दिया। उन्होंने इन लोगोंका इजहार लेना शुरू किया।

शेख मुहम्मद मुल्ला चांडालिनीके जिस प्लीहा रोगग्रस्त लड़केको पकड़कर लाये थे, उसीपर पीटर्सन साहबकी दृष्टि पहले पड़ी। उसका पेट अत्यन्त फूला हुआ था, इससे उसने सहजही सबकी दृष्टि आकर्षित की। पीटर्सनके नाम पूछते ही उसने कहा—मूई आपन नाम ना जाने। मूई छोटा मानुस (मैं अपना नाम नहीं जानता। मैं ग़रीब आदमी हूं)।

तब मुहम्मद मुल्लाने कहा—हुज़ूर, इसका नाम भरकेशा है। पीटर्सनने फिर पूछा—भरकेशा, टू भी युद्ध करे?

भरकेशा—हुज़ूर मूई ए खाने ना आइताम। बर्कन्दाज़ तखन कइलो दो बेला दही चिड़ा मिलबे। मूई कइलो दो बेला दही चिड़ा मिले तो जाय, ना मेले ना जाय।

अर्थात् हुज़ूर मैं यहाँ न आता। तब बर्कन्दाजने कहा दोनों वक्त दही चिउड़ा मिलेगा। मैंने कहा दोनों वक्त दही चिउड़ा मिले तो जांय न मिले तो न जांय।

पीटर्सन साहब इसकी अवस्था देखकर अवाक् हो गये। पेटके प्लीहाके बोझसे यह तो चल ही नहीं सकता था। यह आदमी लड़ने गया था, इस बातका विश्वास केवल गुड्लैंडकी तरह उपयुक्त कलेक्टरके सिवा और कोई नहीं कर सकता।

इसके बाद मिर्जा मुहम्मदके लाये हुए असामियोंसे पीटर्सनने उनका नाम पूछा। इनमेंसे एकका नाम चुआपानी, दूसरेका नाम झबरू और तीसरेका नाम खरकेटू था।

ये तीन आदमी पीटर्सनके सामने आतेही चीत्कार कर कहने लगे—हुज़ूर हम तीनों आदमियोंके सरपर जमादार साहब बोझ लादकर लाये हैं। हम लोगोंने कुछ नहीं किया है।

पीटर्सनने इन लोगोंकी बात सुनकर इन लोगोंको छोड़ दिया।

बाद तिलकचन्द जमादारने एक अंधे और लंगड़ेको हाज़िर कर कहा—हुज़ूर पाटग्रामके युद्धके समय इस आदमीकी आँख फूट गयी है। यह बड़ा खराब आदमी है, यह भागनेकी कोशिश कर रहा था, पर मैंने इसके पीछे दौड़कर इसको पकड़ लिया, और इस दूसरे आदमीने कूरल दाइनकी लड़कीसे शादी किया है। यह प्रधान विद्रोहीका दामाद है।

तिलकचन्दके इतना कहनेपर वह अन्धा बोल उठा-धर्म्मावतार मुइ पाटग्राम युद्धे ना जाय। मोर सात पुरुषेरो आँख ना थाके। अर्थात् धर्म्मावतार मैं पाटग्राम युद्धमें नहीं गया। मेरे सात पुरुषोंको भी आँखें नहीं थीं।

द्वितीय व्यक्तिने कहा—मुइ कूरल मुल्लाका जामाई ना होय। मोर सात पुरुष बिहा ना करे। अर्थात् मैं कूरल

मुल्लाका दामाद नहीं हूँ। मेरे सातों पुरुषोंकी भी शादी नहीं हुई है।

असामियोंकी ऐसी दशा देखकर पीटर्सन साहबने इन लोगोंको भी छोड़ दिया और उपयुक्त प्रमाण इकट्ठा करनेके लिये ज़मींदारोंको तलब किया। ज़मींदार लोग प्रायः सभी देश छोड़कर भाग बसे थे। पीटर्सन साहबने उन लोगोंको हाज़िर होनेके लिए इश्तहार दिया, किन्तु कोई भी ज़मींदार हाज़िर न हुआ। केवल शिवचन्द्र चौधरी हाज़िर हुए थे। उन्होंने पीटर्सन साहबसे विद्रोहकी असली अवस्था कह सुनायी। पीटर्सनके पास कोई लिखने वाला नहीं था इसलिए शिवचन्द्र-का इज़हार उस वक्त लिखा नहीं गया। पीटर्सनने शिवचन्द्रका इज़हार लिखनेके लिए उनको गुडलैंडके पास भेज दिया। गुडलैंडने उनका इज़हार न लेकर उनको देवीसिंहके जिम्मे कर दिया। देवीसिंहने शिवचन्द्रके हाथ पाँव लोहेके जंज़ीर-से बाँधकर कैदखानेमें डाल दिया। शिवचन्द्रकी यह दुर्दशा देखकर फिर एक बालक भी इज़हार देनेके लिए हाज़िर न हुआ।

शिवचन्द्रने पीटर्सनसे कहा था कि, देवीसिंहने अधिक मालगुज़ारी तलबकर ज़मींदारोंपर घोर अत्याचार किया था। यही कारण है कि प्रजा विद्रोही हुई।

अब पीटर्सन साहबने देवीसिंहसे सन् ११८८ और ११८९ सालका बहीखाता तलब किया। देवीसिंहने लाचार होकर बही-खाता दाखिल किया। किन्तु गुडलैंड साहबने बही खातेको नकल करनेके बहानेसे पीटर्सन साहबसे ले लिया और देवीसिंहको लौटा दिया। देवीसिंहने उस बहीखातेको फिर पीटर्सनके पास दाख़िल नहीं किया। कलकत्ते आकर गंगा गोविन्दके पास भेज दिया (vide note (18) in the appendix).

इन सब वाधा–विघ्नोंके होते हुए भी पीटर्सन साहबकी जाँच-से असली हालत मालम हो गयी। पीटर्सनने रिपोर्ट किया कि देवीसिंह और गुडलैंडका अत्याचार ही इस विद्रोहका मूल कारण है। इसपर हेस्टिंग्ज़ और गंगागोविन्द पीटर्सनपर अत्यन्त असन्तुष्ट हुए, पीटर्सनको मिथ्यावादी कहा, और इस विषयकी जाँच करनेके लिये नया कमीशन नियुक्त किया।

नया कमीशन नियुक्त होकर रंगपुर आया। नये कमीशन-के सामने पीटर्सनको असामी बनकर खड़ा होना पड़ा। किन्तु इस कमीशनकी जाँच पाँच छः वर्षोंमें भी ख़तम नहीं हुई। सन् १७८४ ई० से लेकर सन् १७८८ ई० तक कमीशन-की जाँच चलती रही।

कमीशनका नियोग करना केवल सद्विचारकी आशा दिलाकर लोगोंकी आँखोंमें धूल झोंकनेका प्रधान उपाय है। कमीशनके नियोग करनेसेही लोगोंके दिलमें आशाका संचार होता है, किन्तु इसका शेषफल "वाह्यारम्भे लघुक्रिया" है। इस कमीशनके आखरी फैसलेमें अभी बहुत देर है। अतएव सन् १७८४ ई० के बाद गङ्गा गोविन्द आदि व्यक्तियोंने और जो जो काम किये थे उनका उल्लेख इसके बादके अध्यायमें किया जायगा। हमारे प्रेमी पाठकोंको इस कमीशनका फल पाँचसालके बाद मालूम होगा।

तीसवाँ परिच्छेद

शेष कुक्रिया

रंजपुर विद्रोहके दो वर्षके बाद सन् १७८१ ई० के फरवरी के महीनेमें वॉरेन हेस्टिंग्ज़ स्वदेशको चले गये। गङ्गा

गोविन्द्सिंह उनको जहाज़पर चढ़ानेके लिए आये और उनके साथ-साथ स्वयं भी जहाज़पर चढ़े। परस्पर एक दूसरेका मुँह देखकर आँसू बहाने लगे।

थोड़ीदेरके बाद गङ्गा गोविन्दने डबडबाई आँखोंसे रोते हुए हेस्टिंग्ज़से कुछ ज़मीन भीख माँगी। बंगालकी सब ज़मीन हेस्टिंग्ज़की पैतृक सम्पत्ति थी ही, इससे उन्होंने गङ्गा गोविन्दके समान विश्वासी नौकरको भूमिदान देना नितान्त कर्त्तव्य समझकर, दिनाजपुरके राजाकी ज़मींदारीके अन्तर्गत सालबारी परगना गङ्गा गोविन्दको दान दे दिया।

हमारे पाठकोंको स्मरण होगा कि दिनाजपुरके राजाकी ज़मींदारीका थोड़ासा अंश देवीसिंहने चक्र रचकर गङ्गा गोविन्दके नाम क़िबाला करा ही दिया था। ज़मींदारीके जिस अंशके लिए वह फ़रेबी किबाला लिखा गया था, उसी अंशको वारेन हेस्टिंग्ज़ने गङ्गा गोविन्दको दान दिया। देवीसिंह और गङ्गा गोविन्दसिंहके पहलेके फ़रेब और चालाकीके बदले-में इस समय वारेन हेस्टिंग्ज़ने अनुमोदनपूर्वक गङ्गा गोविन्द-को सालबारी परगनेका मालिकाना हक़ दे दिया। गङ्गा गोवि-न्दसिंह हेस्टिंग्ज़के प्रसादसे दिनाजपुरके राजाकी ज़मींदारीके एक हिस्सेके मालिक बन बैठे।

हेस्टिंग्ज़के बंगदेश परित्याग करनेके बाद लॉर्डकॉर्नवालिस भारतवर्षके गवर्नर जेनरल बनकर आये। लॉर्डकॉर्नवालिसके राज्यकालमें दिनाजपुरके राजाकी ओरसे सालबारी परगनाके लिए गङ्गा गोविन्दके विरुद्ध नालिशकी गयी। कॉर्नवॉलिसने हेस्टिंग्ज़का भूमिदान नामञ्जूर किया और सालबारी परगना दिनाजपुरके राजाको लौटा दिया।

लॉर्डकॉर्नवालिसके समय रंगपुर और दिनाजपुरके विद्रोह-

के सम्बन्धमें नाना प्रकारकी समालोचना शुरू हुई। इस विद्रोहका कारण अनुसन्धान करनेमें प्रवृत्त होकर उन्होंने चिरस्थायी बन्दोबस्तकी आवश्यकता अनुभव की।

वस्तुतः दिनाजपुरका विद्रोह ही बंगालके चिरस्थायी बन्दोबस्तका मूल कारण है, इसमें कोई सन्देह नहीं। वंग वासियोंने नूरुलमुहम्मद और दयारामके खूनके बदले इस अधिकारको पाया है। इसको शायद कोई भी अस्वीकार न करेगा। इस्तमुरारी बन्दोबस्तके ज़रिये वंगदेशका विशेष उपकार हुआ है। इस्तमुरारी बन्दोबस्तने ही अंग्रेज़ोंका राज्य मज़बूत किया। किन्तु नूरुलमुहम्मद और दयारामके प्राण विसर्ज्जन किये बिना वंगदेशमें इस्तमुरारीका बन्दोबस्त कभी न होता।

* * * * *

प्रेमानन्द गोस्वामी पाटग्राम-कलङ्कके बाद माल्दह जाकर अपनी स्त्री और कमला देवीके साथ रहने लगे। इधर लक्ष्मण सिंह कमलादेवीके पुत्र क्षेत्रनाथको साथ लेकर बंगाल पहुँचे।

लक्ष्मणने समझा कि कमलादेवी अभीतक दिनाजपुरमें उनके भाई रामसिंहके मकानमें ही हैं। इसलिए वे क्षेत्रनाथको संग लेकर पहिले दिनाजपुरको आये। किन्तु वहाँ कमला देवीके साथ उनकी मुलाक़ात नहीं हुई। तब वे और उनके भाई रामसिंह अपने परिवारों सहित क्षेत्रनाथको संगलेकर माल्दहको रवाना हुए। दो ही दिनोंमें सबलोग माल्दह आ पहुँचे।

एकतीसवाँ परिच्छेद

पुत्रमुख-दर्शन

प्रेमानन्द, सत्यवती और कमलादेवी इस समय रामानन्द गोस्वामीके पैतृक मकानमें बास कर रहे हैं। कमलादेवी लक्ष्मणकी राह देख रही थीं। आजकल लोग केवल लक्ष्मणके ही विषयोंमें बातचीत किया करते हैं। कब लक्ष्मण लौटेंगे, लक्ष्मणके ऐसा सत्पुरुष इस संसारमें दूसरा कोई नहीं है, सर्वदा ही इनलोगोंके बीच इन बातोंकी चर्चा हुआ करती थीं।

एक दिन प्रेमानन्दने कमलादेवीको सम्बोधनकर कहा—मा! लक्ष्मणने अपना नाम सार्थक किया। जिस समय लक्ष्मण रामजीके संग वनको जा रहे थे, उस समय तमाम अयोध्या वासी नरनारियोंने लक्ष्मणकी ओर ऊँगली दिखाकर कहा था—

एकः सत्पुरुषो लोके लक्ष्मणः सहसीतया।
योऽनुगच्छति काकुत्स्थं रामं परिचरन् वने॥

कमलादेवीने कहा—बेटा! इस जीवनमें मैं लक्ष्मणका ऋण कभी चुका न सकूँगी। मैं प्रति दिन लक्ष्मणके लिए मंगल-कामना कर शिवकी पूजा किया करती हूँ। मैं सर्वदा महादेवजीके सामने प्रार्थना करती हूँ कि वे लक्ष्मणको सदा सुखी रक्खें।

प्रेमानन्द थोड़ा हँसकर बोले-मा! लक्ष्मण सदा यही कहा करते हैं कि आपके सुखी होनेसे उनको सुख होता है। तो आप 'लक्ष्मणको' सुखी करो यह प्रार्थना न कर, मुझे सुखी करो' यह कहनेसे भी तो, वही अर्थ निकलता है।

कमलादेवीने कहा—बेटा! कैसा आश्चर्य्य है!! मेरे द्वारा तो लक्ष्मणका कोई उपकार हुआ ही नहीं। किन्तु

लक्ष्मण मुझको सुखी करनेके लिए अपने प्राण देनेमें भी कुण्ठित नहीं होता।

प्रेमानन्द—मा! तुम अपनेको पहचान नहीं सकती। परम साध्वी रमणियाँ अपने-अपने जीवनकी पवित्रताका दृष्टान्त देकर, जगतका जो उपकार करती हैं, अर्थ, सम्पत्ति अथवा ऐश्वर्य्य, किसीके द्वारा भी इस जगतका वैसा उपकार नहीं हो सकता। साध्वी स्त्रियोंकी मृत्युके बाद भी उनके द्वारा जगत्‌का उपकार होता है। जनक-तनया वैदेही आज युगयुगान्तर हुए संसारको छोड़कर चली गयी हैं; किन्तु अभीतक उनका सतदृष्टान्त रमणियोंको सत्पथपर ले जा रहा है।

इन लोगोंमें इस प्रकार कथोपकथन हो रहा था और सत्य-वती कमलादेवीके बगलमें बैठकर इनलोगोंकी बात-चीत सुन रही थीं। उसी समय जगाने घरमें घुसतेही कहा—दिनाजपुर वाला वही जेलका जमादार रामसिंह, दो औरत और दूसरे दो पुरुषोंको साथ लेकर हम लोगोंके मकानकी तरफ आ रहा है।

रामसिंहका नाम सुनतेही प्रेमानन्द तुरत बाहरकी तरफ चले। कमलादेवी भी उनके साथ-साथ हो लीं। थोड़ी दूर जातेही प्रेमानन्दने देखा कि रामसिंह, लक्ष्मणसिंह, रामसिंहकी स्त्री, लक्ष्मणसिंहकी स्त्री और एक युवक उन लोगोंके मकानकी तरफ़ आ रहे हैं। युवकको देखते ही प्रेमा-नन्दने सोचा कि यही कमलादेवीके पुत्र होंगे। किन्तु कमलादेवी युवककी मुखाकृति देखतेही बच्चेसे बिछुड़ी हुई गौकी तरह दौड़कर दोनों हाथोंको फैलाकर लक्ष्मण और उस युवकको गलेसे लगा लिया।

कमलादेवीने एक हाथसे लक्ष्मणको और दूसरे हाथसे अपने पुत्रको पकड़कर अपने गलेसे लगा लिया। दोनों हाथोंसे दोनोंके मस्तकको पगलीकी तरह अपने छातीपर खींचने लगीं। तब उनके पुत्र क्षेत्रनाथ "मैं आपका चिर अपराधी, अकृतज्ञ सन्तान हूं" यह कहकर अपनी जननीके पैरों-पर मूर्छित हो गिर पड़े।

इस समय प्रत्येकके हृदयमें जिन-जिन भावोंका उदय हुआ था, उसे वाक्यों द्वारा कोई भी प्रकट नहीं कर सकता। सहृदय पाठक-पाठिका अपनेको उसी अवस्थामें समझ-कर, उन लोगोंके हृदयके भावोंका अच्छी तरह अनु-भव कर सकेंगी।

क्षेत्रनाथके मूर्छित होकर गिर पड़नेपर प्रेमानन्दने उनको उठाया। वे सचेत होतेही बारम्बार अपना तिरस्कार कर कहने लगे–"मा! मैं आपका अकृतज्ञ सन्तान हूँ, आपने सत्य ही कुपुत्रको अपने गर्भमें धारण किया था। मैं बारह वर्षोंसे आपको छोड़कर विदेशमें वास कर रहा हूँ। मेरी मृत्यु हो जानेसे ही अच्छा होता।

किन्तु कमलादेवीके मुँहसे कोई बात नहीं निकली। हृदयके उद्वेगके कारण उनका कण्ठ रुक गया है। हज़ार कोशिश करनेपर भी वे कुछ कह न सकीं। वे क्या कहती थीं, कोई समझ भी नहीं सकता था। केवल "मेरा पुत्र" "मेरा पुत्र" यही शब्द सुनायी देता था।

वे केवल अपने प्राणप्यारे पुत्र और लक्ष्मणके मस्तकको अपनी ओर खींचने लगीं। दीर्घाकार वीर पुरुष लक्ष्मणसिंह भी पले हुए सिंहकी तरह, कमलादेवी जिस ओर उनकी गर्दन पकड़कर खींचती थीं, उसी ओर अपने गर्दनको घुमादेते

थे। प्रायः आधे घन्टे तक ये लोग इसी भावसे खड़े रहे। किसीके मुँहमें बात नहीं थी, सभी आत्म-विस्मृत हो पड़े थे।

सत्यवती इन लोगोंको विलम्ब करते हुए देखकर उस स्थानपर आयीं। रामसिंह सत्यवतीको देखते ही विस्मित नेत्रोंसे उसके मुखकी ओर वारम्बार देखने लगे।

थोड़ी देरके बाद प्रेमानन्द सबको मकानके अन्दर ले गये। सत्यवती और कमलादेवीने रामसिंहकी स्त्री और लक्ष्मण-सिंहकी स्त्रीको वड़े स्नेह और आदरके साथ ग्रहण किया। ये लोग महीनों तक यहाँ बड़े सुखसे रहे।

महीनों बाद क्षेत्रनाथने कहा कि वंगदेशमें रहनेकी उनकी बिलकुल इच्छा नहीं है। लक्ष्मणकी भी, इस बार पञ्जाब जानेसे, वहीं रहनेकी इच्छा प्रबल हुई है। रामसिंहको किसी बिषयमें मतामत देनेकी क्षमता नहीं है। दो मीठी बातोंसे उनको जिधर चाहे घुमाया जा सकता है। क्षेत्रनाथके कहनेपर रामसिंह, लक्ष्मणसिंह आदि सभीने पञ्जाब जाना स्थिर किया। किन्तु प्रेमानन्दको छोड़कर जानेकी इच्छा किसीकी भी नहीं हुई। प्रेमानन्दसे भी उनलोगोंने सपरिवार पञ्जाब चलनेका अनुरोध किया।

रामसिंह जबसे वहाँ आये थे तभीसे विस्मयापन्न होकर बराबर सत्यवतीके मुखकी ओर देखा करते थे।

प्रेमानन्दने उनके मनोगत भावोंको समझकर एक दिन हँसते-हँसते रामसिंहसे कहा—आपने अपने भृत्य ननकूका क्या कोईपता पाया? सत्यवती उस समय वहीं थीं, वे हँसने लगीं।

रामसिंहने कहा—नहीं, ननकू तबसे कहां चला गया, इसका कोई पता नहीं मिला।

तब प्रेमानन्द हँसते हुए सत्यवतीकी ओर उँगली दिखा-

कर बोले—आप ननकूकी बहन तो नहीं मालूम होती हैं ?

रामसिंहने कहा—हाँ ठीक ननकूकी तरह इनका भी मुँह है।

प्रेमानन्द—क्या ननकूको आपने गोद लेनेका विचार किया था ? आप यदि वही ननकू हों, तो क्या आप इनको पालित कन्या नहीं बना सकते ? रामसिंहने कोई उत्तर नहीं दिया। प्रेमानन्दने तब सारा वृत्तान्त उनसे खोलकर कहा। रामसिंहने तब सत्यवतीसे कहा—बेटी ? आजसे तुम मेरी कन्या हुई। किन्तु मैं तुमको ननकू ही कहकर पुकारूँगा।

रामसिंह, लक्ष्मणसिंह और क्षेत्रनाथके अनुरोधसे प्रेमानन्दने भी बंगालको छोड़कर पञ्जाबमें रहना स्थिर किया। किन्तु उन्होंने इन लोगोंसे कहा कि रंगपुरके इस कमीशनका फल बिना देखे वे वंगदेशका कभी परित्याग नहीं करेंगे। उन्होंने वंगदेशके अत्यचारोंको दूर करनेके लिए विगत पचीस वर्षोंसे बहुत कोशिश की है। अतएव बंगालकी भावी अवस्था क्या होगी, इसके जाननेके लिए वे बड़े उत्सुक हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त रंगपुरके विद्रोहियोंमें जो-जो आदमी पकड़े गये हैं, उनलोगोंके प्रति किसी प्रकारकी दंडाज्ञा होनेपर उसके प्रतिकारकी चेष्टा करेंगे।

रामसिंहने उनकी बात सुनकर कहा—क्या तुम रंगपुरके आदमियोंके उद्धारकी चेष्टा करना चाहते हो ? वंगवासियोंकी जाति कुत्तेकी जाति है। तुम जिन ज़मींदारोंके उपकारके लिए अपनी जान देने गये थे, इस समय देखो वे ही लोग कमीशनके सामने कैसी मिली साक्षी दे रहे हैं। तुमको तक फँसानेके लिए झूठी बातें कह रहे हैं।

प्रेमानन्द इन बातोंको सुनकर डबडबायी हुई आँखोंसे कहनेलगे "आप अनर्थक इन वंगवासियोंकी निन्दा कर रहे हैं।

मैं स्वीकार करता हूँ कि बंगालीकी जाति सत्यही कुत्तेकी जाति है। कुत्ता न होनेसे इन लोगोंकी इतनी दुर्दशा क्यों होती! किन्तु किसने इन लोगोंको कुत्ता बनाया है? किसने इन लोगोंके हृदयको मनुष्यत्वसे शून्य कर, इन लोगोंको जघन्य पशुजीवन प्रदान किया है? इनलोगोंने तो मातृगर्भसे ही कुत्तेके रूपमें जन्म नहीं लिया था?

रामसिंह—तब किसने इन लोगोंको कुत्ता बनाया?

प्रमानन्द—देश प्रचलित शासन-प्रणाली ही प्रजाके चरित्रका गठन कराती है। देशप्रचलित राजनैतिक अत्याचारही साधारण प्रजाको कुत्ता बनाती है। आप नहीं देख रहे हैं कि देवीसिंह, रामनाथ, गंगागोविन्दसिंह इत्यादि ऐसे जघन्य चरित्रके लोगोंको ईस्ट इन्डिया कम्पनीने ऊँचे-ऊँचे पद दे रक्खे हैं। जो लोग मिथ्या प्रवञ्चना और खुशामद किया करते हैं, वे ही शासन-कर्ताके प्रियपात्र होते हैं। इसीसे जन साधारण मिथ्या प्रवञ्चना-मूलक व्यवहारोंको विशेष लाभदायक समझकर उसी पथका अनुसरण करते हैं। किन्तु आप जिनको कुत्ता समझकर घृणा करते हैं, उन्हीं लोगोंमें मनुष्यता प्रदान किया जा सकता है। यदि पाटग्रामकी अवस्था आप अपने आँखों देखे होते तो कभी इन लोगोंको आप कुत्ता न कहे होते। सभी लोगोंको मैंने भागकर अपनी जान बचानेके लिये कहा था, किन्तु किसीने भी मुझको छोड़कर भागना पसन्द नहीं किया। हमारे चारो तरफ़ दीवालकी तरह घेरकर खड़े हो गये। सभीके मुँहपर केवल यही बात थी—हमलोग अपनी जान देकर प्रेमानन्दकी जान बचायेंगे। प्रेमानन्दके सिवा और कौन दूसरा अपनी जान देकर हम लोगोंकी स्त्री, कन्याकी धर्म्म-रक्षा करेगा?

प्रेमानन्दकी बात सुनकर रामसिंह फिर कुछ न बोले। किन्तु पाटग्रामकी अवस्था याद आतेही प्रेमानन्दके दोनों कपोलोंपरसे आँसू बहने लगे।

बत्तीसवाँ परिच्छेद

उपसंहार

सन् १७८६ ई० की फरवरीमें रंगपुरके कमीशनकी जाँच खतम हुई। बहुतसे वंग-कुलाङ्गारों कापुरुष ज़मींदारोंने देवीसिंहकी कृपा-प्राप्तिके उद्देश्यसे झूठी गवाहियाँ दीं। उन लोगोंने कहा कि देवीसिंह इन अत्याचारोंके विषयमें कुछ भी नहीं जानते। केवल हररामने ही अत्याचार किये हैं।

पीटर्सन साहबकी जाँचके समय इन वंग-कुलांगारोंने, देवीसिंहके अत्याचारोंको प्रकट कर दिया था। इससे पीटर्सन साहब इस समय एक प्रकारसे झूठे साबित हुए।

कमिश्नरोंने यह तो अच्छी तरह समझ लिया कि देवीसिंह और गुडलैंडके विरुद्ध कानूनन् यथेष्ट प्रमाण नहीं पाये जाते, किन्तु विलायती प्रणालीके अनुसार विचार न करने से, ये लोग भी अपराधी ठहराये जा सकते थे।

देवीसिंहने तो यों छुटकारा पाया। उनके पक्षके बहुतसे आदमी विद्रोहके समयही मारे जा चुके थे। अब केवल हरराम वगैरह कई आदमी रह गये। हररामको एक सालके लिए कारादंड हुआ (vide note (21) in the appendix) और प्रजामें पाँच आदमी विद्रोही-इकरार दिये गये। लॉर्ड-कॉर्नवालिसने इनलोगोंको वंगदेशसे निकल जानेका आदेश दिया। लॉर्ड कॉर्नवालिसके शासनमें यह एक भारी कलंक

है। इनलोगोंको विद्रोही साबित होनेपर भी, इनलोगोंकी स्त्री और कन्याके प्रति जैसा अत्याचार किया गया था, उससे इनलोगोंको दंड देना उचित नहीं था।

प्रेमानन्दने रंगपुर जाकर इन पाँचोंको आश्वासन देकर कहा—तुम लोगोंको कोई डर नहीं हैं। वंगदेश छोड़नेके बाद तुमलोग पञ्जाब चले जाना। तुम्हारे स्त्री-पुत्रोंको साथ ले मैं भी पञ्जाब आकर साथ ही रहूँगा।

प्रेमानन्दकी इन बातोंको सुनकर उन लोगोंको विशेष आनन्द हुआ। दोही चार दिनोंके बाद उनलोगोंने वंगदेशका परित्याग किया।

कमीशनकी जाँचके समय प्रेमानन्दने दो-तीनबार लॉर्ड कार्नवालिससे मुलाक़ात की। लॉर्डकार्नवालिससे बात-चीत करनेपर प्रेमानन्दने समझ लिया कि केवल रंगपुर-के विद्रोहके कारण ही वे चिरस्थायी बन्दोबस्तके पक्षपाती हुए हैं। रंगपुर-विद्रोहके कारण देशका और भी एक उपकार हुआ है। ब्रह्मस्व, देवस्व इत्यादि निष्कार जमींनोंके स्वत्वकी नियमित रूपसे जाँच करनेके लिए बाज-जामिन-सिरिस्ता स्थापित हुआ है। रंगपुर विद्रोहके किञ्चित पहले बाज जामिन-सिरिस्ता स्थापन करनेका प्रस्ताव हुआ था। किन्तु इस विद्रोहके होनेके कारण ही लॉर्ड कॉर्नवालिसने बड़े आग्रहके साथ इस सिरिश्तेकी स्थापना नियमित रूपसे की।

प्रेमानन्द बिलकुल वंगदेशको त्यागकर, कमला देवीके पुत्र क्षेत्रनाथके साथ पञ्जाबको चले जायेंगे। इसकी कथा चारो तरफ़ फैली। उनके बहुतसे स्वजन आकर उनको पञ्जाब जानेसे रोकने लगे। उनके चचेरे भाई सच्चिदानन्द गोस्वामी अपने ब्रह्मस्व ज़मीनके मुकद्मेकी तदबीर करनेके लिये इन

दिनों कलकत्ते आये हुए थे। वे प्रेमानन्दके सहपाठी थे। प्रेमानन्दको निषेध करते हुए उन्होंने कलकत्तेसे एक लम्बी चिट्ठी लिखी। प्रेमानन्दने पञ्जाब जानेसे दो दिन पहले सच्चिदानन्दके पत्रका जो कुछ जबाब दिया था वह यहाँ उद्धृत किया जाता है:—

परम कल्याणपर श्रीमान् सच्चिदानन्द गोस्वामी परम कल्याणवरेषू—

अपने शुभाशीर्वादके साथ तुम्हारे पत्रके उत्तरमें तुमको विदित करता हूँ कि मैंने सत्यही वंगदेशको त्याग करना स्वीकार कर लिया है। मैं तुमको विश्वास दिलाकर कहता हूँ कि वंगदेशके अत्याचार और अराजकताका निवारण शीघ्र नहीं होगा और काल पाकर यह अत्याचारानल क्रमसे औरभी प्रज्वलित होगा। तुममें यदि थोड़ीसी भी चिन्ता-शक्ति होती तो तुम वर्त्तमान अवस्थाको देखकर भविष्यमें क्या होगा उसे, अनायास-ही समझ लेते। कहो तो सही, इस अत्याचारका निवारण कैसे हो सकता है? एक तरफ़ तो अर्थलोलुप बनिये केवल धन-संग्रह करनेके लिए इस देशमें बास कर रहे हैं, दूसरी तरफ़ बिलकुल निस्तेज पारस्परिक-सहानुभूति-रहित कापुरुष वंग-जाति। इनदोनों श्रेणियोंके मनुष्योंमें पारस्परिक सम्मिलनसे जिस प्रकारकी अवस्था हो सकती है, हुई है। पानी और चीनी-के मिलनेसे मीठा शर्बत तैयार होता है, किन्तु पानीके साथ कीचड़ मिलनेसे शर्बत नहीं बन सकता। इसी प्रकार इन बलवान, कामी अँग्रेज़ बनियोंके साथ अन्य किसी तेजवान और बलवान जातिका सम्मेलन होता तो पारस्परिक बन्धुत्वकी अच्छी स्थापना होती, एक दूसरेके ग्रहण करनेमें समर्थ होते।

किन्तु निस्तेज बंगवासियोंपर स्वभावतः अंग्रेज़ोंके घृणाका उदय हो सकता है।

"बंगवासी निस्तेज हैं, इससे अंग्रेज़ लोग अधिक अर्थ-सञ्चय करनेके लिए देवीसिंह, गङ्गा गोविन्दसिंह, रामनाथ, ऐसे लोगोंको उच्चपद दे रहे हैं। इन्हीं ऐसे नीचाशय बंगाली अंग्रेज़ोंसे प्रश्रय पाकर अपने देशी आदमियोंपर घोर अत्याचार कर रहे हैं। ऐसी अवस्थामें देशमें भले आदमी पैदा नहीं हो सकते। मनुष्य उच्चपद चाहता है। दूसरे देशोंमें सच्चरित्रों-कोही उच्चपद मिलता है; और हमलोगोंके देशमें देवीसिंह, गङ्गा गोविन्दसिंह, ऐसे लोगोंको उच्चपद मिलता है। इससे इस देशके कुल आदमी और भावी वंशावली पर्यन्त देवीसिंह और गङ्गा गोविन्दसिंहके ऐसे असद्दृष्टान्तोंका अनुसरण करेंगे।

वंगदेशकी दुरवस्थाके विषयमें मैंने बहुत सोचा है। सन् १७६१ ई० में जब माल्दहमें ग्रेसाहब और रामनाथदासने पहले पहल अत्याचार शुरू किया, तबसे अबतक आज तीस वर्ष हुए इस विषयमें चिन्ताकर रहा हूँ। मैं पहले यह समझता था कि, एक न एक दिन इन अत्याचारोंको रोक सकूँगा। अब अधिकतर निराश हो गया हूँ। किन्तु यह कभी नहीं हो सकता कि मैं इन विषयोंकी चेष्टा करनेमें शान्त हो रहूँ।

भाई, बंगालियोंको एक रोग नहीं है, कई तरहके रोगोंने इकट्ठे होकर इस जातिके जीवनमें प्रवेश किया है। केवल ज्वर हो तो अनायास ज्वरकी औषधि देकर ज्वर छुड़ाया जा सकता है, किन्तु जिसके शरीरमें बुखार, खाँसी, पेचिश, बरवट और तापतिल्ली, ये पाँच रोग प्रवेश किये हों तो, उस समय औषधिकी व्यवस्था नहीं की जा सकती। एककी दवाईसे दूसरेकी वृद्धि होती है।

यदि वंगजाति केवल कापुरुषताके ही कारण राजनैतिक अत्याचारोंसे पीड़ित होती, तो समवेत-चेष्टा द्वारा राजनैतिक अधिकार प्राप्त करने लिये यत्न किया जाता, किन्तु इन लोगोंकी वर्तमान सामाजिक अवस्था भी बड़ी घृणित है। जाति-भेद, स्त्री-जातिको पर्देमें बन्द रखना, वाल्य-विवाह, बहुविवाह, कौलिन्यप्रथा, सहमरण इत्यादि कुत्सित् देशाचार इन लोगोंको क्रमशः अवनत अवस्थासे और भी नीचे गिरा रहे हैं।

तुम शायद यह सोचते होगे कि जब हमलोग गत वर्ष कलकत्तेमें एक साथ रहते थे और मैं पादरियोंसे बहुत मिला करता था, इसीसे मेरा मत भी कृस्तानी हो गया हो है, किन्तु वास्तवमें ऐसा नहीं है। पादरियोंके साथ मेल-जोल करनेके बहुत पहले जव मैंने लक्ष्मणसिंहके साथ काशी, श्रीवृन्दावन, प्रयाग, अयोध्या, दिल्ली इत्यादि प्रदेशोंका भ्रमण किया था, उसी समयसे मेरी आँखें बहुत विषयोंमें खुल गयी हैं। बहुत-से सामाजिक कुत्सित् आचारणोंकी ओर दृष्टि पड़ी है।

लक्ष्मणके साथ मैंने कमलादेवीके पुत्रकी खोजमें जंगलों और पहाड़ोंमें भ्रमण किया है। किसी जंगलके निर्ज्जन स्थानमें, अथवा किसी पहाड़की चोटीपर बैठकर इस विषय पर लगातार विचार किया है, उस समय मेरे मनमें सर्वदा यही प्रश्न उठता था—क्या बंगालियोंका कोई जातीय जीवन नहीं है? वंगजाति निस्तेज क्यों है? बंगाली जाति इतनी स्वार्थी क्यों है? बंगाली इतने नीचाशय क्यों हैं? इन प्रश्नोंपर वारम्बार विचारकर मैंने स्वयं मीमांसा कर ली है। इस देश का यदि कोई ठीक इतिहास होता, तो तुम भी थोड़ा विचार करनेसे इन सब प्रश्नोंकी मीमांसा कर सकते।

भाई, हमारे भारतवर्षमें जो लोग वीर थे, तेजस्वी थे, उन

में से प्रायः सभीने मुसल्मानोंसे लड़कर संग्राममें अपनी-अपनी जान दे दी, किन्तु लड़ाईके मैदानसे जिन लोगोंने भाग कर अपनी जान बचायी थी, हम लोग उन्हींके सन्तान हैं। भगोड़ोंके वंशज होनेके कारण हम लोग अत्यन्त कापुरुष हो गये हैं। और समय पाकर इस कापुरुषताकी वृद्धि और भी होती जा रही है।

सिराजके सिंहासन–च्युतिके बाद आज तीस वर्षोंसे जो घोर अत्याचार और विश्वव्यापी विप्लव हो रहे हैं, उससे वंगवासी कापुरुष क्यों न हों? इस देशके जितने जघन्य प्रकृतिके मनुष्य थे, जिनका पेशा गुलामी था, उन लोगोंने अंग्रेज़ोंकी कोठियोंमें प्यादा अथवा गुमास्तेके कामोंमें नियुक्त होकर इन तीस वर्षोंके अन्दर अतुल ऐश्वर्य्य इकट्ठा कर लिया है; इस समय वे लोग देशके प्रधान और समाजके नेता बन गये हैं। इनके पूर्वज हमारे पूर्वजोंसे अधिक कापुरुष थे। हमारे पूर्व पुरुष तो संग्राम–क्षेत्रमें गये थे; पर इनके पूर्वजोंने संग्राम–क्षेत्रका दर्शन भी नहीं किया था। इसीसे वर्तमान समाज कापुरुष हो रहा है।

तुम्हारे साथ जब मैं शास्त्राध्ययन करता था उस समय याद होगा कि मैंने तुमसे कहा था कि हमारे शास्त्रकी अपेक्षा और कोई शास्त्र श्रेष्ठ नहीं है, पर वह कुसंस्कार मेरे हृदयसे दूर हो गया है। यदि हमारे शास्त्रोंमें वास्तविक कोई सार होता तो आज भारतकी ऐसी दुर्दशा क्यों होती? तुमको याद होगा कि मेरे पिताने मुझे म्लेच्छ भाषा सीखने नहीं दिया, यही कारण था कि मैंने अपने वाल्यकालमें फ़ारसी नहीं सीखा, किन्तु तुम्हें सुनकर आश्चर्य होगा कि, जब मैं देशाटन कर रहा था उस समय अयोध्यामें दो वर्ष रहकर मैंने

एक मुसल्मानसे फ़ारसी सीखा। मुसल्मानोंको म्लेच्छ कहकर हम घृणा करते थे, किन्तु वे लोग भी बहुतसी बातोंमें हम लोगोंसे श्रेष्ठ हैं। मुसल्मानोंमें इतिहास लिखनेकी प्रथा बहुत दिनोंसे प्रचलित है। हम लोग आर्य्य-आर्य्य कहकर कितनीही डींग मारें; किन्तु हमारे देशका कोई इतिहास नहीं है। वस्तुतः मुसल्मान लोग हम लोगोंकी अपेक्षा श्रेष्ठ न होते तो हम लोगोंको परास्त कभी न कर पाते। जिस जातिके लोगोंका कोई इतिहास नहीं है उनलोगोंका कोई जातीय जीवन था, ऐसा बोध नहीं होता।

मैं और एक विषयमें तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ। तुम शायद मेरे पत्रको देखकर चौंक पड़ोगे। बंगाली जातिके इतना डरपोक होनेका मूल कारण केवल इनकी नारियोंके लिये अवरुद्धता अर्थात् पर्दा है। सन्तान अवश्य माताकी प्रकृति प्राप्त करेगी, क्योंकि अवरुद्धावस्थामें पाली हुई भीरु रमणियोंके गर्भसे कभी वीरपुत्र जन्म नहीं ले सकता। अपने पत्रमें तुमने मेरा बड़ा तिरस्कार किया है और लिखा है कि मैंने रंगपुरकी प्रजाको विद्रोही होनेके लिए परामर्श देकर बड़ा बुरा काम किया है, किन्तु भाई, तुम बड़े निर्बोध हो। तुमने जो न्याय और दर्शन शास्त्रका अध्ययन किया है वह बिलकुल निष्फल है। कार्य्य और कारणका सम्बन्ध तुमने कुछ भी नहीं समझा। रंगपुरमें दयाराम और नूरुल्मुहम्मदके प्राण विसर्जन करनेसे ही इस्तमुरारी बन्दोबस्तका प्रस्ताव हुआ, और निष्कर ब्रह्मस्व ज़मीनके सत्वका अनुसन्धान करनेके लिए बाज़ज़ामिनका दफ़्तर खोला गया। यदि लॉर्डकॉर्नवालिसका यह प्रस्ताव विलायतसे मञ्जूर हो गया, तो देशमें सब ज़मींदारोंको समझ लेना चाहिए कि दयाराम और नूरुल

मुहम्मदके खूनके बदलेमें उनलोगोंको यह अधिकार मिला।

भाई, एक बात और याद आ गई। पादरी लोग कहा करते हैं कि खीष्टके शोणितसे जगतका उद्धार हुआ है। खीष्टने अपनी जान देकर मानव मंडलीके उद्धारका उपाय कर रखा है। वस्तुतः प्राण-विसर्जन किये बिना कोई भी जगतके लिए उपकार नहीं कर सकता। कृस्तान पादरियोंकी यह बात बड़े सारकी मालूम होती है। दयाराम, नूरुल्मुहम्मद और दूसरे कोई आदमीके प्राणविसर्जन करनेसे, अथवा रंगपुरका विद्रोह न होनेसे, लॉर्डकॉर्नवालिस चिरस्थायी बन्दोबस्तके इतने पक्षपाती कभी न होते। फ्रान्सिस फिलिपने तो वीस वर्ष पहले ही चिरस्थायी बन्दोबस्तके लिए प्रस्ताव किया था, किन्तु यह प्रस्ताव उस समय कार्य्यमें नहीं लाया गया। भाई, खिष्टीय पादरियोंकी सब बातें असार न समझना।

अब तुमको एक विषयमें सावधान कर देना चाहता हूँ। आजकल हमारे देशमें केवल कृष्णचरित्रकी ही धूम देखनेमें आ रही है। भाई! तुम कृष्णचरित्रको छोड़कर खिष्टचरित्रका पाठ करो। कृष्णचरित्रकी अच्छी तरह छानबीन करनेसे क्या देखोगे? और क्या देखोगे! दूधके-फेनके सदृश शय्या और चार-पांच गोपी। अस्त्रशस्त्रमें देखोगे केवल गाय भगानेका एक दंडा और बाँसुरी, किन्तु खीष्टचरित्रमें बहुत कुछ देख पाओगे। निःशङ्क हृदयसे जगतके हितके लिए प्राणविसर्जन, शत्रुके लिये ईश्वरके निकट प्रार्थना और रटना केवल यही कि पिताकी इच्छा पूर्ण हो। (Father let thy will be done and not mine) तुमने लिखा है कि बाज़जामिनका दफ्तर और विविध प्रकारकी अदालतोंका स्थापित होना देशके लिए बड़ा हितकर हुआ; किन्तुमैं उसको

अच्छा नहीं समझता। अंग्रेज़ी विचार (फैसला) की प्रणाली इस देशमें प्रचलित होनेपर जाल, प्रवञ्चना मिथ्या व्यवहार क्रमशः बढ़ने लगेगा। हमारे देशमें पहले कोई मोहरकी जाल करना नहीं जानता था। मुँगेरके कलेक्टर बेटमेन साहबने देशीलोगोंको पहले-पहल मोहरका जाल करना सिखलाया। इन सब ब्रह्स्व ज़मीनके मालिकोंके पास अब तक कोई दस्तावेज़ नहीं था। ईस्ट इन्डिया कम्पनीके कर्मचारी लोग बिना दस्तावेज़ देखे उनके ब्रह्स्व ज़मीनको नहीं छोड़ते। इसलिए वाध्य होकर लोग जाली दस्तावेज़ बनाना सीखेंगे। ईस्ट इंडिया कम्पनीके आदमी बात-बात पर गवाह तलब करते हैं;इससे वाध्य होकर लोग झूठा गवाह उपस्थित करेंगे। मेरे पिताने रानीभवानीको जो ख़त लिख दिया था, उसमें केवल "धर्म्मकी साक्षी" ये अक्षर लिखे थे। किन्तु विलायती प्रथाके अनुसार उसमें तीन साक्षियोंकी आवश्यकता होती है।

तुम्हारे पत्रका शेष भाग पढ़कर मैं अपनी हँसी न रोक सका। मालूम होता है तुम सत्यही पागल हो गये हो। तुमने लिखा है कि लॉर्डकॉर्नवालिस तुमपर बड़ा अनुग्रह रखते हैं। तुमने उनको अपना परिचय मेरे चचेरे।भाई होनेका दिया है और उनसे मुलाकात किया है। अतएव मैं भी इसी अवसरमें चेष्टा करनेपर रायबहादुर या राजाबहादुर-का खिताब ले सकता हूँ। भाई, मुझे विश्वास नहीं होता कि कोई भी बुद्धिमान अथवा भद्र सन्तान ईस्ट इन्डिया कम्पनी-का दिया हुआ रायबहादुर या राजा बहादुर ख़िताव लेना पसन्द करेगा। कासिम बाज़ारके सादूक साहबका पुत्र सोनार, ग्रे साहबके बेनियनका पुत्र सद्गोप अथवा बारवेल

साहबके गुमास्तेके पुत्र तेलीकेसे श्रेणीके लोग राय बहादुरी या राजाबहादुरीके लिए लालायित हो सकते हैं। उनके पिता और पितामहने अंग्रेज़ोंके वाणिज्य-कोठीका कामकर बहुत धन सञ्चय किया है, किन्तु वह लोग भद्रसमाजमें बैठने नहीं पाते, इसीसे ईस्ट इंडिया कम्पनीके कर्मचारियोंके अनुरोधसे कंपनी-के किसी साधारण हितकर कार्य्यमें दस-बीस हज़ार रुपया देकर मुफ़लिसीको राय या राजाबहादुरका खिताब ले भद्र समाजमें आ रहे हैं।

तुम क्या नहीं समझ सकते कि, मेरे इस प्रकार कुकार्य्य करनेपर मेरे पिता और प्रपितामहका नाम डूब जायगा। परमानन्द गोस्वामीके प्रपौत्र, अद्वैतानन्द गोस्वामीके पौत्र, रामानन्द गोस्वामीके पुत्र, प्रेमानन्द गोस्वामीको, स्वदेशमें कौन नहीं पहचानता ? तुमको क्या नहीं मालूम कि फटे पुराने वस्त्र पहनकर कंगालिनीके वेशमें जब मेरी स्त्री, रानी भवानीके यहाँ गयी थीं, उस समय रानी भवानीने उनको स्नेह-पूर्वक, आदरसे ग्रहण किया था। राजा रामकृष्णकी प्रधान स्त्रीके साथ एकासन पर बिठाया और मातृ-स्नेह दिखाकर स्वयं पंखा लेकर मेरी स्त्रीको झलने लगी थीं।

छिन्न और मलीन वस्त्र पहनकर भी जब मेरी स्त्रीने अपने चरित्रके प्रभावसे एक प्रधान श्रद्धास्पद परिवारके कुल-वधुओंके साथ इस प्रकारका आदर पाया है, तब मुझे राजा बहादुरी और राय बहादुरी लेनेकी कोई आवश्यकता दिखायी नहीं देती।

देशके जितने निम्न श्रेणीके लोग अब बड़े आदमी होकर केशवलाल, कृष्णलाल, महेन्द्रलाल, यादवेन्द्र इत्यादि बड़े बड़े भद्रोचित नाम ग्रहण कर रहे हैं; उन्हीं लोगोंको रायबहादुरी

या राजाबहादुरीकी आवश्यकता है। कारण इनके पितृ-पितामहोंके विषयमें अनुसन्धान करनेपर, दधिराम अथवा वाञ्छाराम इत्यादि नाम निकलते हैं। इन सब वाञ्छाराम और दधिरामके पुत्र-पौत्रगणने भद्रोचित नाम ग्रहण किया है अथवा इन लोगोंने रायबहादुर या राजाबहादुरकी उपाधि पायी है, इससे मैं इनसे द्वेष नहीं करता। निम्न श्रेणीके लोग जितने भद्र होते जाँय उतना ही देशके लिए शुभ है। अपनी प्रजा माधवदासके पुत्र जगा और रूपाको मैंने बड़े भाईका पद दिया है। उन लोगोंको मैं भद्र-श्रेणी-युक्त करूँगा, कारण उन्हीं लोगोंने मेरे पिताके सङ्कटमें भाग लिया था, जगा और रूपाने जिस पथका अवलम्बनकर भद्र समाजमें प्रवेश किया है, यदि रायबहादुर उपाधिधारी दधिराम और वाञ्छारामके वंश भी उसी रास्तेसे भद्र समाजमें प्रवेश करते, तो बड़े गौरव-की बात होती। अपने चरित्रके गुणसे जो संसारमें आदर पाता है, उसीसे देशका कल्याण होता है। हमारे देशमें धनी होनेसे ही "राय" होता है। किन्तु मनुष्यत्वके न रहने-से मनुष्य बन्दर कहलाता है। इससे मनुष्यत्व-विहीन धनीके सन्तानके रायबहादुर होनेपर उनको लोग रायबानर समझते हैं। तब रायबहादुर और रायबानर एकही वस्तु हो जाती है।

मेरा पत्र बहुत बड़ा हो गया। अतएव पञ्जाब पहुँचकर अन्यान्य विषयोंमें मैं तुमको फिर पत्र लिखूँगा। तुम यह न सोचना कि मुझे वंगदेशसे प्रेम नहीं है। हर दूसरे-तीसरे साल मैं बंगदेश आया करूँगा।"

अपनी पारिवारिक अवस्थाके सम्बन्धमें मैं तुमको और कुछ लिखना चाहता हूँ। आज दो साल हुए मुझे एक पुत्र हुआ है। कमलादेवीके पुत्र क्षेत्रनाथ भट्टाचार्य्यने मेरी स्त्री-

की सबसे छोटी बहनसे व्याह कर लिया है। इस समय वे लोग सभी मेरे मकानमें ही हैं। रामसिंह और लक्ष्मण सिंह भी सपरिवार मेरे साथ हैं।

क्षेत्रनाथको वंगदेशसे बड़ी घृणा है। वे वंगदेशको नरक समझते हैं। उनके पड़ोसियोंने उनकी मातापर दोषारोपण किया था, इससे बंगाली-जातिपर उनको विशेष घृणा होगयी है। वे बंगदेशमें विवाह करनेके लिए सम्मत नहीं थे। मेरे, कमलादेवी और लक्ष्मणसिंहके बहुत कहनेपर उन्होंने मेरी स्त्रीकी सबसे छोटी बहनसे विवाह किया है। रामसिंहकी स्त्रीको मैं और मेरी स्त्री, मां कहकर पुकारती हैं। वे भी हमलोगोंपर अपने बच्चेकी तरह स्नेह किया करती हैं। रामसिंह अब तक मेरी स्त्रीको ननकू कहकर पुकारा करते हैं। मेरी स्त्री प्रति दिन रामसिंहको स्वयं भाँग पीसकर पिलाया करती हैं। उनके हाथोंसे पीसी हुई भाँग न मिलनेसे रामसिंहका मन नहीं भरता। मैं कभी-कभी अपनी स्त्रीको रामकृष्ण अधिकारी कहकर पुकारा करता हूँ। उस समय वे मुझे सम्बन्धी कहकर सम्बोधन करती हैं। प्रतिदिन तीसरे पहर मैं, मेरी स्त्री, रामसिंह, लक्ष्मणसिंह, उन लोगोंके परिवार, कमलादेवी, क्षेत्रनाथ और उनकी स्त्री सभी एकत्र होकर, अपने मकानके पीछेवाले तालाबके घाटपर जाकर बैठा करते हैं। उस समय हमलोगोंको बड़ा आनन्द मिलता है। वहाँ बैठकर प्रतिदिन रामसिंह एक गिलास भाँग पीया करते हैं। भाँग पीनेके आधे घन्टेके बाद उनका मुँह खुलता है। उसी अवसरमें देवीसिंह और देवीसिंहके पिता, माता, भाई, बहन, फूफी, मौसी और उसके कुटुम्बियोंके नाम ले-लेकर गालियां देना शुरू करते हैं। प्रत्येक बार

एक-न-एक नयी भूमिका गढ़कर गालियाँ देने लगते हैं। "साले देवींसिंहने मेरे ननकूको बड़ी तकलीफ़ दी है। सालेने सब लोगोंकी ज़मीन बेनामी करके मुल्कको तबाह किया"। इन्हीं दोनों बातोंको लेकर भूमिका रचते हैं और देवीसिंहके सब आत्मीय स्वजनोंको लगातार गालियाँ दिया करते हैं। उनकी बातोंको सुनकर हम लोगोंको हँसी आती है। 'लक्ष्मणसिंह और उनकी स्त्री, कमलादेवीको सुखी करनेके लिये सर्वदा व्यस्त रहा करती हैं। मैं समय-समयपर लक्ष्मणसिंहसे यही कहा करता था' "सृष्टस्त्वं वनवासाय स्वनुरक्तः सुहृज्जने!" नानाप्रकारके कष्ट और यन्त्रणाओंके बाद अब हमलोग सुखसे हैं। यदि तुम मेरे पिताकी ब्रह्मस्व ज़मीनका पुनरुत्थान करसको, तो उसकी आमदनीके थोड़े अंशसे मेरे पिताकी अतिथि-शाला फिरसे स्थापित कर दो।

—श्रीप्रेमानन्द गोस्वामी

इस पत्रको भेजनेके तीन-दिन बाद, प्रेमानन्द, रामसिंह, क्षेत्रनाथ, जगा, रूपा, सत्यवती, वृद्धा दासी सभी अपने-अपने परिवारों सहित पंजाबको चलेगये।

देवीसिंह ईस्ट इन्डिया कम्पनीके नौकरीसे बर्खास्त किये गये। गङ्गागोविन्दसिंह बाकी सिरिस्तोंका भार लेकर लॉर्डकार्नवालिसके समयमें काम करने लगे। किन्तु इस जीवनमें उनको सुखकी निद्रा नहीं मिली। दूसरेका अनिष्ट करनेसे इस जगतमें किसीको शान्ति नहीं मिलती।

समाप्त

—o—

APPENDIX.

KEY TO DEWAN GANGA GOVINDA SING.1

NOTE 1.

The Ray Royan was the regular channel of such communication as require the interposition of a native, and not Ganga Govind Singh, whose dismission from the Calcutta Commitee had rendered him an improper person to transact affairs of such moment to the company.—*Extract from the Company's General Letter to Bengal, the 4th July* 1777.

NOTE 2.

PARA 50. The petition of Manohar Mookerjee stiled the dismissed farmer of Currickpore and Mongheer, pointed out to our particular notice in your Revenue letter per Syren, exhibits another instance of loss to the company, occasioned by that duplicity which has been practised by our servants during the late administration, in letting and holding of lands and farms in Bengal.

51. We find the circumstance which occasioned Mookerjee's petition, was a complaint made by the Ray Royan that a balance of 13,000 Rupees was due from him as the dismissed farmer of Currickpore and Mongheer, and that the Khalsa peons had been sent to demand the money, but were interrupted by Mr. Wordsworth. To this charge Mr. Wordsworth, who had been an assistant at Mongheer, replies, that the Ray Royan must have been misinformed, because Dundhu Bahadur and Kerparam Ray were the two farmers dismissed from Currickpore and Mongheer, and that the facts were too notorious to be doubted. Mookerjee also declares, on his examination, that he was Mr. Bateman's servant, and not the farmer of the district in question; that Mr. Bateman was collector, Dundhu Bahadur farmer of one Pergunnah and Kerparam of the other; and that at Mr. Bateman's request he (Mookerjee) became security for payment; that he never saw Dundhu Bahadur, that Kerparam was one of his own people, that he believes no such man as Dundhu Bahadur exists in Bengal; and that he was security only for Mr. Bateman. That Mr. Bateman gave in proposals under the seals of Dundhu Bahadur and Kerparam, that seals

were cut in the above mentioned names, and affixed to the Kabuliats by Mr. Bateman's moonshy, who wrote the Kabuliats, and always, kept the seals in his own hands; that Mr. Bateman had the possession, and enjoyed the profits of the farms, and paid him 200 Rupees per month as his Muttasudie; that Mr. Bateman told him Dundhu Bahadur and Kerparam were only nominal persons; that on asking Mr. Bateman if the two Pergunnahs were his own, he replied, that he had one share in Mongheer, and Mr. Vansittart two shares; but that he was the sole proprietor of Currickpore, that the Mehals or district having been put under the Council at Moorshedabad, Mr. Baber told the petitioner, that Mr. Bateman was not to receive the profits that year, but that they (meaning the said Council) were to receive the advantages arising therefrom, and that Mr. Baber proposed his continuing in the Mehal; and that he should give him a teep for 10,000 Rupees, which he declined, but to which he afterwards consented.

52. The orders of your Board on the occasion were, that a copy of Mookerjee's petition should be transmitted to Mr. Bateman, and so much of it to Mr. Baber as had relation to that gen-

tleman, and that his answer thereto should be required, but, to our astonishment, we fin dMr. Barwell objects to his mode of admitting on the records of a tendency foreign to the public business &c.—*Extract from the Court of Director's letter, dated 30 th January* 1778.

NOTE 3.

37. A further instance, in which the conduct of the Governor-General and Mr. Barwell. as a majority of the Board, appears to us not only improper, but highly reprehensible, is that of rejecting the advice of our standing counsel, and refusing to concur in filing a bill of discovery to oblige Mr. Thackeray to declare who were the persons concerned with him in furnishing the company with elephants.

38. We observe that our late President states to the council, in consultions of the 6th Septe-mber 1774, that the farmers of Sylhet had made a tender to him of about 66 elephants at 1,000 Rupees per each, that the Board esteemed it an advantageous offer, and accepted the elephants under certain conditions.

39. We find that the farm of Sylhet was gra-nted by the Committee of Circuit, that the comp-

any's advance to the farmers of Sylhet, of 33,000 Rupees for elephants was received by one of the members of that committee. It has however since appeared, that the ostensible farmers, or persons named in the committee's settlement, never existed, and that Mr. Thackeray, the Company's Resident at Sylhet, was the real farmers under fictious names.—*Extract from Company's General Letter to Bengal, dated 28th November* 1777.

NOTE 4.

36. In our letter of the 5th February 1777, we expressed our apprehensions that a sudden transition from one mode to another, in the investigation and collection of our revenues, might have alarmed the inhabitants, lessened the confidence in our proceedings, and been attended with other evils; yet as we were led to hope that such information had been obtained as would enable us to ascertain with sufficient degree of precision what revenues might be collected from the country without oppressing the natives. we felt some satisfaction in considering those evils as at an end, and proceeded to give such instructions as appeared to us necessary for your guidance in a future settlement of the lands.

37. In this state of the business our surprise and concern were great, on finding, by our Governor-General's minute of Ist November 1776 that, after more than seven years investigation, information is still so incomplete, as to render another innovation, still more extraordinary than any of the former, absolutely necessary, in order to the formation of a new settlement.—*Extract from Company's General Letter to Bengal, 4th July 1777.*

NOTE 5.

"In the late proceedings of the Revenue Board ?" observes the majority of the Council "there is no species of peculation from which the Hon'ble Governor-General has thought it right to abstain.-*Beveridge's History of India,page* 383.

NOTE 6.

45. We observe that our Attorney was served with notice of trial the 14th November, about twenty days after the death of Colonel Monson, and to our cost we find, the majority of the Council consisting then of the Gevernor-General and Mr. Barwell, instead of preparing for a proper defence, deserted the cause, and thereby subjected

the company to the payment of the money (claimed by Thackeray). . . . . . .

48, Upon the whole of this transaction as we fully approve the conduct of General Clavering and Mr. Francis, because it has been, in our opinion, highly meritorious, so we are compelled to declare, that the behaviour of our Governor-General and Mr. Barwell has, in this instance, been highly improper, and inconsistant with their duty.—*Extract from the Company's General Letter to Bengal, dated the 28th November* 1777.

NOTE 7.

131. From a view of your conduct towards the Ranny of Burdwan, and the Ranny of Radshahye, and her adopted son Rajah Ramkissen, and from your interesting debates concerning those persons, we have already been induced in the 92nd paragraph of our letter of the 4th March, to express our disapprobation of every mode of vexatious interference in the private concerns of the zemindars, and of the idea of disturbing them in the quiet enjoyment of their possessions; and as the Rannies above-mentioned appeared to have suffered an unusual degree of inconvenience and distress since, by the death

of Colonel Monson the Governor-General and Mr. Barwell became a majority of the Board, we now direct, as the most eligible mode of doing justice to all parties, that soon as conveniently may be, after the number of our Council shall be complete, and consist of Five Members, the whole of the proceedings of our Council relative to the Ranny of Burdwan and to the Ranny of Radshahye, be taken into your most serious consideration, and that to the utmost of your power the most impartial justice be rendered to the zemindars above mentioned and if it shall appear to the Three Members of the Board, that the requisitions and injunctions of the Governor-General and Mr. Barwell, respecting the Ranny of Burdwan, were improper, and the re-establishment of Bridjokishore Ray who had been removed by the late majority, and the placing of a military force upon the Raja's house; were acts of oppression, or that the dispossession of Ranny of Radshahye and her adopted son, and the distinction in her disfavour, respecting out-standing balances were unwarrantable proceedings; we direct that you make such reparation to those zemindars as their respective cases shall require.

Extract from Company's General Letter, dated 23rd

December 1778.

"The Ranny of Burdwan" says Mr. Richard Barwell the most dishonest and unscrupulous member of the Council "is a vile prostitute.—*Extract from Barwell's letter to Mrs. Mary Barwell.*

NOTE 8.

But to pursue this melancholly but necessary detail. I am next to open to your Lordships, what I am hereafter to prove, that the most substantial and leading yeomen, the responsible farmers, the parochial Magistrates and chiefs of villages were tied two and two by legs together; and their tormentors, throwing them with their heads downwards over a bar, beat them on the soles of the feet with ratans, until the nails fell from the toes; and then attacking them at their heads, as they hung downwards, as before at their feet, they beat them with sticks and other instruments of blind fury until the blood gushed out at their eyes, mouths and noses.

Not thinking that the ordinary whips and cudgels, even so administered, were sufficient, to others (and often also to the same who had suffered as I have stated) they applied instead of ratan

and bamboo, whips made of the branches of Bale trees (बेलके पेड़)—a tree full of sharp and strong thorns, which tear the skin and lacerate the flesh far worse than ordinary scourages.--*Edmund Burke*, *page* 188.

NOTE 9.

Your deliberation on the inland trade have laid open to us a scene of the most cruel oppression, which is indeed exhibited at one view of the 13th article of the Nobab's complaints mentioned thus in your consultation of the 17th October 1764. ... ... We shall, for the present, observe to you, that every one of our servants concerned in this trade, has been guilty of a breach of this covenants and a disobedience to our orders. In your consultations of the 3rd May, we find among the various extortionate practices, that most extraordinary one of "*Barjaut*" or forcing the natives to buy goods beyond the market price, which you there acknowledge to have been frequently practised.

In your resolution to prevent this practice, you determine to forbid it, but with such care and discretion, as not to affect company's investment, as you do not mean to invalidate the right derived

to the company from the Firman which they have always held over their weavers. As the company are known to purchase their investment by ready money only, we require a full explanation how this can affect them or how it could ever have been practised in the purchase of their investment, which the latter part of Mr. Johnstone's minute entered in consultation the 21st July 1764 insinuates; for it would almost justify a suspicion, that the goods of our servants have been put off to the weavers in part payment of company's investment: therefore we direct you to make a rigid scrutiny into the affairs, that we may know that any of our servants or those employed under them, have been guilty of such breach of trust, that their names and all the circumstances may be known to us.—*Extract of a letter from the Court of Directors to the President and Council at Fort William in Bengal, dated 28th Dec.* 1765

NOTE 10.

The following is the translation of the letter addressed to Sheer Ally Khan, Phousdar of Purniah by Messrs. Johnstone. Hay and Bolts recorded at Fort William Consultation, dated 17th December 1762.

Our Gamastah Ramcharan Das, being gone into those parts, meets with obstructions from you, in whatever business he undertakes, moreover you have published a prohibitions to this effect, that whoever shall have any dealing with the English you shall seize his house and lay a fine upon him. In this manner you have prohibited the people under your jurisdiction. We were surprized at hearing of this affair, because the Royal Firman which the English nation is possessed of, is violated by this proceedings; but the English will by no means suffer with patience their Firman to be broke through. We therefore expect that, upon the receipt of this letter you will take off the order you have given to the Ryots, and in case of your not doing it, we will certainly write to the Nobab, in the name of the English, and send for such an order from him, that you shall restore fully and entirely whatever loss the English have sustained or shall sustain, by this obstruction; and that you shall repent having thus interrupted our business, in despite of the Royal Firman. After reading this letter, we are persuaded, you will desist from interrupting it, will act agreeably to the rules of friendship, and so that your amity may appear,

and by no means stop the company's Dustuck.

NOTE 11.

* * * Upon Ramnants's going out of the Governor's Chamber, and coming into the Hall, he was suddenly met by a party of Sepoys with fixed bayonets, commanded by two black officers named Sontose and Dil Mohomed, who in that instant seized him; and not permitting him to ride in his palanqueen, marched him on foot through the town, from the Governor's to his own house, where they kept him in strict confinement, with guards upon his doors, and even in his innermost appartment, not permitting any person but his own menial servants to have access to him . . . . He remained in that situation until Sunday the 3rd May 1667. in the evening of which day he sent to inform the writer (Mr. Bolts) he had just received private intelligence that order had been received from Governor Verelst, then with the Nobab at Murshedabad to Mr. Cartier then at Calcutta to deliver him (Ramnant) up to the Nobab for confinement.

By letter afterwards received from him (Ramnant) it appeared; that he was actually transferred to the Nobab at Murshedabad for confinement,

during which time his family, at Maldah was put to the greatest hardships and distress.—*Bolts on India affairs, pages* 101, *and* 103.

NOTE 12.

Accordingly in plain terms, he (Devi Singh) opened a logal brothel, out of which he carefully reserved the very flower of his collection for the entertainment of his young superiors, ladies recommended not anly by personal merit, but according to the Eastern custom, by sweet and enticing names which he had given them. For, if they were to be translated, they would sound.—Riches of my life.—Wealth of my soul.—Treasure of perfection.—Diamond of splendour.—Pearl of Price–Ruby of. pure blood and other metaphorical descriptions, that, calling up dissonant passions to enhance the value of the general harmony, heightened the attractions of love with the allurements of avarice. A moving Seraglio of these ladies always attended his progress, and were always brought to the splendid and multiplied entertainments with which he regaled his Council.—*E. Burke, pages* 177–78.

NOTE 13.

Even in these days, instances are not wanting, which will show that when the estate of any minor zemindar, or any minor independent native chief, is placed under the management of stranger or foreigner, the nearest relations of such minor experience great hardship, whereas the manager's friends and relations are well provided at the expense of such estate or state.

NOTE 14.

On the same principle, and for the same ends, virgins, who had never seen the sun, were dragged from the inmost sanctuaries of their houses. and in the open court of justice, in the very place where security was to be sought against all wrong and all violence (but where no judge or lawful Magistrate has long sat, but in their place the ruffians and hangmen of Warren Hastings occupied the bench) these virgins, vainly invoking heaven and earth, in the presence of their parents, and whilst their shrieks were mingled with the indignant cries and groans of all the people, publicly were violated by the lowest and wickedest of the human race. Wives were torn

from the arms of their husbands and suffered the same flagitious wrongs, which were indeed hid in the bottoms of the dungeous in which their honor and their liberty buried together. Often they were taken out of the refuge of this consoling gloom, stripped naked, and thus exposed to the world,and then cruelly scourged; and in order that cruelty might riot in all the circumstances that melt into tenderness the fiercest natures, the nipples of their breasts were put between the sharp and elastic sides of cleft bomboos. Here, in my hand, is my authority, for otherwise one would think it incredible.—*Edmund Burke's speach, page* 189-90.

Children were scourged almost to death in the presence of their parents. This was not enough. The son and father were bound close together, face to face, and body to body, and in that situation cruelly lashed together, so that the blow which escaped the father fell upon the son, and the blow which missed the son wound over the back of the parent. *Ibid.*

NOTE 15.

The peasants were left little else than their families and their bodies. The families were disposed

of. It is a known observation, that those who have the fewest of all other worldly enjoyments are the most tenderly attached to their children and wives. The most tender parents sold their children at market. The most fondly jealous of husbands sold their wives. The tyranny of Mr. Hastings extinguished every sentiments of father, son, brother and husbands ?

I come now to the ~~last~~ stage of their miseries: everything visible and vendible was seized and sold. Nothing but the bodies remained.—*Edmund Burke's speach, page* 186.

NOTE 16.

The variety and frequent changes of those employed in the collections may be included in the causes of this discontent. In 1188 Kishen Prosad was appointed Dewan and collector of Rungpur by Rajah Devi Singh. In Bhadoon he was turned out and Hur Ram was appointed in his stead and continued to the end of that year. In 1189 after three months Hur Ram refused to take upon him the responsibilty for revenues of the District, and in Assar he was succeeded by Surjanarain. In Aughan the Rajah's brother Bekadre Singh (the name is unintelligible in the

original papers found by the author in the Board of Revenue) arrived and was invested with the management of the collections in which he exercised every kind of severity and rigour. Surjanarain continued to act as Dewan. The zemindars of Kakina and Tepah fled the country and both their zemindaries were given in farm to Surjanarain.—*Extract from Paterson's Report, May* 1783.

NOTE 17.

His (Ganga Govinda) conduct then was licentious and unwarrantable, oppressive and extortionary. He was stationed under us to be an humble and submissive servant. His conduct was everything the reverse.

In one attempt to release fifteen persons illegally confined by him, we were dismissd our offices ; a different pretence was held out for our dismission, but it was only a pretence,—*Evidence in the trial of Hastings.*

NOTE 18.

It was then I was under the necessity of sending Lieutenant Macdonald the order No. 5. The assuming a power that affects life and death is never to be justified, but on the greatest emer-

gencies. My situation, as I observed to you before, was the most critical that ever a Collector was placed in ; the state of the country required the most active and vigorous exertions in order to quiet it. I nad no time to wait for orders from my superiors ; and had I ever given the insurgents an idea that I was deficient in authority to punish them, I never could have got the better of the insurrection.—*Extract from Mr. Richard Goodlad's Report, dated Rungpur, March* 1783

Mr. E. G. Glazier in his report on the District of Rungpur observes:—"Whatever Devi Singh's enormities may have been, nothing is clearer from the whole history of the transactions than that Mr. Goodlad knew nothing of them."

I think Mr. Glazier is sadly mistaken in thinking that there was nothing to show that Mr. Goodlad knew anything about the oppression exercised by Devi Singh. It is quite evident from Mr. Paterson's report that both Devi Singh as well as Mr. Goodlad tried to suppress evidence during the enquiry held by him.

Mr. Paterson observes;—Upon my first arrival the Ryots of Futtehpur complained against the article of Betta and Dureevilla I referred them to Mr. Goodlad as I had none of my people

with me; aud he referred them back to the Rajah (Devi Singh) who immediately put the Zemindar Seela Chandra Choudry in irons, charging him with exciting the Ryots to complain to the Ameens. This was my reason when I requested your orders what measure I should take if any one was punished for complaining to me."

Elsewhere he (Mr, Paterson) observes "I had entrusted these accounts to Mr. Goodlad who promised to return them after taking copies. But Mr.Goodlad went away without returning them, and I now find they are with the Rajah (Devi Singh) in Calcutta.

(Rajah filed) " different accounts at various times differing very materially in the *Jama* aud *Wassil* with an idea I presume to perplex me to delay my reports."

These facts clearly prove that Mr. Goodlad also tried to suppress evidence during the enquiry.

Mr. Glazier for reasons best known to himself in page 71 (Appendix A) of his Report on Rungpur says "that enclosures 1, 3, 4, 5. 7 and 9 omitted." These enclosures were the successive orders (*Hookum namah*) issued by Mr. Goodlad during the insurrection. And the order or *Hookum*

namah No. 5 would speak very much against Mr. Goodlad as he himself admitted it.

NOTE 19.

A party of Sepoys, under Lieutenant Macdonald, marched to the north against the principal body of insurgents ; a spy caught by the Lieutenant was hung in open market, and a Jemadar was despatched against the retreating enemy. The decisive battle of the campaign was fought near Patgram on the 22nd February ; the sepoys disguised themselves as Burkundazes by wearing white cloth over their uniform, and by that means got close to the insurgents, who were utterly defeated: sixty were left dead on the field, and many were wounded, and taken prisoners.—*Glazier's Report on Rungpur, page 22.*

NOTE 20.

It was recommended to me in my instruction to call upon the prisoners taken in the insurrection to account for their conduct, and in case they complained of opprssion, to enquire into the truth of it by an examination of both parties.

Mr. Goodlad accordingly delivered over to me

22 prisoners. As I understand that many had been taken, I naturally concluded that there would appear against these men some circumstances of guilt, particularly glaring which had occasioned their being singled out from the rest. But to my surprise, I found upon examination, that they were neither ring-leaders nor taken in any act or situation that could be construed against them. They were for the most part coolies, the lowest of mankind, taken many of them out of their own houses or at plough. This appears from the declaration of Telukchand who apprehended some of them and of Shaik Mahomed Mollah who likewise took several.

* * * * *

The Burkundazes and horsemen who were detached in parties tc desperse the insurgents, made an universal plunder and trade of the people that fall into their hands. Those who could pay were set free; those who had it not, were detained as proof of their diligence. Upon my expressing my surprize to Shaik Mahomed Mollah that he should seize people against whom he could bring no charge of guilt; he explained himself in this manner.

That the insurgents assembled in many parts and went from place to place levying contributions and obliging the Ryots to join them. That upon information of their appearing in any village, he detached a party against them, that upon approach of such party the insurgents always fled, and that his people seized inhabitants of the place when the insurgents had disappeared, that he was not to judge of their innocence or delinquency, that in general confusion like this no distinction could be made at the time.--*Extract from Mr. Paterson's Report (A) dated Rungpur* 18th *May* 1783,

---

NOTE 21.

Two commissions sat on this insurrection, and in February 1769, in the time of Lord Cornwallis, the final orders of Government were passed. Devi Singh got off scot-free, with the exception of the loss of his money, Hur Ram, a native of Rungpur, who had been the sub farmer under him, and whose oppression had brought about the rising, was sentenced to one year's imprisonment, after that time to be banished from the District of Rungpore and Dinagepore. Five Ryots, the